ZIYAE SADAQAT (HINDI)

ज़ियाए स-दक़ात

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए इस्लाही कुतुब

- स-दक़ा के मा'ना व अक़्साम 32
- माल जम्अ़ करना कैसा है ? 80
- पोशीदा स-दक़ात और इस के फ़ज़ाइल 220
- खाना खिलाने और पानी पिलाने के फ़ज़ाइल 243
- क़र्ज़ देने और तंगदस्ती पर आसानी करने के फ़ज़ाइल 278
- औ़रत का अपने शोहर के माल से स-दक़ा करना 293
- क़नाअ़त की अ़ज़्मत और सुवाल की मज़म्मत 316

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अ़ज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفكر بيروت)

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म** ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म** ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात** कम हों या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

ज़ियाए स-दक़ात

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या''** ने येह किताब ''उर्दू'' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **''हिन्दी''** रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए SMS या E-MAIL) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ع
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
ृ = ٗ	ु = ُ	ि = ِ	_ = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-
मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

स-दक़ात के फ़ज़ाइल व मसाइल पर मुश्तमिल
मदनी गुलदस्ता

जि़याए स-दक़ात

-: मोअल्लिफ़ :-
अबू ज़ियाउल अ़त्तारी

-: पेशकश :-
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो'बए इस्लाही कुतुब)

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना
सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद -1, मो. +91 9327168200

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم ط

नाम किताब : ज़ियाए स-दक़ात
पेशकश : शो'बए इस्लाही कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)
सिने तबाअ़त : जमादिल आख़िर, सि. 1434 हि.
क़ीमत :
नाशिर : मक्तबतुल मदीना, अह़मदाबाद - 1

तस्दीक़ नामा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

हवाला नम्बर : 101

तस्दीक़ की जाती है कि येह किताब

"ज़ियाए स-दक़ात" (उर्दू)

(मत्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे षानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोंज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
9-5-2005

E-mail : ilmia@dawateislami.net
www.dawateislami.net

मदनी इलतिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

शरफ़े इन्तिसाब

दुन्याए इस्लाम की उन दो अ़ज़ीम हस्तियों के नाम जिन्हों ने उम्मते मुस्लिमा को गुनाहों की दलदल से निकालने में अपना तारीख़ी किरदार अदा किया या'नी

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, आ़शिक़े माहे नुबुव्वत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان

और

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना

अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्ता़र क़ादिरी

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

इज्माली फ़ेहरिस्त

1	**पहला बाब :** स-दक़ा के मा'ना व अक़्साम	32
2	**दूसरा बाब :** फ़र्ज़ ज़कात का बयान	33
3	**तीसरा बाब :** ज़कात किसे दी जाए ? (मसारिफ़)	43
4	**चौथा बाब :** सिलए रेह़्मी	52
5	**पांचवां बाब :** माल जम्अ़ करना कैसा है ?	80
6	**छटा बाब :** बुख़्ल की मज़म्मत	99
7	**सातवां बाब :** फ़ज़ाइले स-दक़ात	132
8	**आठवां बाब :** राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में माल ख़र्च करना	177
9	**नववां बाब :** पोशीदा स-दक़ात और इस के फ़ज़ाइल	220
10	**दसवां बाब :** खाना खिलाने और पानी पिलाने के फ़ज़ाइल	243
11	**ग्यारहवां बाब :** क़र्ज़ देने और तंगदस्त पर आसानी करने के फ़ज़ाइल	278
12	**बारहवां बाब :** औ़रत का अपने शोहर के माल से स-दक़ा करना	293
13	**तेरहवां बाब :** ह़लाल व ह़राम माल से स-दक़ा करना	297
14	**चौदहवां बाब :** स-दक़ा दे कर रुजूअ़ करना कैसा ?	302
15	**पन्द्रहवां बाब :** स-दक़ात की वुसूलयाबी के फ़ज़ाइल और इस में ख़ियानत पर वई़दें	304
16	**सोलहवां बाब :** क़नाअ़त की अ़ज़्मत और सुवाल की मज़म्मत	316
17	**सतरहवां बाब :** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर मांगना	384
18	**अठारहवां बाब :** मांगने में ज़िद करना	392
19	**उन्नीसवां बाब :** बिग़ैर सुवाल के मिलने वाली शै लेने का हुक्म	397
20	**माख़ज़ो मराजेअ़**	405

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

नम्बर	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	सफ़्हा
1	**पहला बाब : स-दक़ा के मा'ना व अक़्साम**	32
2	**दूसरा बाब : फ़र्ज़ ज़कात का बयान**	33
3	ज़कात की ता'रीफ़	33
4	ज़कात की अक़्साम	33
5	ज़कात की फ़र्ज़िय्यत	34
6	सुन्नत से ज़कात का षुबूत	35
7	फ़र्ज़िय्यते ज़कात का मुन्किर काफ़िर है	36
8	मुख़्तसर मसाइले ज़कात	36
9	ज़कात कब फ़र्ज़ हुई ?	37
10	अदाएगिये ज़कात में मालिक बनाना शर्त़ है	37
11	ज़कात देने में निय्यत भी ज़रूरी है	37
12	मुबाह़ करने से ज़कात अदा न होगी	37
13	फ़र्ज़िय्यते ज़कात की शराइत़	38
14	माल हलाक हो गया तो ज़कात नहीं	38
15	वोह अश्या जो ह़ाजाते अस्लिया से हैं, उन पर ज़कात नहीं	39
16	ह़ाजाते अस्लिया की तफ़्सीर	39
17	ज़कात ऐसे को दी जाए जो क़ब्ज़ा करने की सलाह़िय्यत रखता हो	39
18	माल जितने अ़र्से गुमशुदा रहे उस मुद्दत पर ज़कात नहीं	39
19	माल मक्रूज़ के पास है तो ज़कात का हुक्म	39
20	ग़सब शुदा माल की ज़कात	40
21	गिरवी रखी गई चीज़ की ज़कात	40
22	माले तिजारत पर जब तक क़ब्ज़ा नहीं हुवा तो ज़कात का क्या हुक्म होगा ?	40
23	क़र्ज़ निसाब पर ग़ालिब हो तो ज़कात नहीं	40

24	ख़ाम माल पर ज़कात का हुक्म	41
25	ख़र्च के पैसों पर ज़कात का हुक्म	41
26	अहले इल्म की किताबों पर ज़कात का हुक्म	41
27	हाफ़िज़े कुरआन के लिये मुस्हफ़ शरीफ़ हाजते अस्ली नहीं	42
28	बद मज़्हबों के रद और ताईदे अहले सुन्नत की कुतुब पर ज़कात का हुक्म	42
29	माले तिजारत की दौराने साल जिन्स तब्दील हो गई तो क्या हुक्म होगा ?	42
30	मोती और जवाहिर पर ज़कात नहीं जब कि तिजारत के लिये न हों !	42
31	मालिके निसाब को अगर दरमियान साल में माल हासिल हुवा तो ?	43
32	**तीसरा बाब : ज़कात किसे दी जाए ?**	43
33	आठ मसारिफ़े ज़कात	43
34	المؤلفة قلوبهم साक़ित हो गया	44
35	बनी हाशिम सादाते किराम को ज़कात देना जाइज़ नहीं	44
36	बनू हाशिम कौन हैं ?	45
37	इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने स-दके का छुहारा उठाया !	46
38	स-दक़ात लोगों के मैल हैं और आले रसूल को हलाल नहीं	47
39	मैल क्यूं फ़रमाया ?	48
40	रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पूछा करते आया स-दक़ा है या हदिय्या	48
41	सहाबए किराम رضی اللہ عنہم अपने स-दक़ात नबिय्ये करीम ﷺ के ज़रीए तक़्सीम करवाते	49
42	स-दक़ए फ़र्ज़ ग़नी को लेना जाइज़ नहीं	50
43	**चौथा बाब : सिलए रेह़्मी**	52
44	फ़रमाने बारी तआला	52
45	वालिदैन के अदब व ता'ज़ीम में मुस्तइद रहना	52
46	रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक करने वालों की उम्रें दराज़ होती हैं	52
47	यतीम की परवरिश करने वाले बरोज़े क़ियामत सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब होंगे	53

48	इन्साफ़ येह है कि اَلّٰلّٰہُ اَلّٰلّٰہُ कहे	53
49	दूसरों के लिये वोही पसन्द करो जो अपने लिये पसन्द करते हो	53
50	अल्लाह तआ़ला ने अपनी इबादत के साथ वालिदैन से भलाई का हुक्म दिया	54
51	वालिदैन अपनी ख़िदमत के लिये नवाफ़िल छोड़ने का हुक्म दें तो छोड़ दे	54
52	वाजिबात वालिदैन के हुक्म से तर्क नहीं किये जा सकते	54
53	वालिदैन के मरने के बा'द उन के लिये फ़ातिहा व ईसाले षवाब करे	55
54	अगर वालिदैन गुनाहों के आ़दी हों तो नर्मी से इस्लाह़ करे	55
55	एक शख़्स ने बारगाहे नबवी से जिहाद की इजाज़त चाही	55
56	जब तक आ़म निकलने का हुक्म या वालिदैन की इजाज़त न हो जिहाद पर जाने की इजाज़त नहीं	56
57	वालिदैन के अदब से मुतअ़ल्लिक़ फ़रक़द सन्जी की रिवायत	57
58	क्या मैं ने अपनी वालिदा का ह़क़ अदा कर दिया ?	57
59	मां को ला'नत करने वाला ख़ुद मलऊ़न है	58
60	ह़ज़रते अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के सकरात का वाक़िआ़	58
61	स-दक़ात वालिदैन की नाराज़ी का इज़ाला नहीं हो सकते	61
62	वालिदैन के लिये दुआ़ न करना अवलाद की कजह़ाली का सबब है	61
63	अपनी अवलाद को क़त्ल न करो !!	62
64	वालिदैन के हुक़ूक़ का लिहाज़ न करना ह़राम है	62
65	ह़ज़रते बा यज़ीद बिस्ता़मी رَحْمَۃُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ का वाक़िआ़	63
66	मां बाप को नाम ले कर न पुकारे	64
67	वालिदैन (مَعَاذَ اللّٰہ) काफ़िर हों तो ईमान व हिदायत की दुआ़ करे	65
68	नादारों की इआ़नत साहि़बे इस्तिता़अ़त रिश्तेदारों पर लाज़िम है	67
69	जो रिज़्क़ में कशाइश चाहे तो सिलए रेह़मी करे	68
70	क्या तुम्हें हुकूमत मिले तो अपने रिश्ते काट डालोगे	69
71	सिलए रेह़मी की जज़ा वुस्अ़ते रिज़्क़ और ख़ुशह़ाली है	69

72	अहले क़राबत पर स-दक़े का षवाब दूना है	71
73	सिलए रेहमी में दस अच्छी ख़स्लते हैं	72
74	यतीम पर रहम खाने वाले को **अल्लाह** तआला अ़ज़ाब न देगा	73
75	अहले क़राबत के होते ग़ैरों पर स-दक़ा मक़्बूल नहीं	73
76	सब से ज़ियादा हक़ मां का है फिर बाप का	74
77	इस्तिताअ़त के बा वुजूद अहले क़राबत को देने से इन्कार करने का अ़ज़ाब	74
78	बन्दे को कौन सी चीज़ आग से बचाती है ?	75
79	अपने दीनी भाई को खिलाना एक दिरहम स-दक़ा करने से अफ़्ज़ल है	77
80	ग़ैर पर सो दिरहम के स-दक़े से अफ़्ज़ल अपने दीनी भाई पर एक दिरहम का स-दक़ा है	77
81	भूकों को खिलाने वाला सायए रहमत में होगा	78
82	**पांचवां बाब : माल जम्अ़ करना कैसा है ?**	80
83	हर आयन्दा दिन का रिज़्क़ **अल्लाह** तआला अ़ता फ़रमाता है	80
84	जब दिरहम व दीनार बने तो शैतान ने उन्हें बोसा दिया	81
85	दिरहम व दीनार मुनाफ़िक़ों की लगामें हैं	81
86	दिरहम बिच्छू हैं	81
87	किसी की पेशानी पर सज्दे के निशानात नहीं उस की माल से महब्बत देखो	82
88	नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कल के लिये कुछ ज़ख़ीरा न फ़रमाते	82
89	हज़रते उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का वाक़िआ	83
90	अच्छा होता अगर आप अपनी अवलाद के लिये जम्अ़ रखते	83
91	हज़रते ईसा عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नज़्दीक दिरहमो दीनार मिट्टी के ढेले हैं	84
92	सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पसन्द न फ़रमाते कि उन्हें कषीर माल मिले !	84
93	अबू अ़ब्दे रब का वाक़िआ	85
94	हुक़ूक़ुल्लाह की अदाएगी के बा'द माल जम्अ़ करने में हरज नहीं	85
95	अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का का'बुल अहबार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को लाठी मारना	85

96	दीनार दाग़े जाने का सबब है !!	88
97	माल बरोज़े क़ियामत अंगारे षाबित होगा	90
98	ऐ भाई ! इतना जम्अ़ करने से बचना कि शुक्र अदा न कर सको	90
99	जिस माल से हुक़ूक़ की अदाएगी हो वोह पुल सिरात़ पर मुआ़विन होगा	90
100	फ़िरिश्ते कहते हैं आगे क्या भेजा, बन्दे कहते हैं पीछे क्या छोड़ा ?	91
101	ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़रमान	91
102	माल की आफ़ात व फ़वाइद	92
103	माल के फ़वाइद	92
104	माल की आफ़ात	95
105	**छटा बाब : बुख़्ल की मज़म्मत**	99
106	बख़ील **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द नहीं	99
107	बुख़्ल, शुह़्ह़, सख़ा और जूद क्या हैं ?	99
108	इ़ल्म को छुपाना मज़्मूम है	99
109	अपनी हैषिय्यत के लाइक़ बेहतर लिबास पहनना मुस्तह़ब है	100
110	बख़ील दर अस्ल अपना ही नुक़्सान करता है	100
111	मौत से पहले ख़र्च कर लो !	100
112	माल व अवलाद को फ़ित्ना फ़रमाया गया	101
113	शैत़ान नादारी का अन्देशा दिलाता है	101
114	अब चखो मज़ा इस जोड़ने का	103
115	जिस माल की ज़कात दी गई वोह कन्ज़ नहीं	103
116	ख़र्च में ए'तिदाल मल्हूज़ रखे	104
117	सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ैबर से वापसी पर पेश आने वाला वाक़िआ़	106
118	रोज़ाना फ़िरिश्ते ख़र्च करने वालों के लिये दुआ़ और बख़ील के लिये बद दुआ़ करते हैं	106
119	सख़ावत करो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें मज़ीद अ़त़ा फ़रमाएगा	107

120	सख़ावत ईमान से है	107
121	बुख़्ल से बड़ी कौन सी बीमारी है ?	108
122	अपनी ज़रूरियात से बचा हुवा ख़र्च करना तेरे लिये ही मुफ़ीद है	108
123	बेहतरीन आदमी वोह है जो सख़ावत के साथ मुलाक़ात करे	110
124	इलाही عَزَّوَجَلَّ ! सख़ी को अच्छा इवज़ दे और बख़ील को बरबादी दे	110
125	इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नज़्दीक बख़ील को आ़दिल क़रार देना दुरुस्त नहीं	111
126	राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने से माल में बरकत होती है	111
127	बख़ील को देखना दिल को सख़्त करता है	113
128	ह़ज़रते यह़्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की एक मरतबा शैत़ान से मुलाक़ात हुई	113
129	दोस्त तीन क़िस्म के होते हैं	114
130	ऐसे उ़म्दा भुने हुए गोश्त को कैसे क़ै कर दूं ?	115
131	अहले तक़्वा का तवक्कुल भी आ'ला होता है	116
132	माल जम्अ़ करना ह़राम होता तो ज़कात कैसे फ़र्ज़ होती ?	116
133	उस के दस्तर ख़्वान का ह़ाल बयान करो !	116
134	अगर यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़मीस की सिलाई के लिये सूई मांगें तब भी मन्अ़ कर देगा	117
135	माल की लालच की मुमानअ़त	117
136	अवलाद की मह़ब्बत और ह़िर्से माल	118
137	मरवान बिन अबी ह़फ़्सा के बुख़्ल का अनोखा वाक़िआ़	120
138	मुझे फ़ुज़ूल ख़र्ची पसन्द नहीं !	121
139	सह़ाबए किराम का ख़र्च करने का जज़्बा	121
140	बुख़्ल ना ह़क़ ख़ूं रेज़ी का सबब है	123
141	एक ज़माना ऐसा होगा जब कोई स-दक़ा लेने को तय्यार न होगा !	124
142	उस ज़माने के लोग ज़ाहिद, साबिर और तारिकुद्दुन्या हो जाएंगे	125
143	सख़ी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़रीब, जन्नत के क़रीब, लोगों के क़रीब है	126

144	मोमिन में कन्जूसी और बद खुल्क़ी जम्अ़ नहीं हो सकतीं	127
145	फ़रेबी, कन्जूस और एह्सान जताने वाले जन्नत में न जाएंगे	128
146	रोटी का टुकड़ा और नमक !	129
147	जाते हो या डन्डा ले कर आऊं !!	129
148	बुख़्ल का इलाज	130
149	**सातवां बाब : फ़ज़ाइले स-दक़ात**	132
150	फ़रमाने बारी तआ़ला	132
151	ग्यारहवीं, फ़ातिहा, तीजा, चालीसवां भी स-दक़ाते नाफ़िला हैं	132
152	अस्ल नेकी येह है कि अल्लाह की महब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे	133
153	इस्नादे मजाज़ी जाइज़ है	134
154	ख़र्च करने वालों की तह्सीन में फ़रमाने इलाही	135
155	हज़रते उ़षमाने ग़नी और अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ के हक़ में नाज़िल होने वाली आयत	136
156	सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने राहे ख़ुदा में चालीस हज़ार दीनार स-दक़ा किये	137
157	हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने अपने चारों दिरहम ख़र्च कर दिये	137
158	स-दक़ा देने वालों के लिये ख़ुश ख़बरी है	138
159	स-दक़े से माल कम नहीं होता !	141
160	स-दक़ा देने वाले नुक़्सान में नहीं	141
161	स-दक़ा किये बिग़ैर मर गए तो माल किस काम का ?	142
162	स-दक़ा देने वालों को क़र्ज़े ह़सन देने वाला फ़रमाया गया	142
163	क़र्ज़े ह़सन से मुराद नफ़्ली स-दक़ात हैं (इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُمَا)	143
164	मुख़्लिस मुतसद्दिक़ के लिये बड़ा अज्र है	144
165	मुख़्लिस मु-तसद्दिक़ की क़ुव्वत पहाड़ और लौहे से भी बढ़ कर है	144
166	जो माल स-दक़ा किया गया वोह बक़ा पा जाता है	147
167	दाएं बाएं आ'माल होंगे, बीच में आ़मिल !	149

168	आग से बचो अगर्चे खजूर की एक क़ाश के ज़रीए	149
169	स-दक़ा कोताहियों को यूं मिटाता है जैसे पानी आग को	152
170	स-दक़ा अल्लाह तआला के ग़ज़ब को बुझाता है	152
171	स-दक़े से माल कम नहीं होता	153
172	दुन्या चार क़िस्म के बन्दों की है	154
173	पेशावर भिकारियों का माल कोई फ़ाइदा नहीं देता	156
174	स-दक़े की बरकत से मुतअ़ल्लिक़ सय्यिदा आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रिवायत	158
175	हर शख़्स (बरोज़े क़ियामत) अपने स-दक़े के साए में होगा	160
176	स-दक़ा क़ब्र की गर्मी से बचाता है	161
177	इख़्लास से किया गया स-दक़ा बन्दे और आग के दरमियान पर्दा है	161
178	मैं ने उस के लिये जन्नत में घर ले लिया है !!	162
179	हज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और धोबी का वाक़िआ	163
180	स-दक़ा बुराई के सत्तर दरवाज़े बन्द करता है	164
181	हज़रते मन्सूर बिन अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मजलिस का वाक़िआ	164
182	सुब्ह़ सवेरे स-दक़ा देने की फ़ज़ीलत	166
183	स-दक़ा जहन्नम से बचाव का ज़रीआ है	166
184	स-दक़ा बुरी मौत से बचाता है और नेकी उ़म्र बढ़ाती है	168
185	स-दक़ा उ़म्र बढ़ाता है	169
186	अगर येह चाहता तो बेहतर स-दक़ा कर सकता था	169
187	बनी इस्राईल के एक शख़्स का वाक़िआ	170
188	बनी इस्राईल के एक राहिब को दो रोटियों के सबब बख़्श दिया गया	171
189	स-दक़ा देने में बेहतर येह है कि नेक लोगों को दे	172
190	हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अहले इ़ल्म के साथ ख़ास भलाई करते	173
191	देने वाले की ग़रज़ क्या होनी चाहिये ?	173
192	गुल दस्तए इमामे अहले सुन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से महकते फूल	174

193	**आठवां बाब : राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करना**	177
194	क़ुरआने मजीद से ख़र्च करने वालों की फ़ज़ीलत	178
195	है कोई जो अल्लाह को क़र्ज़े ह़सन दे ?	178
196	तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक......!	179
197	ह़ज़रते दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सोह़बत से फ़ैज़ याफ़्ता एक नौ जवान का वाक़िआ़	180
198	स-दक़े से माल कम नहीं होता	182
199	साइल के हाथ में स-दक़ा पहुंचने से पहले क़बूल हो जाता है	185
200	बन्दा कहता है मेरा माल मेरा माल !!	186
201	बसरा के क़ुर्रा का वाक़िआ़	187
202	किसे अपने वारिष का माल अपने माल से ज़ियादा प्यारा है ?	187
203	इमामे ह़सन, ह़ुसैन और अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र के सफ़रे ह़ज का वाक़िआ़	189
204	कन्जूस और सख़ी की मिषालें	190
205	ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ का वाक़िआ़	192
206	क़ुरैश के एक शख़्स का वाक़िआ़	193
207	चोर, ज़ानिया और ग़नी पर स-दक़ा	193
208	हारून रशीद ने इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ को पांच सो दीनार भेजे	197
209	ह़ज़रते लैष बिन सा'द رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡهِ की सख़ावत	198
210	ऐ इब्ने आदम ! अपना ख़ज़ाना (स-दक़ा कर के) मेरे सिपुर्द कर दे। (ह़दीषे क़ुदसी)	198
211	ह़ज़रते आ'मश की बकरी बीमार हो गई	199
212	अबू त़ल्ह़ा और बैरह़ा बाग़ का स-दक़ा	200
213	इमामे शाफ़ेई और ह़म्माद बिन अबी सुलैमान رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡهِمَا	204
214	बेहतरीन स-दक़ा वोह है जिस के बा'द मोह़ताजी न पैदा हो	205
215	कैसे आना हुवा ?	205
216	ग़रीब आदमी की मशक़्क़त की कमाई का स-दक़ा अफ़्ज़ल है	206
217	मेरे पास माल जम्अ़ हो गया है जिस की वजह से ग़मगीन हूं	207

218	एक दिरहम एक लाख दिरहम से सब्क़त ले गया !!	208
219	दर-ख़्वास्त पढ़े बिग़ैर मन्ज़ूर कर ली	209
220	स-दक़ा दो अगर्चे जला हुवा खुर ही हो	211
221	अगर मेरे पास उहुद पहाड़ बराबर सोना हो	213
222	जूदो सख़ा की इन्तिहा	214
223	येह दो शे'र तो बख़ील बना देंगे	214
224	एक शख़्स के बाग़ के लिये ख़ुसूसी बादल बरसा !	215
225	हज़रते वाक़िद बिन मुहम्मद वाक़िदी के वालिद का वाक़िआ	217
226	सख़ावत जन्नत का दरख़्त है !	217
227	अज़ रूए शरअ़ सख़ावत का अदना दरजा	218
228	बहुत से ना फ़रमान सख़ावत के बाइ़स जन्नत में जाएंगे	219
229	**नववां बाब : पोशीदा स-दक़ात और उन के फ़ज़ाइल**	220
230	अ़लानिया तौर पर स-दक़ा देने से मुतअ़ल्लिक़ इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का फ़रमान	220
231	जो एह्सान जताए उस का स-दक़ा फ़ासिद हो जाता है	222
232	पोशीदा स-दक़ा रब तआ़ला के ग़ज़ब को बुझाता है	223
233	सात अश्ख़ास बरोज़े क़ियामत सायए रह्मत में होंगे	224
234	तीन शख़्सों को अल्लाह तआ़ला मह़बूब रखता है	229
235	पोशीदा स-दक़ात के पांच मआ़नी	229
236	स-दक़ा ज़ाहिर कर के देना	232
237	इज़्हार और पोशीदगी में इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वज़ाह़त	237
238	स-दक़ा करो अगर्चे अपने ज़ेवर से ही हो	237
239	पोशीदा स-दक़े के फ़वाइद अज़ इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه	242
240	**दसवां बाब : खाना खिलाने और पानी पिलाने के फ़ज़ाइल**	243
241	इर्शादे बारी तआ़ला	243
242	खाना खिलाओ और हर जाने अनजाने को सलाम करो	245

243	या रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ! जब आप को देखता हूं तो दिल बाग़ बाग़ हो जाता है !	246
244	खाना खिलाओ, सलाम फैलाओ, जन्नत में जाओ !	246
245	खाना खिलाने वालों के लिये जन्नत के ख़ूब सूरत दरीचे हैं	247
246	कुफ़्फ़ार से सख़्त कलामी इ़बादत है	249
247	मुसलमान को खाना खिलाना अस्बाबे रह़मत से है	250
248	स-दक़े का षवाब उहुद पहाड़ की मिष्ल हो जाता है	250
249	एक रोटी के टुकड़े के सबब तीन अफ़राद के लिये जन्नत !	251
250	अपने भाई की शिकम सैरी करने वाला जहन्नम से मह़फ़ूज़ रहेगा	252
251	अल्लाह तआ़ला मोहर की गई निथरी शराब पिलाएगा	254
252	ऐ इन्सान ! मैं बीमार हुवा तूने मेरी इ़यादत न की !	254
253	आज किस ने रोज़ा रखा ? (फ़ज़ीलते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ)	257
254	मुसलमान को ख़ुश करना अफ़्ज़ल आ'माल से है	259
255	खाना खिलाने वाले जन्नत के ख़ास दरवाज़े से दाख़िल होंगे	259
256	एक नेक और एक गुनहगार बन्दे का बयान	260
257	ऐ रब्ब इस का मुआ़मला मुझे सोंप दे !	262
258	पानी पिलाने के सबब जन्नत मिल गई	262
259	ह़क़ बात कहो और अपनी ह़ाजत से ज़ाइद को स-दक़ा कर दो	264
260	मश्कीज़ा फटने से क़ब्ल जन्नत में जाएगा !	265
261	हर जिगर वाले के साथ भलाई करने में अज्र है	266
262	कुत्ते को पानी पिलाने पर मग़फ़िरत	267
263	सात आ'माल का षवाब मरने के बा'द भी जारी रहता है	268
264	ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने वालिदा के ईसाले षवाब के लिये कुंवां खुदवाया	269
265	कुंवां खुदवाने का षवाब	271
266	तीन लोगों से अल्लाह तआ़ला कलामे मह़ब्बत न फ़रमाएगा (مَعَاذَاللّٰہ)	272
267	मुसलमान तीन चीज़ों में शरीक हैं	274

268	**ग्यारहवां बाब : क़र्ज़ देने और तंगदस्त पर आसानी करने के फ़ज़ाइल**	278
269	ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर षवाब	278
270	स-दक़ा दस गुना और क़र्ज़ अठारह गुना ज़ियादा अज्र रखता है	279
271	एक मरतबा क़र्ज़ देने का षवाब दो मरतबा स-दक़ा देने के बराबर है	280
272	जो किसी तंगदस्त पर आसानी करे तो अल्लाह दुन्या व आख़िरत में उस पर आसानी फ़रमाएगा	280
273	तूने कोई नेकी की है ?	281
274	कारोबारी मुआ़मलात में मक़रूज़ पर नर्मी करने की फ़ज़ीलत	282
275	जो किसी तंगदस्त को मोहलत दे उस के लिये रोज़ाना क़र्ज़ के बराबर स-दक़ा करने का षवाब	284
276	मुसलमान से दुन्यवी मुसीबत का दूर करना उख़्रवी मुसीबत के दूर होने का सबब है	285
277	मुसलमान से परेशानी दूर करने वाले के लिये नूर के दो बुक़्ए होंगे	289
278	पहला शख़्स जो बरोज़े क़ियामत सायए रह़मत में दाख़िल होगा !	291
279	जो चाहे कि दुआ़ क़बूल हो वोह तंगदस्त के लिये आसानी फ़राहम करे	291
280	**बारहवां बाब : औ़रत का अपने शोहर के माल से स-दक़ा करना**	293
281	ख़ावन्द की त़रफ़ से किस क़दर स-दक़े की इजाज़त है ?	293
282	बरबादी की निय्यत न हो	293
283	सिवाए अपनी ग़िज़ा के स-दक़ा नहीं कर सकती	294
284	अगर शोहर इजाज़त दे तो दोनों के लिये अज्र है	294
285	स-दक़ा कर और रोक मत कि तुझ से रोका जाए	296
286	**तेरहवां बाब : ह़लाल व ह़राम माल से स-दक़ा करना**	297
287	अल्लाह तआ़ला ह़लाल ही क़बूल फ़रमाता है	297
288	ह़लाल व ह़राम कमाई से मुतअ़ल्लिक़ अहम क़ानून	298
289	ह़राम माल से स-दक़े का कोई अज्र नहीं	299
290	ह़राम माल से स-दक़ा करते वक़्त षवाब की उम्मीद रखना कैसा ?	300
291	**चौदहवां बाब : स-दक़ा दे कर रुजूअ़ करना कैसा है ?**	302
292	स-दक़े में रुजूअ़ करने वाला उस कुत्ते की त़रह़ है जो कै कर के चाट ले !	302

293	**पन्दरहवां बाब : स-दक़ात की वुसूल याबी के फ़ज़ाइल और इस में ख़ियानत पर वईदें**	304
294	अल्लाह की रिज़ा के लिये हक़ के मुताबिक़ स-दक़ा वुसूल करने वाला मुजाहिदे फ़ी सबीलिल्लाह है	304
295	अमानत दार ख़ाज़िन स-दक़ा करने वालों में से है	305
296	बेहतरीन कमाई स-दक़ा वुसूल करने वाले की है जब कि इख़्लास हो	306
297	क़ियामत के दिन यूं न आना कि बिलबिलाता हुवा ऊंट उठाए हुए हो	307
298	ख़ियानत छोटी हो या बड़ी रुस्वाई का बाइ़ष है	309
299	येह तुम्हारा है और येह मुझे हदिय्या नज़राना दिया गया है	309
300	येह नज़राना नहीं बल्कि रिश्वत है	311
301	तुम पर अफ़्सोस है !	313
302	**सोलहवां बाब : क़नाअ़त की अ़ज़मत और सुवाल की मज़म्मत**	316
303	फ़क्र क़ाबिले ता'रीफ़ है	316
304	मांगने वाला अल्लाह तआ़ला से इस ह़ाल में मिलेगा कि !!	316
305	सुवालात ख़राशें हैं !	316
306	बिला ह़ाजत मांगने वाले के चेहरे पर गोश्त न होगा	318
307	इन्सान के पास सोने की वादी हो तो दूसरी की ख़्वाहिश करेगा	320
308	ग़नी का मांगना आग है !	321
309	रात का खाना ग़िना है	324
310	क़द्रे ग़िना पचास दिरहम या इस क़ीमत का सोना भी फ़रमाया	325
311	किस निसाब से सुवाल ह़राम होता है ?	326
312	जो अपना फ़क्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश करे जल्द बे नियाज़ हो जाएगा	327
313	वोह जहन्नम का गर्म पथ्थर है !!	328
314	आप के बा'द किसी से अ़तिय्या न लूंगा !	328
315	तो वोह किसी से सुवाल न करते	330
316	कौन बैअ़त करेगा ?	331
317	मुझे मेरे ख़लील صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सात बातों की वसिय्यत फ़रमाई है	332

318	तो वोह अपना दीन खो बैठता है	333
319	ऐ हकीम ! येह माल खुशनुमा खुश ज़ाएका है	334
320	ऊपर वाले हाथ से मुराद देने वाला है	336
321	सरकार صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मांगने में हमारी इ़ज़्ज़त है	337
322	जो न मांगने की ज़मानत दे मैं उस के लिये जन्नत का ज़ामिन हूं !	338
323	मांगने वाला हक़ीक़तन आग तलब करता है	340
324	हज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का एक गाउं से गुज़र !	341
325	जिस पर ऐसी आफ़त आए कि माल बरबाद कर दे उस के लिये सुवाल हलाल है	342
326	मांगने से एहतिराज़ करो अगर्चे मिस्वाक ही क्यूं न हो	345
327	लालच फ़क्र है और (लोगों से) ना उम्मीदी मालदारी है	345
328	पहले तीन जो जन्नत में जाएंगे और पहले तीन जो जहन्नम में !	346
329	आप कहां से खाते हैं ?	348
330	जिस क़दर मुमकिन हो सुवाल से परहेज़ करो	349
331	जो ग़नी बनना चाहे **अल्लाह** उसे ग़नी कर देगा	349
332	जो सब्र चाहे **अल्लाह** तआला उसे सब्र अता करेगा	350
333	मैं अपने बन्दे के गुमान के क़रीब हूं	351
334	अमीरी ज़ियादा माल व अस्बाब नहीं बल्कि दिल की ग़िना का नाम है	352
335	हमारे लिये इ़ल्म है और जाहिलों के लिये माल	353
336	मिस्कीन कौन ?	355
337	जो मुसलमान ब किफ़ायत रिज़्क़ पाए और क़नाअ़त करे काम्याब है	356
338	पेट के मश्कीज़े का भर जाना तेरे लिये काफ़ी है	357
339	जो ज़रूरत से सिवा हो किसी फ़क़ीर को दे दो	357
340	कुम्बुरा (चन्डोल परन्दे) की हिकायत	359
341	क़नाअ़त ऐसा ख़ज़ाना है जो कभी ख़त्म नहीं होता	360
342	हज़रते मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की हिकायत	362

343	मांगने से बेहतर है कि रस्सी ले कर लकड़ियों के गठ्ठे उठाए	366
344	हज़रते दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने हाथ की कमाई का खाते	366
345	अगर मांगना ना गुज़ीर हो तो नेक लोगों से मांगे	368
346	लालच फ़क्र है और ना उम्मीदी तवंगरी	369
347	हि़र्स व लालच का इलाज और हुसूले क़नाअ़त की दवा	370
348	सुवाल करना कैसा है ?	379
349	**सतरहवां बाब : अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **के नाम पर मांगना**	384
350	इस त़रह़ मांगने वाला मलऊ़न है	384
351	जो अल्लाह के नाम पर मांगे उसे कुछ न कुछ दे दो	384
352	कुछ न पाओ तो दुआ़एं दो	385
353	मलऊ़न है वोह जो अल्लाह के नाम पर मांगने वाले को मन्अ़ कर दे	386
354	लोगों में से बद तरीन शख्स !!	387
355	अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम का सुवाल और ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	387
356	**अठारहवां बाब : मांगने में इस्रार करना**	392
357	बहुत क़बीह़ फे़'ल है	392
358	बरकत न होगी	392
359	इस की मिष्ल ऐसी है कि खाए भी और सैर भी न हो	393
360	वोह अपने कपड़ों में आग ले कर जाता है	394
361	**उन्नीसवां बाब : बिग़ैर सुवाल के मिलने वाली शै लेने का हुक्म**	397
362	इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا तोह़फ़ा रद न फ़रमाते	397
363	सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने तोह़फ़ा क़बूल फ़रमाया	399
364	बिग़ैर हि़र्स व सुवाल के कुछ मिले तो क़बूल करना चाहिये	400
365	जो तुम्हें दिया जाए वोह ले लो	401
366	मक्कए मुकर्रमा के एक मुजावर का वाक़िआ़	402
367	इन्सान का ह़क़ सिर्फ़ तीन चीज़ों में है	404

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

"स-दक़ा बुरी मौत को दूर करता है" के इक्कीस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "21 निय्यतें"

*(अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)*

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।" (الجامع الصغیر، ص۵۵۷، الحدیث۹۳۲۶، دارالکتب العلمیۃ بیروت)

दो मदनी फूल :

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।
﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करुंगा। (इसी सफ़्ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल इम्कान इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा। ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढूंगा। ﴾12﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़्ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा।

﴾14﴿ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते ह़ुसूले इल्मे दीन रोज़ाना कम अज़् कम चार सफ़ह़ात पढ़ कर इल्मे दीन ह़ासिल करने के षवाब का ह़क़दार बनूंगा। ﴾15﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾16﴿ इस ह़दीष पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।" (مؤطا امام مالك، ج٢،ص٤٠٧، رقم: ١٧٣١،دارالمعرفة بيروت) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़्फ़तन दूंगा ﴾17﴿ जिन को दूंगा ह़त्तल इम्कान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (मषलन 63) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये ﴾18﴿ इस किताब के मुत़ालए़ का सारी उम्मत को ईसाले षवाब करूंगा ﴾19﴿ जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिये आयते करीमा : "فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** "तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं।" (پ١٤، النحل:٤٣) पर अ़मल करते हुए उ़-लमा से रुजूअ़ करूंगा ﴾20﴿ हर साल एक बार येह किताब पूरी पढ़ा करूंगा ﴾21﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

*अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुन्फ़रिद सुन्नतों भरा बयान "**निय्यत का फल**" और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा कार्ड्ज़ और पेम्फ़्लेट "**मक्तबतुल मदीना**" की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब फ़रमाइये।*

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम کَثَّرَھُمُ اللّٰہ تعالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब

﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब

﴾5﴿ शो'बए तख़रीज ﴾6﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब

“ **अल मदीनतुल इल्मिय्या**” की अव्वलीन तरजीह़ **सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का खुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “**दा'वते इस्लामी**” की तमाम मजालिस ब शुमूल “**अल मदीनतुल इल्मिय्या**” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़्रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم

रमज़ानुल मुबारक सि. 1425 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

पेशे लफ़्ज़

राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करना बहुत बड़ी सआ़दत है। जा ब जा क़ुरआने पाक में इस की तरग़ीब और फ़ज़ाइल मौजूद हैं। चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ وَاللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ (پ۳، البقرۃ:۲۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन की कहावत जो अपने माल* ***अल्लाह*** *की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़रह़ जिस ने उगाईं सात बालीं हर बाल में सो दाने और* ***अल्लाह*** *इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और* ***अल्लाह*** *वुस्अ़त वाला और इ़ल्म वाला है।*

इस आयते मुबारका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़र्च करने वालों की ता'रीफ़ फ़रमाई है येह ख़र्च करना तमाम अब्वाबे ख़ैर को शामिल है आ़म अज़ीं कि स-दक़ए वाजिबा से हो या नफ़्ली स-दक़ात से, (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान माख़ूज़न) मज़ीद इर्शादे आ़लीशान है कि

اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَاۤ اَذًى لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ۝ (پ۳،البقرۃ:۲۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जो अपने माल* ***अल्लाह*** *की राह में ख़र्च करते हैं फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें उन का नेग (षवाब) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।*

इस आयते मुबारका में भी ख़र्च करने वालों को षवाब के हुसूल और ख़ौफ़ व हुज़्न के दूर होने की बिशारत दी जब कि लेने वाले पर एह़सान न जतलाए कि तुम मजबूर, मुफ़्लिस व नादार थे हम ने तुम्हारी इआ़नत न की होती तो किस ह़ाल में होते वग़ैरा। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान माख़ूज़न) लिहाज़ा स-दक़ा करने वाले को चाहिये कि **अल्लाह** की रिज़ा और आख़िरत में षवाब के हुसूल के लिये ख़र्च करे न कि एह़सान जतलाने, इस के इवज़ में उस से ख़िदमत लेने और अपने काम निकलवाने के लिये।

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी अपने इर्शादाते आ़लिया में स-दक़ा के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए और मौक़अ़ ब मौक़अ़ मुसलमानों को तरग़ीब दिलाई कि वोह हर ह़ाल में स-दक़ा अदा करते रहें चुनान्चे कुछ अह़ादीषे मुबारका नक़्ल की जाती हैं जिन से स-दक़ात के फ़ज़ाइल व अहम्मिय्यत के बारे में बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

﴾1﴿ बेशक स-दक़ा रब عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को बुझाता और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है। (سنن الترمذي،ج٢،ص١٤٦،الحديث٦٦٤) ﴾2﴿ स-दक़ा बुराई के सत्तर दरवाज़े बन्द करता है। (فردوس الاخبار،ج٢،ص٣٥،الحديث٣٦٥١) ﴾3﴿ स-दक़ा गुनाह को मिटा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है। (سنن الترمذي،ج٢،ص١١٨،الحديث٦١٤) ﴾4﴿ बेशक मुसलमान का स-दक़ा उ़म्र को बढ़ाता है और बुरी मौत को रोकता है। (فردوس الاخبار،ج٢، ص٣٥، الحديث٣٥٧٨) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ, उस की याद और ख़ुफ़्या व ज़ाहिर स-दक़े की कषरत से अपनी निस्बत दुरुस्त करो, तो तुम रोज़ी और मदद दिये जाओगे और तुम्हारी बिगड़ियां संवर जाएंगे। (سنن ابن ماجه،ج٢،ص٥،الحديث١٠٨١)

《6》 स-दक़ा सत्तर क़िस्म की बलाओं को रोकता है जिन में आसान तर बला, बदन बिगड़ना और सफ़ेद दाग़ हैं। (تاريخ البغداد،ج٨، ص٢٠٤) 《7》 दोज़ख़ से बचो अगर्चे आधा छूहारा दे कर कि वोह टेढ़ेपन को सीधा और बुरी मौत को दूर करता है। (مسند أبي يعلى، ج١، ص٥٧،الحديث ٨٠) 《8》 सुब्ह के स-दक़े आफ़ात को दूर कर देते हैं। (فردوس الاخبار،الحديث٣٦٥٣،ج٢، ص٣٥) 《9》 बेशक स-दक़ा और सिलए रेहूम, इन दोनों से **अल्लाह** तआ़ला उ़म्र बढ़ाता है और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है और मकरूह और अन्देशे को दूर करता है। (مسند أبي يعلى،ج٣،ص٣٩٨، الحديث ٤٠٩٠) 《10》 सुब्ह सवेरे स-दक़ा दो कि बला स-दक़े से आगे क़दम नहीं बढ़ाती। (المعجم الأوسط،ج٤،ص١٨٠،الحديث ٥٦٤٣) 《11》 भलाइयों के काम बुरी मौतों से बचाते हैं और पोशीदा ख़ैरात रब का ग़ज़ब बुझाती है और रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक उ़म्र में बरकत है और हर नेकी स-दक़ा है और दुन्या में एह़सान वाले, वोही आख़िरत में एह़सान पाएंगे और दुन्या में बदी वाले वोही आख़िरत में बदी देखेंगे और सब में पहले जो जन्नत में जाएंगे वोह नेक बरताव वाले हैं। (المعجم الأوسط، ج٤،ص ٣١١، الحديث ٦٠٨٦)

स-दक़ात के फ़ज़ाइल व मसाइल पर मुश्तमिल किताब "**जि़याए स-दक़ात**" आप के हाथों में है। आयाते क़ुरआनिया और अह़ादीषे मुबारका की रोशनी में नीज़ बुज़ुर्गाने दीन की सीरत के पस मन्ज़र में इस किताब में स-दक़ात की अहम्मिय्यत को उजागर करने की कोशिश की गई है और स-दक़ाते वाजिबा की अदाएगी के साथ साथ नफ़्ली स-दक़ात देने की भी तरग़ीब दिलाई गई है। लिहाज़ा इस किताब का मुत़ालआ़ करने के साथ साथ दूसरों को भी पढ़ने की तरग़ीब दिलाइये और ढेरों षवाब कमाइये।

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा 'वते इस्लामी**" की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" ने स-दक़ात के मौज़ूअ़ की अहम्मिय्यत के पेशे नज़र इस किताब का इन्तिख़ाब किया और इसे शाएअ़ करने का इरादा किया । और मदनी उ़-लमा دامت فیوضھم ने ज़ैल में दर्ज उमूर पर काम करने की कोशिश की ।

★ कोम्पयूटर कम्पोज़िंग जिस में अ़लामाते तरक़ीम का ख़याल रखने की कोशिश की गई है ।

★ मुकर्रर प्रूफ़ रीडिंग ताकि अग़लात़ का इम्कान कम से कम हो ।

★ अह़ादीष व रिवायात, मसाइले फ़िक़्हिय्यह और वाक़िआ़त की ह़त्तल मक़्दूर तख़्रीज कर दी गई है ।

★ आयाते क़ुरआनिया का तर्जमा कन्ज़ुल ईमान से लिखा गया है ।

★ मआख़ज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के नामों, उन के सिने वफ़ात और मताबेअ़ के साथ ज़िक्र कर दी गई है ।

बारगाहे रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ में इल्तिजा है कि मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" के उ़-लमाए किराम دامت فیوضھم की इन कोशिशों को शरफ़े क़बूलिय्यत अ़ता फ़रमाए और उन्हें दीनो दुन्या की बरकतों से मालामाल फ़रमाए । اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم

शो 'बए इस्लाह़ी कुतुब

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

मुक़द्दमा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल्लाह तआ़ला का करोड़ हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें इन्सान बनाया बिल ख़ुसूस हमें दौलते ईमान से सरफ़राज़ और दामने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अ़त़ा फ़रमाया। दर ह़क़ीक़त तख़्लीक़े जिन्न व इन्स का मक़्सद ख़ालिक़े बह़रो बर, मालिके ख़ुश्को तर, रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने मजीद में अपनी इबादत फ़रमाया :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (پ۲۷، الذّٰرِیٰت:۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें।*

इबादत में हर वोह अ़मल शामिल है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी के ह़ुसूल के लिये किया जाए। बा'ज़ इबादात फ़र्ज़ या वाजिब होती है, जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात, ह़ज इन इबादात के तर्क पर अ़ज़ाबे नार और नाराज़गिये रब्बे क़ह्हार की वईदें हैं। नीज़ बा'ज़ इबादात नफ़्ल व मुस्तह़ब होती हैं, जैसे नफ़्ल नमाज़, नफ़्ली रोज़ा, नफ़्ली स-दक़ात, तिलावते क़ुरआने मजीद, मह़ाफ़िले ज़िक्रो ना'त का इन्इ़क़ाद, ना'त शरीफ़ पढ़ना व सुनना, मद्रसे चलाना, ईसाले षवाब के लिये खाना खिलाना, लंगरे रसाइल करना वग़ैरहा। मगर तमाम आ'माल का दारो मदार निय्यत पर है। मषलन खाना खाना एक मुबाह़ अ़मल है लेकिन अगर इबादत पर क़ुव्वत के ह़ुसूल की निय्यत से खाया जाए तो अब येह अ़मल इबादत है इसी त़रह़ बा'ज़ अवक़ात दिखावे की निय्यत से पढ़ी गई नमाज़ इन्सान के गुनहगार होने का सबब बन जाती है। ह़ालां कि खाना खाने के अ़मल को नेकी नहीं समझा जाता जब कि नमाज़ पढना नेकी जाना जाता है। दर अस्ल आ'माल की जज़ा व

सज़ा की बुन्याद इख़्लास व हुस्ने निय्यत पर मुन्ह़सिर है। बुख़ारी शरीफ़ की पहली ह़दीषे मुबारका है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है,

"إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِءٍ مَّا نَوٰى" (अल ह़दीष)[1]

या'नी, बेशक आ'माल का इन्ह़िसार निय्यतों पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जो उस ने निय्यत की। लिहाज़ा मुमकिन हो तो हर मुबाह़ काम में रिज़ाए बारी तआ़ला के ह़ुसूल की निय्यत कर लेना चाहिये।

ज़ेरे नज़र किताब नफ़्ली स-दक़ात की फ़ज़ीलतों और स-दक़ात से मुतअ़ल्लिक़ दीगर बातों पर मुश्तमिल है। साथ ही एक बाब मुख़्तसरन फ़र्ज़ ज़कात और मसारिफ़े ज़कात के बयान का भी शामिल किया गया है ताकि मौज़ूअ़ में ख़ला न रहे।

दीगर मुतअ़ल्लिक़ात में सिलए रेह़मी (या'नी रिश्तेदारों बिल ख़ुसूस वालिदैन के साथ भलाई), माल जम्अ़ करने का बयान, बुख़्ल की मज़म्मत, राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में माल ख़र्च करने, पोशीदा स-दक़ात और इन के फ़ज़ाइल, खाना खिलाने और पानी पिलाने की फ़ज़ीलत, क़र्ज़ देने और तंगदस्त पर आसानी करने के फ़ज़ाइल, औ़रत का अपने शोहर के माल से स-दक़ा करने, ह़लाल व ह़राम माल से स-दक़ा करने, स-दक़ा दे कर रुजूअ़ करने (या'नी, वापस ले लेने), स-दक़ात की वुसूल याबी के फ़ज़ाइल और इस में ख़ियानत पर वई़दों, क़नाअ़त की अ़ज़मत और सुवाल की मज़म्मत, **अल्लाह** के नाम पर मांगने, मांगने में इस्रार करने और बिग़ैर सुवाल के मिलने वाली चीज़ लेने के हुक्म, के अब्वाब शामिले किताब हैं।

مدینہ

1 (صحیح البخاری، کتاب بدء الوحي، باب کیف کان بدء الوحي إلی رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث:۱، ج۱، ص۵)

स-दक़ा सिर्फ़ येही नहीं कि माली तौ़र पर किसी मुस्तह़िक़ या ज़रूरत मन्द की मदद की जाए, बल्कि बा'ज़ अवक़ात स-दक़े का षवाब मुस्कुरा कर भी कमाया जा सकता है। जी हां ! अगर ब निय्यते रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ किसी इस्लामी भाई के सामने मुस्कुराए तो येह भी स-दक़ा है, बल्कि रास्ते से कांटा, हड्डी, पथ्थर वग़ैरा का हटा देना भी स-दक़ा है। चुनान्चे,

عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "تَبَسُّمُكَ فِي وَجْهِ أَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ، وَأَمْرُكَ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيُكَ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ، وَإِرْشَادُكَ الرَّجُلَ فِيْ أَرْضِ الضَّلَالِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَبَصَرُكَ لِلرَّجُلِ الرَّدِيْءِ الْبَصَرِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَإِمَاطَتُكَ الْحَجَرَ وَالشَّوْكَةَ وَالْعَظْمَ عَنِ الطَّرِيْقِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَإِفْرَاغُكَ مِنْ دَلْوِكَ فِيْ دَلْوِ أَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ".[1]

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, तुम्हारा अपने भाई के लिये मुस्कुराना भी स-दक़ा है, नेकी की दा'वत देना भी स-दक़ा है, बुराई से रोकना भी स-दक़ा है, भटके हुए की राहनुमाई करना भी स-दक़ा है, कमज़ोर निगाह वाले की मदद करना भी स-दक़ा है, रास्ते से पथ्थर, कांटा और हड्डी का हटा देना भी स-दक़ा है, अपने डोल से अपने भाई के डोल में पानी डाल देना भी स-दक़ा है।[1]

अल ग़रज़, ह़ुस्ने निय्यत से किये जाने वाले तमाम आ'माल पर अज्रो षवाब मिलता है। हां मगर फ़क़ीर, अगर अपनी तंगदस्ती को छुपाए और लोगों के सामने दस्त दराज़ी और मांगने से बाज़ रहे तो उस के लिये फ़िरावानिये रिज़्क़ की बिशारत है, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

---

[1] (سنن الترمذي، كتاب البر والصلة، باب ما جاء في صنائع المعروف، الحديث: ١٩٥٦، ج٣، ص٩٠)

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ جَاعَ أَوِ احْتَاجَ فَكَتَمَهُ النَّاسَ، وَأَفْضٰى بِهٖ إِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى كَانَ حَقًّا عَلَى اللّٰهِ أَنْ يَّفْتَحَ لَهٗ قُوْتَ سَنَةٍ مِنْ حَلَالٍ".[1]

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है, फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो भूका या ह़ाजत मन्द हो फिर उसे लोगों से छुपाए और (अपना मुआमला) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर दे तो **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मए करम पर है कि उस के लिये एक साल तक ह़लाल रोज़ी के दरवाज़े खोल दे।[1]

इस ह़दीष के तह़्त मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं "येह फ़रमान बिल्कुल दुरुस्त है और मुजर्रब है अपनी फ़क़ीरी छुपाने वाले بفضلہ تعالی अमीर हो जाते हैं कभी जल्द और कभी देर से मगर फ़क़त़ छुपाने पर किफ़ायत न करे कमाने की कोशिश करे येह साल भर की रोज़ी आस्मान से नहीं बरसेगी बल्कि अस्बाब से मिलेगी।"[2]

ग़रज़ येह कि इस किताब में स-दक़ात व मुतअ़ल्लिक़ात के फ़ज़ाइल पर ढेरों मदनी फूल जम्अ़ करने की सअ़्य की गई है। नज़्रे षानी की भी ह़त्तल इम्कान तरकीब की गई, मगर ब-शरी तक़ाज़ों की बिना पर अग़लात़ का वुजूद ख़ाली अज़ इम्कान नहीं। बराए मदीना ! अगर किसी क़िस्म की ग़लत़ी-ख़ामी पाएं तो तह़रीरी त़ौर पर इस्लाह़ फ़रमाएं।

جَزَاکُمُ اللّٰہُ خَیْراً فِی الدَّارَیْنِ- (اٰمِیْن)

अबू ज़िया अ़त्तारी

مدینہ

[1] (شعب الإيمان، باب في الصبر على المصائب، فصل في ذكر ما في الأوجاع... إلخ، الحديث: ١٠٠٥٤، ج٧، ص٢١٥)
(مشكاة المصابيح، كتاب الرقاق، باب فضل الفقراء وما كان من عيش النبي صلى الله تعالى عليه وسلم، الحديث: ١٨٦٤، ج١، ص٣٥٤)
[2] (مرآة المناجيح، ج٥، ص٨٤)

स-दक़ा के मा'ना व अक़्साम

लुग़त में स-दक़े से मुराद عَطِيَّةٌ يُرَادُبِهَا الْمَثُوبَةُ لَا الْمَكْرُمَةُ (المنجد) या'नी, वोह अ़तिय्या है जिस से इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई के बजाए षवाब का इरादा किया जाए।

और अ़ल्लामा सय्यिद शरीफ़ जुरजानी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ह़नफ़ी ने स-दक़े की ता'रीफ़ इन अल्फ़ाज़ में बयान की :

هِيَ الْعَطِيَّةُ تَبْتَغِي بِهَا الْمَثُوبَةَ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى.[1]

या'नी स-दक़ा वोह अ़तिय्या है जो **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह से षवाब की उम्मीद पर दिया जाए।[1]

तिरमिज़ी शरीफ़ की एक ह़दीष में स-दक़े की चन्द अक़्साम बयान फ़रमाई गईं हैं :

عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم "تَبَسُّمُكَ فِي وَجْهِ أَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ، وَأَمْرُكَ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيُكَ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ، وَإِرْشَادُكَ الرَّجُلَ فِي أَرْضِ الضَّلَالِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَبَصَرُكَ لِلرَّجُلِ الرَّدِيءِ الْبَصَرِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَإِمَاطَتُكَ الْحَجَرَ وَالشَّوْكَةَ وَالْعَظْمَ عَنِ الطَّرِيْقِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَإِفْرَاغُكَ مِنْ دَلْوِكَ فِي دَلْوِ أَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ".[2]

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, तुम्हारा अपने भाई के लिये मुस्कुराना भी स-दक़ा है, नेकी की दा'वत देना भी स-दक़ा है, बुराई से रोकना भी स-दक़ा है, भटके हुए की राहनुमाई करना भी स-दक़ा है, कमज़ोर निगाह वाले की मदद करना भी स-दक़ा है, रास्ते से पथ्थर, कांटा और हड्डी का हटा देना भी स-दक़ा है, अपने डोल से अपने भाई के डोल में पानी डाल देना भी स-दक़ा है।[2]

---

١ (كتاب التعريفات، باب الصاد، ص ٩٤)

٢ (سنن الترمذي، كتاب البر والصلة، باب ما جاء في صنائع المعروف، الحديث: ١٩٥٦، ج٣، ص ٩٠)

नीज क़र्ज़ देना भी स-दक़ा की क़िस्म से है, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ”كُلُّ قَرْضٍ صَدَقَةٌ.“[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, हर क़र्ज़ स-दक़ा है । [1]

फ़र्ज़ ज़कात का बयान

ज़कात की ता'रीफ़ :

अ़ल्लामा शैख़ निज़ामुद्दीन ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुतवफ़्फ़ा 1161 हि. फ़रमाते हैं, هي تمليك المال من فقير مسلم غير هاشمي، ولا مولاه بشرط قطع المنفعة عن الملك من كل وجه لله تعالى، هذا في الشرع كذا في "التبيين".[2]

या'नी, ज़कात शरअ़ में अल्लाह के लिये माल के एक ह़िस्से का जो शरअ़ ने मुक़र्रर किया है मुसलमान फ़क़ीर को मालिक कर देना है और फ़क़ीर न हाशिमी हो न हाशिमी का आज़ाद कर्दा ग़ुलाम और अपना नफ़्अ़ उस से बिल्कुल जुदा कर ले । [2] (बहारे शरीअ़त, मसाइले फ़िक़्हिय्या, ह़िस्सा . 5 स. 7)

ज़कात की अक़्साम :

फ़र्ज़िय्यत और वुजूबिय्यत के ए'तिबार से ज़कात की दो क़िस्में हैं, चुनान्चे इमाम अ़लाउद्दीन अबू बक्र बिन मसऊ़द कासानी ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुतवफ़्फ़ा 587 हि. फ़रमाते हैं,

---

[1] (شعب الإيمان،باب في الزكاة، فصل في القرض،الحديث:٣٥٦٣، ج٣،ص٢٨٤)
(المعجم الصغير للطبراني،الحديث: ٤٩٢،ص٢٤٦)
(المعجم الكبير، الحديث: ٣٤٩٨، ج٤، ص٤١٧)

[2] (الفتاوى الهندية المعروف بعالمكيرية،كتاب الزكاة، الباب الأول في تفسيرها... إلخ، ج١،ص١٧٠)

الزكاة في الأصل نوعان: فرض، وواجب؛ فالفرض زكاة المال، والواجب زكاة الرأس وهي صدقة الفطر.[1]

या'नी, ज़कात की दर अस्ल दो क़िस्में हैं : एक फ़र्ज़ और दूसरी वाजिब। जहां तक फ़र्ज़ का तअ़ल्लुक़ है तो वोह माल की ज़कात है और रही बात वाजिब की तो वोह जान का स-दक़ा है और वोह स-दक़ए फ़ित्र है।[1]

ज़कात की फ़र्ज़िय्यत :

इमाम कासानी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं,

فالدليل على فرضيتها الكتاب، والسنة والإجماع، والمعقول: أما الكتاب فقوله تعالى: ﴿وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ﴾ [البقرة:٢/٤٣] وقوله عزوجل: ﴿خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا﴾ [التوبة:٩/١٠٣] وقوله عزوجل: ﴿وَالَّذِيْنَ فِيْٓ أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۝ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ﴾ [المعارج:٧٠/٢٤-٢٥] الحق المعلوم هو الزكاة.

ज़कात की फ़र्ज़िय्यत किताबुल्लाह, सुन्नते रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, इज्माए़ उम्मत और क़ियास से षाबित है। जहां तक किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ का तअ़ल्लुक़ है तो **अल्लाह** तआ़ला का फ़रमान है : "और ज़कात दो" (कन्ज़ुल ईमान) और : "ऐ मह़बूब इन के माल में से ज़कात तह़सील करो जिस से तुम इन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो" (कन्ज़ुल ईमान) और : "और वोह जिन के माल में एक मा'लूम ह़क़ है उस के लिये जो मांगे और जो मांग भी न सके तो मह़रूम रहे" (कन्ज़ुल ईमान) यहां "मा'लूम ह़क़" से मुराद **ज़कात** है।

مدینہ
[1] (بدائع الصنائع في ترتيب الشرائع، كتاب الزكاة ص ٢٧١، ج ٢)

इमाम कासानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मजीद फ़रमाते हैं,

وأما السنّة: فما ورد في المشاهير عن رسول اللّٰه صلى اللّٰه تعالى عليه واله وسلم : أنه قال: "بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ: شَهَادَةِ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ، وَأَنَّ مُحَمَّداً رَّسُوْلُ اللّٰهِ، وَإِقَامِ الصَّلَاةِ، وَإِيْتَاءِ الزَّكَاةِ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ، وَحَجِّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيْلًا"[1] وروي عنه ـ عليه الصلاة والسلام ـ أنّه قال عام حجة الوداع: "أُعْبُدُوْا رَبَّكُمْ، وَصَلُّوْا خَمْسَكُمْ، وَصُوْمُوْا شَهْرَكُمْ، وَحُجُّوْا بَيْتَ رَبِّكُمْ، وَأَدُّوْا زَكَاةَ أَمْوَالِكُمْ طَيِّبَةً بِهَا أَنْفُسُكُمْ تَدْخُلُوْا جَنَّةَ رَبِّكُمْ"[2][3]

या'नी जहां तक सुन्नते रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का तअ़ल्लुक़ है तो जैसा कि मशहूर अहादीष में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से वारिद है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस्लाम की बिना पांच बातों पर है, गवाही देना कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद [صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم] **अल्लाह** तआ़ला के रसूल हैं, नमाज़ का क़ाइम करना, ज़कात की अदाएगी, रमज़ान के रोज़े और बैतुल्लाह का ह़ज हर उस शख़्स पर जो इस की इस्तिताअ़त रखता हो । और मरवी है कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हिज्जतुल वदाअ़ वाले साल फ़रमाया : "अपने रब की बन्दगी करो, अपनी पांच नमाज़ें पढ़ो, अपने माह (रमज़ान) के रोज़े रखो, अपने रब के घर का ह़ज करो और ख़ुश दिली से अपने अम्वाल की ज़कात दो और अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओ ।"

[1] (صحيح البخاري، كتاب الزكاة،باب دعاؤكم إيمانكم،الحديث:٨،ج١،ص١٠)
[2] (المسند للإمام أحمد،مسند أبي أمامة الباهلي،الحديث:٢٢٥١٤،ج٧،ص٣٩٦)
[3] (بدائع الصنائع في ترتيب الشرائع،كتاب الزكاة،ج٢،ص٣٧١ـ٣٧٣)

ज़कात की फ़र्ज़िय्यत का मुन्किर काफ़िर है

जक़ात की फ़र्ज़िय्यत क़त़्ई है, इस का मुन्किर काफ़िर और न देने वाला फ़ासिक़ और क़त्ल का मुस्तह़िक़ और अदा में ताख़ीर करने वाला गुनहगार और मरदूदुश्शहादह है। चुनान्चे

अ़ल्लामा निज़ामुद्दीन ह़नफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

يكفر جاحدها ويقتل مانعها هكذا في "محيط السرخسي"۔[1]

या'नी, ज़कात की फ़र्ज़िय्यत का मुन्किर काफ़िर है और न देने वाला क़त्ल का मुस्तह़िक़ है।[1]

शैख़ शम्सुद्दीन तमर ताशी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

فيأثم بتأخيرها وترد شهادته[2]

या'नी ज़कात की अदाएगी में (बिला उ़ज़्र) ताख़ीर करने वाला गुनाहगार और मर्दूदुश्शहादह है।[2]

मुख़्तसर मसाइले ज़कात

चूंकि किताब का अस्ल मक़्सद नफ़्ली स-दक़ात के फ़ज़ाइल और इस के मुतअ़ल्लिक़ात बयान करना है, लिहाज़ा फ़र्ज़ ज़कात के बयान को ज़िम्नन, तबर्रुकन और इख़्तिसारन ज़िक्र किया जा रहा है। और ज़ियादा तर मसाइल का बयान बहारे शरीअ़त से किया जाएगा ताकि सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ख़ुसूसी फ़ैज़ भी ह़ासिल रहे और इज्तिनाब अज़ त़त्वील भी मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रहे। तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त के पांचवें हिस्से का मुत़ालआ़ करें।

---

[1] (الفتاوى الهندية المعروف بعالمكيرية، كتاب الزكاة، الباب الأول في تفسيرها وصفتها وشرائطها، ج١، ص١٧٠)

[2] (تنوير الأبصار مع الدر المختار، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٢٧، دار المعرفة بيروت)

﴾1﴿ ज़कात सि. 2 हि. में रोज़ों से क़ब्ल फ़र्ज़ हुई अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन हस्कफ़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, فرضت في السنة الثانية قبل فرض رمضان.[1]

﴾2﴿ अदाएगिये ज़कात के लिये ज़रूरी है कि जिसे दे रहा है उसे मालिक बना दे चुनान्चे अ़ल्लामा अबुल बरकात अ़ब्दुल्लाह बिन अहमद नस्फ़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुतवफ़्फ़ा 710 हि. फ़रमाते हैं :

هي تمليك المال من فقير مسلم ... إلخ.[2]

﴾3﴿ अदाएगिये ज़कात के लिये ज़रूरी है कि ब वक़्ते अदाएगी ज़कात की निय्यत भी हो और अगर देते वक़्त निय्यत न की मगर देने के बा'द की जब कि माल फ़क़ीर के हाथ में मौजूद हो या वकील (बराए अदाएगिये ज़कात) को माल देते वक़्त ज़कात की निय्यत कर ले फिर वकील फ़क़ीर को बिला निय्यत ही माल दे दे तो दोनों सूरतों में ज़कात की अदाएगी दुरुस्त होगी।

चुनान्चे अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन हस्कफ़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं :

لو دفع بلا نية ثمّ نوى والمال قائم في يد الفقير، أو نوى عند الدفع للوكيل ثم دفع الوكيل بلا نيّة، جاز نية الآمر.[3] (ملخصاً)

﴾4﴿ मुबाह़ कर देने से ज़कात अदा न होगी मषलन फ़क़ीर को ब निय्यते ज़कात खाना खिला दिया ज़कात अदा न हुई कि मालिक कर देना नहीं पाया गया हां अगर खाना दे दिया कि चाहे खाए या ले जाए तो अदा हो गई। यूंही ब निय्यते ज़कात फ़क़ीर को कपड़ा दे दिया या पहना दिया अदा हो गई। [4]

مدینہ

[1] (الدرالمختار مع ردالمحتار، کتاب الزکاۃ، ج۳، ص۱۲۶)
[2] (کنزالدقائق مع البحرالرائق، کتاب الزکاۃ، ج۲، ص۳۵۲)
[3] (الدرالمختار مع ردالمحتار، کتاب الزکاۃ، ج۳، ص۱۲۷)
4.(बहारे शरीअ़त ब ह़वाला दुर्रे मुख़्तार, हिस्सा पन्जुम, स. 8)

﴾5﴿ फ़क़ीर को ब निय्यते ज़कात मकान रहने को दिया, ज़कात अदा न हुई कि माल का कोई हिस्सा उसे न दिया बल्कि मन्फ़अ़त का मालिक किया।[1]

﴾6﴿ ज़कात की फ़र्ज़िय्यत की शराइत़ में से आ़क़िल होना, बालिग़ होना, मुसलमान होना, आज़ाद होना, और क़र्ज़ और ह़ाजते अस्लिया से फ़ारिग़ ब क़द्रे निसाब माले नामी (बढ़ने वाला माल) जिस पर साल गुज़र चुका हो, का मालिक होना है। चुनान्चे अ़ल्लामा अबुल बरकात अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नस्फ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुतवफ़्फ़ा 710 हि. फ़रमाते हैं :

شرط وجوبها العقل والبلوغ والإسلام

والحرية وملك نصاب حولي فارغ عن الدين وحاجته الأصلية نام ولو تقديراً.[2]

﴾7﴿ माल अगर हलाक हो गया तो ज़कात नहीं चुनान्चे अ़ल्लामा अबुल ह़सन अ़ली बिन अबी बक्र मरग़ीनानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुतवफ़्फ़ा 593 हि. फ़रमाते हैं,[3] لا تضمن بهلاك النصاب بعد التفريط

(8) बच्चे और मज्नून की मिल्किय्यत में चाहे जितना भी माल हो उस पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं क्यूं कि ज़कात ऐसी इ़बादत है जो इख़्तियारी त़ौर पर अदा की जाती है जब कि बच्चा और मज्नून अ़-दमे अ़क़्ल की वजह से कोई इख़्तियार नहीं रखते। अ़ल्लामा मरग़ीनानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं,

وليس على الصبي والمجنون زكاة (لِ)أنها عبادة فلا تتأدى إلا بالاختيار تحقيقاً لمعنى الابتلاء ولا اختيار لهما لعدم العقل.[4]

---

1. बहारे शरीअ़त ब ह़वाला दुर्रे मुख़्तार, हिस्सा पन्जुम, स. 8

2 (كنز الدقائق مع البحر الرائق، كتاب الزكاة، ج ٢، ص ٣٥٣ـ٣٥٥)

3 (الهداية، كتاب الزكاة، الجزء١، ج١، ص ١٠٣)

4 (الهداية، كتاب الزكاة، الجزء١، ج١، ص ١٠٣)

《9》 बुन्यादी ख़र्चा, रिहाइश के मकान, जंगी सामान, सर्दी गर्मी से बचने के लिये जिन कपड़ों की ज़रूरत हो, उन पर ज़कात नहीं क्यूं कि येह सब इन्सान की ह़ाजाते अस्लिया से हैं। चुनान्चे अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी ह़नफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुतवफ़्फ़ा 1252 हि. ह़ाजाते अस्लिया की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं,

وهي ما يدفع الهلاك عن الإنسان تحقيقاً كالنفقة ودور السكنى وآلات الحرب والثياب المحتاج إليها لدفع الحرّ أو البرد.[1]

《10》 मालिक करने में येह भी ज़रूरी है की ऐसे को दे जो क़ब्ज़ा करना जानता हो या'नी ऐसा न हो कि फेंक दे या धोका खाए वरना अदा न होगी मषलन निहायत छोटे बच्चे या पागल को देना और अगर बच्चे को इतनी अ़क्ल न हो तो उस की त़रफ़ से उस का बाप जो फ़क़ीर हो या वसी या जिस की निगरानी में है क़ब्ज़ा करें।[2]

《11》 जो माल गुम गया या दरिया में गिर गया या किसी ने ग़सब कर लिया और उस के पास ग़सब के गवाह न हों या जंगल में दफ़्न कर दिया था और येह याद न रहा कि कहां दफ़्न किया था, या अन्जान के पास अमानत रखी थी और येह याद न रहा कि वोह कौन है या मदयून (मक़रूज़) ने दैन (क़र्ज़) से इन्कार कर दिया और इस के पास गवाह नहीं फिर येह अम्वाल मिल गए तो जब तक न मिले थे उस ज़माने की ज़कात वाजिब नहीं।[3]

《12》 अगर दैन (क़र्ज़) ऐसे पर है जो इस का इक़रार करता है मगर अदा में देर करता है या नादार है या क़ाज़ी के यहां उस के मुफ़्लिस होने का हुक्म हो

مدینہ

1 (ردالمحتار علی الدرالمختار، کتاب الزکاۃ، مطلب: في زکاۃ ثمن المبیع وفاء، ج۳، ص۲۱۳)

2. (बहारे शरीअ़त ब ह़वाला दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मुह़तार, ह़िस्सा पन्जुम, स. 8)

3. (बहारे शरीअ़त ब ह़वाला दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मुह़तार, ह़िस्सा पन्जुम, स. 9)

चुका या वोह मुन्किर है मगर उस के पास गवाह मौजूद हैं तो जब माल मिलेगा सालहाए गुज़श्ता की भी ज़कात वाजिब है।[1]

﴾13﴿ एक ने दूसरे के मषलन हज़ार रुपै ग़सब कर लिये फिर वोही रुपै उस से किसी और ने ग़सब कर के ख़र्च कर डाले और इन दोनों ग़ासिबों के पास हज़ार हज़ार रुपै अपनी मिल्क के हैं तो ग़ासिबे अव्वल पर ज़कात वाजिब है दूसरे पर नहीं।[2]

﴾14﴿ शै मरहून (गिरवी रखी गई चीज़) की ज़कात न मुर्तहिन (जिस के पास रहन रखा गया है) पर है न राहिन (जिस ने रहन रखवाया है) पर। मुर्तहिन तो मालिक ही नहीं और राहिन की मिल्क ताम (मुकम्मल) नहीं कि उस के क़ब्ज़े में नहीं और बा'दे रहन छुड़ाने के भी इन बरसों की ज़कात वाजिब (या'नी फ़र्ज़) नहीं।[3]

﴾15﴿ जो माल तिजारत के लिये ख़रीदा और साल भर तक उस पर क़ब्ज़ा न किया तो क़ब्ज़ा से क़ब्ल मुश्तरी (ख़रीदार) पर ज़कात वाजिब (या'नी फ़र्ज़) नहीं और क़ब्ज़ा के बा'द उस साल की भी ज़कात वाजिब (या'नी फ़र्ज़) है।[4]

﴾16﴿ निसाब का मालिक है मगर उस पर दैन (या'नी क़र्ज़) है कि अदा करने के बा'द निसाब नहीं रहती तो ज़कात वाजिब (या'नी फ़र्ज़) नहीं।[5]

---

1. (बहारे शरीअ़त ब ह़वाला तन्वीरुल अब्सार, हिस्सा पन्जुम, स. 9)
2. (बहारे शरीअ़त ब ह़वाला आ़लमगीरी, हिस्सा पन्जुम, स. 9)
3. (बहारे शरीअ़त ब ह़वाला दुर्रे वग़ैरा, हिस्सा पन्जुम, स. 9)
4. (बहारे शरीअ़त ब ह़वाला दुर्रे व रद्द, हिस्सा पन्जुम, स. 9)
5. (बहारे शरीअ़त, हिस्सा पन्जुम, स. 9)

﴾17﴿ जो दैन (क़र्ज़) मीआ़दी हो वोह सहीह़ मज़्हब में वुजूबे ज़कात का मानेअ़ नहीं। (या'नी ज़कात का हि़साब लगाते वक़्त मीआ़दी क़र्ज़ों को निसाब से मिन्हा नहीं किया जाएगा)।[1]

﴾18﴿ ऐसी चीज़ ख़रीदी जिस से कोई काम करेगा और काम में उस का अषर बाक़ी रहेगा जैसे चमड़ा पकाने के लिये माज़ू (दवा) और तेल वग़ैरा अगर उस पर साल गुज़र गया तो ज़कात वाजिब है। यूंही रंगरेज़ ने उजरत पर कपड़ा रंगने के लिये कुसुम, ज़ा'फ़रान ख़रीदा तो अगर ब क़द्रे निसाब है और साल गुज़र गया तो ज़कात वाजिब है। पुड़िया वग़ैरा रंग का भी येही हुक्म है और अगर वोह ऐसी चीज़ है जिस का अषर बाक़ी न रहेगा जैसे साबून तो अगर्चे ब क़द्रे निसाब है और साल गुज़र जाए तो ज़कात वाजिब नहीं। इत्र फ़रोश ने इत्र बेचने के लिये शीशियां ख़रीदीं, इन पर ज़कात वाजिब है।[2]

﴾19﴿ ख़र्च के लिये रुपै के पैसे लिये तो येह भी ह़ाजते अस्लिया में हैं। ह़ाजते अस्लिया में ख़र्च करने के रुपै रखे हैं तो साल में जो कुछ ख़र्च किया और जो बाक़ी रहे अगर ब क़द्रे निसाब हैं तो इन की ज़कात वाजिब है अगर्चे इसी निय्यत से रखे हैं कि आयन्दा ह़ाजते अस्लिया ही में सर्फ़ होंगे और अगर साल तमाम के वक़्त ह़ाजते अस्लिया में ख़र्च करने की ज़रूरत है तो ज़कात वाजिब नहीं।[3]

﴾20﴿ अहले इ़ल्म के लिये किताबें ह़ाजते अस्लिया से हैं और ग़ैर अहल के पास हों जब भी किताबों की ज़कात वाजिब नहीं जब कि तिजारत के लिये न हो। फ़र्क़ इतना है कि अहले इ़ल्म के पास इन किताबों के इ़लावा अगर माल ब क़द्रे निसाब न हो तो ज़कात लेना जाइज़ है और ग़ैर अहल के लिये

---

1. (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा पन्जुम, स. 10)
2. (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा पन्जुम, स. 11)
3. (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा पन्जुम, स. 11)

ना जाइज़ जब कि दो सो दिरम क़ीमत की हों। अहल वोह है जिसे पढ़ने पढ़ाने या तस्ह़ीह़ के लिये इन किताबों की ज़रूरत हो। किताब से मुराद मज़्हबी किताब फ़िक़्ह व तफ़्सीर व ह़दीष है। अगर एक किताब के चन्द नुस्ख़े हों तो एक से ज़ाइद जितने नुस्ख़े हों, अगर दो सो दिरहम की क़ीमत के हों तो उस अहल को भी ज़कात लेना ना जाइज़ है। ख़्वाह एक ही किताब के ज़ाइद नुस्ख़े इस क़ीमत के हों या मुतअ़द्दद किताबों के ज़ाइद नुस्ख़े मिल कर इस क़ीमत के हों।[1]

﴾21﴿ ह़ाफ़िज़ के लिये क़ुरआने मजीद ह़ाजते अस्लिया से नहीं और ग़ैरे ह़ाफ़िज़ के लिये एक से ज़ियादा ह़ाजते अस्लिया के इलावा है। या'नी अगर मुस्ह़फ़ शरीफ़ दो सो दिरम क़ीमत का हो तो ज़कात लेना जाइज़ नहीं।[2]

﴾22﴿ कुफ़्फ़ार व बद मज़्हबों के रद और अहले सुन्नत की ताईद में जो किताबें हैं वोह ह़ाजते अस्लिया से हैं यूंही आ़लिम अगर बद मज़्हब वग़ैरा की किताबें इस लिये रखे कि उन का रद करेगा तो येह भी ह़ाजते अस्लिया में हैं और ग़ैरे आ़लिम को इन का देखना भी जाइज़ नहीं।[3]

﴾23﴿ माले तिजारत या सोने चांदी को दरमियान साल में अपनी जिन्स या ग़ैर जिन्स से बदल लिया तो इस की वजह से साल गुज़रने में नुक़्सान न आया।[4]

---

1. (बहारे शरीअ़त, हिस्सा पन्जुम, स. 11,12)
2. (बहारे शरीअ़त, हिस्सा पन्जुम, स. 12)
3. (बहारे शरीअ़त, हिस्सा पन्जुम, स. 12)
4. (बहारे शरीअ़त, हिस्सा पन्जुम, स. 13)

﴾24﴿ मोती और जवाहर पर ज़कात वाजिब नहीं अगर्चे हज़ारों के हों, हां अगर तिजारत की निय्यत से लिये तो वाजिब हो गई ।[1]

﴾25﴿ मालिके निसाब को दरमियाने साल में कुछ माल हासिल हुवा और उस के पास दो निसाबें हैं और दोनों का जुदा जुदा साल है तो जो माल दरमियाने साल में हासिल हुवा उसे इस के साथ मिलाए जिस की ज़कात पहले वाजिब हो मषलन इस के पास एक हज़ार रुपै हैं और साइमा (जानवर) की क़ीमत जिस की ज़कात दे चुका था कि दोनों मिलाए नहीं जाएंगे । अब दरमियान साल में एक हज़ार रुपै और हासिल किये तो इन का साल तमाम उस वक़्त है जब इन दोनों में पहले का हो ।[2]

ज़कात किसे दी जाए ?

अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में आठ मसारिफ़े ज़कात बयान फ़रमाए हैं :

إِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ (التوبة:٩/٦٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ज़कात तो उन्हीं लोगों के लिये है जो मोहताज और निरे नादार और जो उसे तहसील कर के लाएं और जिन के दिलों को इस्लाम से उल्फ़त दी जाए और गरदनें छुड़ाने में और क़र्ज़दारों को और अल्लाह की राह में और मुसाफ़िर को ।*

مدینہ

1. (बहारे शरीअ़त, हिस्सा पन्जुम, स. 13)
2. (बहारे शरीअ़त, हिस्सा पन्जुम, स. 14)

अ़ल्लामा अबुल ह़सन अ़ली बिन अबी बक्र मरग़ीनानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुतवफ़्फ़ा 593 हि. फ़रमाते हैं,

(الأصل فيه قوله تعالىٰ: ﴿إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِينِ﴾ الآية، فهذه ثمانية أصناف، وقد سقط منها المؤلفة قلوبهم،لأن اللّٰه تعالىٰ أعز الإسلام وأغنى عنهم) وعلى ذلك انعقد الإجماع (والفقير من له أدنى شيء، والمسكين من لا شيء له) وهذا مروي عن أبي حنيفة رحمه اللّٰه؛ وقد قيل على العكس.[1]

या'नी, मसारिफ़े ज़कात में अस्ल (दलील) **अल्लाह** तआ़ला का फ़रमान है, ज़कात तो उन्हीं लोगों के लिये है मोह़ताज और निरे नादार (कन्ज़ुल ईमान), तो येह आठ मसारिफ़ हैं और इन मसारिफ़ से المؤلفة قلوبهم, या'नी जिन के दिलों को इस्लाम से उल्फ़त दी जाए, साक़ित़ हो गया क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस्लाम को इ़ज़्ज़त बख़्शी और इन लोगों से ग़नी फ़रमा दिया और इसी पर इज्माअ़ है। फ़क़ीर वोह है जिस के पास अदना चीज़ हो और मिस्कीन वोह है जिस के पास कुछ भी न हो, येह फ़रमान इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, जब कि (फ़क़ीर व मिस्कीन की ता'रीफ़ में) इस के बर अक्स भी फ़रमाया गया।[1]

बनी हाशिम सादाते किराम को स-दक़ा देना जाइज़ नहीं,

चुनान्चे अ़ल्लामा अबुल ह़सन अ़ली बिन अबी बक्र मरग़ीनानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं,

(ولا تدفع إلى بني هاشم) لقوله عليه الصلاة والسلام: "يا بني هاشم إن اللّٰه تعالىٰ حرم عليكم غسالة الناس وأوساخهم وعوّضكم منها بخمس الخمس"،

[1] (الهداية، كتاب الزكاة، باب من يجوز دفع الصدقة إليه ومن لا يجوز، الجزء١، ج١، ص ١٢٠)

بخلاف التطوع؛ لأن المال ههنا كالماء يتدنس بإسقاط الفرض. أما التطوع فبمنزلة التبرد بالماء.[1]

और स-दक़ात (वाजिबा) बनी हाशिम को न दिये जाएं क्यूं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ बनू हाशिम बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने तुम पर लोगों का धोवन, इन के औसाख़ (या'नी मैल) ह़राम फ़रमाए हैं और तुम्हारे लिये इस के बदले ग़नीमत का पांचवां हि़स्सा मुक़र्रर फ़रमाया।" ब ख़िलाफ़ नफ़्ली स-दक़ात के, क्यूं कि माल ज़कात की सूरत में उस पानी की मिष्ल है जो फ़र्ज़ साक़ित़ होने से मैला होता है, जब कि नफ़्ली स-दक़े का मुआ़मला पानी से ठन्डक ह़ासिल करने के मक़ाम में है।[1]

और बनू हाशिम की वज़ाह़त करते हुए अ़ल्लामा मरग़ीनानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं

(وهم آل علي وآل عباس وآل جعفر وآل عقيل وآل حارث بن عبد المطلب ومواليهم) أما هؤلاء فلأنهم ينسبون إلى هاشم بن عبد مناف، ونسبة القبيلة إليه. وأما مواليهم فلما روي أن مولى لرسول اللّٰه صلى اللّٰه تعالیٰ عليه وآله وسلم سأله أتحل لي الصدقة؟ فقال: "لا، أنت مولانا".[2]

या'नी, बनू हाशिम अवलादे अ़ली, अवलादे अ़ब्बास, अवलादे जा'फ़र, अवलादे अ़क़ील, अवलादे ह़ारिष बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُم اَجْمَعِيْن और इन के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हैं। जहां तक तअ़ल्लुक़ बनी हाशिम का है तो इस की वजह इन के हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़ की जानिब मन्सूब होना है, और क़बीले की निस्बत भी हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़ की जानिब है। और रहा सुवाल इन के आज़ाद कर्दा ग़ुलामों का तो

مدینہ

[1] (الهداية، كتاب الزكاة، باب من يجوز دفع الصدقة إليه ومن لا يجوز، الجزء١، ج١، ص١٢٠)
[2] (الهداية، كتاب الزكاة، باب من يجوز دفع الصدقة إليه ومن لا يجوز، الجزء١، ج١، ص١٢٠)

वोह (या'नी इन को ज़कात देना) इस लिये मम्नूअ़ है कि मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम ने आप से पूछा, कि क्या मेरे लिये स-दक़ा लेना जाइज़ है ? तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, नहीं तुम हमारे आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हो।

हदीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أَخَذَ حَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ مِنْ تَمْرِ الصَّدَقَةِ فَجَعَلَهَا فِي فِيهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "كِخْ كِخْ" لِيَطْرَحَهَا، ثُمَّ قَالَ: "أَمَا شَعَرْتَ أَنَّا لَا نَأْكُلُ الصَّدَقَةَ"؟! [1]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, हज़रते हसन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने स-दक़े के छुहारों में से एक छुहारा ले कर अपने मुंह में डाल लिया तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **कख़ कख़** । ताकि वोह उसे थूक दें फिर फ़रमाया, क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि हम स-दक़ा नहीं खाया करते।[1]

"इस हदीष ने फ़ैसला फ़रमा दिया कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अवलाद को ज़कात लेना हराम है اَنَّا जम्अ़ फ़रमा कर ता क़ियामत अपनी अवलाद को शामिल फ़रमा लिया, येह ही हक़ है

مدينه

[1] (صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب ما يذكر في الصدقة للنبي صلى الله تعالىٰ عليه واله وسلم، الحديث: ١٤٩١، ج١، ص٣٦٧)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب تحريم الزكاة على رسول اللّٰه صلى الله تعالىٰ عليه واله وسلم... إلخ، الحديث: ١٦١ـ(١٠٦٩) ص٣٧٦،)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له الصدقة، الفصل الأول، الحديث: ١٨٢٢، ج١، ص٣٤٦ـ٣٤٧،)

इसी पर फ़तवा है, बा'ज़ लोग जो कहते हैं कि येह हुक्म उस ज़माने में था अब सय्यिद ज़कात ले सकते हैं या सय्यिद की ज़कात सय्यिद ले सकते हैं, येह तमाम मरजूअ़ क़ौल हैं, फ़तवा इस पर नहीं। ख़याल रहे कि बनी हाशिम से मुराद आले अ़ब्बास, आले जा'फ़र, आले अ़क़ील, आले ह़ारिष बिन मुत्त़लिब और आले रसूल हैं अबू लहब की मुसलमान अवलाद अगर्चे बनी हाशिम तो हैं मगर येह ज़कात ले सकते थे और ले सकते हैं, क्यूं कि ज़कात की ह़ुरमत करामत व इ़ज़्ज़त के लिये है, अबू लहब ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ईज़ा की कोशिश में रहा इसी लिये वोह और उस की अवलाद इस अ़ज़्मत की मुस्तह़िक़ न हुई (अज़ लम्आ़त) इस ह़दीष से मा'लूम हुवा कि अपनी ना समझ अवलाद को भी ना जाइज़ काम न करने दे वोह देखो ह़ज़रते ह़सन उस वक़्त बहुत ही कमसिन और ना समझ थे जैसा कि **कख़ कख़** फ़रमाने से मा'लूम हो रहा है मगर ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें भी ज़कात का छुहारा न खाने दिया।"[1]

عَنۡ عَبۡدِ الۡمُطَّلِبِ بۡنِ رَبِيۡعَةَ قَالَ: قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ هٰذِهِ الصَّدَقَاتِ إِنَّمَا هِيَ أَوۡسَاخُ النَّاسِ، وَإِنَّهَا لَا تَحِلُّ لِمُحَمَّدٍ وَلَا لِاٰلِ مُحَمَّدٍ".[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब बिन रबीआ़ से मरवी है, फ़रमाते हैं, ख़ातमुल मुरसलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, येह स-दक़ात लोगों के मैल ही हैं, न येह मुह़म्मद को ह़लाल हैं और न मुह़म्मद की आल को।[2]

मदीना

1. (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 46)

٢ (صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب ترك استعمال آل النبي صلى الله تعالىٰ عليه واله وسلم على الصدقة، الحديث: ١٦٨ـ(١٠٧٢)، ص ٣٨٧)

(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب استعمال آل النبي صلى الله تعالىٰ عليه واله وسلم على الصدقة، الحديث: ٢٦٠٨، الجزء٥، ج٣، ص ١١١)

(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له الصدقة، الفصل الأول، الحديث: ١٨٢٣، ج١، ص ٣٤٧)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ "स-दक़ात लोगों के मैल हैं" के तह़्त फ़रमाते हैं "इस त़रह़ कि ज़कात फ़ित़्रा निकल जाने से लोगों के माल और दिल पाक व साफ़ होते हैं जैसे मैल निकल जाने से जिस्म या कपड़ा, रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿خُـــذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا﴾ [التوبۃ:۹/۱۰۳]) **तर्जमा :** ऐ मह़बूब इन के माल में से ज़कात तह़सील करो जिस से तुम इन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो (कन्ज़ुल ईमान)) लिहाज़ा येह मुसलमानों का धोवन है।"

"येह ह़दीष ऐसी वाज़ेह़ और साफ़ है जिस में कोई तावील नहीं हो सकती, या'नी मुझे और मेरी अवलाद को ज़कात लेना इस लिये ह़राम है कि येह माल का मैल है लोग हमारे मैल से सुथरे हों हम किसी का मैल क्यूं लें। अब बा'ज़ का कहना कि चूंकि सादात को ख़ुम्स नहीं मिलता इस लिये अब वोह ज़कात ले सकते हैं ग़लत़ है कि नस के मुक़ाबिल "**चूंकि**" और "**क्यूंकि**" नहीं सुना जाता।"[1]

एक और ह़दीष में है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أُتِيَ بِطَعَامٍ سَأَلَ عَنْهُ "أَهَدِيَّةٌ أَمْ صَدَقَةٌ؟" فَإِنْ قِيْلَ: صَدَقَةٌ؛ قَالَ

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जब कोई खाना लाया जाता तो उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछते कि आया येह हदिय्या है या स-दक़ा, अगर कहा जाता कि स-दक़ा है तो सह़ाबा से फ़रमाते खा लो, और ख़ुद न

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 46)

खाते और अगर अ़र्ज़ किया जाता कि हदिय्या है तो हाथ शरीफ़ बढ़ाते और उन के साथ खाते ।[1]

لِأَصْحَابِهِ: "كُلُوْا"، وَلَمْ يَأْكُلْ، وَإِنْ قِيْلَ: هَدِيَّةٌ، ضَرَبَ بِيَدِهِ فَأَكَلَ مَعَهُمْ.

ग़नी सहाबा अपने वाजिब व नफ़्ली स-दक़ा हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश करते थे ताकि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने हाथ से ग़ुरबा में तक़्सीम फ़रमा दें कि आप के हाथ की बरकत से रब तआ़ला क़बूल फ़रमाए हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अस्हाबे सुफ़्फ़ा वग़ैरा फ़ुक़रा व सहाबा पर तक़्सीम फ़रमा देते थे, और बा'ज़ लोग खुद हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये हदिय्या व नज़राना लाते थे, चूंकि दो क़िस्म के माल हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आते थे, इस लिये अगर लाने वाला साफ़ साफ़ न कहता, तो सरकार खुद पूछ लेते थे । हदिय्या से खुद भी खा लेते थे मगर स-दक़ा खुद इस्ति'माल न फ़रमाते थे । यहां सहाबा से मुराद फ़ुक़रा सहाबा हैं जो स-दक़ए वाजिबा ले सकते हैं ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी वग़ैरहुम ग़नी सहाबा मुराद नहीं ।

مدينـــه

[1] صحيح البخاري، كتاب الهبة وفضلها والتحريض عليها، باب قبول الهدية،الحديث: ٢٥٧٦،ج٢،ص١٤٩)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب قبول النبي صلى الله تعالى عليه واله وسلم الهدية وردّه الصدقة،
الحديث: ١٧٥ـ(١٠٧٧)،ص٣٨٨)
(سنن الترمذي، كتاب الزكاة، باب ما جاء في كراهية الصدقة للنبي صلى الله تعالى عليه واله وسلم وأهل بيته ومواليه،
الحديث: ٦٥٦، ج١،ص٤٧٣)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة،باب الصدقة لا تحل للنبي صلى الله تعالى عليه واله وسلم،
الحديث: ٢٦١٢،الجزء٥،ج٣،ص١١٣)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له الصدقة، الفصل الأول، الحديث:١٨٢٤،ج١،ص٣٤٧)

सरकार عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हदिय्या व नज़्राना का खाना खुद भी खाते और मौजूद सहा़बा को भी अपने हमराह खिलाते थे। ख़याल रहे कि ग़नी और सय्यिद को स-दक़ए नफ़्ल लेना जाइज़ है वोह स-दक़ा इन के लिये हदिय्या बन जाता है मगर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم स-दक़ए नफ़्ल भी न लेते थे क्यूं कि इस में स-दक़ा देने वाला लेने वाले पर रह़्मो करम करता है जिस का षवाब **अल्लाह** से चाहता है सब हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रह़्म के ख़्वास्तगार हैं हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर कौन इन्सान रह़्म करता है, हां स-दक़ए जारिया जैसे कूंएं का पानी, मस्जिद व क़ब्रिस्तान की ज़मीन इस का हुक्म दूसरा है कि येह ग़नी व फ़क़ीर बल्कि खुद स-दक़ा करने वाले वाक़िफ़ को भी इस का इस्ति'माल जाइज़ है, येह हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये भी मुबाह़ था (अज़् मिरक़ात वग़ैरा)।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ عُبَيْدِ اللّٰهِ بْنِ عَدِيِّ بْنِ الْخِيَارِ، قَالَ: أَخْبَرَنِي رَجُلَانِ أَنَّهُمَا أَتَيَا النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ، وَهُوَ يُقَسِّمُ الصَّدَقَةَ، فَسَأَلَاهُ مِنْهَا، فَرَفَعَ

ह़ज़रते उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी बिन ख़यार से मरवी है, फ़रमाते हैं कि मुझे दो शख़्सों ने ख़बर दी कि वोह दोनों सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़िज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर ह़ाज़िर हुए हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم स-दक़ा तक़्सीम फ़रमा रहे थे उन्हों ने भी

1. (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 47)

فِيْنَا النَّظَرَ، وَخَفَضَهُ فَرَآنَا جَلْدَيْنِ، فَقَالَ: "إِنْ شِئْتُمَا أَعْطَيْتُكُمَا، وَلَا حَظَّ فِيْهَا لِغَنِيٍّ وَلَا لِقَوِيٍّ مُكْتَسِبٍ".[1]

हुज़ूर से स-दक़ा मांगा तो हुज़ूर ने हम पर नज़र उठाई फिर झुकाई हम को तन्दुरुस्त व तवाना देखा तो फ़रमाया कि अगर तुम चाहो तो तुम को दे दूं मगर इस में न तो ग़नी का हिस्सा है न कमाई के लाइक़ तन्दुरुस्त का ।[1]

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस हिस्सए ह़दीष "स-दक़ा तक़्सीम फ़रमा रहे थे" के तह़्त फ़रमाते हैं : "ज़ाहिर येह है कि स-दक़ए फ़र्ज़ या'नी ज़कात होगा और हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हुज्जाज ने अपनी ज़कात तक़्सीम के लिये पेश की होगी, जैसा कि सह़ाबा का दस्तूर था ।"

मज़ीद फ़रमाते हैं, "इस में दोनों (जो सरकार صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से स-दक़ा त़लब करते थे,) को तक़्वा व त़हारत की ता'लीम है या'नी चूंकि तुम दोनों अगर्चे फ़क़ीर हो मगर तन्दुरुस्त और कमाने के लाइक़ हो इस लिये इस से लेना तुम्हारे लाइक़ नहीं, अगर उन को येह स-दक़ा लेना ह़राम होता जैसा कि ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई फ़रमाते हैं तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह न फ़रमाते कि अगर तुम चाहो तो तुम को दे दूं, इस इख़्तियार देने से मा'लूम हो रहा है कि देना जाइज़ तो है मगर बेहतर नहीं ।"[2]

مدينــه

[1] (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب من يعطى من الصدقة وحدّ الغنى، الحديث: ١٦٣٣، ج٢، ص١٩٥)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب مسألة القوي المكتسب، الحديث: ٢٥٩٧، الجزء٥، ج٣، ص١٠٥)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له الصدقة، الفصل الثاني، الحديث: ١٨٣٢، ج١، ص٣٤٨)
[2] (مرآة المناجيح، ج٣، ص٥١)

सिलए रेह़्मी

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

وَ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ لَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَیْــٴًـا وَّ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا وَّ بِذِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنِ وَ الْجَارِ ذِی الْقُرْبٰى وَ الْجَارِ الْجُنُبِ وَ الصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَ ابْنِ السَّبِیْلِۙ وَ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَاۙ﴿۳۶﴾ الآية

(النساء:٤/٣٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और **अल्लाह** की बन्दगी करो और उस का शरीक किसी को न ठहराओ और मां बाप से भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मोह़ताजों और पास के हमसाए और दूर के हमसाए और करवट के साथी और राहगीर और अपनी बांदी गुलाम से बेशक **अल्लाह** को ख़ुश नहीं आता कोई इतराने वाला बड़ाई मारने वाला।*

इस आयए करीमा में फ़रमान ''मां बाप के साथ भलाई करो'' की तफ़्सीर फ़रमाते हुए सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी साह़िब मुतवफ़्फ़ा 1367 हि. फ़रमाते हैं,

''अदब व ता'ज़ीम के साथ और उन (या'नी वालिदैन) की ख़िदमत में मुस्तइद रहना और उन पर ख़र्च करने में कमी न करो मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीष है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन मरतबा फ़रमाया उस की नाक ख़ाक आलूद हो ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया किस की या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ? फ़रमाया : ''जिस ने बूढ़े मां बाप पाए या उन में से किसी एक को पाया और जन्नती न हो गया।''

ह़दीष शरीफ़ में है रिश्तेदारों के साथ अच्छे सुलूक करने वालों की उ़म्र दराज़ और रिज़्क़ वसीअ़ होता है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

ह़दीष : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया मैं और यतीम की सर परस्ती करने वाला ऐसे क़रीब होंगे जैसे अंगुश्ते शहादत और बीच की उंगली। (बुख़ारी शरीफ़)

ह़दीष : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया बेवा और मिस्कीन की इमदाद व ख़बर गीरी करने वाला मुजाहिदे फ़ी सबीलिल्लाह के मिष्ल है।

सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिब्रील मुझे हमेशा हमसायों के साथ एह़सान करने की ताकीद करते रहे इस ह़द तक कि गुमान होता था कि इन को वारिष क़रार दें। (बुख़ारी व मुस्लिम)[1]

एक और मक़ाम पर इर्शाद है :

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ وَ اِيْتَآئِ ذِی الْقُرْبٰى وَ يَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ وَ الْبَغْیِ ۚ الآية
(النحل:١٦/٩٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी और रिश्तेदारों के देने का और मन्अ़ फ़रमाता है बे ह़याई और बुरी बात और सरकशी से।*

आयए करीमा में "इन्साफ़" की वज़ाह़त करते हुए सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इन्साफ़ तो येह है कि आदमी لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की गवाही दे और नेकी और फ़राइज़ का अदा करना और आप ही से एक रिवायत है कि इन्साफ़ शिर्क का तर्क करना और नेकी। दूसरों के लिये वोही पसन्द करना जो अपने लिये पसन्द करते हो अगर वोह मोमिन हो तो उस के बरकाते ईमान की तरक़्क़ी तुम्हें पसन्द हो और अगर काफ़िर हो तो तुम्हें येह पसन्द आए कि वोह

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

तुम्हारा इस्लामी भाई हो जाए इन्हीं से एक और रिवायत है, इस में है कि इन्साफ़ तौह़ीद है और नेकी इख़्लास और इन तमाम रिवायतों का त़र्ज़े बयान अगर्चे जुदा जुदा है लेकिन मआल व मुद्दआ़ एक ही है।"[1]

एक और मक़ाम पर इर्शाद है :

وَاِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ۫ وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا وَّذِی الْقُرْبٰى وَالْیَتٰمٰى وَالْمَسٰكِیْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا الآية (البقرة:٢/٨٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब हम ने बनी इस्राईल से अ़हद लिया कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों से और लोगों से अच्छी बात कहो।*

"अल्लाह तआ़ला ने अपनी इबादत का हुक्म फ़रमाने के बा'द वालिदैन के साथ भलाई करने का हुक्म दिया इस से मा'लूम होता है कि वालिदैन की ख़िदमत बहुत ज़रूरी है वालिदैन के साथ भलाई के येह मा'ना हैं कि ऐसी कोई बात न कहे और ऐसा कोई काम न करे जिस से उन्हें ईज़ा हो और अपने बदन व माल से उन की ख़िदमत में दरेग़ न करे जब उन्हें ज़रूरत हो इन के पास ह़ाज़िर रहे। **मस्अला :** अगर वालिदैन अपनी ख़िदमत के लिये नवाफ़िल छोड़ने का हुक्म दें तो छोड़ दे उन की ख़िदमत नफ़्ल से मुक़द्दम है। **मस्अला :** वाजिबात वालिदैन के हुक्म से तर्क नहीं किये जा सकते वालिदैन के साथ एह़सान के त़रीक़े जो अह़ादीष से षाबित हैं येह हैं कि तहे दिल से उन के साथ मह़ब्बत रखे, रफ़्तार व गुफ़्तार में निशस्त व बरख़ास्त में अदब लाज़िम जाने उन की शान में ता'ज़ीम के लफ़्ज़ कहे उन को राज़ी करने की सा'य करता रहे अपने नफ़ीस माल को उन से न

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

बचाए उन के मरने के बा'द उन की वसिय्यतें जारी करे उन के लिये फ़ातिहा, स-दक़ात, तिलावते क़ुरआन से ईसाले षवाब करे अल्लाह तआला से उन की मग़्फ़िरत की दुआ करे, हफ़्तावार उन की क़ब्र की ज़ियारत करे (फ़त्हुल अज़ीज़) वालिदैन के साथ भलाई करने में येह भी दाखि़ल है कि अगर वोह गुनाहों के आदी हों या किसी बद मज़्हबी में गिरिफ़्तार हों तो उन को ब नर्मी इस्लाह़ व तक़्वा और अ़क़ीदए ह़क़्क़ा की त़रफ़ लाने की कोशिश करता रहे।" (ख़ाज़िन)

"अच्छी बात से मुराद नेकियों की तरग़ीब और बदियों से रोकना है ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُمَا ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में ह़क़ और सच बात कहो अगर कोई दर्याफ़्त करे तो हुज़ूर के कमालात व औसाफ़ सच्चाई के साथ बयान कर दो आप की ख़ूबियां न छुपाओ।"[1]

हृदीष शरीफ़ में है :

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّيْ أُرِيْدُ الْجِهَادَ، قَالَ: "أَحَيٌّ أَبَوَاكَ"؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: "فَفِيْهِمَا فَجَاهِدْ".[٢]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھُمَا से मरवी है, फ़रमाते हैं, एक शख़्स ने हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर जिहाद की इजाज़त चाही, तो आप ने फ़रमाया, क्या तेरे वालिदैन ज़िन्दा हैं ? अ़र्ज़ की, जी ज़िन्दा हैं। फ़रमाया, उन की ख़िदमत कर येही तेरा जिहाद है।[2]

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

٢ (صحيح البخاري، كتاب الجهاد والسير، باب الجهاد بإذن الأبوين،الحديث:٣٠٠٤،ج٢، ص ٢٧١)

फ़क़ीह अबुल्लैष समर क़न्दी رَحۡمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं, इस ह़दीष में इस बात पर दलील है कि वालिदैन के साथ भलाई करना जिहाद से अफ़्ज़ल है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस शख़्स को जिहाद तर्क कर के वालिदैन की ख़िदमत में मश्ग़ूल होने का हुक्म फ़रमाया। इसी त़रह़ हम भी कहते हैं कि जब तक वालिदैन इजाज़त न दें या जब तक आ़म निकलने का हुक्म न हो किसी शख़्स के लिये येह जाइज़ नहीं कि वोह जिहाद के लिये निकले।[1] (या'नी जब जिहाद फ़र्ज़े ऐन हो तो फिर वालिदैन की इजाज़त पर मौक़ूफ़ करना दुरुस्त नहीं)

मज़ीद फ़रमाते हैं, अगर बिलफ़र्ज़ **अल्लाह** तआ़ला अपने पाक कलाम में वालिदैन के एह़तिराम का बयान न भी फ़रमाता और इन के मुतअ़ल्लिक़ कोई हुक्म न देता तब भी अ़क़्लन इन का अदब व एह़तिराम जाना जाता और अ़क़्ल मन्द पर लाज़िम होता कि इन की ता'ज़ीम को जाने और इन के हुक़ूक़ अदा करे और क्यूं न हो, **अल्लाह** तआ़ला ने सभी कुतुबे समाविया तौरात, ज़बूर, इन्जील और फ़ुरक़ान में वालिदैन की ह़ुरमत का तज़्किरा फ़रमाया और तमाम सह़ीफ़ों में इन की ता'ज़ीम का हुक्म दिया और जुम्ला अम्बिया عَلَیۡہِمُ السَّلَام को इस बात की वह़्य भी फ़रमाई और उन्हें वालिदैन के एह़तिराम और इन के हुक़ूक़ जानने का हुक्म दिया और अपनी रिज़ा को इन की रिज़ा पर मौक़ूफ़ फ़रमाया, और इन की नाराज़ी को अपनी नाराज़ी क़रार दिया। और कहा जाता है कि तीन आयतें तीन बातों के साथ नाज़िल हुई हैं कि **अल्लाह** तआ़ला किसी अ़मल को बिग़ैर इस से मिले हुए हुक्म के क़बूल न फ़रमाएगा, पहली आयत में **अल्लाह** तआ़ला का फ़रमान है : ﴿وَأَقِيۡمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ﴾ [البقرۃ:۲/٤۳]

तर्जमा : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो। (कन्ज़ुल ईमान)

مدینہ

[1] (تنبیہ الغافلین، باب حق الوالدین،ص ٦٣)

तो जो नमाज़ पढ़े मगर ज़कात न दे तो उस की नमाज़ भी क़बूल न होगी, और दूसरी आयत में इर्शादे बारी तआ़ला है : ﴿وَأَطِيْعُوا اللّٰهَ وَأَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ﴾ [المائدة:٥/٩٢] **तर्जमा :** और हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो रसूल का (कन्ज़ुल ईमान), तो जो **अल्लाह** तआ़ला की इता़अ़त करे मगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इता़अ़त न करे तो ऐसी इता़अ़त ना क़ाबिले क़बूल है, तीसरी आयत में फ़रमाने ख़ुदा वन्दी है : ﴿أَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ﴾ [لقمان:٣١/١٤] **तर्जमा :** येह कि ह़क़ मान मेरा और अपने मां बाप का (कन्ज़ुल ईमान) , लिहाज़ा जो **अल्लाह** की शुक्र गुज़ारी तो करे मगर वालिदैन की ना शुक्री करे तो ऐसे शख़्स की शुक्र गुज़ारी क़बूल नहीं ।[1]

वालिदैन के आदाब के मुतअ़ल्लिक़ फ़रक़द सब्ख़ी से मरवी है फ़रमाते हैं, मैं ने बा'ज़ कुतुब में पढ़ा है कि अवलाद पर लाज़िम है वालिदैन की मौजूदगी में इन की इजाज़त के बिग़ैर बात न करे, और न इन से आगे चले और जब तक वोह बुलाएं नहीं तो इन के दाएं बाएं भी न चले जब बुलाएं तो इन्हें जवाब दे मगर पीछे पीछे चले जैसे ग़ुलाम अपने आक़ा के पीछे चलता है ।[2]

एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : एक राह में ऐसे गर्म पथ्थर थे कि अगर गोश्त का टुकड़ा उन पर डाला जाता तो कबाब हो जाता, छे मील तक अपनी मां को अपनी गरदन पर सुवार कर के ले गया हूं क्या मैं मां के हुक़ूक़ से फ़ारिग़ हो गया हूं ? सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तेरे पैदा होने में दर्द के जिस क़दर झटके उस ने उठाए हैं शायद येह उन में से एक झटके का बदला हो सके ।[3]

مدينه

١ (تنبيه الغافلين، باب حق الوالدين، ص ٦٣،٦٤)

٢ (تنبيه الغافلين، باب حق الوالدين، ص ٦٤)

٣ (المعجم الصغير، باب من اسمه ابراهيم، الحديث ٢٥٧، الجزء ١، ص ٩٢، دار الكتب العلمية)

हश्शाम बिन उ़रवह अपने वालिद से रिवायत नक़्ल करते हैं कि उन्हों ने बयान किया, कि जो अपने वालिद को ला'नत करे वोह मलऊ़न है और जो अपनी मां को ला'नत करे वोह भी मलऊ़न है, जो रस्ते में रुकावटें डाले वोह भी मलऊ़न है या नाबीना को राह से बहका दे वोह भी मलऊ़न है, जो **अल्लाह** का नाम लिये बिग़ैर जानवर ज़ब्ह़ कर दे वोह भी मलऊ़न है।[1]

ह़ज़रते अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ मुत्तक़ी व परहेज़ गार सह़ाबी थे। नमाज़, रोज़ा, और स-दक़ा जैसी इ़बादात बजा लाने में ह़द दरजा कोशां रहते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ बीमार हो गए और मरज़ तूल पकड़ गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की ज़ौजा ने सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे आ़ली में पैग़ाम भेजा कि ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरा शोहर अ़ल्क़मा ह़ालते नज़्अ़ में है, मैं ने चाहा कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इन के ह़ाल से आगाह कर दूं।'' चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार, ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल और ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब रूमी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھُم को भेजा और इर्शाद फ़रमाया : ''उन के पास जाओ और उन्हें कलिमए शहादत की तल्क़ीन करो।'' लिहाज़ा वोह ह़ज़रात सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें ह़ालते नज़्अ़ में पा कर لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की तल्क़ीन करने लगे, लेकिन वोह कलिमए शहादत अदा नहीं कर पा रहे थे। इन ह़ज़रात ने शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास सूरते ह़ाल कहला भेजी, तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दर्याफ़्त फ़रमाया : ''क्या उन के वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है ?'' अ़र्ज़ की गई : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! इन की वालिदा ज़िन्दा हैं जो कि बहुत बूढ़ी हैं।'' सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक क़ासिद को

[1] (تنبیہ الغافلین،باب حق الوالدین،ص ٦٤)

येह पैग़ाम दे कर उन की वालिदा के पास भेजा कि "अगर आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर होने की क़ुदरत रखती हैं तो चलें वरना घर में ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्तिज़ार करें।" जब क़ासिद ने जा कर उन्हें येह बताया तो वोह कहने लगीं : "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरी जान क़ुरबान ! मैं ज़ियादा ह़क़दार हूं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर होउं।" वोह अ़से के सहारे खड़ी हुईं और हु़स्ने अख़्लाक़ के पैकर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में हाज़िर हुईं और सलाम अ़र्ज़ किया, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब दिया और इर्शाद फ़रमाया : "ऐ उम्मे अ़ल्क़मा ! तुम्हारे बेटे अ़ल्क़मा का क्या ह़ाल है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह ब कषरत नमाज़ पढ़ने वाला, रोज़े रखने वाला और स-दक़ा देने वाला है।" फिर सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दर्याफ़्त फ़रमाया : "और तुम्हारा अपना क्या ह़ाल है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं उस पर नाराज़ हूं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "किस वजह से ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह अपनी बीवी को मुझ पर तरजीह़ देता और मेरे मुआ़मले में कोताही करता है।" शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मां की नाराज़ी ने अ़ल्क़मा की ज़बान को कलिमए शहादत से रोक दिया है।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! जाओ और मेरे लिये बहुत सारी लकड़ियां इकठ्ठी करो।" अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की वालिदा ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप इन

लकड़ियों का क्या करेंगे ?" इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने इरादा किया कि इन के ज़रीए अ़ल्क़मा को आग में जला दूं।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरा दिल बरदाश्त नहीं कर सकता कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे बेटे को मेरे सामने आग में जलाएं।" आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ उम्मे अ़ल्क़मा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब तो इस से भी सख़्त और बाक़ी रहने वाला है। अगर आप को येह पसन्द है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़ल्क़मा की मग़फ़िरत फ़रमा दे तो आप इन से राज़ी हो जाएं, उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, अ़ल्क़मा को इस की नमाज़, रोज़े और स-दक़ा नफ़्अ़ न देंगे जब तक आप इस से नाराज़ रहेंगी।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के फ़िरिश्तों और यहां मौजूद मुसलमानों को गवाह बनाती हूं कि मैं अपने बेटे अ़ल्क़मा से राज़ी हूं।"

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! अ़ल्क़मा के पास जाओ और देखो कि क्या अब वोह لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ पढ़ सकता है या नहीं ?" लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ ले गए और अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को घर के अन्दर से لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ पढ़ते हुए सुना, ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ घर में दाख़िल हुए और फ़रमाया : "ऐ लोगो ! बेशक अ़ल्क़मा की ज़बान को इन की मां की नाराज़ी ने कलिमए शहादत पढ़ने से रोक दिया था और अब मां की रिज़ा मन्दी ने इन की ज़बान को खोल दिया है।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उसी दिन विसाल फ़रमा गए।

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और उन की तज्हीज़ व तक्फ़ीन का हुक्म इर्शाद फ़रमाया।

फिर उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और तदफ़ीन में भी शिर्कत फ़रमाई, फिर उन की क़ब्र के किनारे खड़े हुए और इर्शाद फ़रमाया : "ऐ गुरौहे मुहाजिरीन व अन्सार ! जो अपनी बीवी को अपनी मां पर तरजीह़ दे उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के न नफ़्ल क़बूल फ़रमाएगा न ही फ़र्ज़ मगर येह कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करे और अपनी मां से हुस्ने सुलूक करे और उस की रिज़ा चाहे क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा मां की रिज़ा मन्दी में है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मां की नाराज़ी में है।"[1]

एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि उन्हों ने फ़रमाया, वालिदैन के लिये दुआ़ न करना अवलाद के गुज़र बसर की कज ह़ाली का सबब बन जाता है। उन से पूछा गया, क्या येह मुमकिन है कि कोई शख़्स अपने वालिदैन की वफ़ात के बा'द भी उन्हें राज़ी कर सके? फ़रमाया कर सकता है बल्कि तीन चीज़ों से, एक येह कि वोह ख़ुद नेक व परहेज़ गार रहे क्यूं कि वालिदैन की सब से बड़ी ख़्वाहिश येह होती है कि उन का बेटा नेक हो, दूसरी चीज़ येह कि वोह वालिदैन के अ़ज़ीज़ व अक़ारिब के साथ सिलए रेह़्मी करता रहे, और तीसरी चीज़ येह कि उन के लिये इस्तिग़्फ़ार व दुआ़एं करता रहे और उन के लिये स-दक़ा वग़ैरा दे कर ईसाले षवाब करता रहे।[2]

ह़ज़रते उ़ला बिन अ़ब्दुर्रह़मान अपने वालिद से रिवायत नक़्ल करते हैं कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जब आदमी मर जाता है तो उस के अ़मल का सिल्सिला मुन्क़त़ेअ़ हो जाता है लेकिन तीन अ़मल मुन्क़त़ेअ़ नहीं होते, स-दक़ए जारिया, इल्मे नाफ़ेअ़ और नेक अवलाद जो इस के लिये दुआ़ करती है।[3]

---

١ (الزواجر عن اقتراف الکبائر، الکبیرة الثانیة بعد ثلاثمائة، ج٢، ص١١٢، دارالفکر بیروت)
٢ (تنبیه الغافلین، باب حق الوالدین، ص٦٤،٦٥)
٣ (صحیح مسلم، کتاب الوصیة، باب ما یلحق الانسان... الخ، الحدیث ١٦٣١، ص٨٨٦)

एक और जगह कुरआने करीम में इर्शाद है :

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَیْرٍ فَلِلْوَالِدَیْنِ وَ الْاَقْرَبِیْنَ وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنِ وَ ابْنِ السَّبِیْلِ ؕ الآية (البقرة:٢/٢١٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोह़ताजों और राहगीर के लिये है ।*

और फ़रमाया :

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَیْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَیْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا ۚ وَ لَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَ اِیَّاهُمْ ۚ الآية (الأنعام:٦/١٥١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ आओ मैं तुम्हें पढ़ सुनाऊं जो तुम पर तुम्हारे रब ने ह़राम किया येह कि उस का कोई शरीक न करो और मां बाप के साथ भलाई और अपनी अवलाद क़त्ल न करो मुफ़्लिसी के बाइ़स हम तुम्हें और उन्हें सब को रिज़्क़ देंगे ।*

आयए करीमा में इर्शाद "मां बाप के साथ भलाई करो" की तफ़्सीर में सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "क्यूं कि तुम पर उन के बहुत हुक़ूक़ हैं उन्हों ने तुम्हारी परवरिश की तुम्हारे साथ शफ़्क़त और मेहरबानी का सुलूक किया तुम्हारी हर ख़त़रे से निगहबानी की उन के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ न करना और उन के साथ हुस्ने सुलूक का तर्क करना ह़राम है ।"

मज़ीद फ़रमाते हैं "इस में अवलाद को ज़िन्दा दरगोर करने और मार डालने की हुरमत बयान फ़रमाई गई जिस का अहले जाहिलिय्यत में दस्तूर था कि वोह अक्षर नादारी के अन्देशे से अवलाद को हलाक करते थे

उन्हें बताया गया कि रोज़ी देने वाला तुम्हारा इन का सब का **अल्लाह** है फिर तुम क्यूं क़त्ल जैसे शदीद जुर्म का इर्तिकाब करते हो।"[1]

हज़रते बा यज़ीद बिस्तामी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सख़्त सर्दी की एक रात में मेरी वालिदा ने मुझ से पानी मांगा, मैं आबख़ूरा (गिलास) भर कर ले आया मगर मां को नींद आ गई थी, मैं ने जगाना मुनासिब न समझा, पानी का आबख़ूरा लिये इस इन्तिज़ार में मां के क़रीब खड़ा रहा कि बेदार हों तो पानी पेश करूं। खड़े खड़े काफ़ी देर हो चुकी थी और आबख़ूरे से कुछ पानी बह कर गिर गया था और सख़्त सर्दी की वजह से मेरी उंगली पर बर्फ़ बन कर जम गया था बहर हाल जब वालिदए मोह़तरमा बेदार हुईं तो मैं ने आबख़ूरा पेश किया तो चूंकि उंगली पर बर्फ़ जम जाने की वजह से वोह चिपक गया था लिहाज़ा उंगली की खाल उधड़ गई और ख़ून बहने लगा, मां ने देख कर पूछा येह क्या ? मैं ने सारा ह़ाल बयान किया तो उन्हों ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी में दुआ़ के लिये हाथ उठा दिये और अ़र्ज़ किया : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस से राज़ी हूं तू भी इस से राज़ी रहना।"[2]

क़ुरआने मजीद में है :

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًاؕ اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने इन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो इन से हूं न कहना और इन्हें*

---

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान))

۲ (نزهة المجالس، باب بر الوالدين، ج ۱، ص ۲٦۱)

قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿٢٣﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿٢٤﴾

(بني إسرائيل:١٧/٢٣-٢٤)

न झिड़कना और इन से ता'ज़ीम की बात कहना और इन के लिये आ़जिज़ी का बाज़ू बिछा नर्म दिली से और अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रहम कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन में पाला।

मज़्कूरा आयत की तफ़्सीर में फ़रमान, "हूं न कहना" के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه फ़रमाते हैं,

"या'नी ऐसा कोई कलिमा ज़बान से न निकालना जिस से येह समझा जाए कि उन की त़बीअ़त पर कुछ गिरानी है।"

और फ़रमान "ता'ज़ीम की बात कहना" के तह़्त फ़रमाया, "और हुस्ने अदब के साथ उन से ख़ित़ाब करना। **मस्अला :** मां बाप को उन का नाम ले कर न पुकारे येह ख़िलाफ़े अदब है और इस में उन की दिल आज़ारी है लेकिन वोह सामने न हों तो उन का ज़िक्र नाम ले कर करना जाइज़ है। **मस्अला :** मां बाप से इस त़रह़ कलाम करे जैसे ग़ुलाम व ख़ादिम आक़ा से करता है।"

फ़रमान "आ़जिज़ी का बाज़ू बिछा" के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه फ़रमाते हैं, "या'नी ब नर्मी व तवाज़ोअ़ पेश आ और उन के थके वक़्त (या'नी बुढ़ापे और बीमारी) में शफ़्क़त व मह़ब्बत का बरताव कर कि उन्हों ने तेरी मजबूरी के वक़्त तुझे मह़ब्बत से परवरिश किया था और जो चीज़ उन्हें दरकार हो वोह उन पर ख़र्च करने में दरीग़ न कर।"

सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه मज़ीद फ़रमाते हैं, "मुद्दआ़ येह है कि दुन्या में बेहतर सुलूक और ख़िदमत में कितना भी मुबालग़ा किया जाए लेकिन वालिदैन के एह़सान का ह़क़ अदा नहीं होता इस लिये बन्दे को

चाहिये कि बारगाहे इलाही में इन पर फ़ज़्लो रह़मत फ़रमाने की दुआ़ करे और अ़र्ज़ करे कि या रब मेरी ख़िदमतें इन के एह़सान की जज़ा नहीं हो सकतीं तू इन पर करम कर कि इन के एह़सान का बदला हो। **मस्अला :** इस आयत से षाबित हुवा कि मुसलमान के लिये रह़मत व मग़्फ़िरत की दुआ़ जाइज़ और उसे फ़ाइदा पहुंचाने वाली है मुर्दों को ईसाले षवाब में भी उन के लिये दुआ़ए रह़मत होती है लिहाज़ा इस के लिये येह आयत अस्ल है। **मस्अला :** वालिदैन काफ़िर हों तो उन के लिये हिदायत व ईमान की दुआ़ करे कि येही उन के ह़क़ में रह़मत है। ह़दीष शरीफ़ में है वालिदैन की रिज़ा में **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा और उन की नाराज़ी **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी है दूसरी ह़दीष में है वालिदैन का फ़रमां बरदार जहन्नमी न होगा और उन का ना फ़रमान कुछ भी अ़मल करे गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगा एक और ह़दीष में है हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया वालिदैन की ना फ़रमानी से बचो इस लिये कि जन्नत की ख़ुश्बू हज़ार बरस की राह तक आती है और ना फ़रमान वोह ख़ुश्बू न पाएगा न क़ातेए़ रेह़्म न बूढ़ा ज़िनाकार न तकब्बुर से अपनी इज़ार टख़्नों से नीचे लटकाने वाला।"[1]

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने एक बार एक लड़के और उस के वालिद को क़ैदख़ाने में डाला, वालिद साह़िब नीम गर्म पानी से ही वुज़ू के आ़दी थे मगर दारोग़ा (जेलर) ने क़ैदख़ाने में आग जलाने से मन्अ़ कर दिया, तो लड़के ने रात भर चराग के ज़रीए़ पानी (का बरतन) गर्म किया जब सुब्ह़ हुई तो बाप ने वुज़ू का पानी कुछ गर्म पाया तो बेटे से पूछा येह कहां से आया ? कहने लगा मैं ने इसे चराग़ की आग से गर्म किया है, तो येह बात दारोग़ा

---

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

(जेलर) तक पहुंच गई तो उस ने वोह चराग़ भी ऊंचा रखवा दिया फिर बेटे ने पानी लिया और बरतन को रात भर अपने दिल पर रख कर गर्म किया यहां तक कि पानी में थोड़ी सी ह़रारत पैदा हो गई तो वालिद ने पूछा येह कहां से गर्म हुवा ? तो बेटे ने मुआ़मला बयान किया, तो बाप ने हाथ उठाए और दुआ़ की, ऐ अल्लाह ! इसे जहन्नम की आग से मह़फ़ूज़ रखना।[1]

एक और मक़ाम पर इर्शाद हुवा :

وَ اُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ الآية (الأنفال:٨/٧٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और रिश्ते वाले एक से दूसरे ज़ियादा नज़्दीक हैं अल्लाह की किताब में।*

एक और मक़ाम पर इर्शाद है :

وَ الَّذِیْنَ یَصِلُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَ یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَ یَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ؕ (الرعد:١٣/٢١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह कि जोड़ते हैं उसे जिस के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया और अपने रब से डरते और हिसाब की बुराई से अन्देशा रखते हैं।*

इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमान "जोड़ते हैं जिस के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया" के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْه रक़म त़राज़ हैं, या'नी अल्लाह की तमाम किताबों और उस के कुल रसूलों पर ईमान लाते हैं और बा'ज़ को मान कर बा'ज़ से मुन्किर हो कर इन में तफ़रीक़ नहीं करते या येह मा'ना हैं कि हुक़ूक़े क़राबत की रिआ़यत रखते हैं और रिश्ता क़त्अ़ नहीं करते इसी में रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़राबतें और ईमानी क़राबतें भी दाख़िल हैं सादाते किराम का एह़तिराम और

---

[1] (نزهة المجالس، باب بر الوالدين، ج ١، ص ٢٦٢)

मुसलमानों के साथ मवद्दत व एह़सान और उन की मदद और उन की त़रफ़ से मुदा-फ़-अ़त और उन के साथ शफ़्क़त और सलाम व दुआ़ और मुसलमान मरीज़ों की इयादत और अपने दोस्तों ख़ादिमों हमसायों सफ़र के साथियों के हुक़ूक़ की रिआ़यत भी इस में दाखि़ल है और शरीअ़त में इस का लिह़ाज़ रखने की बहुत ताकीदें आई हैं ब कषरत अह़ादीषे सह़ीह़ा इस बाब में वारिद हैं।[1]

और फ़रमाया :

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَ الْمِسْكِیْنَ وَ ابْنَ السَّبِیْلِ وَ لَا تُبَذِّرْ تَبْذِیْرًا (۲۶)
(بني إسرائيل:١٧/٢٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और रिश्तेदारों को उन का ह़क़ दे और मिस्कीन और मुसाफ़िर को और फ़ुज़ूल न उड़ा।*

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : ह़क़ देने से मुराद है, "उन के साथ सिलए रेह़्‌मी कर और मह़ब्बत और मैल जोल और ख़बर गीरी और मौक़अ़ पर मदद और हुस्ने मुआ़शरत। **मस्अला :** और अगर वोह मह़ारिम में से हों और मोह़ताज हो जाएं तो उन का ख़र्च उठाना येह भी उन का ह़क़ है और साह़िबे इस्तिताअ़त रिश्तेदार पर लाज़िम है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा है कि रिश्तेदारों से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ क़राबत रखने वाले मुराद हैं और उन का ह़क़्क़े ख़ुमुस देना और उन की ता'ज़ीम व तौक़ीर बजा लाना है।"

"फ़ुज़ूल न उड़ा या'नी ना जाइज़ काम में ख़र्च न कर। ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि تبذیر माल का ना ह़क़ में ख़र्च करना है।"[2]

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)
2. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

और क़ुरआन में है :

اَلَّذِیْنَ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِیْثَاقِهٖ۪ وَ یَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ (البقرة:٢/٢٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जो **अल्लाह** के अ़हद को तोड़ देते हैं पक्का होने के बा'द और काटते हैं उस चीज़ को जिस के जोड़ने का ख़ुदा ने हुक्म दिया और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं वोही नुक़्सान में हैं।*

सदरुल अफ़ाज़िल "और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं" के तह़्त फ़रमाते हैं, "रिश्ता व क़राबत के तअ़ल्लुक़ात, मुसलमानों की दोस्ती व मह़ब्बत, तमाम अम्बिया का मानना, किताबे इलाही की तस्दीक़ ह़क़ पर जम्अ़ होना, येह वोह चीज़ें हैं जिन के मिलाने का हुक्म फ़रमाया गया इन में क़त्अ़ करना बा'ज़ को बा'ज़ से ना ह़क़ जुदा करना तफ़र्क़ों की बिना डालना मम्नूअ़ फ़रमाया गया।"[1]

अल्लाह तआ़ला रिश्तेदारों का लिह़ाज़ रखने का हुक्म फ़रमाता है :

وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَ الْاَرْحَامَؕ الآية (النساء:٤/١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और **अल्लाह** से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिह़ाज़ रखो।*

या'नी इन्हें क़त्अ़ न करो। ह़दीष शरीफ़ में है "जो रिज़्क़ में कशाइश चाहे उस को चाहिये कि सिलए रेह़्मी करे और रिश्तेदारों के ह़ुक़ूक़ की रिआ़यत रखे।"[2]

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)
2. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

और फ़रमाया :

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَ تُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿۲۲﴾ (محمد:۲۲/۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो क्या तुम्हारे येह लच्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो।*

यूं ही बे शुमार अहादीष में भी सिलए रेहमी के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया गया है, चुनान्चे :

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: "يَا اَيُّهَا النَّاسُ تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ قَبْلَ اَنْ تَمُوْتُوْا، وَبَادِرُوْا بِالْاَعْمَالِ الصَّالِحَةِ قَبْلَ اَنْ تُشْغَلُوْا، وَصِلُوا الَّذِيْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ رَبِّكُمْ بِكَثْرَةِ ذِكْرِكُمْ لَهُ، وَكَثْرَةِ الصَّدَقَةِ فِي السِّرِّ وَالْعَلَانِيَةِ تُرْزَقُوْا وَتُنْصَرُوْا وَتُجْبَرُوْا". الحديث[1]

हज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया, फ़रमाया ऐ लोगो ! मरने से पहले अल्लाह तआ़ला से तौबा करो और फ़ुरसत के लम्हात ख़त्म होने से पहले नेक आ'माल बजा लाओ, और अपने रब का ज़िक्र कर के, और पोशीदा व ज़ाहिरी तौर पर ख़ूब स-दक़ा कर के अपने रब से तअ़ल्लुक़ को मिलाओ। (जज़ा येह होगी कि) रोज़ी पाओगे, मददे इलाही हासिल हो जाएगी और तुम्हारे अह़वाल अच्छे कर दिये जाएंगे।[1]

مدینہ

[1] (سنن ابن ماجه، كتاب إقامة الصلاة والسنة فيها، باب في فرض الجمعة، الحديث:١٠٨١، ج٢، ص١٥)

एक और मक़ाम पर है :

عَنْ سَلْمَانَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "الصَّدَقَةُ عَلَى الْمِسْكِيْنِ صَدَقَةٌ، وَعَلَى ذِي الرَّحِمِ ثِنْتَانِ: صَدَقَةٌ وَصِلَةٌ". [1]

हज़रते सलमान बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ से मरवी है, फ़रमाते हैं, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم ने फ़रमाया, आ़म मिस्कीन पर स-दक़ा करना एक स-दक़ा है और वोही स-दक़ा अपने क़राबत दार पर दो स-दक़े हैं एक स-दक़ा दूसरा सिलए रेह़्मी।[1]

"पहले मिस्कीन से मुराद अज्नबी मिस्कीन है या'नी अज्नबी मिस्कीन को ख़ैरात देने में सिर्फ़ ख़ैरात का षवाब है और अपने अ़ज़ीज़ मिस्कीन को ख़ैरात देने में ख़ैरात का भी षवाब है और सिलए रेह़्मी का भी, सिलए रेह़्मी या'नी अहले क़राबत का ह़क़ अदा करना भी इ़बादत है, बेहतरीन इ़बादत, फिर जिस क़दर रिश्ता क़वी उसी क़दर उस के साथ सुलूक करना ज़ियादा षवाब है, इस लिये रब तआ़ला ने अहले क़राबत का ज़िक्र पहले फ़रमाया कि इर्शाद फ़रमाया : [2] ﴿وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ﴾ ([بني إسرائيل:١٧/٢٦]) **तर्जमा :** और रिश्तेदारों को उन का ह़क़ दे और मिस्कीन और मुसाफ़िर को।" (कन्ज़ुल ईमान))

---

[1] (سنن الترمذي، كتاب الزكاة، باب ما جاء في الصدقة على ذي قرابة، الحديث:٦٥٨، ج ١، ص ٤٧٤)
(سنن ابن ماجه، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة، الحديث:١٨٤٤، ج٢، ص٤١٢-٤١٣)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب الصدقة على الأقارب، الحديث:٢٥٨٢، الجزء٥، ج٣، ص٩٧)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب أفضل الصدقة، الفصل الثاني، الحديث: ١٩٣٩، ج١، ص٣٦٧)

[2] (مرآة المناجيح شرح مشكاة المصابيح، ج٣، ص١٢٢)

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ أُمِّ كُلْثُوْمٍ بِنْتِ عُقْبَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "أَفْضَلُ الصَّدَقَةِ عَلٰى ذِي الرَّحِمِ الْكَاشِحِ".[1]

ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम बिन्ते उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ऐसे अहले क़राबत पर स-दक़ा करना अफ़्ज़ल है जो पोशीदा दुश्मनी रखता हो ।[1]

फ़क़ीह अबुल्लैष समर क़न्दी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, अगर किसी शख़्स के रिश्तेदार क़रीब हों तो उस पर लाज़िम है कि उन के साथ तहाइफ़ व मुलाक़ात के ज़रीए़ सिलए रेह़्मी करे, अगर माली तौ़र पर सिलए रेह़्मी पर क़ादिर न हो तो उन से मिला करे और ज़रूरतन उन के कामों में हाथ बटाए और अगर दूर हों तो उन से मुरासला करे और (सफ़र कर के) उन के पास जाने की ता़क़त रखता हो तो (ख़त़ लिखने से) ख़ुद जाना अफ़्ज़ल है ।[2]

अहले क़राबत पर स-दक़ा करने से इस का षवाब दूना हो जाता है, चुनान्चे :

عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर,

---

[1] (صحيح ابن خزيمة، باب فضل الصدقة على ذي رحم الكاشح، الحديث:٢٣٨٦، ج٤، ص٧٧-٧٨)
(مسند الشهاب، أفضل الصدقة إصلاح ذات البين، الحديث: ١٢٨٠، ج٢، ص٢٤٤)
(المعجم الكبير، الحديث: ٢٠٤، ج٢٥، ص٨٠)

[2] (تنبیہ الغافلین، ص٧٠)

قَالَ: "إِنَّ الصَّدَقَةَ عَلٰى ذِي قَرَابَةٍ يُضَعَّفُ أَجْرُهَا مَرَّتَيْنِ". [1]

महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, बेशक अहले क़राबत पर स-दक़े का षवाब दो गुना बढ़ा दिया जाता है।[1]

फ़क़ीह अबुल्लैष समर क़न्दी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, कि सिलए रेह़मी में दस अच्छी ख़स्लतें हैं ; एक येह कि इस से **अल्लाह** राज़ी होता है क्यूं कि सिलए रेह़मी खुद उसी का हुक्म है। दूसरी येह कि सिलए रेह़मी से इन्हें दिली इत़्मीनान ह़ासिल होता है और ह़दीष शरीफ़ में भी है कि अफ़्ज़ल आ'माल वोह हैं जो मोमिन को मुत़्मइन करें। तीसरी अच्छी ख़स्लत येह है कि फ़िरिश्ते खुश होते हैं। चौथी येह कि लोग उस की ता'रीफ़ करते हैं। पांचवीं येह कि सिलए रेह़मी से शैत़ाने लईन ग़मनाक होता है। छटी येह कि उ़म्र में बरकत होती है। सातवीं अच्छी ख़स्लत रिज़्क़ में बरकत। आठवीं अच्छी ख़स्लत अच्छी मौत। नववीं, मह़ब्बत में ज़ियादती, क्यूं कि जिन पर उस ने एह़सान किये होंगे सब उस की खुशी व ग़म में शरीक होंगे और इस पर उस की मदद भी करते रहेंगे जिस की वजह से इस की मह़ब्बत लोगों के नज़्दीक और बढ़ेगी और दसवीं अच्छी ख़स्लत मौत के बा'द ज़ियादतिये अज्र है, क्यूं कि लोग उस की मौत के बा'द उस के एह़सानात को याद कर के उस के लिये ईसाले षवाब व दुआ़ करेंगे।[2]

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सिलए रेह़मी करने वालों के लिये अ़ज़ाबे क़ियामत से बचाव का मुज़्दा अ़त़ा फ़रमाया, चुनान्चे :

---

[1] (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٧٨٣٤، ج٨، ص٢٠٦)

[2] (تنبيه الغافلين، ص ٧١)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "وَالَّذِي بَعَثَنِي بِالْحَقِّ لَا يُعَذِّبُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ رَحِمَ الْيَتِيْمَ، وَلَانَ لَهُ فِي الْكَلَامِ، وَرَحِمَ يُتْمَهُ وَضُعْفَهُ، وَلَمْ يَتَطَاوَلْ عَلٰى جَارِهِ بِفَضْلِ مَا آتَاهُ اللّٰهُ". وَقَالَ: "يَا أُمَّةَ مُحَمَّدٍ وَالَّذِي بَعَثَنِي بِالْحَقِّ لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ صَدَقَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ رَجُلٍ، وَلَهُ قَرَابَةٌ مُحْتَاجُوْنَ إِلٰى صِلَتِهِ، وَيَصْرِفُهَا إِلٰى غَيْرِهِمْ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا يَنْظُرُ اللّٰهُ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ".[1]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस ने मुझे हक़ के साथ मबऊ़ष फ़रमाया, **अल्लाह** तआ़ला उस शख़्स को बरोज़े क़ियामत अ़ज़ाब न देगा जो यतीम पर रह़म खाए और उस से नर्म गुफ़्त्गू करे और उस की यतीमी और कमज़ोरी पर रह़म खाए। और **अल्लाह** तआ़ला के अ़ता कर्दा (माल व मताअ़) की वजह से अपने हमसाए पर न इतराए, और फ़रमाया ऐ उम्मते मुह़म्मद ! उस ज़ाते मुक़द्दस की क़सम जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मबऊ़ष फरमाया **अल्लाह** तआ़ला बरोज़े क़ियामत उस शख़्स से स-दक़ा क़बूल न फ़रमाएगा जिस के अहले क़राबत मोहताजे रह़म हों और वोह ग़ैरों को बांटता फिरे। उस ज़ाते अक़्दस की क़सम ऐसे शख़्स पर **अल्लाह** तआ़ला बरोज़े क़ियामत नज़्रे रह़मत न फ़रमाएगा।[1]

[1] (المعجم الأوسط للطبراني، الحديث: ٨٨٢٨، ج٨، ص٣٤٦)

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ بَهْزِ بْنِ حَكِيْمٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَنْ أَبَرُّ؟ قَالَ: "أُمَّكَ، ثُمَّ أُمَّكَ، ثُمَّ أُمَّكَ، ثُمَّ أَبَاكَ، ثُمَّ الْأَقْرَبَ فَالْأَقْرَبَ".[1]

ह़ज़रते बह्ज़ बिन ह़कीम अपने वालिद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से और वोह उन के दादा से रिवायत नक़्ल करते हैं फ़रमाते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह कौन ज़ियादा ह़क़दार है, फ़रमाया तेरी मां, फिर तेरी मां फिर तेरी मां फिर तेरा बाप फिर क़रीब तरीन रिश्तेदार और फिर क़रीब तर ।[1]

पांच चीज़े ऐसी हैं जिन की हमेशगी बन्दे की नेकियों में इज़ाफ़े का सबब है, हमेशा कम या ज़ियादा स-दक़ा करते रहना, हमेशा थोड़ी या ज़ियादा सिलए रेह़्मी करते रहना, हमेशा **अल्लाह** की राह में जिहाद करते रहना, पानी के इस्राफ़ के बिग़ैर हमेशा बा वुज़ू रहना, और हमेशा वालिदैन की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करना ।[2]

यूं ही अहले क़राबत रिश्तेदार के साथ इस्तित़ाअ़त होते हुए, बुख़्ल करने पर वईद है, चुनान्चे :

عَنْ جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ الْبَجَلِيِّ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا مِنْ ذِيْ رَحِمٍ

ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजल्ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

---

[1] (سنن الترمذي، كتاب البر والصلة، باب ما جاء في بر الوالدين، الحديث: ١٨٩٧، ج٣، ص ٦١)

[2] (تنبيه الغافلين، ص ٧١)

جو अपने अहले क़राबत रिश्तेदार से उस के ज़रूरत से ज़ाइद माल में से सुवाल करे और वोह बुख़्ल करे (उसे न दे) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम से एक सांप निकालेगा जिसे शुजाअ़ कहा जाता है वोह ज़बान बाहर निकालता होगा और उस के गले में तौक़ बना कर डाला जाएगा ।[1]

يَــأْتِي ذَا رَحِمِهِ، فَيَسْأَلُهُ فَضْلاً أَعْطَاهُ اللّٰهُ إِيَّاهُ فَيَبْخَلُ عَلَيْـهِ إِلَّا أَخْـرَجَ اللّٰهُ لَهُ مِنْ جَهَنَّمَ حَيَّةً يُقَالُ لَهَا شُجَاعٌ يَتَلَمَّظُ فَيُطَوَّقُ بِهِ"۔[1]

एक और ह़दीष में है :

ह़ज़रते अ़म्र बिन शुऐ़ब अपने वालिद और वोह उन के दादा से रिवायत करते हुए फ़रमाते हैं, सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जिस शख़्स से उस का चचाज़ाद भाई उस के फ़ज़्ल (या'नी ज़रूरत से ज़ाइद माल में) से कुछ त़लब करने के लिये आए और वोह उसे न दे तो बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला उस शख़्स से अपना फ़ज़्ल रोक लेगा ।[2]

عَنْ عَـمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيْــهِ عَنْ جَـدِّهِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَـالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰـهِ صَـلَّـى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَـلَّـمَ: "أَيُّمَا رَجُلٍ أَتَاهُ ابْنُ عَمِّهِ يَسْأَلُهُ مِنْ فَضْلِهِ فَمَنَعَهُ، مَـنَـعَـهُ اللّٰـهُ فَـضْـلَـهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ"۔[2]

एक और ह़दीष में इर्शादे नबवी है :

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِيَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, बन्दे को

عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

مدينہ
---

1 (المعجم الأوسط للطبراني، الحديث: ٢٣٤٤، ج٢، ص٣٢٢)

2 (المعجم الصغير للطبراني، الحديث: ٩٣، ص٧٤)
(المعجم الأوسط، الحديث: ١١٩٥، ج٢، ص٤٥)

مَاذَا يُنْجِي الْعَبْدَ مِنَ النَّارِ؟
قَالَ: ''الْإِيْمَانُ بِاللّٰهِ''. قُلْتُ:
يَا نَبِيَّ اللّٰهِ مَعَ الْإِيْمَانِ عَمَلٌ؟
قَالَ: ''أَنْ تَرْضَخَ مِمَّا رَزَقَكَ
اللّٰهُ''. قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللّٰهِ، فَإِنْ
كَانَ فَقِيْرًا لَا يَجِدُ مَا يَرْضَخُ؟
قَالَ: ''يَأْمُرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰى
عَنِ الْمُنْكَرِ''. قُلْتُ: إِنْ كَانَ
لَا يَسْتَطِيْعُ أَنْ يَأْمُرَ
بِالْمَعْرُوْفِ، وَلَا يَنْهٰى عَنِ
الْمُنْكَرِ؟ قَالَ: ''فَلْيُعِنِ
الْأَخْرَقَ''. قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ
اللّٰهِ أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ لَا يُحْسِنُ
أَنْ يَصْنَعَ؟ قَالَ: ''فَلْيُعِنْ
مَظْلُوْمًا''. قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللّٰهِ!
أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ ضَعِيْفًا لَا
يَسْتَطِيْعُ أَنْ يُعِيْنَ مَظْلُوْمًا؟
قَالَ: ''مَا تُرِيْدُ أَنْ تَتْرُكَ
لِصَاحِبِكَ مِنْ خَيْرٍ، لِيُمْسِكْ
أَذَاهُ عَنِ النَّاسِ''. قُلْتُ:

कौन सी चीज़ आग से बचाती है ? फ़रमाया, **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान, मैं ने अ़र्ज़ की, ऐ **अल्लाह** के नबी क्या ईमान के साथ कोई अ़मल भी है ? फ़रमाया, जो कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें अ़ता फ़रमाया है उस में से थोड़ा बहुत स-दक़ा करना । मैं ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर कोई फ़क़ीर हो कि स-दक़ा देने के लिये कुछ न पाए तो ? इर्शाद फ़रमाया नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके, मैं ने अ़र्ज़ की, अगर कोई नेकी का हुक्म करने और बुराई से रोकने की इस्तिताअ़त भी न पाए तो ? फ़रमाया किसी बे हुनर की मदद करे, मैं ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप क्या फ़रमाते हैं कि अगर वोह इसे भी ब ख़ूबी न कर सके ? तो फ़रमाया कि किसी मज़्लूम की मदद करे, मैं ने अ़र्ज़ की ऐ **अल्लाह** के नबी صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप की क्या राय है कि अगर वोह कमज़ोर हो और मज़्लूम की मदद न कर सके तो ? फ़रमाया क्या तू अपने साथी के लिये कोई भलाई नहीं छोड़ना चाहता, उसे चाहिये कि लोगों को अपनी ज़ात से तक्लीफ़ पहुंचने से

يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ أَرَأَيْتَ إِنْ فَعَلَ هٰذَا يُدْخِلُهُ الْجَنَّةَ؟ قَالَ: "مَا مِنْ عَبْدٍ مُؤْمِنٍ يُصِيْبُ خَصْلَةً مِّنْ هٰذِهِ الْخِصَالِ إِلَّا أَخَذَتْ بِيَدِهِ حَتّٰى تُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ".[1]

बचाए, मैं ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप क्या फ़रमाते हैं कि अगर वोह येह आ'माल करे तो येह उसे जन्नत में दाखि़ल कर देंगे ? फ़रमाया जो भी मोमिन बन्दा इन ख़साइल में से किसी ख़स्लत को इख़्तियार कर लेगा वोह ख़स्लत उस का हाथ पकड़ कर उसे जन्नत में ले जाएगी।[1]

अपने दीनी भाई को खिलाना, एक दिरहम स-दक़ा करने से ज़ियादा महबूब है और अपने दीनी भाई पर एक दिरहम स-दक़ा करना, गै़र पर सो दिरहम स-दक़ा करने से ज़ियादा महबूब है, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَأَنْ أُطْعِمَ أَخًا لِيْ فِي اللّٰهِ لُقْمَةً أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَتَصَدَّقَ عَلٰى مِسْكِيْنٍ بِدِرْهَمٍ، وَلَأَنْ أُعْطِيَ أَخًا لِيْ فِي اللّٰهِ دِرْهَمًا أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَتَصَدَّقَ عَلٰى مِسْكِيْنٍ بِمِائَةِ دِرْهَمٍ".[2]

ह़ज़रते ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है आप शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत बयान करते हैं कि आप ने फ़रमाया, मुझे किसी अज्नबी मिस्कीन पर एक दिरहम ख़र्च करने से ज़ियादा महबूब है कि मैं अपने दीनी भाई को एक लुक़्मा खिलाऊं और किसी अज्नबी मिस्कीन को एक सो दिरहम स-दक़ा करने से ज़ियादा पसन्द है कि अपने दीनी भाई को एक दिरहम दूं।[2]

---

[1] (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب في الصدقة والحث عليها... إلخ، الحديث: ٣٤-٣٥، ج٢، ص١٣)

[2] (تاريخ جرجان، الحديث: ٦١٨، ج١، ص٣٥٩)

इसी त़रह़ का मफ़्हूम एक और ह़दीष में है :

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, मुझे तुम्हारे बाज़ार में आ के ग़ुलाम ख़रीद कर आज़ाद कर देने से ज़ियादा अ़ज़ीज़ है कि मैं अपने भाइयों को एक या दो साअ़ खाना खिला दूं।[1]

عَنْ عَلِيٍّ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: لَأَنْ أَجْمَعَ نَفَراً مِنْ إِخْوَانِي عَلٰى صَاعٍ، أَوْ صَاعَيْنِ مِنْ طَعَامٍ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَدْخُلَ سُوْقَكُمْ فَأَشْتَرِيَ رَقَبَةً فَأُعْتِقَهَا.[1]

तीन क़िस्म के लोगों पर **अल्लाह** तआ़ला का सायए रह़मत है :

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं, ख़ातमुल मुरसलीन,रह़मतुल्लिल आलमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, तीन सिफ़ात ऐसी हैं कि जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर अपनी रह़मत का साया कर देगा और उसे अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। (वोह सिफ़ात येह हैं) कमज़ोर के साथ नर्मी बरतना, वालिदैन पर शफ़्क़त करना और ग़ुलामों के साथ एह़सान करना। और तीन सिफ़ात वोह हैं कि जिस शख़्स में होंगी उसे

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "ثَلَاثٌ مَنْ كُنَّ فِيْهِ نَشَرَ اللّٰهُ عَلَيْهِ كَنَفَهُ، وَأَدْخَلَهُ جَنَّتَهُ: رِفْقٌ بِالضَّعِيْفِ، وَشَفَقَةٌ عَلَى الْوَالِدَيْنِ، وَإِحْسَانٌ إِلَى الْمَمْلُوْكِ. وَثَلَاثٌ مَنْ كُنَّ

مدینہ

[1] (تهذيب الكمال، الحديث: ٥٦٥٤، ج٢٦، ص٥٥٢)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस दिन अपने अ़र्श के साए में रखेगा जिस दिन उस के सिवा कोई साया न होगा (वोह सिफ़ात येह हैं) सख़्त मुश्किल में वुज़ू करना, अंधेरे में मसाजिद को जाना, और भूके को खाना खिलाना ।[1]

فِیْہِ أَظَلَّہُ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ تَحْتَ عَرْشِہٖ یَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّہٗ: اَلْوُضُوْءُ فِي الْمَکَارِہِ، وَالْمَشْيُ إِلَی الْمَسَاجِدِ فِي الظُّلَمِ، وَإِطْعَامُ الْجَائِعِ"۔[1]

नेक बन्दे की पहचान क्या है ?

सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : बेशक लोगों में से वोह लोग बुरे हैं जिन से लोग मह्ज़ उन के शर की वजह से बचते हों। (مُوطا امام مالک، ج۲،ص۴۰۳،حدیث۱۷۱۹)

मज़ीद सुल्ताने दो जहान, शहनशाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दे वोह हैं जिन्हें देखें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए और अल्लाह तआ़ला के बुरे बन्दे वोह हैं जो चुग़ल ख़ोरी करते, दोस्तों में जुदाई डालते और नेक लोगों के ऐब तलाश करते हैं। (مسند امام احمد، ج ٦، ص ٢٩١، حدیث ١٨٠٢٠)

مدینہ

[1] (التّرغیب و التّرھیب، کتاب الصدقات، التّرغیب في إطعام الطّعام وسقي المآء... إلخ، الحدیث:۲۲،ج۲،ص۳۷)

माल जम्अ़ करना कैसा है ?

"माल जम्अ़ रखना बा'दे वफ़ात छोड़ जाना ह़लाल है जब कि उस से ज़कात, फ़ित्रा, कुरबानी, हुक़ूक़ुल इबाद अदा किये जाते रहे हों, येह कन्ज़ में दाख़िल नहीं जिस की क़ुरआन में बुराई आई है।"[1]

ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُهْدِيَ لَهٗ ثَلَاثُ طَوَايِرَ فَأَطْعَمَ خَادِمَهٗ طَيْرًا، فَلَمَّا كَانَ الْغَدُ أَتَاهُ بِهٖ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "أَلَمْ أَنْهَكَ أَنْ تُخَبِّئَ شَيْئًا لِغَدٍ، إِنَّ اللّٰهَ يَأْتِيْ بِرِزْقِ كُلِّ غَدٍ".

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में तीन परन्दे हदिय्यतन पेश किये गए तो आप ने एक परन्दा अपने ग़ुलाम को खाने के लिये अ़त़ा फ़रमा दिया, दूसरे रोज़ ग़ुलाम वोह परन्दा ले आया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया कि मैं ने तुझे मन्अ़ न किया था कि कल के लिये कुछ बचा कर न रखा कर, बेशक **अल्लाह** तआ़ला हर दूसरे दिन का रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है।[2]

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ख़ुदा की क़सम ! जो शख़्स दिरहम (माल) की इ़ज़्ज़त करता है **अल्लाह** तआ़ला उसे ज़िल्लत देता है।

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 88)

2. (مسند أبي يعلى، الحديث: ٤٢٢٣، ج٧، ص٢٢٤)
(شعب الإيمان، باب التوكل والتسليم، الحديث: ١٣٤٨، ج٢، ص١١٩)

मन्क़ूल है की सब से पहले दिरहम व दीनार बने तो शैत़ान ने उन को उठा कर अपनी पेशानी पर रखा फिर उन को चूमा और बोला : जिस ने इन से मह़ब्बत की वोह मेरा ग़ुलाम है। (اَلْعِیَاذُبِاللّٰہ)

ह़ज़रते समीत़ बिन इ़ज्लान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : दिरहम व दीनार (मालो दौलत) मुनाफ़िक़ों की लगामें हैं वोह इन के ज़रीए़ दोज़ख़ की त़रफ़ खींचे जाएंगे।

ह़ज़रत यह़्या बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : दिरहम बिच्छू हैं अगर तुम इस के ज़ह्‌र का उतार नहीं जानते तो इसे न पकड़ो क्यूं कि अगर इस ने डस लिया तो इस का ज़ह्‌र तुम्हें हलाक कर देगा। अ़र्ज़ किया गया : इस का उतार क्या है ? फ़रमाया : ह़लाल त़रीक़े से ह़ासिल करना और इस के ह़ुक़ूक़े वाजिबा अदा करना।

ह़ज़रते उ़ला बिन ज़ियाद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : दुन्या ख़ूब बनाव सिंघार कर के मेरे सामने मिषाली सूरत में आई। मैं ने कहा : मैं तेरे शर से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह चाहता हूं। वोह बोली : अगर आप मुझ से मह़फ़ूज़ रहना चाहते हैं तो दिरहम व दीनार से नफ़रत कीजिये इस लिये कि दिरहम व दीनार वोह चीज़ें हैं जिन के ज़रीए़ आदमी हर क़िस्म की दुन्या ह़ासिल करता है लिहाज़ा जो इन दोनों (या'नी दिरहम व दीनार) से सब्र करेगा (या'नी दूर रहेगा) वोह दुन्या से भी सब्र कर लेगा।

मज़ीद इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने दर्जे ज़ैल अ़-रबी अश्आ़र नक़्ल किये हैं :

إِنِّي وَجَدْتُ فَلَا تَظُنُّوْا غَيْرَهٗ   أَنَّ التَّوَرُّعَ عِنْدَ هٰذَا الدِّرْهَمِ
فَإِذَا قَدَرْتَ عَلَيْهِ ثُمَّ تَرَكْتَهٗ   فَاعْلَمْ أَنَّ تُقَاكَ تَقْوَى الْمُسْلِمِ

मैं ने तो (येह राज़) पा लिया है पस तुम भी इस के इ़लावा कुछ और गुमान मत करो और येह न समझो कि तक़्वा इस दिरहम के पास है।

बल्कि जब तुम इस पर क़ादिर होने के बा वुजूद इसे तर्क कर दो तो जान लो कि तुम्हारा तक़्वा एक मुसलमान का तक़्वा है।

لَا يَغُرَّنَّكَ مِنَ الْمَرْءِ — قَمِيْصٌ رُقِّعُهُ
أَوْ إِزَارٌ فَوْقَ عَظْمِ السَّ — اقِ مِنْهُ رَفَعَهُ
أَوْ جَبِيْنٌ لَاحَ فِيْهِ — أَثَرٌ قَدْ خَلَعَهُ
أَرِهِ الدِّرْهَمَ تَعْرِفُ — حُبَّهُ أَوْ وَرَعَهُ

किसी आदमी की क़मीस पर लगे हुए पैवन्द या पिंडली से ऊपर की हुई शलवार या उस की पेशानी जिस में (सज्दे के) निशानात हों, को देख कर धोका न खाना येह देखो कि वोह दिरहम (रुपै पैसे) से महब्बत करता है या इस से दूर रहता है।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है फ़रमाते हैं कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कल के लिये कुछ ज़ख़ीरा न फ़रमाते।[2]

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَدَّخِرُ شَيْئًا لِغَدٍ.[2]

---

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم المال و كراهة حبه، ج٣، ص٣١٢_٣١٣)

[2] (سنن الترمذي، كتاب الزهد، باب ما جاء في معيشة النبي صلى الله تعالى عليه وسلم وأهله، الحديث: ٢٣٦٢، ج٣، ص٣١٢)

(نوادر الأصول في أحاديث الرسول، ج٣، ص٧٦)

(صحيح ابن حبان، ذكر العلة التي من أجلها كان صلى الله تعالى عليه وسلم الأحوال التي وصفناه، الحديث: ٦٣٥٦، ج١٤، ص٢٧٠)

(الكامل في ضعفاء الرجال، ج٢، ص١٤٩)

(تاريخ بغداد، الحديث: ٣٥٣٨، ج٧، ص٩٧)

(ميزان الاعتدال في نقد الرجال، ج٢، ص١٣٩)

=

हज़रते मुस्लिमा बिन अ़ब्दुल मलिक رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि वोह हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के विसाल के वक़्त उन के पास हाज़िर हुए और कहा : ऐ अमीरल मुअमिनीन ! आप ने ऐसा काम किया है जो आप से पहले किसी ने नहीं किया। आप ने अवलाद छोड़ी है लेकिन इन के लिये दिरहम और दीनार नहीं छोड़े। हालां कि आप के तेरह बच्चे थे। हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मुझे बिठाओ चुनान्चे उन्हों ने आप को बिठाया। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : तुम्हारा येह कहना कि मैं ने इन के लिये दिरहम व दीनार नहीं छोड़े तो मैं ने इन का ह़क़ नहीं रोका लेकिन दूसरों का ह़क़ इन को नहीं दिया और मेरी अवलाद की दो हालतें हैं अगर वोह **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त करेंगे तो वोह इन को किफ़ायत करेगा कि **अल्लाह** तआ़ला नेक लोगों को किफ़ायत करता है और अगर वोह ना फ़रमान होंगे तो मुझे इस बात की परवाह नहीं कि इन के साथ क्या मुआ़मला होगा।[1]

एक रिवायत में है कि हज़रते का'ब क़ुर्ज़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه को बहुत सा माल मिला तो उन से कहा गया : अच्छा होता अगर आप अपने बा'द अपनी अवलाद के लिये जम्अ़ रखते। उन्हों ने फ़रमाया : नहीं बल्कि मैं इसे अपने लिये अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास जम्अ़ करूंगा और अपनी अवलाद के मुआ़मले में अपने रब عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करूंगा।[2]

= (الأحاديث المختارة، الحديث:١٦٠١،ج٤،ص٤٢٤)
(موارد الظمآن، الحديث:٢٥٥٠،ص٦٣٣)
(لسان الميزان لابن حجر، الحديث:١٠١٢،ج١،ص٣٣٢)
(الجامع الصغير للسيوطي، الحديث:٤١٤،ص٢٤٣)

1 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم المال و كراهة حبه،ج٣،ص٣١٢)

2 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم المال و كراهة حبه،ج٣،ص٣١٢)

तब़रानी की एक ह़दीष में है :

عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُوْلُ: "إِنِّي لَأَلِجُ هٰذِهِ الْغُرْفَةَ مَا أَلِجُهَا إِلَّا خَشْيَةَ أَنْ يَكُوْنَ فِيْهَا مَالٌ فَأَتَوَفّٰى، وَلَمْ أُنْفِقَهُ".[1]

ह़ज़रते समुरा बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते : मैं इस कमरे में ख़ौफ़ के साथ ही दाख़िल होता हूं कि कहीं इस में माल हो और मैं उसे ख़र्च किये बिग़ैर विसाल फ़रमा जाऊं।[1]

ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के ह़वारियों ने आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ की कि क्या बात है कि आप तो पानी पर चल सकते हैं मगर हम नहीं ? आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : तुम्हारे नज़्दीक दिरहम व दीनार का क्या मर्तबा है ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : अच्छा रुत्बा है, तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : लेकिन मेरे नज़्दीक दिरहम व दीनार और मिट्टी के ढेले के बराबर हैं।[2]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَا أُحِبُّ أَنَّ لِي أُحُدًا ذَهَبًا

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत बयान करते हैं कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

---

[1] (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٧١٠٥، ج٧، ص٢٦٩)

[2] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم المال و كراهة حبه، ج٣، ص ٣١١-٣١٢)

أُبْقِي صُبْحَ ثَالِثَةٍ وَعِنْدِي مِنْهُ شَيْءٌ إِلَّا شَيْئًا أُعِدُّهُ لِدَيْنٍ". رواه البزار.[1]

मैं पसन्द नहीं करता कि उहुद पहाड़ मेरे लिये सोने का हो और मैं तीसरी सुब्ह़ तक उस से सिवाए अपने क़र्ज़ की अदाएगी के कुछ बचा रखूं ।[1]

मरवी है कि एक शख़्स ने अबू अ़ब्दे रब से कहा : ऐ मेरे भाई ! ऐसा न हो कि तुम दुन्या से बुराई के साथ चले जाओ और माल अपनी अवलाद के लिये छोड़ जाओ येह सुन कर अबू अ़ब्दे रब ने अपने माल से एक लाख दिरहम ख़ैरात कर दिये ।[2]

एक दूसरी ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ أَبِي ذَرٍّ، أَنَّهُ اسْتَأْذَنَ عَلَى عُثْمَانَ، فَأَذِنَ لَهُ وَبِيَدِهِ عَصَاهُ، فَقَالَ عُثْمَانُ: يَا كَعْبُ! إِنَّ عَبْدَ الرَّحْمٰنِ تُوُفِّيَ وَتَرَكَ مَالًا، فَمَا تَرَى فِيهِ؟ فَقَالَ: إِنْ كَانَ يَصِلُ فِيهِ حَقَّ اللّٰهِ، فَلَا بَأْسَ عَلَيْهِ. فَرَفَعَ أَبُو ذَرٍّ عَصَاهُ فَضَرَبَ كَعْبًا وَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۃ से मरवी है, उन्हों ने ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۃ की ख़िदमत में ह़ाज़िरी की इजाज़त मांगी, आप ने उन्हें इजाज़त दे दी अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۃ के हाथ में उन की लाठी थी, ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۃ ने फ़रमाया : ऐ का'ब ! अ़ब्दुर्रह़मान की वफ़ात हुई, उन्हों ने बहुत माल छोड़ा इस बारे में तुम्हारी राय क्या है ? फ़रमाया कि अगर उस में **अल्लाह** का ह़क़ अदा करते हों तो कोई ह़रज नहीं, तब अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۃ ने लाठी उठा

مدینہ

[1] (مسند البزار، عبيد الله عن عباس عن أبي ذر، الحديث:٣٨٩٩، ج٩، ص٣٤٢)
(الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب في الإنفاق في وجوه الخير كرماً...إلخ، الحديث:٢٢، ج٢، ص٣٠)

[2] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم المال وكراهة حبه، ج٣، ص٣١٣)

कर का'ब رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ को मारी और फ़रमाया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : मुझे येह पसन्द नहीं कि मेरे पास इस पहाड़ बराबर सोना हो जिसे मैं ख़ैरात करूं और वोह क़बूल हो जाए कि इस में से छे ओक़िया अपने पीछे छोड़ दूं। फिर आप ने तीन बार फ़रमाया : ऐ उ़षमान ! तुम्हें **अल्लाह** की क़सम ! क्या तुम ने हुज़ूर को येह कहते सुना ? ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : हां।[1]

اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: "مَا أُحِبُّ لَوْ أَنَّ لِيْ هٰذَا الْجَبَلَ ذَهَبًا أُنْفِقُهُ وَيُتَقَبَّلُ مِنِّيْ أَذَرُ خَلْفِيْ مِنْهُ سِتَّ أَوَاقِيَّ" أَنْشُدُكَ بِاللّٰهِ يَا عُثْمَانُ! أَسَمِعْتَهُ؟! ثَلَاثَ مَرَّاتٍ قَالَ: نَعَمْ۔

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी इस ह़दीष की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : कन्धों तक दराज़ लाठी थी जो उन के साथ रहती थी, लाठी साथ रखना सुन्नत है और इस के बहुत फ़वाइद हैं।

मज़ीद फ़रमाते हैं : या'नी उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ ने अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ की मौजूदगी में का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ से मस्अला पूछा कि अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ बहुत माल छोड़ कर वफ़ात पा गए हैं तुम्हारा क्या ख़याल है, आया माल जम्अ़ करना और बाल बच्चों के लिये छोड़ जाना जाइज़ है या नहीं, मिरक़ात में है कि ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ने दो लाख दीनार छोड़े थे, ख़याल रहे कि ह़ज़रते अबू ज़र गि़फ़ारी ज़ाहिद तरीन सह़ाबी थे उन का ख़याल था कि : शे'र

तज डाल मालो धन को, कौड़ी न रख कफ़न को ۞ जिस ने दिया है तन को, देगा वोही कफ़न को

مدینہ

۱ (المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عثمان بن عفان، الحديث:۴۵۳، ج۱، ص۲۱۳)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب الإنفاق و كراهية الإمساك، الحديث:۱۸۸۲، ج۱، ص۳۵۸)

ज़ोह्द व तर्के दुन्या की अह़ादीष पर सख़्ती से आ़मिल थे इस लिये उन की मौजूदगी में येह सुवाल व जवाब हुए ताकि वोह हुक्मे शरई और ज़ोह्द में नीज़ तक़्वा व फ़तवा में फ़र्क़ कर लें।

मज़ीद फ़रमाते हैं : माल जम्अ़ रखना, बा'दे वफ़ात छोड़ जाना ह़लाल है जब कि उस से ज़कात, फ़ित्रा, कु़रबानी, हु़क़ूक़ुल इबाद अदा किये जाते रहे हों, येह कन्ज़ में दाख़िल नहीं जिस की क़ुरआने करीम में बुराई आई है।

ह़कीमुल उम्मत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیہ ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ के लाठी मारने की वज़ाह़त में फ़रमाते हैं : येह मारना ब ह़ालते जज़्ब था, आप अपने नफ़्स पर क़ाबू न पा सके, चूंकि अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ बुज़ुर्ग तरीन सह़ाबी थे, तमाम सह़ाबा आप का बहुत एह़तिराम करते उन की नाराज़ी या मार पर नाराज़ न होते थे, जैसे आज भी सआ़दत मन्द जवान मह़ल्ले के बुज़ुर्गों की सख़्ती पर नाराज़ नहीं होते इस लिये ख़लीफ़तुल मुअमिनीन ने उन से क़िसास के लिये न कहा न ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने कुछ बुरा मनाया। हो सकता है कि आप की येह मार तादीब व सर-ज़निश के लिये हो कि तुम तो कह रहे हो माल जम्अ़ करने में कोई ह़रज नहीं ह़ालां कि अमीर सख़ी भी मिस्कीनों से पांच सो बरस बा'द जन्नत में जाएंगे, ह़िसाब में देर लगेगी। यहां मिरक़ात में है कि बा'द में ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को मदीनए मुनव्वरह से मक़ाम रब्ज़ा में भेज दिया था आप ता वफ़ात वहां ही रहे क्यूं कि आप की त़बीअ़त बहुत जलाली थी।

ख़ुलासए जवाब येह है : ऐ का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ! तुम तो कहते हो माल जम्अ़ करने में ह़रज नहीं जब कि उस से फ़राइज़ अदा कर दिये जाएं, मगर मैं ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना,

माल सारे का सारा ख़ैरात कर देना (कुछ बाक़ी न रखना) सुन्नत है और जम्अ़ करना खि़लाफ़े सुन्नत। क्या खि़लाफ़े सुन्नत में ह़रज नहीं होता? मगर येह जूदो सख़ा हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की खु़सूसियात से है कि खु़द हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के सब घर वाले सय्यिदुल मुतवक्किलीन थे।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنۡ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ أَنَّ رَجُلًا تُوُفِّيَ عَلٰى عَهۡدِ رَسُوۡلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ فَلَمۡ يُوۡجَدۡ لَهٗ كَفَنٌ، فَأَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: "اُنۡظُرُوۡا إِلٰى دَاخِلَةِ إِزَارِهٖ"، فَأُصِيۡبَ دِيۡنَارٌ، أَوۡ دِيۡنَارَانِ، فَقَالَ: "كَيَّتَانِ".[٢] واللفظ للطبراني.

ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ से मरवी है कि अ़हदे रिसालत صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में कोई शख़्स मर गया तो उस के लिये कफ़न न मिला, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए, फ़रमाया : इस की इज़ार में देखो। (देखा) तो एक या दो दीनार मिले तो आप ने फ़रमाया : येह आग के दो दाग़ हैं।[2]

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 88,89)

٢ (المسند للإمام أحمد بن حنبل، أبو أمامة الباهلي، الحديث:٢٢٥٧٤،ج٧،ص٤١٠)
(الزهد لهناد، الحديث:٦٣١٣،ج١،ص٣٤١)
(مسند أبي يعلى، الحديث:٤٩٩٧،ج٨،ص٤١٥)
(مسند الشاميين للطبراني، الحديث:٦٨٩،ج١،ص٣٩٧)
(المعجم الكبير للطبراني، الحديث:٧٥٠٦،ج٨،ص١٠٥)

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأُتِيَ بِجَنَازَةٍ، ثُمَّ أُتِيَ بِأُخْرٰى، فَقَالَ: "هَلْ تَرَكَ مِنْ دَيْنٍ"؟، قَالُوْا: لَا. قَالَ: "فَهَلْ تَرَكَ شَيْئًا"؟ قَالُوْا: نَعَمْ ثَلَاثَةَ دَنَانِيْرَ، فَقَالَ: بِأَصَابِعِهِ: "ثَلَاثُ كَيَّاتٍ".[1]

ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : मैं बारगाहे नबवी में बैठा था कि एक जनाज़ा लाया गया फिर दूसरा जनाज़ा लाया गया तो सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कोई क़र्ज़ छोड़ा है ? अ़र्ज़ की : नहीं, फ़रमाया : तो क्या कोई और चीज़ छोड़ गया ? अ़र्ज़ की : जी, तीन दीनार। तो आप ने अपनी उंगलियों से इशारा करते हुए फ़रमाया : येह आग के तीन दाग़ हैं।[1]

ह़ज़रते यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : दो मुसीबतें ऐसी हैं जिन की मिष्ल पहले और पिछले लोगों ने नहीं सुना और वोह बन्दे के लिये उस के माल में मौत के वक़्त होती हैं पूछा गया वोह क्या मुसीबतें हैं ?

مدينه

1 (المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند سلمة بن الأكوع، الحديث:١٦٦٢٤، ج٥، ص٦٤٣)
(صحيح البخاري، كتاب الحوالات، باب إن أحال دين الميت على رجل جاز، الحديث:٢٢٨٩، ج٢، ص٦٤)
(مسند الروياني، مسند سلمة بن الأكوع، الحديث:١١٢٧، ج٢، ص١٥٩)
(صحيح ابن حبان، الحديث:٣٢٦٤، ج٨، ص٥٤)
(السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الضمان، باب وجوب الحق بالضمان، الحديث:١١٣٩٦، ج٦، ص١٢٠)
(شعب الإيمان، باب في قبض اليد عن الأموال المحرمة، فصل في التشديد في الدين، الحديث: ٥٥٣٨، ج٤، ص٣٩٩)
(موارد الظمآن، الحديث:٢٤٨٢، ج١، ص٦١٥)

फ़रमाया : एक येह कि उस से तमाम माल छीन लिया जाता है और दूसरी येह कि तमाम माल का हिसाब देना पड़ता है।[1]

राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च किये बिग़ैर (या'नी ज़कात, फ़ित्रा व हुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी के बिग़ैर) जम्अ़ किया गया माल बरोज़े क़ियामत अंगारे षाबित होगा जिस से उस शख़्स को दाग़ा जाएगा। चुनान्चे :

عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: "مَنْ أَوْكَى عَلٰى ذَهَبٍ أَوْ فِضَّةٍ وَلَمْ يُنْفِقْهُ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ كَانَ جَمْرًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُكْوٰى بِهِ".[2]

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : मैं ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : जो सोना या चांदी राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च किये बिग़ैर जम्अ़ करेगा तो वोह बरोज़े क़ियामत अंगारा होगा जिस से उसे दाग़ा जाएगा।[2]

हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ को ख़त़ लिखा कि ऐ मेरे भाई ! इतना माल जम्अ़ करने से बचना कि उस का शुक्र अदा न कर सको, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना है कि (बरोज़े क़ियामत) एक दुन्यादार को लाया जाएगा जिस ने दुन्या में **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म माना होगा और उस का माल उस के सामने होगा जब वोह पुल सिरात़ पर लड़-खड़ाने लगेगा तो उस का माल कहेगा आगे बढ़ो ! तुम ने मुझ से मुतअ़ल्लिक़

مدینہ

1 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم المال و كراهة حبه، ج٣، ص٣١٣)

2 (المعجم الأوسط للطبراني، الحديث: ٥٤٧٠، ج٥، ص٣٣٣)
(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ١٦٤١، ج٢، ص١٥٣)

अल्लाह तआ़ला का ह़क़ अदा कर दिया है। फिर एक और दुन्यादार को लाया जाएगा जिस ने दुन्या में अल्लाह तआ़ला की फ़रमां बरदारी न की होगी उस का माल उस के कांधों के दरमियान होगा जब वोह पुल सिरात़ पर डग मगाएगा तो उस का माल कहेगा तुझे ख़राबी हो तूने मुझ से मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला का ह़क़ क्यूं अदा नहीं किया, वोह शख़्स इसी ह़ालत पर रहेगा ह़त्ता कि वोह अपनी हलाकत पर चीख़ो पुकार करेगा।[1]

अ़क़्लन व नक़्लन माल का जम्अ़ करना बे सूद है क्यूं कि इन्सान का अस्ल माल तो वोही है जो उस ने खा पी लिया या राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च कर दिया बाक़ी जो छोड़ गया वोह तो वुरषा का होगा। चुनान्चे :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ، قَالَ: إِذَا مَاتَ الْمَيِّتُ، قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ: مَا قَدَّمَ، وَقَالَ النَّاسُ: مَا خَلَّفَ.[2]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, जब कोई बन्दा मर जाता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : इस ने आगे क्या भेजा है जब कि लोग कहते हैं : पीछे क्या छोड़ गया।[2]

ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी हथेली में एक दिरहम रखा फिर फ़रमाया : जब तक तू मुझ से जुदा नहीं होगा मुझे फ़ाइदा नहीं पहुंचाएगा।[3]

مدينه

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم المال و كراهة حبه، ج٣، ص٣١٢)

[2] (المصنف لابن أبي شيبة، كتاب الزهد، كلام أبي هريرة، الحديث:٣٤٦٩٥، ج٧، ص١٤٢)
(شعب الإيمان، باب في الزهد وقصر الأمل، الحديث:١٠٤٧٥، ج٧، ص٣٢٨)
(الفردوس بمأثور الخطاب، الحديث:١١١١، ج١، ص٢٨٣)

[3] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم المال و كراهة حبه، ج٣، ص٣١٢)

माल की आफ़ात और फ़्वाइद

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : माल सांप की त़रह़ है जिस में ज़हर भी है और तिरयाक़ भी, इस के फ़्वाइद इस के तिरयाक़ हैं और इस की आफ़ात ज़हर हैं तो जो शख़्स इस के फ़्वाइद और आफ़ात की पहचान ह़ासिल कर ले तो उस के लिये इस के शर से बचना और इस की भलाई ह़ासिल करना मुमकिन है ।[1]

माल के फ़्वाइद

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : माल के फ़्वाइद दो त़रह़ होते हैं ﴾1﴿ दुन्यवी फ़्वाइद ﴾2﴿ दीनी फ़्वाइद

दुन्यवी फ़्वाइद ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं क्यूं कि इन की मा'रिफ़त मशहूर है और मख़्लूक़ की तमाम अक़्साम में मुश्तरिक है अगर येह बात न होती तो वोह इस की त़लब में हलाक न होते लेकिन इस के **दीनी फ़ाइदे** तीन क़िस्मों में मुन्ह़सिर हैं ।

पहली क़िस्म : "अपने आप पर ख़र्च करे" यूं कि इबादत पर ख़र्च करे या इबादत पर मदद ह़ासिल करने के लिये ख़र्च करे, इबादत पर ख़र्च करने की मिषाल ह़ज और जिहाद पर माल ख़र्च करना है क्यूं कि येह दोनों काम माल के बिग़ैर नहीं होते और येह दोनों काम तमाम इबादतों की अस्ल हैं और फ़क़ीर आदमी इन दोनों की फ़ज़ीलत से मह़रूम होता है और इबादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने के लिये ख़र्च करने की मिषाल खाने, लिबास, रिहाइश, निकाह़ और दीगर ज़रूरियाते ज़िन्दगी पर माल ख़र्च करना है क्यूं कि जब तक ह़ाजात ह़ासिल न हों तो दिल इन की तदबीर में

مدینہ

[1] (إحیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان تفصیل آفات المال وفوائدہ، ج۳، ص۳۱۳)

मसरूफ़ होता है और दीन के लिये फ़ारिग़ नहीं होता और जिस चीज़ के बिग़ैर आदमी इ़बादत तक न पहुंच सके उस की तक्मील भी इ़बादत होती है।

लिहाज़ा दीन पर मदद ह़ासिल करने के लिये दुन्या से ह़स्बे ज़रूरत लेना दीनी फ़वाइद में से है लेकिन ज़रूरत से ज़ियादा लेना और अ़य्याशी इस में दाख़िल नहीं है क्यूं कि वोह मह़्ज़ दुन्यवी ह़िस्सा है।

दूसरी क़िस्म : "वोह माल जिसे लोगों पर सर्फ़ करे" इस की चार क़िस्में हैं ﴾1﴿ स-दक़ा करना ﴾2﴿ मुरुव्वत के तौ़र पर देना ﴾3﴿ इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त के लिये देना और ﴾4﴿ ख़िदमत लेने की उजरत देना। स-दक़े का षवाब पोशीदा नहीं है येह **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब की आग को ठन्डा करता है इस से पहले हम स-दक़े की फ़ज़ीलत ज़िक्र कर चुके हैं मुरुव्वत से हमारी (इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की) मुराद येह है कि मालदार और मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों की मेहमान नवाज़ी पर माल ख़र्च किया जाए या तोह़फ़ा दिया जाए या मदद की जाए इस को स-दक़ा नहीं कहते बल्कि स-दक़ा वोह होता है जो ज़रूरत मन्द लोगों को दिया जाए लेकिन येह दीनी फ़वाइद में से है क्यूं कि इस तरह़ इन्सान को दोस्त और भाई मिल जाते हैं नीज़ इस तरह़ सख़ावत की सिफ़त ह़ासिल होती है और वोह सख़ी लोगों की जमाअ़त में शामिल हो जाता है। क्यूं कि वोही शख़्स सख़ावत की सिफ़त से मौसूफ़ होता है जो लोगों के साथ एह़सान और मुरुव्वत का सुलूक करता है इस अ़मल का भी बहुत बड़ा षवाब है।

इ़ज़्ज़त बचाने से हमारी (या'नी इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की) मुराद येह है कि आदमी इस लिये माल ख़र्च करे ता कि

शु-अ़रा और बे वुक़ूफ़ लोग इस के ख़िलाफ़ बुरा कलाम इस्ति'माल न करें इस त़रह़ वोह उन की ज़बानें बन्द करता और उन के शर को दूर करता है इस का फ़ाइदा अगर्चे दुन्या में फ़ोरी ह़ासिल होता है लेकिन इस का दीनी फ़ाइदा भी है।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَا وَقٰی بِہِ الْمَرْءُ عِرْضَہٗ کُتِبَ لَہٗ بِہٖ صَدَقَۃٌ (السنن الکبریٰ للبیھقي)

जिस माल के ज़रीए़ आदमी अपनी इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करता है वोह स-दक़ा लिखा जाता है।

येह ख़र्च दीनी क्यूं न होगा जब कि इस के ज़रीए़ ग़ीबत करने वाले को ग़ीबत से बचाना है नीज़ ख़ुद को भी बदले और इन्तिक़ाम की बिना पर ह़ुदूदे शरअ़ से तजावुज़ करने से बचाना है।

जहां तक ख़िदमत लेने की ख़ातिर पैसा ख़र्च करने का मुआ़मला है तो आदमी अपने अस्बाब की तय्यारी में जिन कामों का मोह़ताज होता है वोह बहुत ज़ियादा हैं अगर वोह ख़ुद ही तमाम काम करने लगे तो दिक़्क़त हो जाए और ज़िक्रो फ़िक्र के ज़रीए़ राहे सुलूक पर चलना मुश्किल हो जाए जो कि सालिकीन के बुलन्द मक़ामात हैं।

और जिस आदमी के पास माल नहीं होता वोह अपने काम ख़ुद अपने हाथ से करने का मोह़ताज होता है वोह ग़ल्ला ख़रीदता और पीसता है, घर की सफ़ाई ख़ुद करता है ह़त्ता कि जिस ख़त़ की इसे ज़रूरत हो वोह भी ख़ुद लिखना पड़ता है तो जो काम दूसरों के ज़रीए़ हो सकता है और उस से तुम्हारी ग़रज़ पूरी हो जाती है जब तुम इस में मश्ग़ूल होते हो तो तुम्हें नुक़्सान उठाना पड़ता है क्यूं कि इ़ल्म ह़ासिल करना, अ़मल करना और

ज़िक्रो फ़िक्र में मश्ग़ूल रहना चाहिये और येह काम दूसरों के ज़रीए़ नहीं हो सकते लिहाज़ा इन को छोड़ कर दूसरे कामों में मश्ग़ूल होना नुक़्सान का बाइ़ष है।

तीसरी क़िस्म : किसी ख़ास आदमी पर माल ख़र्च करने के बजाए ऐसे मसारिफ़ में ख़र्च करे जिस से आ़म लोगों को फ़ाइदा ह़ासिल हो। जैसे मसाजिद, पुल, सराए और बीमारों के लिये हस्पताल वग़ैरा बनाना, रास्ते में पानी की सबीलें लगाना और इस के इ़लावा अच्छे मक़ासिद के लिये ज़मीन वक़्फ़ करना येह दाइमी ख़ैरात है जिस का फ़ाइदा मरने के बा'द भी ह़ासिल होता है। और नेक लोग मुद्दतों इस फ़ौत शुदा के लिये दुआ़ करते हैं और इन दुआ़ओं की बरकात उसे ह़ासिल होती हैं इस से बढ़ कर क्या बेहतरी हो सकती है।

तो येह दीन के ए'तिबार से माली फ़ाएदे हैं इस के इ़लावा दुन्यवी फ़वाइद भी हैं मषलन वोह मांगने की ज़िल्लत और फ़क़्र की ह़कारत से मह़फ़ूज़ रहता है और मख़्लूक़ के दरमियान उसे इ़ज़्ज़त और बुज़ुर्गी ह़ासिल होती है दोस्त और अह़बाब ज़ियादा होते हैं और दिलों में इस की इ़ज़्ज़त और वक़ार बढ़ता है येह सब माल के दुन्यवी फ़वाइद हैं।[1]

माल की आफ़ात

माल की आफ़ात दीनी भी हैं और दुन्यवी भी, माल के दीनी नुक़्सानात तीन क़िस्म के हैं :

मدینہ

1 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان تفصيل آفات المال وفوائده، أما الفوائد، ج٣، ص٣١٥)

पहली क़िस्म : माल गुनाह की त़रफ़ ले जाता है क्यूं कि ख़्वाहिशात का तक़ाज़ा हमेशा जारी रहता है और माल से ब़ा'ज़ अवक़ात आदमी को गुनाह के दरमियान ह़ाइल होता है और क़ादिर न होना भी बचने का एक ज़रीआ़ है और जब तक इन्सान किसी गुनाह से मायूस रहता है उस वक़्त तक उस का शौक़ ह़रकत में नहीं आता और जूं ही इस पर क़ुदरत पाता है तो शौक़ उभरता है और माल भी एक क़िस्म की त़ाक़त है जो गुनाहों के शौक़ को ह़रकत देती और आदमी को फ़िस्क़ो फ़ुजू़र पर उभारती है फिर अगर वोह अपनी ख़्वाहिश पर अ़मल पैरा होता है तो हलाक होता है और अगर सब्र करता है तो शिद्दत का सामना करना पड़ता है क्यूं कि क़ुदरत और त़ाक़त के बा वुजूद सब्र करना मुश्किल होता है और फ़राख़ी की ह़ालत में जो आज़्माइश होती है वोह तंगी की ह़ालत की आज़्माइश से ज़ियादा बड़ी होती है।

दूसरी क़िस्म : माल मुबाह़ कामों में ऐ़शो इ़श्रत तक पहुंचाता है और येह सब से पहला दरजा है तो मालदार आदमी से ऐसा कब हो सकता है कि वोह जव की रोटी खाए, सख़्त खुरदरे कपड़े पहने और लज़ीज़ खाने छोड़ दे जैसा कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी सल्त़नत में ऐसा किया था। ऐसा आदमी तो दुन्या की ने'मतों से नफ़्अ़ उठाता है और उस का नफ़्स इस बात का आ़दी हो जाता है यूं उस को अ़य्याशी से इस क़दर उल्फ़त व मह़ब्बत हो जाती है कि वोह इस पर सब्र नहीं कर सकता और इस त़रह़ एक से दूसरी अ़य्याशी तक जाता है और जब इस से उन्स पक्का हो जाता है और बा'ज़ अवक़ात वोह ह़लाल कमाई से उस तक नहीं पहुंच सकता तो शुब्हात में पड़ता है और वोह रियाकारी, मुना-फ़-क़त, झूट और तमाम बुरी आ़दात में ग़ौरो ख़ौज़ करता

है ताकि इस का दुन्यवी मुआ़मला मुनज़्ज़म हो और अ़य्याशी के लिये आसानी हो क्यूं कि जिस का माल ज़ियादा होता है उसे लोगों की ह़ाजत भी ज़ियादा होती है और जो लोगों की जानिब मोह़ताज हो उस का लोगों के साथ मुना-फ़-क़त करना ना गुज़ीर है और वोह लोगों की रिज़ा मन्दी ह़ासिल करने के लिये **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी करता है।

अगर आदमी पहली आफ़त से बच भी जाए तो भी इस से नहीं बच सकता और जब मख़्लूक़ की त़रफ़ ह़ाजत हो तो दोस्ती और दुश्मनी भी पैदा होती है और इस से ह़सद, कीना, रिया, तकब्बुर, झूट, चुग़ली, ग़ीबत और ऐसे तमाम गुनाह पैदा होते हैं जो दिल और ज़बान के साथ ख़ास हैं और फिर येह तमाम आ'ज़ा की त़रफ़ मुतअ़द्दी होते हैं और येह सब कुछ माल की नुहू़सत और इस की ह़िफ़ाज़त और इस्लाह़ की ह़ाजत के बाइ़स होता है।

तीसरी क़िस्म : येह वोह आफ़त है जिस से कोई भी नहीं बचता वोह येह कि माल की इस्लाह़ इसे **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर देती है और जो काम बन्दे को **अल्लाह** तआ़ला से ग़ाफ़िल कर दे वोह नुक़्सान का बाइ़स है।

इसी लिये ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया :

माल में तीन आफ़ात हैं एक येह कि ह़राम त़रीक़े से ह़ासिल करे, अ़र्ज़ की गई : अगर ह़लाल त़रीक़े से ह़ासिल करे तो ? फ़रमाया : इसे ना ह़क़ इस्ति'माल करता है। पूछा गया : अगर सह़ीह़ मक़ाम पर ख़र्च करे तो ? फ़रमाया : इस की इस्लाह़ उसे **अल्लाह** तआ़ला से ग़ाफ़िल कर देती है।

और येह ला इलाज मरज़ है क्यूं कि इबादत की अस्ल, इस का मग़ज़ और राज़ **अल्लाह** तआला का ज़िक्र और उस के जलाल में तफ़क्कुर है और इस का तक़ाज़ा येह है कि दिल फ़ारिग़ हो जब कि माल और साज़ो सामान वाला सुब्हो शाम किसानों से उल्झाव और उन से हिसाब व किताब में मश्ग़ूल रहता है इसी त़रह़ शुरका के साथ पानी और ज़मीन की हुदूद का झगड़ा होता है ख़िराज के सिल्सिले में हुकूमती कारिन्दों से और ता'मीर में कोताही के सिल्सिले में मज़दूरों से इख़्तिलाफ़ नीज़ काश्तकारों से ख़ियानत और चोरी के ह़वाले से झगड़ा रहता है।

ताजिर को अपने शरीक की त़रफ़ से ख़ियानत की फ़िक्र रहती है नीज़ येह कि वोह नफ़्अ़ ज़ियादा लेता है और काम में कोताही करता है इलावा अज़ीं माल को ज़ाएअ़ करता है इसी त़रह़ जानवरों का मालिक भी इस क़िस्म के मसाइल से दो चार होता है बल्कि माल की कोई भी सूरत हो येही परेशानी रहती है लेकिन जो ख़ज़ाना ज़मीन में दफ़्न किया गया हो उस में मश्ग़ूलियत कम होती है अगर्चे यहां भी दिल का तरद्दुद बाक़ी होता है कि कहां ख़र्च करे इस की ह़िफ़ाज़त कैसे करे इस पर लोग मुत्त़लअ़ न हो जाएं।

ग़रज़े कि दुन्यवी अफ़्कार की वादियों की कोई इन्तिहा नहीं है और जिस आदमी के पास एक दिन का खाना हो वोह इन तमाम बातों से मह़फ़ूज़ है।

तो येह दुन्यवी आफ़ात हैं इस के इलावा भी दुन्यादारों को परेशानी, ग़म, ख़ौफ़, ह़ासिदों के ह़सद को दूर करने की मशक़्क़त माल की ह़िफ़ाज़त और कमाई के सिल्सिले में सख़्त ख़त़रात हैं लिहाज़ा माल का तिरयाक़ (इलाज) येह है कि इस से गुज़र अवक़ात के लिये लेने के बा'द बाक़ी अच्छे कामों पर ख़र्च कर दे क्यूं कि इस के इलावा जो कुछ है वोह ज़हर और आफ़ात हैं।

हम **अल्लाह** तआ़ला से सलामती और अच्छी मदद का सुवाल करते हैं **अल्लाह** तआ़ला अपने लुत़्फ़ो करम से नवाज़ दे बेशक वोह इस पर क़ादिर है ।[1]

बुख़्ल की मज़म्मत

अल्लाह तआ़ला बुख़्ल की मज़म्मत फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَاۙ ﴿۳۶﴾ الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ وَ یَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَ یَكْتُمُوْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖؕ (النساء:٤/٣٦_٣٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक **अल्लाह** को खुश नहीं आता कोई इतराने वाला बड़ाई मारने वाला जो आप बुख़्ल करें और औरों से बुख़्ल के लिये कहें और **अल्लाह** ने जो उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है उसे छुपाएं ।*

बुख़्ल येह है कि खुद खाए दूसरे को न दे, शुह़्ह़ येह है कि न खाए न खिलाए सख़ा येह है कि खुद भी खाए और दूसरों को भी खिलाए जूद येह है कि आप न खाए दूसरों को खिलाए, शाने नुज़ूल : येह आयत यहूद के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सिफ़त बयान करने में बुख़्ल करते और छुपाते ।

मस्अला : इस से मा'लूम हुवा कि इ़ल्म को छुपाना मज़्मूम है ।

ह़दीष शरीफ़ में है कि **अल्लाह** को पसन्द है कि बन्दे पर उस की ने'मत ज़ाहिर हो ।

مدینہ

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال،بيان تفصيل آفات المال وفوائده، أما الآفات، ج٣،ص ٣١٧_٣١٨)

मस्अला : अल्लाह की ने'मत का इज़्हार इख़्लास के साथ हो तो येह भी शुक्र है और इस लिये आदमी को अपनी हैषिय्यत के लाइक़ जाइज़ लिबासों में बेहतर पहनना मुस्तहब है।[1]

बख़ील शख़्स दर अस्ल अपना ही नुक़्सान करता है क्यूं कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च किया हुवा माल बिला शुबा दुन्या में बरकत और आख़िरत में अज्रो षवाब की सूरत में नफ़्अ़ बख़्श होता है जब कि बख़ील इन दोनों (बरकत व षवाब) से महरूम रहता है, चुनान्चे अल्लाह तआ़ला मुतनब्बेह फ़रमाता है :

هَـٰٓأَنتُمْ هَـٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ فَمِنكُم مَّن يَبْخَلُ ۖ وَمَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ وَٱللَّهُ ٱلْغَنِىُّ وَأَنتُمُ ٱلْفُقَرَآءُ ۚ وَإِن تَتَوَلَّوْا۟ يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوٓا۟ أَمْثَـٰلَكُم ۝ (محمد:٤٧/٣٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हां हां येह जो तुम हो बुलाए जाते हो कि अल्लाह की राह में ख़र्च करो तो तुम में कोई बुख़्ल करता है और जो बुख़्ल करे वोह अपनी ही जान पर बुख़्ल करता है और अल्लाह बे नियाज़ है और तुम सब मोहताज और अगर तुम मुंह फैरो तो वोह तुम्हारे सिवा और लोग बदल लेगा फिर वोह तुम जैसे न होंगे।*

माल के हुक़ूक़े वाजिबा अदा करने में बुख़्ल करने वालों की ब वक़्ते मौत चीख़ो पुकार ला हासिल रहेगी क़ुरआने पाक पहले ही मुतनब्बेह कर चुका है चुनान्चे इर्शाद होता है :

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْ لَآ أَخَّرْتَنِي إِلٰٓى أَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَأَصَّدَّقَ وَ أَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ۝ (المنفقون:٦٣/١٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो क़ब्ल इस के कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यूं मोहलत न दी कि मैं स-दक़ा देता और नेकों में होता।*

कुरआने करीम में माल व अवलाद को फ़ितना फ़रमाया गया है :

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ أَجْرٌ عَظِيْمٌ۝ (التغابن:١٥/٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं और* ***अल्लाह*** *के पास बड़ा षवाब है।*

"तो लिहाज़ रखो ऐसा न हो कि अमवाल व अवलाद में मश्ग़ूल हो कर षवाबे अ़ज़ीम खो बैठो।"[1]

शैतान शबो रोज़ वस्वसे दिलाता रहता है कि ख़र्च करोगे तो ख़त्म हो जाएगा, सब खिला दोगे तो खाओगे क्या? और यूं इन्सान को बुख़्ल पर उभारता है क़ुरआने करीम में इस क़िस्म के वहम पर तम्बीह फ़रमाई गई है। चुनान्चे इर्शाद होता है :

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَ مِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ۪ وَ لَا تَیَمَّمُوا الْخَبِیْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَ لَسْتُمْ بِاٰخِذِیْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا فِیْهِؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ حَمِیْدٌ(۲۶۷) اَلشَّیْطٰنُ یَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَ یَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِۚ وَ اللّٰهُ یَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَ فَضْلًاؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ(۲۶۸) (البقرة:۲/۲۶۷-۲۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो और उस में से जो हम ने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला और ख़ास नाक़िस का इरादा न करो कि दो तो उस में से और तुम्हें मिले तो न लोगे जब तक उस में चश्म पोशी न करो और जान रखो कि **अल्लाह** बे परवाह सराहा गया है शैत़ान तुम्हें अन्देशा दिलाता है मोह़ताजी का और हुक्म देता है बे ह़याई का और **अल्लाह** तुम से वा'दा फ़रमाता है बख़्शिश और फ़ज़्ल का और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है।*

सदरुल अफ़ाज़िल मज़्कूरा आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : या'नी बुख़्ल का और ज़कात व स-दक़ा न देने का इस आयत में येह लत़ीफ़ा है कि शैत़ान किसी त़रह़ बुख़्ल की ख़ूबी ज़ेहन नशीन नहीं कर सकता इस लिये वोह येही करता है कि ख़र्च करने से नादारी का अन्देशा दिला कर रोके आजकल जो लोग ख़ैरात को रोकने पर मुसिर हैं वोह भी इसी ह़ीले से काम लेते हैं।[1]

हुक़ूक़े वाजिबा अदा करने में बुख़्ल करते हुए माल जम्अ़ करते रहने का दर्दनाक अ़ज़ाब है। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَ
لَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ
بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۴﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ
نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَ
جُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۭ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ
لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ
تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾ (التوبة:٩/٣٤،٣٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और उसे **अल्लाह** की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में फिर उस से दाग़ेंगे उन की पेशानियां और करवटें और पीठें येह वोह है जो तुम ने अपने लिये जोड़ रखा था अब चखो मज़ा इस जोड़ने का।*

"ख़र्च नहीं करते" की वज़ाहत करते हुए सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : बुख़्ल करते हैं और माल के हुक़ूक़ अदा नहीं करते, ज़कात नहीं देते। **शाने नुज़ूल :** सदी का क़ौल है कि येह आयत मानिईने ज़कात के हक़ में नाज़िल हुई जब कि **अल्लाह** तआला ने अह़बार और रुहबान की हिर्से माल का ज़िक्र फ़रमाया तो मुसलमानों को माल जम्अ़ करने और उस के हुक़ूक़ अदा न करने से हज़र दिलाया।[1]

हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُمَا से मरवी है कि जिस माल की ज़कात दी गई वोह कन्ज़ नहीं ख़्वाह दफ़ीना ही हो और जिस की ज़कात न दी गई वोह कन्ज़ है जिस का ज़िक्र कुरआने पाक में हुवा कि उस के मालिक को उस से दाग़ दिया जाएगा रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अस्ह़ाब ने अ़र्ज़ किया कि सोने चांदी का तो येह ह़ाल मा'लूम हुवा फिर कौन सा माल

مدینہ

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

बेहतर है जिस को जम्अ़ किया जाए फ़रमाया ज़िक्र करने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल और नेक बीबी जो ईमानदार की उस के ईमान पर मदद करे या'नी परहेज़ गार हो कि उस की सोह़बत से त़ाअ़त व इबादत का शौक़ बढ़े। (रवाह अत्तिरमिज़ी) **मस्अला :** माल का जम्अ़ करना मुबाह़ है मज़्मूम नहीं जब कि इस के हुक़ूक़ अदा किये जाएं ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और ह़ज़रते त़ल्ह़ा वग़ैरा अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم मालदार थे और जो अस्ह़ाब कि जम्ए़ माल से नफ़रत रखते थे वोह इन पर ए'तिराज़ न करते थे।[1]

यूंही ख़र्च करने में ए'तिदाल भी ज़रूरी है कि न तो बुख़्ल किया जाए कि बाइ़षे अ़ज़ाब हो और न इतना ख़र्च करे जिस की वजह से उस के शबो रोज़ मफ़्लूज हो जाएं और ख़ुद ह़ालते फ़क्र को पहुंच जाए। चुनान्चे क़ुरआने मजीद में है :

وَلَا تَجۡعَلۡ یَدَکَ مَغۡلُوۡلَۃً اِلٰی عُنُقِکَ وَلَا تَبۡسُطۡھَا کُلَّ الۡبَسۡطِ فَتَقۡعُدَ مَلُوۡمًا مَّحۡسُوۡرًا ۝ اِنَّ رَبَّکَ یَبۡسُطُ الرِّزۡقَ لِمَنۡ یَّشَآءُ وَیَقۡدِرُ ؕ الآية (بني إسرائيل:١٧/٢٩-٣٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपना हाथ अपनी गरदन से बंधा हुवा न रख और न पूरा खोल दे कि तू बैठ रहे मलामत किया हुवा थका हुवा बेशक तुम्हारा रब जिसे चाहे रिज़्क़ कुशादा देता और कसता है।*

सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : येह तम्सील है जिस से इन्फ़ाक़ या'नी ख़र्च करने में ए'तिदाल मल्ह़ूज़ रखने की हिदायत मन्ज़ूर है और येह बताया जाता है कि न तो इस त़रह़ हाथ रोको कि बिल्कुल ख़र्च ही न करो और येह मा'लूम हो गोया कि हाथ गले से बांध दिया गया है देने के लिये

1.(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

हिल ही नहीं सकता ऐसा करना तो सबबे मलामत होगा कि बख़ील, कन्जूस को सब बुरा कहते हैं और न ऐसा हाथ खोलो कि अपनी ज़रूरियात के लिये भी कुछ बाक़ी न रहे। **शाने नुज़ूल :** एक मुसलमान बीबी के सामने एक यहूदिया ने ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام की सख़ावत का बयान किया और उस में इस ह़द तक मुबालग़ा किया कि ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर तरजीह़ दे दी और कहा कि ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام की सख़ावत इस इन्तिहा पर पहुंची हुई थी कि अपनी ज़रूरियात के इ़लावा जो कुछ भी उन के पास होता साइल को दे देने से दरेग़ न फ़रमाते येह बात मुसलमान बीबी को ना गवार गुज़री और उन्हों ने कहा कि अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام सब साह़िबे फ़ज़्लो कमाल हैं ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام के जूदो नवाल में कुछ शुबा नहीं लेकिन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मर्तबा सब से आ'ला है और येह कह कर उन्हों ने चाहा कि यहूदिया को ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जूदो करम की आज़माइश करा दी जाए चुनान्चे उन्हों ने अपनी छोटी बच्ची को हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजा कि हु़ज़ूर से क़मीस मांग लाए उस वक़्त हु़ज़ूर के पास एक ही क़मीस थी जो ज़ेबे तन थी वोही उतार कर अ़ता फ़रमा दी और अपने आप दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ रखी शर्म से बाहर तशरीफ़ न लाए यहां तक कि अज़ान का वक़्त आया, अज़ान हुई, सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمۡ ने इन्तिज़ार किया। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ न लाए तो सब को फ़िक्र हुई। ह़ाल मा'लूम करने के लिये दौलत सराए अक़्दस में ह़ाज़िर हुए तो देखा जिस्मे मुबारक पर क़मीस नहीं है इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[1]

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

हज़रते जुबैर बिन मुत्अ़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : एक मरतबा हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह सफ़र पर थे जब कि आप के साथ कुछ लोग और भी थे जो ख़ैबर से लौट कर आए थे कि चन्द देहाती आप के गिर्द जम्अ़ हो कर मांगने लगे ह़त्ता कि उन्हों ने आप को बबूल के दरख़्त की त़रफ़ मजबूर कर दिया और आप की चादरे मुबारक ले ली, तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ठहरे और फ़रमाया : मेरी चादर मुझे दो उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर मेरे पास इन कांटों के बराबर जानवर होते तो मैं तुम्हारे दरमियान तक़्सीम कर देता फिर तुम मुझे बख़ील, झूटा और बुज़दिल न पाते ।[1]

हर रोज़ दो फ़िरिश्ते नाज़िल होते हैं उन में से एक राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने वाले के लिये दुआ़ जब कि दूसरा बख़ील के लिये बद दुआ़ करता है, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنۡ أَبِي هُرَيۡرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ: "مَا مِنۡ يَوۡمٍ يُصۡبِحُ الۡعِبَادُ فِيۡهِ، إِلَّا مَلَكَانِ يَنۡزِلَانِ، فَيَقُولُ أَحَدُهُمَا: اَللّٰهُمَّ أَعۡطِ مُنۡفِقًا خَلَفًا، وَيَقُولُ الۡاٰخَرُ:

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐसा कोई दिन नहीं जिस में बन्दे सवेरा करें और दो फ़िरिश्ते न उतरें जिन में से एक तो कहता है : इलाही عَزَّوَجَلَّ ! सख़ी को ज़ियादा अच्छा इवज़ दे और दूसरा कहता है :

---

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم البخل، ج٣،ص٣٣٩)

[1] इलाही عَزَّوَجَلَّ ! बख़ील को बरबादी दे। اَللّٰھُمَّ اَعْطِ مُمْسِکًا تَلَفًا "۔[1]

इस ह़दीष की शर्ह़ में मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : या'नी सख़ी के लिये दुआ़ और कन्जूस के लिये बद दुआ़ रोज़ाना फ़िरिश्तों के मुंह से निकलती है जो यक़ीनन क़बूल है, ख़याल रहे कि ख़लफ़ मुत़्लक़न इवज़ को कहते हैं दुन्यावी हो या उख़्रवी, ह़िस्सी हो या मा'नवी मगर तलफ़ दुन्यवी और ह़िस्सी बरबादी को कहा जाता है, रब तआ़ला फ़रमाता है :

﴿وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ یُخْلِفُهٗ﴾ [السبا: ٣٩/٣٤]) **तर्जमा :** और जो चीज़ तुम **अल्लाह** की राह में ख़र्च करो वोह इस के बदले और देगा।[2] (कन्ज़ुल ईमान))

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُما से मरवी है फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सख़ावत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से है, सख़ावत करो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें मज़ीद अ़ता फ़रमाएगा, सुनो ! **अल्लाह** तआ़ला ने सख़ावत को पैदा फ़रमा कर एक मर्द की सूरत अ़ता फ़रमाई उस की अस्ल तूबा दरख़्त की जड़ में रासिख़ कर दिया और टहनियों को सिद्रतुल मुन्तहा की टहनियों के साथ मज़्बूत़ कर दिया और उस की बा'ज़ शाख़ों को दुन्या की त़रफ़ झुका दिया तो जो शख़्स इस की एक ही टहनी पकड़ ले **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देता है, सुनो ! बेशक सख़ावत ईमान ही से है और ईमान जन्नत में है और **अल्लाह** तआ़ला ने बुख़्ल को अपने ग़ज़ब से पैदा फ़रमाया और उस की अस्ल को शजरे ज़क़्क़ूम (जहन्नम के कांटेदार दरख़्त) की जड़ में मज़्बूत़ कर दिया। उस की बा'ज़ शाख़ें ज़मीन की जानिब माइल फ़रमा दीं

مدینہ

[1] (صحیح البخاري، کتاب الزکاۃ، باب قول اللّٰہ تعالی:﴿فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰی﴾... إلخ، الحدیث:٢٣٨٩، ج١، ص٣٥٣)

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب في المنفق والممسك، الحدیث:١٠١٠، ص٣٦٣)

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الزکاۃ، باب الإنفاق وکراھیۃ الإمساك، الحدیث:١٨٦٠، ج١، ص٣٥٣)

[2] (مرآۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، ج٣، ص٦٩۔٧٠)

तो जो शख़्स इस की किसी भी टहनी को थामता है **अल्लाह** तआ़ला उसे जहन्नम में दाख़िल फ़रमा देता है, सुनो ! बुख़्ल ना शुक्री है और ना शुक्री जहन्नम में दाख़िल होने का सबब है।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनू लह़यान के वफ़्द से पूछा : ऐ बनू लह़यान ! तुम्हारा सरदार कौन है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि जद बिन क़ैस, मगर वोह बख़ील हैं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बुख़्ल से बड़ी बीमारी कौन सी है, तो फिर तुम्हारे सरदार हज़रते अ़म्र बिन जमूह़ हैं।

एक रिवायत में है उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि जद बिन क़ैस हमारे सरदार हैं, तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम ने उसे सरदार क्यूं बनाया है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : इस लिये कि वोह सब से ज़ियादा मालदार हैं लेकिन इस के बा वुजूद हम उन में बुख़्ल पाते हैं। तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : भला बुख़्ल से बढ़ कर भी कोई बीमारी है ? वोह तुम्हारा सरदार नहीं, तो अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! फिर हमारा सरदार कौन है ? आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारे सरदार बिशर बिन बराअ हैं।[1]

अपनी ज़रूरियात से बचा हुवा माल ख़ैरात कर देना मुफ़ीद है जब कि इसे रोक रखना बा'ज़ अवक़ात मुज़िर होता है। चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ

हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم البخل، ج٣، ص٣٣٩ـ٣٤٠)

صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ इन्सान ! अगर तुम बचा माल ख़र्च कर दो तो तुम्हारे लिये अच्छा है और अगर उसे रोक रखो तो तुम्हारे लिये बुरा है और ब क़द्रे ज़रूरत अपने पास रख लो तो तुम पर मलामत नहीं और देने में अपने इ़याल से इब्तिदा करो और ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है।[1]

وَسَلَّمَ: "يَا ابْنَ آدَمَ إِنَّكَ إِنْ تَبْذُلِ الْفَضْلَ خَيْرٌ لَّكَ، وَإِنْ تُمْسِكْهُ شَرٌّ لَّكَ، وَلَا تُلَامُ عَلٰى كَفَافٍ، وَابْدَأْ بِمَنْ تَعُوْلُ، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِّنَ الْيَدِ السُّفْلٰى". ؎۱

इस ह़दीष की शर्ह़ में मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : या'नी अपनी ज़रूरियात से बचा हुवा माल ख़ैरात कर देना ख़ुद तेरे लिये ही मुफ़ीद है कि इस से तेरा कोई काम न रुके और तुझे दुन्या व आख़िरत में इ़वज़ मिल जाएगा और इसे रोके रखना ख़ुद तेरे लिये ही बुरा है क्यूं कि वोह चीज़ सड़ गल या और त़रह़ से ज़ाएअ़ हो जाएगी और तू षवाब से मह़रूम हो जाएगा, इसी लिये हुक्म है कि नया कपड़ा पाओ तो पुराना बेकार कपड़ा ख़ैरात कर दो नया जूता रब तआला दे तो पुराना जूता जो तुम्हारी ज़रूरत से बचा है किसी फ़क़ीर को दे दो कि तुम्हारे घर का कूड़ा निकल जाएगा और उस का भला हो जाएगा।

मुफ़्ती साह़िब رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : इस में दो हुक्म बयान हो गए एक येह कि जो माल इस वक़्त तो ज़ाइद है कल ज़रूरत पेश आएगी इसे जम्अ़ रख लो आज नफ़्ली स-दक़ा दे कर कल ख़ुद भीक न मांगो, दूसरे येह कि ख़ैरात पहले अपने अ़ज़ीज़ ग़रीबों को दो फिर अज्नबियों को क्यूं कि अ़ज़ीज़ो को देने में स-दक़ा भी है और सिलए रेह़्मी भी।[2]

مدینہ
------

۱ (صحيح مسلم: كتاب الزكاة، باب النهي عن المسألة، الحديث:١٠٣٦، ص٣٧١)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب الإنفاق و كراهية الإمساك، الحديث:١٨٦٣، ج١، ص٣٥٤)
۲ (مرآة المناجيح شرح مشكاة المصابيح، ج٣، ص٧٠ـ٧١)

कहा गया है कि नौ शेरवान के पास एक हिन्दुस्तानी ह़कीम और एक रूमी फ़िलोसोफ़र आए, नौ शेरवान ने हिन्दुस्तानी ह़कीम से कहा : कुछ कहो, वोह बोला : बेहतरीन आदमी वोह है जो सख़ावत के साथ मुलाक़ात करे और गुस्से की ह़ालत में बा वक़ार रहे, गुफ़्तगू में ठहराव हो और रिक़्क़त की ह़ालत में भी तवाज़ोअ़ करने वाला हो नीज़ तमाम रिश्तेदारों पर शफ़क़त करने वाला हो ।

रूमी फ़िलोसोफ़र ने खड़े हो कर कहा : बख़ील आदमी का दुश्मन उस के माल का वारिष होता है, जो आदमी शुक्र कम अदा करता है वोह काम्याबी नहीं पा सकता, झूटे लोग क़ाबिले मज़म्मत हैं और चुग़ल ख़ोर ह़ालते फ़क्र में मरते हैं और जो आदमी रह़्म नहीं करता उस पर बे रह़्म शख़्स मुसल्लत़ कर दिया जाता है ।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ”مَا مِنْ يَوْمٍ طَلَعَتْ شَمْسُهُ إِلَّا وَكَانَ بِجَنْبَتَيْهَا مَلَكَانِ يُنَادِيَانِ نِدَاءً يَسْمَعُهُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ كُلُّهُمْ غَيْرُ الثَّقَلَيْنِ. يَا أَيُّهَا النَّاسُ هَلُمُّوْا إِلٰی رَبِّكُمْ، إِنَّ مَا

ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर, صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रोज़ाना सूरज यूं ही तुलूअ़ होता है कि उस के अत़राफ़ में दो फ़िरिश्ते पुकारते हैं और उन की येह पुकार जिन्नो इन्स के सिवा तमाम मख़्लूक़ सुनती है कि ऐ लोगो ! अपने रब की त़रफ़ आओ बेशक जो (रिज़्क़) अगर्चे कम हो और

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال،بيان ذم البخل،ج٣،ص٣٤٢)

قَلَّ وَكَفٰى خَيْرٌ مِّمَّا كَثُرَ وَأَلْهٰى وَلَا آبَتِ الشَّمْسُ إِلَّا وَكَانَ بِجَنْبَتَيْهَا مَلَكَانِ يُنَادِيَانِ نِدَاءً يَسْمَعُهُ خَلْقُ اللّٰهِ كُلُّهُمْ إِلَّا الثَّقَلَيْنِ: اَللّٰهُمَّ أَعْطِ مُنْفِقًا خَلَفًا وَأَعْطِ مُمْسِكًا تَلَفًا.[1]

किफ़ायत करे तो वोह उस से बेहतर है जो ज़ियादा तो हो मगर (यादे इलाही से) ग़ाफ़िल कर दे और हर रोज़ सूरज यूं ही डूबता है कि उस के अत़राफ़ में दो फ़िरिश्ते पुकारते हैं जिस पुकार को जिन्नो इन्स के सिवा तमाम मख़्लूक़ सुनती है, "इलाही عَزَّوَجَلَّ ! सख़ी को अच्छा इवज़ दे और बख़ील को बरबादी दे।"[1]

ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे नज़्दीक किसी बख़ील को आ़दिल क़रार देना दुरुस्त नहीं क्यूं कि बुख़्ल उसे लालच पर उभारता है नतीजतन वोह नुक़्सान के ख़ौफ़ से अपने ह़क़ से ज़ियादा ले लेता है। लिहाज़ा जिस शख़्स में बुख़्ल की सिफ़त पाई जाती है उस के पास अमानत मह़फ़ूज़ नहीं हो सकती।[2]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करने से माल में बरकत होती है न कि कमी चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ قَيْسِ بْنِ سِلَعٍ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ إِخْوَتَهُ شَكَوْهُ إِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوْا: إِنَّهُ يُبَذِّرُ مَالَهُ، وَيَنْبَسِطُ فِيْهِ.

ह़ज़रते क़ैस बिन सिलअ़ अन्सारी رَضِيَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि उन के भाइयों ने ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से उन की शिकायत की, कि वोह फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं और इस मुआ़मले में बहुत

مدینہ

[1] (شعب الإيمان، باب الزكاة، فصل في كراهية رد السائل، الحديث:٣٤١٢، ج٣، ص٢٣٣)
[2] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم البخل، ج٣، ص٣٤٢)

खुला हाथ है, तो सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : तुम्हारे भाइयों का क्या मस्अला है, वोह इस गुमान पर तुम्हारी शिकायत कर रहे हैं कि तुम अपने माल में बहुत फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हो और तुम्हारा हाथ बहुत खुला है ? मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आमदनी से अपना ह़िस्सा ले कर **अल्लाह** की राह में और अपने दोस्तों में ख़र्च कर देता हूं तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सीनए अक़्दस पर दस्ते अक़्दस रखा और तीन मरतबा फ़रमाया : ख़र्च कर **अल्लाह** तुझे अ़त़ा फ़रमाएगा । (रावी फ़रमाते हैं) इस के बा'द जब भी मैं राहे ख़ुदा में निकलता तो मेरे पास अपनी सुवारी होती और आज मेरा येह ह़ाल है कि मैं माल व आसाइश में अपने अहले ख़ाना (भाइयों) से बढ़ कर हूं ।[1]

فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا قَيْسُ مَا شَأْنُ إِخْوَتِكَ يَشْكُوْنَكَ يَزْعَمُوْنَ أَنَّكَ تُبَذِّرُ مَالَكَ، وَتَنْبَسِطُ فِيْهِ"، قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ إِنِّي آخُذُ نَصِيْبِيْ مِنَ الثَّمَرَةِ فَأُنْفِقُهُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ، وَعَلٰى مَنْ صَحِبَنِيْ فَضَرَبَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَدْرَهُ وَقَالَ: "أَنْفِقْ يُنْفِقِ اللّٰهُ عَلَيْكَ" ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَلَمَّا كَانَ بَعْدَ ذٰلِكَ خَرَجْتُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ، وَمَعِيَ رَاحِلَةٌ، وَأَنَا أَكْثَرُ أَهْلِ بَيْتِيَ الْيَوْمَ وَأَيْسَرُهُ.[1]

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक औ़रत की ता'रीफ़ की गई सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُم ने अ़र्ज़ की,

[1] (المعجم الأوسط للطبراني، الحديث:٨٥٣٦، ج٨، ص٢٤٧)

कि वोह बहुत रोज़े रखने वाली और रात को क़ियाम करने वाली है लेकिन उस में बुख़्ल की आ़दत भी है तो आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : फिर उस में कोई भलाई नहीं है।

हज़रते बिशर رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : बख़ील को देखना दिल को सख़्त करता है और बख़ील से मिलना मोमिनों के दिलों पर शाक़ होता है।

हज़रते यह्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सख़ी लोग चाहे फ़ाजिर हों इन के लिये दिलों में महब्बत ही होती है और बख़ील चाहे कितने ही भले क्यूं न हों दिलों में उन के लिये नफ़रत ही पाई जाती है।

हज़रते इब्ने मो'तज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : माल में कन्जूस इ़ज़्ज़त में सख़ी हैं। (या'नी माल बचा कर इ़ज़्ज़त गिनवाते हैं, क्यूं कि बख़ील लोगों की उन के बुख़्ल की बिना पर इ़ज़्ज़त जाती रहती है)

हज़रते यह्या बिन ज़करिय्या علی نبینا وعلیھما الصلوۃ والسلام की एक मरतबा शैत़ान से उस की अस्ल सूरत में मुलाक़ात हुई तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐ इब्लीस ! मुझे येह बता कि तुझे लोगों में सब से ज़ियादा किस से महब्बत और सब से ज़ियादा किस से नफ़रत है ? शैत़ान ने जवाब दिया कि मुझे बख़ील मोमिन से ज़ियादा महब्बत है और फ़ासिक़ सख़ी से सब से ज़ियादा बुग़्ज़। हज़रते यह्या عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : वोह क्यूं ? जवाब दिया : क्यूं कि बख़ील का बुख़्ल मेरे लिये काफ़ी है जब कि फ़ासिक़ सख़ी के बारे में मुझे ख़ौफ़ रहता है कि **अल्लाह** तआ़ला उस की सख़ावत को क़बूल कर ले, फिर शैत़ान ने वापस जाते हुए कहा : अगर आप हज़रते यह्या عَلَیْہِ السَّلَام न होते तो मैं येह बात न बताता।[1]

مدینہ

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم البخل، ج٣، ص٣٤٢)

दोस्त तीन क़िस्म के होते हैं, ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اَلْاَخِلَّاءُ ثَلَاثَةٌ: فَأَمَّا خَلِيْلٌ فَيَقُوْلُ: لَكَ مَا أَعْطَيْتَ وَمَا أَمْسَكْتَ فَلَيْسَ لَكَ فَذٰلِكَ مَالُكَ، وَأَمَّا خَلِيْلٌ فَيَقُوْلُ: أَنَا مَعَكَ حَتّٰى تَأْتِيَ بَابَ الْمَلِكِ ثُمَّ أَرْجِعُ وَأَتْرُكُكَ فَذٰلِكَ أَهْلُكَ وَعَشِيْرَتُكَ يُعِيْشُوْنَكَ حَتّٰى تَأْتِيَ قَبْرَكَ ثُمَّ يَرْجِعُوْنَ فَيَتْرُكُوْكَ، وَأَمَّا خَلِيْلٌ فَيَقُوْلُ: أَنَا مَعَكَ حَيْثُ دَخَلْتَ، وَحَيْثُ خَرَجْتَ، فَذٰلِكَ عَمَلُكَ، فَيَقُوْلُ: وَاللّٰهِ لَقَدْ كُنْتَ مِنْ أَهْوَنِ الثَّلَاثَةِ عَلَيَّ".

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दोस्त तीन क़िस्म के हैं एक वोह दोस्त जो कहे : तेरा वोह है जो तूने ख़र्च किया और जो तूने रोका वोह तेरा नहीं येह तेरा माल है, एक वोह दोस्त जो कहता है : मैं तेरे मरने तक तेरे साथ हूं फिर मैं लौट जाऊंगा और तुझे छोड़ दूंगा, येह तेरे अहले ख़ाना, बीवी बच्चे हैं जो तेरे साथ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं यहां तक कि तू अपनी क़ब्र में पहुंच जाता है और वोह तुझे छोड़ जाते हैं, और एक दोस्त वोह है जो कहेगा : मैं तेरे आने में भी तेरे साथ हूं और जाने में भी, वोह तेरा अ़मल है, तो इन्सान कहेगा : **अल्लाह** की क़सम ! (दुन्या में) तू मेरे नज़्दीक तीनों (दोस्तों) में (सब) से ज़ियादा ज़लील था ।[1]

कहा जाता है कि बसरह में एक फ़राख़ दस्त बख़ील शख़्स रहता था

उस के एक पडोसी ने उस की दा'वत की और उस के सामने हांडी में भुना हुवा गोश्त रखा उस ने उस में से बहुत जि़यादा खा लिया और फिर पानी पीने लगा चुनान्चे उस का पेट फूल गया और वोह सख़्त तक्लीफ़ और मौत की ह़ालत में मुब्तला हो गया और तड़पने लगा जब मुआ़मला बिगड़ता गया तो त़बीब को उस की ह़ालत बताई गई उस ने कहा कोई ह़रज नहीं जो कुछ खाया है उसे क़ै कर दो । उस ने कहा, हरगिज़ नहीं, ऐसे उ़म्दा भुने हुए गोश्त को कैसे क़ै कर दूं मौत क़बूल कर लूंगा ऐसा नहीं करूंगा ।[1]

माल जम्अ़ न करने में तक़्वा है । ह़दीष शरीफ़ में हैं :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ عَلٰى بِلَالٍ وَعِنْدَهُ صُبْرَةٌ مِنْ تَمْرٍ فَقَالَ: "مَا هٰذَا يَا بِلَالُ"؟، قَالَ: شَيْءٌ اِدَّخَرْتُهُ لِغَدٍ فَقَالَ: أَمَا تَخْشٰى أَنْ تَرٰى لَهُ غَدًا بُخَارًا فِي نَارِ جَهَنَّمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَنْفِقْ يَا بِلَالُ، وَلَا تَخْشَ مِنْ ذِي الْعَرْشِ إِقْلَالًا".[2]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़्मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास तशरीफ़ लाए, उन के पास खजूरों का ढेर था फ़रमाया : ऐ बिलाल येह क्या ? अ़र्ज़ किया कि इसे मैं ने कल के लिये जम्अ़ किया है । फ़रमाया : क्या तुम्हें इस से ख़ौफ़ नहीं कि तुम कल इस के सबब दोज़ख़ की आग में बुख़ार क़ियामत के दिन देखो, ऐ बिलाल ! ख़र्च करो और अ़र्श वाले से कमी का ख़ौफ़ न करो ।[2]

مدینہ
1 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، حكايات البخلاء، ج٣، ص٣٤٢)
2 (شعب الإيمان، باب التوكل والتسليم، الحديث:١٣٤٦، ج٢، ص١١٨)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب الإنفاق وكراهية الإمساك، الحديث:١٨٨٥، ج١، ص٣٥٨)

मज़्कूरा ह़दीष शरीफ़ की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस में ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ को इन्तिहाई तक़्वा और तर्के दुन्या की ता'लीम है और तवक्कुल से आ'ला तवक्कुल की त़रफ़ तरक़्क़ी देना है या'नी ऐ बिलाल رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ! मैं जिस दरजे पर तुम्हें पहुंचाना चाहता हूं वोह जब ही ह़ासिल होगा जब कि तुम अपने पास इतना भी न रखो ताकि तुम्हें क़ियामत के दिन उस का ह़िसाब देने में कुछ भी न ठहरना पड़े, येही मत़्लब है दोज़ख़ के बुख़ार देखने का, ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ उस वक़्त तने तन्हा थे, अहलो इ़याल न रखते थे, आप के ज़िम्मे किसी के ह़ुक़ूक़ न थे, फ़रमाया : अकेले दम के लिये जम्अ़ करने की फ़िक्र क्यूं लगाते हैं रब हमारे आस्ताने से तुम्हें दिये जाए, तुम खाए जाओ । सूफ़ियाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْھِم अपने बा'ज़ मुरीदीन को कभी चिल्लों से मुजा-हदा कराते हैं, इस ज़माने में तर्के दुन्या तर्के ह़ैवानात कामिल कराते हैं, इन की अस्ल येह ह़दीष है, येह ह़दीष जम्ए़ दुन्या के ख़िलाफ़ नहीं, अगर माल जम्अ़ करना ह़राम होता तो इस्लाम का एक रुक्न या'नी ज़कात ही फ़ौत हो जाती ।[1]

मन्क़ूल है की मुह़म्मद बिन यह़्या बिन ख़ालिद बिन बरमक बहुत ज़ियादा बख़ील था उस के किसी रिश्तेदार से जो उस को अच्छी त़रह़ जानता था पूछा गया कि उस के दस्तर ख़्वान का ह़ाल बयान करो, उस ने कहा : वोह अंगूठे और शहादत की उंगली के दरमियान वाली जगह है या'नी तंग है और गोया उस के पियाले ख़श्ख़ाश के दानों को खुरच कर बनाए गए हों । पूछा गया : उस के पास कौन आता है ? उस ने जवाब दिया : किरामन कातिबीन (फ़िरिश्ते) । उस ने कहा : उस के साथ कोई भी खाता नहीं होगा ? उस ने जवाब दिया : क्यूं नहीं मख्खियां खाती हैं । उस ने कहा : तुम उस के

1 (مرآۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح،ج۳،ص ۹۰۔۹۱)

ख़ास आदमी हो अगर तुम्हारा सित्र नंगा हो जाए और कपड़े फट जाएं तो फिर क्या होगा ? उस ने कहा : वोह कहेगा : **अल्लाह** की क़सम ! मेरे पास तो सूई नहीं जिस के साथ मैं इस की सिलाई करूं। और अगर मुह़म्मद बिन यह़्या बग़दाद से नौबा (एक मक़ाम) तक (इतने बड़े) घर का मालिक हो और वोह सूईयों से भरा हुवा हो और फिर ह़ज़रते जिब्रील और ह़ज़रते मीकाईल عليهما السلام तशरीफ़ लाएं और उन के साथ ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام भी हों और वोह उस से एक सूई मांगें ताकि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़मीस की सिलाई करें जो पीछे से फट गई थी तो तब भी वोह सूई नहीं देगा।[1]

बुख़्ल रिज़्क़ से मह़रूम होने का सबब बन सकता है। चुनान्चे

عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: قَالَ لِي رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تُوكِي فَيُوكَى عَلَيْكِ".[2]

ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है फ़रमाती हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से मत रुक, वरना रिज़्क़ रोक दिया जाएगा।[2]

जमए़ माल से बचने और साइल को तही दस्त न लौटाने की तरग़ीब में बयान है :

عَنْ بِلَالٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِي رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا بِلَالُ مُتْ فَقِيْرًا وَلَا تَمُتْ

ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ऐ

مدينه

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، حكايات البخلاء، ج٣، ص٣٤٣)
[2] (صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب التحريض على الصدقة و الشفاعة فيها، الحديث:١٤٣٣، ج١، ص٣٥١)

غَنِيًّا". قُلْتُ: وَكَيْفَ لِي بِذَاكَ؟ قَالَ: "مَا رُزِقْتَ فَلَا تَخْبَأْ، وَمَا سُئِلْتَ فَلَا تَمْنَعْ"، فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ كَيْفَ لِيْ بِذَاكَ؟ قَالَ: "هُوَ ذَاكَ أَوِ النَّارُ".[1]

बिलाल ! फ़क़ीर मरना ग़नी न मरना, मैं ने अ़र्ज़ की : येह मुझ से कैसे होगा ? फ़रमाया : तुम्हें जो रिज़्क़ मिले उसे जम्अ़ मत करो और जो तुम से मांगा जाए उस से मन्अ़ मत करो, तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! येह मुझ से कैसे होगा ? फ़रमाया : ऐसे ही करना होगा वरना आग है ।[1]

उन दो शख़्सों के मुतअ़ल्लिक़ जिन में से एक ने अपने बा'द अपनी अवलाद के मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया और दूसरे ने फ़क़्र के ख़ौफ़ से माल जम्अ़ कर के रखा ह़दीष शरीफ़ में बयान हुवा कि

عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "نَشَرَ اللّٰهُ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِهِ أَكْثَرَ لَهُمَا الْمَالَ وَالْوَلَدَ، فَقَالَ لِأَحَدِهِمَا: أَيْ فُلَانُ ابْنَ فُلَانٍ! قَالَ: لَبَّيْكَ رَبِّ وَسَعْدَيْكَ. قَالَ: أَلَمْ أُكْثِرْ لَكَ مِنَ الْمَالِ وَالْوَلَدِ؟

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दों में से दो बन्दों को उन की मौत के बा'द ज़िन्दा फ़रमाया जिन्हें कषरते माल व अवलाद दी थी । एक से फ़रमाया : ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां ! उस ने अ़र्ज़ की : ऐ रब ! عَزَّوَجَلَّ मैं ह़ाज़िर हूं । **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : क्या मैं ने तुझ पर माल व अवलाद की कषरत न की ? उस ने अ़र्ज़ किया : क्यूं नहीं ! ऐ

مدینہ

[1] (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ١٠٢١، ج١، ص٣٤١)

قَالَ: بَلٰى أَيْ رَبِّ. قَالَ: كَيْفَ صَنَعْتَ فِيمَا آتَيْتُكَ؟ قَالَ: تَرَكْتُهُ لِوَلَدِي مَخَافَةَ الْعَيْلَةِ عَلَيْهِمْ. قَالَ: أَمَا إِنَّكَ لَوْ تَعْلَمُ الْعِلْمَ لَضَحِكْتَ قَلِيلًا، وَلَبَكَيْتَ كَثِيرًا، أَمَا إِنَّ الَّذِي تَخَوَّفْتَ عَلَيْهِمْ قَدْ أَنْزَلْتُ بِهِمْ وَيَقُولُ لِلْآخَرِ: أَيْ فُلَانُ ابْنُ فُلَانٍ، فَيَقُولُ: لَبَّيْكَ أَيْ رَبِّ وَسَعْدَيْكَ؟ قَالَ لَهُ: أَلَمْ أُكْثِرْ لَكَ مِنَ الْمَالِ وَالْوَلَدِ؟ قَالَ: بَلٰى. أَيْ رَبِّ. قَالَ: فَكَيْفَ صَنَعْتَ فِيمَا آتَيْتُكَ؟ فَقَالَ: أَنْفَقْتُ فِي طَاعَتِكَ، وَوَثِقْتُ لِوَلَدِي مِنْ بَعْدِي بِحُسْنِ طَوْلِكَ. قَالَ: أَمَا إِنَّكَ لَوْ تَعْلَمُ الْعِلْمَ لَضَحِكْتَ كَثِيرًا، وَلَبَكَيْتَ قَلِيلًا، أَمَا إِنَّ الَّذِي قَدْ وَثِقْتَ بِهِ أَنْزَلْتُ بِهِمْ"

मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : तुम ने मेरे अ़ता कर्दा माल में क्या अ़मल किया ? उस ने अ़र्ज़ की : उसे फ़क़्र के ख़ौफ़ से अवलाद के लिये छोड़ दिया । अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : अगर तुम ह़क़ीक़त जान लेते तो कम हंसते और ज़ियादा रोते । सुनो ! जिस फ़क़्र का तुम्हें अपनी अवलाद पर ख़ौफ़ था वोह मैं उन पर नाज़िल कर चुका हूं । और दूसरे से फ़रमाया : ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां ! उस ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! عَزَّوَجَلَّ मैं ह़ाज़िर हूं । अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : क्या मैं ने तुझ पर माल व अवलाद की कषरत नहीं की ? उस ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं, ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : तुम ने मेरे अ़ता कर्दा माल में क्या अ़मल किया ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने उसे तेरी इत़ाअ़त में ख़र्च किया और अपने बा'द अपनी अवलाद के बारे में तेरे फ़ज़्लो करम पर भरोसा किया । अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : अगर तुम ह़क़ीक़त जान लेते तो ज़ियादा हंसते और कम रोते । सुनो ! जिन के बारे में तूने मुझ पर भरोसा किया मैं ने उन की ह़ाजत रवाई फ़रमाई ।[1]

مدینہ

[1] (المعجم الأوسط للطبراني، الحديث:٤٣٨٣، ج٤، ص٣٤٢)

बख़ील ब ज़ाहिर तो माल जम्अ़ करता है मगर ह़क़ीक़त में अपना ही नुक़्सान करता है क्यूं कि उस माल के सबब जिन ने'मतों का ह़ुसूल उस के लिये मुमकिन हो सकता है अपनी कन्जूसी की वजह से वोह उन से मह़रूम रहता है। चुनान्चे :

कहा जाता है कि मरवान बिन अबी ह़फ़्सा बुख़्ल की वजह से गोश्त नहीं खाता था और जब उस का जी चाहता तो वोह ग़ुलाम को भेज कर बाज़ार से सिरी मंगवा लेता और उसे खाता उस से कहा गया कि हम देखते हैं कि आप गर्मियों सर्दियों में सिरियां ही खाते हैं इस की क्या वजह है ? उस ने कहा : येह ठीक है लेकिन इस की वजह येह है कि मुझे इस के निर्ख़ का इल्म है लिहाज़ा मैं ग़ुलाम की ख़ियानत से मह़फ़ूज़ रहता हूं और वोह मुझे धोका नहीं दे सकता और येह ऐसा गोश्त है कि ग़ुलाम इसे पकाते वक़्त इस में से खा नहीं सकता अगर वोह इस की आंख, कान या चेहरे से खाता है तो मुझे पता चल जाता है फिर येह कि इस में से मुझे मुख़्तलिफ़ ज़ाइक़े ह़ासिल होते हैं आंख का ज़ाएक़ा अलग है, कान का ज़ाइक़ा जुदा है, ज़बान का ज़ाइक़ा मुख़्तलिफ़ है और इस की गुद्दी और दिमाग़ के ज़ाइक़े भी मुन्फ़रिद हैं और इस के पकाने की मशक़्क़त से भी मह़फ़ूज़ रहता हूं तो इस में मेरे लिये कई आसानियां जम्अ़ होती हैं।

येही शख़्स ख़लीफ़ा महदी के पास जाने लगा तो उस के घर वालों में से एक औ़रत ने कहा : अगर ख़लीफ़ा ने तुझे इन्आ़म दिया तो उस में मेरा ह़िस्सा कितना होगा ? उस ने कहा : अगर मुझे एक लाख मिले तो तुझे एक दिरहम दूंगा। चुनान्चे उसे साठ हज़ार दिरहम मिले तो उस ने उसे चार दानिक़ दिये (एक दानिक़ दिरहम का छटा ह़िस्सा होता है इस त़रह़ चार दानिक़ दिरहम का दो तिहाई ह़िस्सा हुवा)।

एक मरतबा उस ने एक दिरहम का गोश्त ख़रीदा उधर उस के दोस्त ने उसे दा'वत दी तो उस ने गोश्त क़स्साब को वापस कर दिया और एक दानिक़ का नुक़्सान उठाया और कहने लगा मुझे फ़ुज़ूल ख़र्ची पसन्द नहीं है।[1]

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ईसार व मह़ब्बत और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के नेक जज़्बे से सरशार थे, चुनान्चे :

عَنْ مَالِكِ الدَّارِ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَخَذَ أَرْبَعَ مِائَةِ دِيْنَارٍ فَجَعَلَهَا فِي صُرَّةٍ فَقَالَ لِغُلَامٍ: اِذْهَبْ بِهَا إِلٰى أَبِي عُبَيْدَةَ ثُمَّ تَلَهَّ فِي الْبَيْتِ سَاعَةً حَتّٰى تَنْظُرَ مَا يَصْنَعُ، قَالَ: فَذَهَبَ بِهَا الْغُلَامُ، فَقَالَ: يَقُوْلُ لَكَ أَمِيْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ خُذْ هٰذِهٖ، فَقَالَ:

ह़ज़रते मालिक दार से मरवी है कि उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने चार सो दीनार लिये और थैली में डाल कर अपने एक ग़ुलाम से फ़रमाया : येह अबू उ़बैदा के पास ले जाओ फिर कुछ देर उन के घर ही में ठहरो और देखो कि वोह इन का क्या करते हैं, तो ग़ुलाम वोह दीनार ले कर चला और अ़र्ज़ की : अमीरुल मुअमिनीन ने आप के लिये कहा है कि येह दीनार ले लीजिये, तो उन्हों ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला उन का भला करे और उन पर अपनी रह़मत फ़रमाए। फिर अपनी बांदी को बुला कर फ़रमाया : ऐ बांदी ! यहां आओ, येह सात दीनार फ़ुलां को दे आओ और येह पांच फ़ुलां को, ह़त्ता कि इस त़रह़ उन्हों ने सारे दीनार तक़्सीम कर दिये। ग़ुलाम ने वापस आ कर

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال،حكايات البخلاء،ج۳،ص۳٤۳)

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से तमाम मुआ़मला बयान किया, फिर ग़ुलाम ने देखा कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस जैसी एक थैली ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये तय्यार कर रखी है । ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने ग़ुलाम को वोह दीनार दे कर ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के पास भेजा, (ग़ुलाम ने वोह दीनार ह़ज़रते मुआ़ज़ की ख़िदमत में पेश किये) तो ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला उन का भला करे । फिर अपनी बांदी से फ़रमाया : ऐ बांदी ! इतने दीनार फ़ुलां के घर दे आओ और इतने फ़ुलां के घर, तो ह़ज़रते मुआ़ज़ की ज़ौजए मोह़तरमा तशरीफ़ लाईं और कहा कि ख़ुदा की क़सम ! हम ख़ुद भी मिस्कीन हैं, हमें भी दीजिये । उस वक़्त थैली में सिर्फ़ दो दीनार बाक़ी रह गए थे ह़ज़रते मुआ़ज़ ने वोह दीनार ज़ौजए मोह़तरमा की त़रफ़ फैंके और ग़ुलाम ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर सारा मुआ़मला बयान किया, तो आप ने फ़रमाया : बेशक येह सब आपस में भाई भाई हैं ।

وَصَلَهُ اللّٰهُ وَرَحِمَهُ، ثُمَّ قَالَ:
تَعَالِي يَا جَارِيَةُ اِذْهَبِي بِهٰذِهِ
السَّبْعَةِ إِلَى فُلَانٍ، وَبِهٰذِهِ
الْخَمْسَةِ إِلَى فُلَانٍ، حَتّٰى
أَنْفَذَهَا، فَرَجَعَ الْغُلَامُ إِلَى
عُمَرَ فَأَخْبَرَهُ فَوَجَدَهُ قَدْ أَعَدَّ
مِثْلَهَا لِمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، فَأَرْسَلَهُ
بِهَا إِلَيْهِ، فَقَالَ مُعَاذٌ: وَصَلَهُ
اللّٰهُ: يَاجَارِيَةُ اِذْهَبِي إِلَى بَيْتِ
فُلَانٍ بِكَذَا، وَلِبَيْتِ فُلَانٍ
بِكَذَا، فَاطَّلَعَتِ امْرَأَةُ مُعَاذٍ
وَقَالَتْ: نَحْنُ وَاللّٰهِ مَسَاكِينُ
فَأَعْطِنَا فَلَمْ يَبْقَ فِي الْخِرْقَةِ إِلَّا
دِينَارَانِ فَدَحٰى بِهِمَا إِلَيْهَا،
وَرَجَعَ الْغُلَامُ فَأَخْبَرَ بِذٰلِكَ،
وَقَالَ: إِنَّهُمْ إِخْوَةٌ بَعْضُهُمْ مِنْ
بَعْضٍ.[1]

مدينه

[1] تلة: هو بفتح التاء المثناة فوق واللام أيضاً وتشديد الهاء: أي تشاغل. فدحى بهما: بالحاء المهملة: أى رمى بهما. (سير أعلام النبلاء، ج١، ص٤٥٦)

बुख़्ल ना ह़क़ ख़ून रेज़ी का बाइ़ष है। चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اِتَّقُوا الظُّلْمَ، فَاِنَّ الظُّلْمَ ظُلُمَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَاتَّقُوا الشُّحَّ فَاِنَّ الشُّحَّ اَهْلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ حَمَلَهُمْ عَلٰى اَنْ سَفَكُوْا دِمَاءَهُمْ، وَاسْتَحَلُّوْا مَحَارِمَهُمْ".[1]

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ज़ुल्म से बचो क्यूं कि ज़ुल्म क़ियामत के दिन अंधेरियां होगा और कन्जूसी से बचो क्यूं कि कन्जूसी ने तुम से पहले वालों को हलाक कर दिया, कन्जूसी ने उन्हें रग़बत दी कि उन्हों ने ख़ून रेज़ी की और ह़राम को ह़लाल जाना।[1]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَيْه इस ह़दीष की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ज़ुल्म के लुग़वी मा'ना हैं किसी चीज़ को बे मौक़अ़ इस्ति'माल करना और किसी का ह़क़ मारना, इस की बहुत क़िस्में हैं गुनाह करना अपनी जान पर ज़ुल्म है, क़राबत दारों या क़र्ज़ ख़्वाहों का ह़क़ न देना उन पर ज़ुल्म, किसी को सताना ईज़ा देना उस पर ज़ुल्म, येह ह़दीष सब को शामिल है और ह़दीष अपने ज़ाहिरी मा'ना पर है या'नी ज़ालिम पुल सिरात़ पर अंधेरियों में घिरा होगा, येह ज़ुल्म अंधेरी बन कर उस के सामने होगा, जैसे कि मोमिन का ईमान और उस के नेक आ'माल रोशनी बन कर इस के आगे चलेंगे, रब तआ़ला फ़रमाता है : (﴿يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ﴾[الحديد: ١٢/٥٧]

तर्जमा : (देखोगे कि) इन का नूर इन के आगे दौड़ता है (कन्जुल ईमान)) चूंकि ज़ालिम दुन्या में ह़क़ ना ह़क़ में फ़र्क़ न कर सका इस लिये अंधेरे में रहा।

مدينه

[1] (صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب تحريم الظلم، الحديث:٢٥٧٨،ص١٠٠٠)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب الإنفاق وكراهية الإمساك، الحديث:١٨٦٥، ج١، ص٣٥٤)

अ-रबी में शुह्ह़ बुख़्ल से बदतर है, बुख़्ल अपना माल किसी को न देना है और शुह्ह़ अपना माल न देना और दूसरे के माल पर ना जाइज़ क़ब्ज़ा करना है ग़रज़ कि शुह्ह़, बुख़्ल, ह़िर्स और ज़ुल्म का मज्मूआ़ है, इसी लिये येह फ़ित्नों, फ़साद, ख़ूं रेज़ी व क़त्ए़ रेह़्मी की जड़ है, जब कोई दूसरों का ह़क़ अदा न करे बल्कि इन के ह़क़ और छीनना चाहे तो ख़्वाह म ख़्वाह फ़साद होगा।[1]

एक ज़माना ऐसा होगा कि जब स-दक़ा लेने वाला कोई न होगा, ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ حَارِثِ بْنِ وَهْبٍ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "تَصَدَّقُوْا فَإِنَّهُ يَأْتِيْ عَلَيْكُمْ زَمَانٌ يَمْشِي الرَّجُلُ بِصَدَقَتِهِ فَلَا يَجِدُ مَنْ يَّقْبَلُهَا، يَقُوْلُ الرَّجُلُ: لَوْ جِئْتَ بِهَا بِالْأَمْسِ لَقَبِلْتُهَا، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَلَا حَاجَةَ لِيْ بِهَا"[2]

ह़ज़रते ह़ारिष बिन वह्ब से मरवी है, फ़रमाते हैं : नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : स-दक़ा करो क्यूं कि तुम पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि कोई शख़्स अपना स-दक़ा ले कर चलेगा तो कोई उस का क़बूल करने वाला न मिलेगा आदमी कहेगा कि अगर तुम कल लाते तो मैं ले लेता आज मुझे इस की ज़रूरत नहीं।[2]

---

1 (مرآة المناجيح شرح مشكاة المصابيح، ج٣، ص٧٢)

2 (صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة من كسب، باب الصدقة قبل الرد، الحديث: ١٤١١، ج١، ص٤٧٦)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب الترغيب في الصدقة... إلخ، الحديث: ١٠١١، ص٣٦٣)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب التحريض على الصدقة، الحديث: ٢٥٥٤، ج٣، الجزء٥، ص٨١)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب الإنفاق و كراهية الإمساك، الحديث: ١٨٦٦، ج١، ص٣٥٤)

मज़्कूरा ह़दीष शरीफ़ की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी साहि़ब رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुराद सारी उम्मते रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है न कि सह़ाबा क्यूं कि माल की फ़िरावानी क़रीबे क़ियामत ह़ज़रते इमाम महदी के ज़माने में होगी, और हो सकता है कि सह़ाबा ही से ख़ित़ाब हो और सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام इस में दाख़िल हों कि वोह भी ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबी हैं और वोह येह ज़माना पाएंगे कि उन की वफ़ात बिल्कुल क़ियामत से मुत्तसिल होगी।

ह़कीमुल उम्मत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि येह क़बूल न करना ग़िना की वजह से होगा कि सारे लोग इतने मालदार हो जाएंगे कि आसानी से कोई ज़कात लेने वाला न मिलेगा इस ह़दीष की रविश से मा'लूम हो रहा है कि उस वक़्त भी फ़क़ीर मिलेंगे तो मगर बहुत तलाश और दुश्वारी से वरना मालदारों पर ज़कात फ़र्ज़ न रहती, जैसे जिस के आ'ज़ाए वुज़ू ऐसे ज़ख़्मी हों जिन पर न पानी पहुंच सके न तयम्मुम का हाथ फिर सके, तो उस पर वुज़ू और तयम्मुम दोनों मुआ़फ़ हो जाते हैं इस ह़दीष से मा'लूम हुवा कि फ़ुक़रा का होना भी **अल्लाह** की रह़मत है कि इन के ज़रीए़ हम बहुत से फ़राइज़ से सुबुक दोश होते हैं।

यहां मिरक़ात ने फ़रमाया कि उस ज़माने के लोग ज़ाहिद, साबिर और तारिकुद्दुन्या हो जाएंगे जो ज़कात लेना पसन्द करेंगे ही नहीं।[1]

सख़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, जन्नत और लोगों से क़रीब और जहन्नम से दूर होता है, जब कि बख़ील इस के बर अ़क्स, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

---

1 (مرآۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح،ج۳،ص ۷۲۔۷۳)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सखी **अल्लाह** के क़रीब है, जन्नत के क़रीब है, लोगों के क़रीब है, आग से दूर है और कन्जूस **अल्लाह** से दूर है, जन्नत से दूर है, लोगों से दूर है, आग के क़रीब है और यक़ीनन जाहिल सखी कन्जूस आबिद से अफ़्ज़ल है।[1]

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اَلسَّخِيُّ قَرِيبٌ مِّنَ اللّٰهِ، قَرِيبٌ مِّنَ الْجَنَّةِ، قَرِيبٌ مِّنَ النَّاسِ، بَعِيدٌ مِّنَ النَّارِ، وَالْبَخِيلُ بَعِيدٌ مِنَ اللّٰهِ، بَعِيدٌ مِّنَ الْجَنَّةِ، بَعِيدٌ مِّنَ النَّاسِ، قَرِيبٌ مِّنَ النَّارِ. وَلَجَاهِلٌ سَخِيٌّ أَحَبُّ إِلَى اللّٰهِ مِنْ عَابِدٍ بَخِيلٍ". ١

हकीमुल उम्मत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ इस हदीष की शर्ह में फ़रमाते हैं : यहां मिरक़ात ने फ़रमाया कि हक़ीक़ी सखी वोह है जो ग़िना पर रब तआला की रिज़ा को तरजीह दे, इस के तीन क़ुर्ब बयान हुए और एक दूरी, **अल्लाह** तआला तो हर एक से क़रीब है लेकिन उस से क़रीब कोई कोई है। शे'र :

یار نزدیک تر از من بمعنی است ❁ ویں عجب بیں کہ من از وے دُورم

इस हदीष में इशारतन फ़रमाया गया कि सखावते माल हुस्ने मआल या'नी अन्जाम बख़ैर का ज़रीआ है। सखी से मख़्लूक़ ख़ुद ब ख़ुद राज़ी रहती है।

---

١ (سنن الترمذي، كتاب البر و الصلة، باب ما جاء في السخاء، الحديث: ١٩٦١، ج٣، ص٩٢)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب الإنفاق و كراهية الإمساك، الحديث: ١٨٦٩، ج١، ص٣٥٥)

हिकायत : किसी आ़लिम से पूछा गया कि सख़ावत बेहतर है या शुजाअ़त ? फ़रमाया : खुदा तआ़ला जिसे सख़ावत दे, उसे शुजाअ़त की ज़रूरत ही नहीं, लोग खुद ब खुद उस के सामने चित हो जाएंगे।

चूंकि स-दक़ा ग़ज़ब की आग बुझाता है इस लिये सख़ी दोज़ख़ से दूर है।

मज़्कूरा ह़दीष शरीफ़ में सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमान : "जाहिल सख़ी कन्जूस आ़बिद से अफ़्ज़ल है" की तशरीह़ फ़रमाते हुए ह़कीमुल उम्मत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه रक़म त़राज़ हैं : यहां आ़बिद से मुराद आ़लिम आ़बिद है जैसा कि जाहिल के मुक़ाबले से मा'लूम हो रहा है, या'नी जो शख़्स आ़लिम भी हो आबिद भी मगर कन्जूस कि न ज़कात दे न स-दक़ाते वाजिबा अदा करे वोह यक़ीनन सख़ी जाहिल से बदतर होगा क्यूं कि वोह आ़लिम ह़क़ीक़तन बे अ़मल है बुख़्ल बहुत से फ़िस्क़ पैदा कर देता है और सख़ावत बहुत ख़ूबियों का तुख़्म है, बल्कि वोह आ़बिद भी कामिल नहीं, क्यूं कि इबादत माली या'नी ज़कात वग़ैरा अदा नहीं करता, सिर्फ़ जिस्मानी इबादत ज़िक्रो फ़िक्र पर क़नाअ़त करता है जिस में कुछ ख़र्च न हो।[1]

मोमिन में बद अख़्लाक़ी और कन्जूसी एक साथ नहीं पाई जातीं।

عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "خَصْلَتَانِ لَا تَجْتَمِعَانِ فِي مُؤْمِنٍ: اَلْبُخْلُ وَسُوْءُ الْخُلُقِ".[2]

ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मोमिन में दो ख़स्लतें कभी जम्अ़ नहीं होतीं कन्जूसी और बद ख़ुल्क़ी।[2]

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 84-85)

٢ (سنن الترمذي، كتاب البر والصلة، باب ما جاء في البخيل، الحديث:١٩٦٢، ج٣، ص٩٣)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب الإنفاق و كراهية الإمساك، الحديث:١٨٧٢، ج١، ص٣٥٥)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم "दो ख़स्लतें कभी जम्अ़ नहीं होतीं" की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी साहि़ब رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : या'नी ऐसा नहीं होता कि कोई कामिल मोमिन भी हो और हमेशा का बख़ील और बद ख़ुल्क़ भी, अगर इत्तिफ़ाक़न कभी उस से बुख़्ल या बद ख़ुल्क़ी सादिर हो जाए तो फ़ौरन वोह पशेमान भी हो जाता है इस के एक मा'ना येह भी हो सकते हैं कि मोमिन न बख़ील होता है न बद ख़ुल्क़, जिस दिल में ईमाने कामिल जा गुज़ीं हो तो उस दिल से येह दोनों ऐब निकल जाते हैं (लम्आ़त) ख़याल रहे कि बद ख़ुल्क़ी और है ग़ुस्सा कुछ और, **अल्लाह** तआ़ला के लिये ग़ुस्सा करना इ़बादत है रब तआ़ला फ़रमाता है : (﴿أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ﴾ [الفتح:٢٩/٤٨] **तर्जमा :** काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल (कन्ज़ुल ईमान)) हमारी इस शर्ह़ से ह़दीष पर न येह ए'तिराज़ हो सकता है कि बा'ज़ मोमिन बख़ील भी होते हैं और बद ख़ुल्क़ भी, क्यूं कि वोह या तो मोमिने कामिल नहीं होते या उन के येह ऐब आ़रिज़ी होते हैं, और न येह ए'तिराज़ रहा कि येह ह़दीष क़ुरआन के ख़िलाफ़ है ।[1]

जन्नत में फ़रेबी, कन्जूस और एह़सान जताने वालों का दाख़िला मम्नूअ़ है, ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي بَكْرِ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:"لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ خِبٌّ وَّلَا بَخِيْلٌ وَّلَا مَنَّانٌ".

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जन्नत में न तो फ़रेबी आदमी जाएगा न कन्जूस न एह़सान जताने वाला ।[2]

---

١ (مرآة المناجيح شرح مشكاة المصابيح، ج٣،ص٧٥۔٧٦)

٢ (سنن الترمذي، كتاب البر و الصلة، باب ما جاء في البخيل، الحديث:١٩٦٤، ج٣، ص٩٤)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب الإنفاق و كراهية الإمساك، الحديث:١٨٧٣، ج١، ص٣٥٥)

इस ह़दीष की शर्ह़ में मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी साहिब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : या'नी जो इन ऐ़बों पर मर जाए वोह जन्नती नहीं क्यूं कि वोह मुनाफ़िक़ है, मोमिन में अव्वलन तो येह ऐ़ब होते नहीं और अगर हों तो रब तआ़ला मरने से पहले तौबा नसीब कर देता है येह मत़्लब भी हो सकता है कि ऐसा आदमी जन्नत में पहले न जाएगा, एह़सान जताने से त़ा'ना देना मुराद है वरना बा'ज़ सूरतों में एह़सान जताना इ़बादत है जब कि उस से सामने वाले की इस्लाह़ मक़्सूद हो, रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ﴾[الحجرات:۱۷/۴۹] (**तर्जमा :** बल्कि अल्लाह तुम पर एह़सान रखता है कि उस ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की।[1] (कन्ज़ुल ईमान))

इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى एक बख़ील शख़्स की ह़िकायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते आ'मश رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का एक पड़ोसी था जो उन को मुसल्सल अपने घर आने की दा'वत देता और कहता अगर आप आएं तो मैं आप को रोटी का एक टुकड़ा और नमक पेश करूंगा। आ'मश इन्कार करते उस ने एक दिन आप को फिर पेशकश की। इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त आप को भूक भी लगी हुई थी फ़रमाया : अच्छा हमें ले चलिये आप उस के घर में दाख़िल हुए तो उस ने रोटी का एक टुकड़ा और नमक पेश किया इतने में एक साइल आया तो घर के मालिक ने कहा : अल्लाह तआ़ला तुम्हें बरकत दे, उस ने फिर सुवाल किया तो उस ने वोही जवाब दिया जब तीसरी मरतबा सुवाल किया तो उस ने कहा : जाते हो या डन्डा ले कर आऊं, ह़ज़रते आ'मश ने साइल को आवाज़ दी : भाई चले जाओ मैं ने इस शख़्स से ज़ियादा सच्चा किसी को नहीं देखा येह वा'दे का पाबन्द है येह एक मुद्दत से मुझे रोटी के टुकड़े और नमक की दा'वत देता रहा ख़ुदा की क़सम ! इस ने इस में कुछ भी इज़ाफ़ा नहीं किया।[2]

मدينه
---

[1] (مرآة المناجيح شرح مشكاة المصابيح، ج۳، ص۷۶۔۷۷)

[2] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، حكايات البخلاء، ج۳، ص۳۴۳)

बुख़्ल का इलाज

इमाम अबू ह़ामिद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जान ले कि बुख़्ल का सबब माल की मह़ब्बत है और माल की मह़ब्बत के दो सबब हैं :

एक : ऐसी ख़्वाहिशात की मह़ब्बत जिन का ह़ुसूल बिग़ैर माल और लम्बी उम्मीद के मुमकिन नहीं, अगर इन्सान को इ़ल्म हो जाए कि एक दिन बा'द मर जाएगा तो बसा अवक़ात वोह बुख़्ल नहीं करेगा क्यूं कि एक दिन, एक महीना या एक साल के लिये जिस मिक़्दार की उस को ज़रूरत होगी, वोह क़रीब है। और अगर उम्मीद तो कम हो मगर उस की अवलाद हो तो ज़िन्दगी की उम्मीद की जगह अवलाद ले लेगी क्यूं कि वोह अवलाद की बक़ा को अपनी बक़ा जानता है लिहाज़ा उन के लिये माल जम्अ़ करता फिरता है, इसी लिये सरकार عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : अवलाद बुख़्ल, बुज़दिली और जहालत का सबब होती है। (इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه मज़ीद फ़रमाते हैं) फिर जब उसे फ़क़्र का ख़ौफ़ लाह़िक़ हो और मज़ीद रिज़्क़ की उम्मीद भी कम हो तो ला मुह़ाला बुख़्ल बढ़ेगा।

माल की मह़ब्बत का दूसरा सबब मह़ज़ माल की मह़ब्बत है, क्यूं कि बा'ज़ लोगों का ह़ाल येह है कि माल ब क़द्रे ह़ाजत बक़िय्या उ़म्र के लिये किफ़ायत कर सकता है, जब कि वोह अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ ख़र्च करता रहे बल्कि हज़ारों बच जाएं, साथ ही साथ वोह बूढ़ा भी होता है नीज़ अवलाद भी नहीं होती लेकिन माल की बे पनाह फ़िरावानी के बा वुजूद उस का नफ़्स ज़कात अदा करने पर आमादा नहीं होता ह़त्ता कि अगर बीमार हो जाए तो अपने इ़लाज पर भी ख़र्च नहीं करता और (अपनी जान से ज़ियादा) दीनारों से मह़ब्बत करता है और उसे देख देख कर ख़ुश होता है।

येह माल की मह़ब्बत के अस्बाब हैं और हर बीमारी का इ़लाज उस की ज़िद से होता है। ज़ियादा माल की मह़ब्बत का इ़लाज थोड़े माल पर क़नाअ़त और सब्र के ज़रीए मुमकिन है, लम्बी उम्मीद का इ़लाज तज़्किरए मौत से है, साथ ही साथ हम ज़माना लोगों की मौत से भी दर्से इ़ब्रत ह़ासिल किया जाए।

जो शख़्स अवलाद के लिये माल जम्अ़ करता है उस की ख़्वाहिश येह होती है कि इन्हें अच्छे ह़ाल में छोड़ कर मरे, लेकिन बसा अवक़ात इस माल के ज़रीए़ अवलाद बुराई की त़रफ़ गामज़न हो जाती है। अगर अवलाद नेक हो तो **अल्लाह** तआ़ला किफ़ायत फ़रमाता है और फ़ासिक़ हो तो इस माल के ज़रीए़ गुनाह पर मदद मिलेगी और इस का वबाल जम्अ़ कर के छोड़ जाने वाले पर ही होगा।

दिल के इलाज का त़रीक़ा येह है कि जो अह़ादीष बुख़्ल की मज़म्मत और सख़ावत की मिदह़त में वारिद हैं उन में ग़ौर करे और कन्जूसी करने पर जिस अ़ज़ाब से डराया गया है उसे भी याद रखे। (मुलख़्ख़सन)[1]

जहन्नम के दरवाज़े पर नाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہُ *से मरवी है,* **अल्लाह** عَزَّوَجلَّ *के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब* صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :*

مَنْ تَرَکَ صَلَاۃً مُتَعَمِّدًا کُتِبَ اسْمُہٗ عَلٰی بَابِ النَّارِ فِیْمَنْ یَدْخُلُھَا

या'नी "जो कोई जान बूझ कर एक नमाज़ भी क़ज़ा कर देता है, उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाएगा जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा।" (حلیۃ الاولیاء،ج۷،ص۲۹۹،حدیث ۱۰۵۹۰)

---

[1] (اِحیاءعلوم الدین،کتاب ذم البخل وذم حب المال،بیان علاج البخل ،ج ۳،ص ۳۴۹۔۳۵۱)

फ़ज़ाइले स-दक़ात

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने पाक कलाम में अपनी राह में स-दक़ा व ख़ैरात करने वालों को हिदायत याफ़्ता होने का मुज़्दा सुनाया है, चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

فِيْهِ ۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ (البقرة:۲/۱.۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *इस में हिदायत है डर वालों को जो बे देखे ईमान लाएं और नमाज़ क़ाइम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं।*

"हमारी राह में उठाएं" इस की तफ़्सीर में सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से या ज़कात मुराद है, जैसा दूसरी जगह फ़रमाया : يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ या मुत्लक़ इन्फ़ाक़ ख़्वाह फ़र्ज़ व वाजिब हो जैसे ज़कात नज़्र अपना और अपने अहल का नफ़्क़ा वग़ैरा ख़्वाह मुस्तहब जैसे स-दक़ाते नाफ़िला और अम्वात का ईसाले षवाब। **मस्अला :** ग्यारहवीं, फ़ातिहा, तीजा, चालीसवां भी इस में दाख़िल हैं कि वोह सब स-दक़ाते नाफ़िला हैं और क़ुरआने पाक व कलिमा शरीफ़ का पढ़ना नेकी के साथ और नेकी मिला कर अज्रो षवाब बढ़ाता है, **मस्अला :** مِمَّا में مِن تبعيضيه इस तरफ़ इशारा करता है कि इन्फ़ाक़ में इसराफ़ मम्नूअ़ है या'नी इन्फ़ाक़ ख़्वाह अपने नफ़्स पर हो या अपने अहल पर या किसी और पर ए'तिदाल के साथ हो इसराफ़ न होने पाए। رَزَقْنٰهُمْ की तक़्दीम और रिज़्क़ को अपनी तरफ़ निस्बत फ़रमा कर ज़ाहिर फ़रमाया कि माल तुम्हारा पैदा किया हुवा नहीं हमारा अ़ता फ़रमाया हुवा है इस को अगर हमारे हुक्म से हमारी राह में ख़र्च न करो तो तुम निहायत ही बख़ील हो और येह बुख़्ल निहायत क़बीह़ है।[1]

मदينه

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

इसी त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला ने स-दक़ात की मद्द में अपना अ़ज़ीज़ माल ख़र्च करने को भलाई फ़रमाया :

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰٓىٕكَةِ وَ الْكِتٰبِ وَ النَّبِیّٖنَ ۚ وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنَ وَ ابْنَ السَّبِیْلِ ۙ وَ السَّآىٕلِیْنَ وَ فِی الرِّقَابِ ۚ الآية (البقرة:٢/١٧٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कुछ अस्ल नेकी येह नहीं कि मुंह मशरिक़ या मग़रिब की त़रफ़ करो हां अस्ल नेकी येह है कि ईमान लाए* ***अल्लाह*** *और क़ियामत और फ़िरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर और* ***अल्लाह*** *की मह़ब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गरदनें छुड़ाने में ।*

क़ुरआने मजीद में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने का हुक्म दिया गया है चुनान्चे इर्शाद होता है :

وَ اَنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ لَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَ اَحْسِنُوْا ۛۚ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۹۵﴾ (البقرة:٢/١٩٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और* ***अल्लाह*** *की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो और भलाई वाले हो जाओ बेशक भलाई वाले* ***अल्लाह*** *के मह़बूब हैं ।*

सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : राहे ख़ुदा में इन्फ़ाक़ का तर्क भी सबबे हलाक है और इस्राफ़े बे जा भी और इसी त़रह़ और चीज़ भी जो ख़त़रा व हलाक का बाइ़ष हो इन सब से बाज़ रहने का हुक्म है।[1]

इसी त़रह़ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में स-दक़ा करने वालों की एक और मक़ाम पर ता'रीफ़ फ़रमाई गई :

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنفِقُوْنَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيْلِ اللهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ الآية (البقرة:٢٦١/٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन की कहावत जो अपने माल* ***अल्लाह*** *की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़रह़ जिस ने उगाईं सात बालीं हर बाल में सो दाने और* ***अल्लाह*** *इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे।*

सदरुल अफ़ाज़िल मज़्कूरा आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ख़्वाह ख़र्च करना वाजिब हो या नफ़्ल तमाम अब्वाबे ख़ैर को आ़म है ख़्वाह किसी त़ालिबे इ़ल्म को किताब ख़रीद कर दी जाए या कोई शिफ़ाख़ाना बना दिया जाए या अम्वात के ईसाले षवाब के लिये तीजे, दसवें, बीसवें, चालीसवें के त़रीक़े पर मसाकीन को खाना खिलाया जाए।[2]

सदरुल अफ़ाज़िल मजी़द फ़रमाते हैं : उगाने वाला ह़क़ीक़त में **अल्लाह** ही है दाने की त़रफ़ इस की निस्बत मजाज़ी है। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा अस्नादे मजाज़ी जाइज़ है जब कि अस्नाद करने वाला ग़ैरे ख़ुदा को मुस्तक़िल फ़ित्तसर्रुफ़ ए'तिक़ाद न करता हो इसी लिये येह कहना

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

जाइज़ है कि येह दवा नाफ़ेअ़ है, येह मुज़िर है, येह दर्द की दाफ़ेअ़ है, मां बाप ने पाला, आ़लिम ने गुमराही से बचाया, बुज़ुर्गों ने ह़ाजत रवाई की वग़ैरा सब में अस्नादे मजाज़ी है और मुसलमानों के ए'तिक़ाद में फ़ाइले ह़क़ीक़ी सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला है बाक़ी सब वसाइल।[1]

अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिये ख़ैरात करने वालों के आ'माल की मिषाल क़ुरआने मजीद में यूं बयान फ़रमाई गई :

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ الآية (البقرة:٢/٢٦٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन की कहावत जो अपने माल **अल्लाह** की रिज़ा चाहने में ख़र्च करते हैं और अपने दिल जमाने को उस बाग़ की सी है जो भोड़ पर हो उस पर ज़ोर का पानी पड़ा तो दूने मेवे लाया फिर अगर ज़ोर का मींह उसे न पहुंचे तो ओस काफ़ी है।*

सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : येह मोमिने मुख़्लिस के आ'माल की एक मिषाल है कि जिस त़रह़ बुलन्द ख़ित्ते की बेहतर ज़मीन का बाग़ हर ह़ाल में ख़ूब फलता है ख़्वाह बारिश कम हो या ज़ियादा ऐसे ही बा इख़्लास मोमिन का स-दक़ा और इन्फ़ाक़ ख़्वाह कम हो या ज़ियादा हो **अल्लाह** तआ़ला उस को बढ़ाता है।[2]

---

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)
2. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

और फ़रमाया :

اَلَّذِیۡنَ یُنۡفِقُوۡنَ اَمۡوَالَہُمۡ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ ثُمَّ لَا یُتۡبِعُوۡنَ مَاۤ اَنۡفَقُوۡا مَنًّا وَّ لَاۤ اَذًی ۙ لَّہُمۡ اَجۡرُہُمۡ عِنۡدَ رَبِّہِمۡ ۚ وَ لَا خَوۡفٌ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا ہُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ﴿۲۶۲﴾
(البقرة:٢/٢٦٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जो अपने माल* ***अल्लाह*** *की राह में ख़र्च करते हैं फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें उन का नेग उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म ।*

शाने नुज़ूल : येह आयत ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी व ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُمَا के ह़क़ में नाज़िल हुई ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ ने ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर लश्करे इस्लाम के लिये एक हज़ार ऊंट मअ़ सामान पेश किये और अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ ने चार हज़ार दिरहम स-दक़े के बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर किये और अ़र्ज़ किया कि मेरे पास कुल आठ हज़ार दिरहम थे निस्फ़ मैं ने अपने और अपने अहलो इ़याल के लिये रख लिये और निस्फ़ राहे ख़ुदा में ह़ाज़िर हैं सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो तुम ने दिये और जो तुम ने रखे **अल्लाह** तआ़ला दोनों में बरकत फ़रमाए ।[1]

"न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें" इस की वज़ाह़त में सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : एह़सान रखना तो येह कि देने के बा'द दूसरों के सामने इज़्हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये और इन को मुकद्दर (या'नी शरमिन्दा) करें और तक्लीफ़ देना येह कि उस को आ़र दिलाएं कि तू नादार था मुफ़्लिस था मजबूर था निकम्मा था हम ने तेरी ख़बर गीरी की या और त़रह़ दबाव दें येह मम्नूअ़ फ़रमाया गया ।[2]

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)
2. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

اَلَّذِیۡنَ یُنۡفِقُوۡنَ اَمۡوَالَہُمۡ بِالَّیۡلِ وَالنَّہَارِ سِرًّا وَّعَلَانِیَۃً فَلَہُمۡ اَجۡرُہُمۡ عِنۡدَ رَبِّہِمۡ ۚ وَلَا خَوۡفٌ عَلَیۡہِمۡ وَلَا ہُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ۝

(البقرۃ:۲،۲۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर उन के लिये उन का नेग (षवाब) है उन के रब के पास उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म ।*

या'नी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का निहायत शौक़ रखते हैं और हर ह़ाल में ख़र्च करते रहते हैं ।

शाने नुज़ूल : येह आयत ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ के ह़क़ में नाज़िल हुई जब कि आप ने राहे ख़ुदा में चालीस हज़ार दीनार ख़र्च किये थे दस हज़ार रात में और दस हज़ार दिन में और दस हज़ार पोशीदा और दस हज़ार ज़ाहिर, एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہ تعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم के ह़क़ में नाज़िल हुई जब कि आप के पास फ़क़त़ चार दिरहम थे और कुछ न था और आप ने उन चारों को ख़ैरात कर दिया । एक रात में एक दिन में एक को पोशीदा एक को ज़ाहिर ।

फ़ाइदा : आयते करीमा में नफ़्क़ए लैल (रात में ख़र्च करने) को नफ़्क़ए नहार (दिन में ख़र्च करने) पर और नफ़्क़ए सिर्र (पोशीदा ख़र्च करने) को नफ़्क़ए अ़लानिया (ज़ाहिर कर के ख़र्च करने) पर मुक़द्दम फ़रमाया गया इस में इशारा है कि छुपा कर देना ज़ाहिर कर के देने से अफ़्ज़ल है ।[1]

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

यूं ही ख़ैरात करने वाले के लिये एक और बिशारत इर्शाद फ़रमाई गई है :

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ (البقرة:٢/٢٧٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को।

फ़रमान, "बढ़ाता है ख़ैरात को" के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं, या'नी इस को ज़ियादा करता है और इस में बरकत फ़रमाता है दुन्या में और आख़िरत में इस का अज्रो षवाब बढ़ाता है।[1]

अल्लाह तआ़ला की राह में स-दक़ा करने वालों के लिये अज्रो षवाब का मुज़्दा है :

وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ (الأنفال:٨/٦٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह की राह में जो ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा दिया जाएगा और किसी त़रह़ घाटे में न रहोगे।

सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : इस की जज़ा वाफ़िर मिलेगी।[2]

इसी त़रह़ रब तआ़ला ने अपने बन्दों को पोशीदा और ए'लानिया अपनी राह में ख़र्च करने के लिये फ़रमाया है :

---

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)
2. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

قُلْ لِّعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یُقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ یُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِیَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَ یَوْمٌ لَّا بَیْعٌ فِیْهِ وَ لَا خِلٰلٌ ﴿۳۱﴾ (إبراهيم:١٤/٣١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मेरे उन बन्दों से फ़रमाओ जो ईमान लाए कि नमाज़ क़ाइम रखें और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर ख़र्च करें उस दिन के आने से पहले जिस में न सौदागरी होगी न याराना।

और ख़ैरात करने वालों को खुश ख़बरी है :

وَ بَشِّرِ الْمُخْبِتِیْنَ ﴿۳۴﴾ الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ الصّٰبِرِیْنَ عَلٰی مَاۤ اَصَابَهُمْ وَ الْمُقِیْمِی الصَّلٰوةِ ۙ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ (الحج:٢٢/٣٤،٣٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब खुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को कि जब **अल्लाह** का ज़िक्र होता है उन के दिल डरने लगते हैं और जो उफ़्ताद पड़े उस के सहने वाले और नमाज़ बरपा रखने वाले और हमारे दिये से ख़र्च करते हैं।

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

وَ الَّذِیْنَ یُؤْتُوْنَ مَاۤ اٰتَوْا وَّ قُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰی رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿۶۰﴾ اُولٰٓىٕكَ یُسٰرِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ وَ هُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿۶۱﴾ (المؤمنون:٢٣/٦٠،٦١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो देते हैं जो कुछ दें और उन के दिल डर रहे हैं यूं कि उन को अपने रब की तरफ़ फिरना है येह लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और येही सब से पहले उन्हें पहुंचे।

"जो कुछ दें" की तफ़्सीर में मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ज़कात व स-दक़ात या येह मा'ना हैं कि आ'माले सालिहा बजा लाते हैं।

तिरमिज़ी की ह़दीष में है कि ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से दर्याफ़्त किया कि क्या इस आयत में उन लोगों का बयान है जो शराबें पीते हैं और चोरी करते हैं ? फ़रमाया : ऐ सिद्दीक़ की नूर दीदा ! ऐसा नहीं येह उन लोगों का बयान है जो रोज़े रखते हैं, स-दक़े देते हैं और डरते रहते हैं कि कहीं येह आ'माल ना मक़्बूल न हो जाएं।

"येही सब से पहले उन्हें पहुंचे" इस की वज़ाह़त में सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : या'नी नेकियों को, मा'ना येह हैं कि वोह नेकियों में और उम्मतों पर सबक़त करते हैं।[1]

और फ़रमाया :

قُلْ اِنَّ رَبِّیْ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ یَقْدِرُ لَهٗؕ وَ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ یُخْلِفُهٗۚ وَ هُوَ خَیْرُ الرّٰزِقِیْنَ۝۳۹
(سبا:۳۴/۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिस के लिये चाहे और जो चीज़ तुम **अल्लाह** की राह में ख़र्च करो वोह उस के बदले और देगा और वोह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।*

"और देगा" की वज़ाह़त करते हुए सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : दुन्या में या आख़िरत में। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीष में है कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है ख़र्च करो तुम पर ख़र्च किया जाएगा।

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

दूसरी ह़दीष में है स-दक़े से माल कम नहीं होता, मुआ़फ़ करने से इ़ज़्ज़त बढ़ती है, तवाज़ोअ़ से मर्तबे बुलन्द होते हैं।[1]

एक और मक़ाम पर पोशीदा और ए'लानिया राहे खुदा में ख़र्च करने वालों की ता'रीफ़ फ़रमाई गई है :

إِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ أَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ أَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿۲۹﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُوْرَهُمْ وَ يَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ إِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۳۰﴾
(فاطر:۲۹/۳۵-۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर वोह ऐसी तिजारत के उम्मीद वार हैं जिस में हरगिज़ टोटा नहीं ताकि उन के षवाब उन्हें भरपूर दे और अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा अ़ता करे बेशक वोह बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है।

नीज़ ख़ैरात करने वालों के लिये बड़ा अज्र है :

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَأَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوْا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۷﴾
(الحديد:۷/۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और उस की राह में कुछ ख़र्च करो जिस में तुम्हें औरों का जा नशीन किया तो जो तुम में ईमान लाए और उस की राह में ख़र्च किया उन के लिये बड़ा षवाब है।

---

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

"औरों का जा नशीन किया" इस के तह्त सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : जो तुम से पहले थे और तुम्हारा जा नशीन करेगा तुम्हारे बा'द वालों को। मा'ना येह हैं जो माल तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं सब **अल्लाह** तआ़ला के हैं उस ने तुम्हें नफ़्अ़ उठाने के लिये दे दिये हैं तुम ह़क़ीक़तन उन के मालिक नहीं हो ब मन्ज़िलए नाइब व वकील के हो, उन्हें राहे खुदा में ख़र्च करो और जिस त़रह़ नाइब और वकील को मालिक के हुक्म से ख़र्च करने में कोई तअम्मुल नहीं होता तो तुम्हें भी कोई तअम्मुल व तरद्दुद न हो। [1]

एक और मक़ाम पर राहे खुदा में ख़र्च न करने वालों को तम्बीह फ़रमाई गई :

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِیْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ الاٰیة (الحدید:٥٧/١٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हें क्या है कि **अल्लाह** की राह में ख़र्च न करो हालां कि आस्मानों और ज़मीन में सब का वारिष **अल्लाह** ही है।*

"सब का वारिष **अल्लाह** ही है" इस की वज़ाह़त करते हुए सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : तुम हलाक हो जाओगे और माल उसी की मिल्क में रह जाएंगे और तुम्हें ख़र्च करने का षवाब भी न मिलेगा और अगर तुम खुदा की राह में ख़र्च करो तो षवाब भी पाओ। [2]

और राहे खुदा में ख़ैरात करने वालों को क़र्ज़े ह़सन देने वाला फ़रमाया और उन के लिये मुअ़ज़्ज़ज़ षवाब की बिशारत है।

---

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)
2. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

إِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝ (الحديد:٥٧/١٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक स-दक़ा देने वाले मर्द और स-दक़ा देने वाली औरतें और वोह जिन्हों ने **अल्लाह** को अच्छा क़र्ज़ दिया उन के दूने हैं और उन के लिये इ़ज़्ज़त का षवाब है।*

"अच्छा क़र्ज़ दिया" इस की तफ़्सीर में सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : या'नी ख़ुशदिली और निय्यते सालिहा के साथ मुस्तहिक़ीन को स-दक़ा दिया और राहे ख़ुदा में ख़र्च किया।[1]

"उन के लिये इ़ज़्ज़त का षवाब है" इस की तफ़्सीर में सदरुल अफ़ाज़िल फ़रमाते हैं : और वोह जन्नत है।[2]

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

وَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَأَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضاً حَسَناً ط وَمَا تُقَدِّمُوْا لِأَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْراً وَّأَعْظَمَ أَجْراً ط الآية (المزمل:٧٣/٢٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और **अल्लाह** को अच्छा क़र्ज़ दो और अपने लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के पास बेहतर और बड़े षवाब की पाओगे।*

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया कि इस क़र्ज़ से मुराद ज़कात के सिवा राहे ख़ुदा में ख़र्च करना और सिलए रेह़्मी में और मेहमान दारी में और येह भी कहा गया कि इस से तमाम स-दक़ात मुराद हैं जिन्हें अच्छी त़रह़ माले ह़लाल से ख़ुशदिली के साथ राहे ख़ुदा में ख़र्च किया जाए।[3]

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)
2. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)
3. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

इसी त़रह़ फ़ज़ाइले स-दक़ात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक फ़रमूदात भी बे शुमार वारिद हैं, चुनान्चे स-दक़ा करने वाले की रूह़ानी त़ाक़त का क्या ख़ूब बयान फ़रमाया :

عَنْ أَنَسٍ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَمَّا خَلَقَ اللّٰهُ الْأَرْضَ جَعَلَتْ تَمِيْدُ وَتَكَفَّأُ فَأَرْسَاهَا بِالْجِبَالِ فَاسْتَقَرَّتْ فَعَجِبَتِ الْمَلَائِكَةُ مِنْ شِدَّةِ الْجِبَالِ، فَقَالَتْ: يَا رَبَّنَا! هَلْ خَلَقْتَ خَلْقًا أَشَدَّ مِنَ الْجِبَالِ؟ قَالَ: نَعَمُ الْحَدِيْدَ، قَالُوْا: فَهَلْ خَلَقْتَ خَلْقًا أَشَدَّ مِنَ الْحَدِيْدِ؟، قَالَ: اَلنَّارُ. قَالُوْا: فَهَلْ خَلَقْتَ خَلْقًا أَشَدَّ مِنَ النَّارِ؟ قَالَ: اَلْمَاءُ.

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब **अल्लाह** तआ़ला ने ज़मीन को पैदा फ़रमाया तो वोह हिलने लगी तो **अल्लाह** तआ़ला ने पहाड़ों को इस में गाड़ दिया जिस से ज़मीन ठहर गई, फ़िरिश्ते पहाड़ों की मज़्बूती से मुतअ़ज्जिब हुए और अ़र्ज़ किया : इलाही ! क्या तूने पहाड़ों से भी ज़ियादा सख़्त व शदीद कोई मख़्लूक़ पैदा फ़रमाई है? **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : हां ! वोह लोहा है। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : इलाही ! क्या तूने लोहे से भी ज़ियादा मज़्बूत़ कोई मख़्लूक़ बनाई है ? फ़रमाया : हां ! वोह आग है। फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ किया : मौला ! क्या आग से भी ज़ियादा क़वी कोई मख़्लूक़ पैदा फ़रमाई है? इर्शाद हुवा : वोह पानी है। फ़िरिश्ते अ़र्ज़

قَالُوا: فَهَلْ خَلَقْتَ خَلْقاً أَشَدَّ مِنَ الْمَاءِ؟، قَالَ: اَلرِّيحَ، قَالُوا: فَهَلْ خَلَقْتَ خَلْقاً أَشَدَّ مِنَ الرِّيحِ؟ قَالَ: اِبْنَ آدَمَ إِذَا تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ بِيَمِينِهِ فَأَخْفَاهَا مِنْ شِمَالِهِ"۔[1]

गुज़ार हुए : ऐ रब ! क्या कोई मख़्लूक़ पानी से भी ज़ियादा ताक़त वर पैदा फ़रमाई है ? इर्शाद फ़रमाया : वोह हवा है । वोह फिर अ़र्ज़ करने लगे : ऐ परवर दगार ! क्या हवा से भी ज़ियादा सख़्त किसी मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया है ? **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : हां वोह इन्सान कि जब दाहिने हाथ से स-दक़ा करे तो उसे बाएं हाथ से छुपाए ।[1]

हृदीषे मज़्कूर की तश्रीह़ में ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه फ़रमाते हैं : जैसे हल्की किश्ती व जहाज़ पानी पर हिलता है इसी त़रह़ ज़मीन हिलती थी फ़िरिश्तों ने गुमान किया कि इस से लोग नफ़्अ़ न उठा सकेंगे ।[2]

ह़कीमुल उम्मत मजी़द फ़रमाते हैं : मिरक़ात ने फ़रमाया कि पहले बू क़ुबैस पहाड़ पैदा हुवा फिर दूसरे पहाड़, उन पहाड़ों से ज़मीन ऐसी ठहर गई जैसे जहाज़ में वज़्न लाद देने से दरिया पर ठहर जाता है जुम्बिश नहीं करता, पहाड़ ज़मीन में ऐसे गढ़े हैं जैसे ज़मीन में मज़्बूत दरख़्त कि पहाड़ों की जड़ें दूर तक फैली होती हैं, रब तआ़ला फ़रमाता है : (﴿وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ﴾[النحل:١٦/١٥] **तर्जमा :** और उस ने ज़मीन में लंगर डाले कि कहीं तुम्हें ले कर न कांपे । (कन्ज़ुल ईमान)) (मुलख़्ख़सन)

مدینہ

1 (سنن الترمذي، كتاب تفسير القرآن،٩٥ـ باب، الحديث:٣٣٦٩،ج٤،ص٢٩٤)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة، الحديث:١٩٢٣،ج١،ص٣٦٥)

2. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे़ मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 113-114)

हक़ीमुल उम्मत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मजीद फ़रमाते हैं : फ़िरिश्तों को हैरत येह हुई कि पहाड़ों ने इतनी बड़ी ज़मीन को इस तरह दबोच लिया कि इसे हिलने नहीं देते तो इन से सख़्त तर मख़्लूक़ कौन सी होगी, ख़याल रहे कि पहाड़ ज़मीन से ज़ियादा वज़्नी नहीं मगर जैसे जहाज़ का सामान जहाज़ के वज़्न से कहीं हल्का होता है मगर जहाज़ को हिलने नहीं देता इस तरह पहाड़ का मुआमला है।

लोहे, आग, पानी, हवा, के पहाड़, लोहे, आग, पानी से ज़ियादा मज़्बूत होने की वजह बयान करते हुए मुफ़्ती साहिब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

"क्यूं कि लोहा पहाड़ को तोड़ देता है, पहाड़ लोहे को नहीं तोड़ता।"

"आग लोहे को पिघला देती है बल्कि ज़ियादा तेज़ हो तो लोहे को गला कर पानी बना देती है।"

"पानी आग को बुझा देता है, अगर्चे आग पानी को गर्म भी कर देती है और जला भी देती है मगर किसी बरतन की मदद से जब कि पानी उस में बन्द हो, अगर आड़ हटा दी जाए तो पानी ही आग को बुझाता है लिहाज़ा ह़दीष पर कोई ए'तिराज़ नहीं, पानी क़ैद में रह कर जलता है।"

"हवा पानी से लदे बादलों को उड़ाए फिरती है और समुन्दर में तलातुम पैदा कर देती है जिस से वहां तूफ़ान बरपा हो जाता है।" [1]

पोशीदा सख़ावत करने वाले शख़्स को इन तमाम से मज़्बूत होने की वजह येह बयान फ़रमाई कि क्यूं कि ऐसा सख़ी उस सरकश नफ़्स को ताबेअ़ दार कर लेता है जो पहाड़ से ज़ियादा सख़्त, समुन्दर व हवा से ज़ियादा तूफ़ानी है, नफ़्स अव्वलन तो बुख़्ल सिखाता है जब सख़ावत की जाए तो दिखलावे को पसन्द करता है, येह ख़ुफ़्या सख़ावत करने वाला नफ़्स

1. (मिरआतुल मनाजीह शर्हे मिश्कातुल मसाबीह, जि. 3, स. 113-114)

की दोनों ख़्वाहिशों को कुचल देता है और नफ़्स की आग को बुझा देता है लिहाज़ा बड़ा बहादुर है, नीज़ खुफ़्या स-दक़े से ग़ज़बे इलाही की आग बुझती है, रिज़ाए इलाही ह़ासिल होती है, येह ने'मतें पहाड़, लोहे, आग, पानी, हवा से ह़ासिल नहीं हो सकतीं, लिहाज़ा येह स-दक़ा उन सब से बेहतर।

सूफ़ियाए किराम رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْهِم फ़रमाते हैं कि सख़ावते माल से सख़ावते ह़ाल अफ़्ज़ल है और सख़ावते ह़ाल से सख़ावते कमाल बेहतर कि सख़ावते माल में फ़क़ीर की इसी ज़िन्दगी के दो एक दिन संभल जाते हैं मगर ह़ाल व कमाल की सख़ावत से हम जैसे मिस्कीनों के दोनों जहान दुरुस्त हो जाते हैं, हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ता क़ियामत लोगों के दीन व दुन्या संभाल दिये, हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बड़े दाता हैं, जैसे ज़मीन पहाड़ों से ठहरी ऐसे ही हमारे दिल किसी की निगाहे करम से ठहर सकते हैं वरना दिल का कोई ठिकाना नहीं।[1]

जो माल स-दक़ा कर दिया जाता है वोह **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से बक़ा पा जाता है या'नी **अल्लाह** तआ़ला की मुह़ाफ़िज़त में दाख़िल हो जाता है और اِنْ شَآءَاللّٰه बरोज़े क़ियामत वोह अज्रो षवाब की सूरत में इन्सान को नफ़्अ़ पहुंचाएगा। ह़दीष शरीफ़ में है :

मदीना

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 113-114)

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا اَنَّهُمْ ذَبَحُوْا شَاةً، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا بَقِيَ مِنْهَا"؟ قَالَتْ: مَا بَقِيَ مِنْهَا اِلَّا كَتِفُهَا. قَالَ: "بَقِيَ كُلُّهَا غَيْرَ كَتِفِهَا". ؎

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से मरवी है कि अहले बैत ने बकरी ज़ब्ह की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस में से क्या बचा ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने जवाब दिया कि कन्धे के सिवा कुछ नहीं बचा । हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कन्धे के सिवा सब बच गया ।[1]

"कन्धे के सिवा कुछ नहीं बचा" इस की वज़ाहत करते हुए मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : या'नी सारा गोश्त ख़ैरात कर दिया गया सिर्फ़ शाना बचा है । ग़ालिबन येह घर के ख़र्च के लिये रखा गया होगा और येह बकरी स-दक़े के लिये ज़ब्ह न की गई होगी कि स-दक़े का गोश्त घर के ख़र्च के लिये नहीं रखा जाता ।

"कन्धे के सिवा सब बच गया" इस के तह़त मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : या'नी जो राहे ख़ुदा में स-दक़ा दे दिया गया वोह बाक़ी और ला ज़वाल हो गया और जो अपने खाने के लिये रखा गया वोह हज़्म हो कर फ़ना हो जाएगा, रब तआ़ला फ़रमाता है :

﴿مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ﴾ [النحل:۱٦/۹٦]) **तर्जमा :** जो तुम्हारे पास है हो चुकेगा और जो **अल्लाह** के पास है हमेशा रहने वाला है ।[2] (कन्ज़ुल ईमान))

؎ (سنن الترمذي، كتاب صفة القيامة والدقائق والورع، ٣٣۔ باب، الحديث: ٢٤٧٠، ج٣، ص٣٦٨)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة، الحديث: ١٩١٩، ج١، ص٣٦٤)

2. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 110)

एक हदीष शरीफ़ में है :

عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَامِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ إِلَّا سَيُكَلِّمُهُ رَبُّهُ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ تَرْجُمَانٌ وَلَا حِجَابٌ يَحْجُبُهُ فَيَنْظُرُ أَيْمَنَ مِنْهُ فَلَا يَرٰى إِلَّا مَا قَدَّمَ مِنْ عَمَلِهِ، وَيَنْظُرُ أَشْأَمَ مِنْهُ فَلَا يَرٰى إِلَّا مَا قَدَّمَ، وَيَنْظُرُ بَيْنَ يَدَيْهِ فَلَا يَرٰى إِلَّا النَّارَ تِلْقَاءَ وَجْهِهِ، فَاتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ".[1]

ह़ज़रते अ़दी इब्ने ह़ातिम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नहीं है तुम में से कोई मगर उस से उस का रब कलाम करेगा उस के और रब के दरमियान न कोई तरजुमान होगा और न पर्दा जो उस के लिये आड़ हो तो वोह दाएं देखेगा तो न देखेगा मगर वोही जो उस ने आगे भेजे और अपने बाएं देखेगा तो न देखेगा मगर वोही आ'माल जो उस ने आगे भेजे और अपने सामने देखेगा तो आग के सिवा न देखेगा तो तुम आग से बचो ! अगर्चे खजूर की क़ाश ही से ।[1]

مدینہ

[1] (صحيح البخاري، كتاب الرقاق، باب القصاص يوم القيامة، الحديث:٦٥٣٩،ج٤،ص٢١٨)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب الحث على الصدقة...إلخ،الحديث:١٠١٦،ص٣١٤)
(سنن الترمذي، كتاب صفة القيامة،الحديث:٢٤١٥،ج٣،ص٤٣٠)
(سنن ابن ماجه، المقدمة، الحديث:١٨٥،ج١،ص١١٦)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب القليل في الصدقة،الحديث:٢٥٥٢،ج٣،الجزء٥،ص٧٨)
(مشكاة المصابيح، كتاب أحوال القيامة...إلخ، باب الحساب...إلخ، الحديث:٥٥٥٠،ج٢،ص٣١٤)

इस ह़दीष की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने आ़ली से मा'लूम हुवा कि क़ियामत में हर एक को रब का दीदार भी होगा और हर एक रब का कलाम भी सुनेगा मगर सालिह़ीन को रह़मत का दीदार व कलाम होगा बदकारों से ग़ज़ब, क़हर का। क़ुरआने मजीद में जो इर्शादे बारी है कि हम उन से कलाम न करेंगे हम उन को देखेंगे नहीं वहां रह़मत व करम का दीदार व कलाम मुराद है।[1]

मज़ीद फ़रमाते हैं : हर चहार त़रफ़ आ'माल होंगे बीच में आ़मिल होगा अपने हर अ़मल का नज़ारा करेगा।

"आग के सिवा न देखेगा" इस के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी ह़िसाब यहां हो रहा होगा और दोज़ख़ की आग सामने से नज़र आ रही होगी कैसा भयानक नज़ारा होगा ? ख़ुदा की पनाह !

दोज़ख़ से बचने का आ'ला ज़रीआ़ स-दक़ा व ख़ैरात है स-दक़ा अगर्चे मा'मूली हो लेकिन इख़्लास से हो, वोह भी आग से बचा लेगा वहां स-दक़े की मिक़्दार नहीं देखी जाती वहां स-दक़े वाले की निय्यत पर नज़र होती है खजूर की क़ाश की ही ख़ैरात कर दो शायद वोह ही दोज़ख़ से बचा ले या येह मत़्लब है कि किसी का मा'मूली ह़क़ भी न मारो कि वोह भी दोज़ख़ में भेज देगा किसी की खजूर की क़ाश उस की बिग़ैर इजाज़त न लो।[2]

अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी और मुल्ला अ़ली क़ारी ने इस ह़दीष की शर्ह़ में फ़रमाया कि इन्सान जब परेशान हो जाता है तो दाएं बाएं नज़रें दौड़ाता है ताकि मदद ह़ासिल कर सके और ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी ने फ़रमाया : इस का दाएं बाएं फिरना इस लिये भी हो सकता है कि आग से बचने की कोई सूरत पा ले मगर वोह इस से राहे फ़िरार न पा सकेगा।

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 383)
2. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 383)

"आग से बचो अगर्चे खजूर की क़ाश के ज़रीए" या'नी जब तुम बन्दे की बरोज़े क़ियामत इस हालत को जान चुके तो इस से बचने की सबील करो और किसी पर ज़ुल्म न करो और स-दक़ा दिया करो चाहे खजूर की क़ाश के ज़रीए हो, आधी खजूर के ज़रीए या थोड़ी ही पर इक्तिफ़ा करो, मा'ना येह हैं कि जो भी चीज़ (अगर्चे ख़फ़ीफ़ हो) मुयस्सर आ जाए उसी से स-दक़ा करो क्यूं कि येह तुम्हारे और आग के दरमियान हाइल होने वाला पर्दा होगी (जामेए सग़ीर की ह़दीष शरीफ़ है) बेशक स-दक़ा जन्नत है और जन्नत की त़रफ़ वसीला है।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا عَائِشَةُ! اِسْتَتِرِي مِنَ النَّارِ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ فَإِنَّهَا تَسُدُّ مِنَ الْجَائِعِ مَسَدَّهَا مِنَ الشَّبْعَانِ".[2]

सय्यिदा आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मरवी है, फ़रमाती हैं : ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ आइशा ! आग से बचो अगर्चे खजूर के एक टुकड़े के ज़रीए, येह भूके के लिये सैरी के बराबर है।[2]

---

1 (مرقاۃ المفاتيح شرح مشكاة المصابيح،تحت الحديث:٥٥٠٠)
(عمدة القارى شرح صحيح البخاري،تحت الحديث:٦٥٣٩)
2 (المسند للإمام أحمد بن حنبل،مسند السيدة عائشة رضي اللّٰه عنها، الحديث:٢٥٠٠٦، ج٨، ص١٢٠)

हृदीष शरीफ़ में है :

عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِي رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا كَعْبُ بْنُ عُجْرَةَ: اَلصَّلَاةُ بُرْهَانٌ، وَالصَّوْمُ جُنَّةٌ، وَالصَّدَقَةُ تُطْفِئُ الْخَطِيْئَةَ كَمَا يُطْفِئُ الْمَاءُ النَّارَ" (الحديث)[1]

हृज़रते का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ से मरवी है फ़रमाते हैं : सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, हृबीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नमाज़ (ईमान की) दलील है और रोज़ा (गुनाहों से) ढाल है और स-दक़ा कोताहियों को यूं मिटा देता है जैसे आग को पानी ।[1]

एक और हृदीष में फ़रमाया :

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ وَتَدْفَعُ مِيْتَةَ السُّوْءِ".[2]

हृज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ से मरवी है फ़रमाते हैं : आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महृबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : स-दक़ा **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब को बुझाता है और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है ।[2]

हृकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहृमद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ इस हृदीष की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी ख़ैरात करने वाले सख़ी की ज़िन्दगी भी अच्छी होती है कि अव्वलन तो उस पर दुन्यवी मुसीबतें आती नहीं और

---

[1] (سنن الترمذي، أبواب السفر، باب ما ذُكِر في فضل الصلاة،الحديث:٦١٦، ج١، ص٤٤٧)
[2] (سنن الترمذي، كتاب الزكاة، باب ما جاء في فضل الصدقة،الحديث:٦٦٤، ج١، ص٤٧٨)
(مشكاة المصابيح،كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة،الحديث:١٩٠٩، ج١، ص٣٦٢)

अगर इम्तिहानन आ भी जाएं तो रब तआ़ला की त़रफ़ से उसे सुकूने क़ल्बी नसीब होता है जिस से वोह सब्र कर के षवाब कमा लेता है ग़रज़ कि इस के लिये मुसीबत मा'सिय्यत ले कर नहीं आती मग़फ़िरत ले कर आती है, मा'सिय्यत वाली मुसीबत ख़ुदा तआ़ला का ग़ज़ब है और मग़फ़िरत वाली मुसीबत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत लिहाज़ा ह़दीष पर येह ए'तिराज़ नहीं कि सख़ियों पर मुसीबतें आ जाती हैं, उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ जैसे सख़ी बड़ी बे दर्दी से शहीद किये गए।

बुरी मौत से मुराद ख़राबिये ख़ातिमा है या ग़फ़्लत की अचानक मौत या मौत के वक़्त ऐसी अ़लामत का ज़ुहूर है जो बा'दे मौत बदनामी का बाइ़ष हो और ऐसी सख़्त बीमारी है जो मय्यित के दिल में घबराहट पैदा कर के ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल कर दे, ग़रज़ कि सख़ी बन्दा इन तमाम बुराइयों से मह़फ़ूज़ रहेगा, मेरे पाक नबी सच्चे, उन का रब सच्चा, **अल्लाह** तआ़ला उन के तुफ़ैल हम सब को सख़ावत की तौफ़ीक़ दे और येह ने'मतें अ़त़ा फ़रमाए।[1]

ह़ज़रते अबू कबशा अनमारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि उन्हों ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि तीन बातें वोह हैं जिन पर मैं क़सम खाता हूं और एक बात की तुम्हें ख़बर देता हूं इसे याद रखो, फ़रमाया कि किसी बन्दे का माल स-दक़ा करने से कम नहीं होता और कोई ज़ुल्म नहीं किया जाता जिस पर सब्र वोह करे मगर **अल्लाह** तआ़ला उस

عَنْ أَبِي كَبْشَةَ الْأَنْمَارِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: "ثَلَاثٌ أُقْسِمُ عَلَيْهِنَّ، وَأُحَدِّثُكُمْ حَدِيْثًا فَاحْفَظُوْهُ"، قَالَ: "مَا نَقَصَ مَالُ عَبْدٍ مِنْ صَدَقَةٍ، وَلَا ظُلِمَ

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 103)

عَبْدٌ مَظْلَمَةً صَبَرَ عَلَيْهَا إِلَّا زَادَ اللّٰهُ عِزًّا، وَلَا فَتَحَ عَبْدٌ بَابَ مَسْأَلَةٍ إِلَّا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْهِ بَابَ فَقْرٍ، أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا، وَأُحَدِّثُكُمْ حَدِيثًا فَاحْفَظُوهُ". قَالَ: "إِنَّمَا الدُّنْيَا لِأَرْبَعَةِ نَفَرٍ: عَبْدٌ رَزَقَهُ اللّٰهُ مَالًا وَعِلْمًا فَهُوَ يَتَّقِي فِيهِ رَبَّهُ، وَيَصِلُ فِيهِ رَحِمَهُ، وَيَعْلَمُ لِلّٰهِ فِيهِ حَقًّا فَهٰذَا بِأَفْضَلِ الْمَنَازِلِ، وَعَبْدٌ رَزَقَهُ اللّٰهُ عِلْمًا وَلَمْ يَرْزُقْهُ مَالًا فَهُوَ صَادِقُ النِّيَّةِ يَقُولُ: لَوْ أَنَّ لِي مَالًا لَعَمِلْتُ بِعَمَلِ فُلَانٍ فَهُوَ بِنِيَّتِهِ فَأَجْرُهُمَا سَوَاءٌ، وَعَبْدٌ رَزَقَهُ اللّٰهُ مَالًا وَلَمْ يَرْزُقْهُ عِلْمًا يَخْبِطُ فِي مَالِهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ، وَلَا يَتَّقِي فِيهِ رَبَّهُ، وَلَا يَصِلُ فِيهِ رَحِمَهُ، وَلَا يَعْلَمُ لِلّٰهِ فِيهِ حَقًّا فَهٰذَا بِأَخْبَثِ الْمَنَازِلِ،

की इ़ज़्ज़त बढ़ाता है और कोई (अपने लिये) मांगने का दरवाज़ा नहीं खोलता मगर **अल्लाह** तआ़ला उस पर फ़क़ीरी का दरवाज़ा खोल देता है और तुम्हें एक और बात बता रहा हूं इसे याद रखो, फ़रमाया : दुन्या चार क़िस्म के बन्दों की है ।

﴾1﴿ वोह बन्दा जिसे **अल्लाह** ने माल और इ़ल्म दिये तो वोह इस में **अल्लाह** तआ़ला से डरता (और नेक आ'माल करता) है सिलए रेह़्मी करता है और उस में **अल्लाह** तआ़ला का ह़क़ पहचानता है (स-दक़ा व ज़कात अदा करता है) येह शख़्स बेहतरीन दरजे में है ।

﴾2﴿ वोह बन्दा जिसे **अल्लाह** ने इ़ल्म दिया और माल नहीं दिया वोह ख़ुलूसे निय्यत के साथ कहता है कि अगर मेरे पास माल होता तो मैं फ़ुलां (पहले शख़्स) की तरह़ अ़मल करता, उसे उस की निय्यत का बदला मिलेगा और उन दोनों (पहले और दूसरे) का षवाब बराबर है ।

﴾3﴿ वोह बन्दा जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने माल दिया और इ़ल्म न दिया तो वोह अपने माल में बिग़ैर सोचे समझे तसर्रुफ़ करता है, उस में अपने रब से नहीं डरता, सिलए

وَعَبْدٌ لَّمْ يَرْزُقْهُ اللّٰهُ مَالًا وَّلَا عِلْمًا فَهُوَ يَقُوْلُ: لَوْ اَنَّ لِيْ مَالًا لَعَمِلْتُ فِيْهِ بِعَمَلِ فُلَانٍ فَهُوَ بِنِيَّتِهٖ، فَوِزْرُهُمَا سَوَاءٌ.[1]

रेह़्मी नहीं करता और न ही उस में हुक़ूक़ुल्लाह को पहचानता है (स-दक़ा व ज़कात अदा नहीं करता) येह शख़्स बद तरीन दरजे में है। ﴾4﴿ वोह बन्दा जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने न माल दिया और न इ़ल्म येह कहता है कि अगर मेरे पास माल होता तो मैं फुलां (तीसरे शख़्स) की त़रह़ तसर्रुफ़ करता उसे उस की निय्यत का बदला मिलेगा और उन दोनों (तीसरे और चौथे शख़्सों) का गुनाह बराबर है।[1]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस ह़दीष की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी तीन ख़बरें क़सम से बयान करता हूं और एक ख़बर बिग़ैर क़सम के, ख़याल रहे कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़बर ख़्वाह क़सम से हो या बिग़ैर क़सम बिल्कुल ह़क़ और दुरुस्त है। हुज़ूर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़बर का दुरुस्त होना ऐसा ही लाज़िम व ज़रूरी है जैसे **अल्लाह** तआ़ला की ख़बर का ह़क़ होना लाज़िम है कि रब तआ़ला का झूट भी ना मुमकिन है और नबी का झूट भी ना मुमकिन।[2]

ह़कीमुल उम्मत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मज़ीद फ़रमाते हैं : यहां सिर्फ़ أُقْسِمُ फ़रमा कर क़सम खाई गई वल्लाहि या बिल्लाहि नहीं फ़रमाया येह

---

1. (سنن الترمذي، كتاب الزهد، باب ما جاء مثل الدنيا...إلخ،الحديث:٢٣٢٥،ج٣،ص٢٩٥)
(سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب النية،الحديث:٤٢٢٨،ج٤،ص٥٢٤)
(مشكاة المصابيح،كتاب الرقاق، باب استحباب المال و العمر للطاعة،الحديث:٥٢٨٧،ج٢،ص٢٦١)

2. (मिरआतुल मनाजिह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़ ,जि. 7, स. 99-101)

भी क़सम का एक त़रीक़ा है। स-दक़े से मुराद हर ख़ैरात है फ़र्ज़ी हो नफ़्ली तजरिबा शाहिद है कि ख़ैरात से माल बढ़ता है घटता नहीं आज़्मा कर देख लो मेरा रब सच्चा और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सच्चे। स-दक़े से दुन्या में बरकत आख़िरत में षवाब है। फ़क़ीर का तजरिबा तो येह है कि स-दक़े वाले माल को उ़मूमन ह़ाकिम, ह़कीम, वकील, चोर नहीं खाते दुन्यावी नुक़्सानात भी बहुत कम होते हैं।

ह़कीमुल उम्मत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ मज़्कूरा ह़दीष की शर्ह़ में मज़ीद फ़रमाते हैं : यहां सब्र से मुराद अख़्लाक़ी सब्र है न कि मजबूरी का सब्र।

"**अल्लाह** तआ़ला उस की इ़ज़्ज़त बढ़ाता है" इस के तह़्त मुफ़्ती साहि़ब رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : चुनान्चे यूसुफ़ عَلَیۡہِ السَّلَام ने अपने दरबार में आए हुए अपने भाइयों को मुआ़फ़ी दी। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर तमाम अहले मक्का को मुआ़फ़ी दे दी जिन से उ़म्र भर ज़ुल्मो सितम देखे थे देख लो आज तक इन ह़ज़रात की वाह वाह हो रही है। येह है इ़ज़्ज़त बढ़ना।

सदक़े इस इन्आ़म के क़ुरबान इस इक्राम के
हो रही है दोनों आ़लम में तुम्हारी वाह वाह

"**अल्लाह** तआ़ला उस पर फ़क़ीरी का दरवाज़ा खोल देता है" इस के तह़्त ह़कीमुल उम्मत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि तजरिबा शाहिद है कि पेशावर भिकारियों के पास अव्वलन तो माल जम्अ़ होता ही नहीं अगर हो जावे तो वोह उस से फ़ाइदा नहीं उठाते जम्अ़ कर के छोड़ जाते हैं उन के माल में बरकत नहीं होती। मिरक़ात में इन की मिषाल उस कुत्ते से दी है जो मुंह में टुकड़ा लिये शफ़्फ़ाफ़ व साफ़ नहर पर गुज़रे उस में अपने अ़क्स को देख कर समझे कि येह दूसरा कुत्ता है उस से टुकड़ा छीन लेने के लिये उस पर मुंह फाड़ कर ह़म्ला करे अपना टुकड़ा भी खो बैठे।

"जिसे अल्लाह ने माल और इल्म दिये" इस के तहत फ़रमाते हैं : इल्म से मुराद इल्मे दीन है मा'लूम हुवा इल्मे दीन भी अल्लाह तआला की दुन्यावी ने'मतों में से एक आ'ला ने'मत है। उ-लमा फ़रमाते हैं कि माल सांप है इल्मे दीन तिरयाक़ हमेशा तिरयाक़ के साथ ज़हर मुफ़ीद होता है बिग़ैर तिरयाक़ हलाक कर देता है।

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर्चे بِحَقِّهٖ में सारे सुलूके स-दक़ात दाख़िल हैं मगर चूंकि अज़ीज़ों क़राबत दारों के हुक़ूक़ अदा करना बेहतरीन इबादत है और तमाम स-दक़ात में आ'ला व अफ़्ज़ल इस लिये इस का ज़िक्र अलाहिदा फ़रमाया गया।

पहले शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ हदीष शरीफ़ में फ़रमाया गया कि "वोह बेहतरीन द-रजों में है" इस के तहत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस लिये कि येह शख़्स दीन व दुन्या दोनों जगह सुरख़ुरू शाद आबाद रहेगा क्यूं कि वोह माल कमाएगा हुक्मे इलाही के मुताबिक़ ख़र्च करेगा उसी के मुताबिक़ जम्अ़ करेगा। इसी फ़रमान के तहत माल की आमद, जम्अ़, ख़र्च सब शरीअ़त के मुताबिक़ चाहिये।

हदीष शरीफ़ में तीसरे शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया गया कि "वोह बिग़ैर सोचे समझे तसर्रुफ़ करता है" इस की वज़ाहत में मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : या'नी हराम व हलाल त़रीक़े से माल कमाता है और हर हलाल, हराम जगह ख़र्च करता रहता है न ख़ुद आ़लिम है न उ-लमा की बात मानता है जैसा कि आज कल आ़म अमीरों का हाल है।

"सिलए रेह़मी नहीं करता" इस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ऐसे लोग अगर कभी अच्छी जगह ख़र्च भी करते हैं तो अपनी नाम वरी के लिये ख़र्च करते हैं मगर बे फ़ाइदा बल्कि मुज़िर।

"येह ख़बीष तरीन दरजे में है" इस की वज़ाहत करते हुए हकीमुल उम्मत رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : क्यूं कि उस का माल उस के लिये वबाल है माल की वजह से उस पर गुनाहों के दरवाज़े बहुत खुल जाते हैं वोह

माल के नशे में न करने वाले काम करता रहता है **अल्लाह** तआ़ला उ़षमानी माल दे अबू जहली माल से बचाए। (आमीन)

"उन दोनों का गुनाह बराबर है" इस की तश्रीह़ में ह़कीमुल उम्मत रक़म त़राज़ हैं : या'नी येह बद नसीब बिग़ैर कुछ किये सब कुछ कर रहा है करने वालों के साथ दोज़ख़ में जा रहा है।[1]

सय्यिदह आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھَا से मरवी है कि एक मिस्कीन ने आप से सुवाल किया जब कि आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھَا रोज़े से थीं और घर में सिवाए एक रोटी के कुछ न था। आप ने अपनी बांदी से फ़रमाया : उसे वोह रोटी दे दो, तो बांदी ने कहा : आप की इफ़्त़ारी के लिये इस के सिवा कुछ नहीं। सय्यिदह आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھَا ने फ़रमाया : उसे वोह रोटी दे दो, बांदी कहती हैं : तो मैं ने वोह रोटी उसे दे दी अभी शाम नहीं हुई थी कि अहले बैत ने या किसी और शख़्स ने जो हदिय्या दिया करता था आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھَا को बत़ौरे हदिय्या एक बकरी भिजवाई लाने वाला उस गोश्त को कपड़े में ढांपे हुए ले कर आया। आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھَا ने ख़ादिमा को बुला कर फ़रमाया : लो इस में से खाओ येह तुम्हारी उस रोटी से बेहतर है।[2]

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنهَا أَنَّ مِسْكِيناً سَأَلَهَا وَهِيَ صَائِمَةٌ، وَلَيْسَ فِي بَيْتِهَا إِلَّا رَغِيفٌ، فَقَالَتْ لِمَوْلَاةٍ لَهَا: أَعْطِيهَا إِيَّاهُ، فَقَالَتْ: لَيْسَ لَكِ مَا تُفْطِرِيْنَ عَلَيْهِ، فَقَالَتْ: أَعْطِيهَا إِيَّاهُ. قَالَتْ: فَفَعَلْتُ، فَلَمَّا أَمْسَيْنَا أَهْدٰى لَهَا أَهْلُ بَيْتٍ، أَوْ إِنْسَانٌ مَا كَانَ يُهْدِي لَهَا شَاةً وَكَفَنَهَا فَدَعَتْهَا عَائِشَةُ، فَقَالَتْ: كُلِي مِنْ هٰذَا خَيْرٌ مِّنْ قُرْصِكِ.[2]

مدینہ

[1] (مرآة المناجیح شرح مشکاة المصابیح،ج۷،ص۹۹۔۱۰۱)

[2] (شُعَبُ الإيمان، باب في الزكاة، فصل فيما جاء فى الإيثار، الحديث:۳۴۸۲،ج۳،ص۲۶۰)

येह **अल्लाह** वालों की शान है कि साइल को तही दस्त नहीं लौटाते अगर्चे देने के बा'द कुछ भी न बचे इसी को जूद कहते हैं। येही वजह है कि इन के तवक्कुल के सबब **अल्लाह** तआ़ला इन्हें बेहतर से बेहतर अ़ता करता है।

अपने दौर के अब्दाल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र बिन ख़त्ताब رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मेरे दरवाज़े पर एक साइल ने सदा लगाई मैं ने ज़ौजए मोह़तरमा से पूछा : तुम्हारे पास कुछ है ? जवाब मिला : चार अन्डे हैं। मैं ने कहा : मंगता को दे दो। उन्हों ने ता'मील की। साइल अन्डे पा कर चला गया। अभी थोड़ी देर गुज़री थी कि मेरे पास एक दोस्त ने अन्डों से भरी हुई टोकरी भेजी। मैं ने घर में पूछा : इस में कुल कितने अन्डे हैं ? उन्हों ने कहा : तीस। मैं ने कहा : तुम ने तो फ़क़ीर को चार अन्डे दिये थे, येह तीस किस ह़िसाब से आए ! कहने लगीं : तीस अन्डे सालिम हैं और दस टूटे हुए। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ल्लामा याफ़ेई यमनी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : बा'ज़ ह़ज़रात इस ह़िकायत के मुतअ़ल्लिक़ येह बयान करते हैं कि साइल को जो अन्डे दिये गए थे उन में तीन सालिम और एक टूटा हुवा था। रब तआ़ला ने हर एक के बदले दस दस अ़ता फ़रमाए। सालिम के इवज़ सालिम और टूटे हुए के बदले टूटा हुवा।[1]

मदينه

1.(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब आदाबे तृआ़म, जि. 1, स. 513, ब ह़वाला रौज़ुर्रयाह़ीन, स.151)

عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "كُلُّ امْرِئٍ فِي ظِلِّ صَدَقَتِهِ حَتّٰى يُقْضٰى بَيْنَ النَّاسِ أَوْقَالَ يُحْكَمَ بَيْنَ النَّاسِ". قَالَ يَزِيْدُ: وَكَانَ أَبُو الْخَيْرِ يَعْنِي: لَا يَأْتِي عَلَيْهِ يَوْمٌ إِلَّا تَصَدَّقَ فِيْهِ، وَلَوْ بِكَعْكَةٍ أَوْ بِبَصَلَةٍ.[1]

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर शख़्स (बरोज़े क़ियामत) अपने स-दक़े के साए में होगा यहां तक कि लोगों के दरमियान फ़ैसला फ़रमा दिया जाए। यज़ीद कहते हैं : अबुल ख़ैर का मा'मूल था कि रोज़ाना बिला नाग़ा कुछ न कुछ स-दक़ा फ़रमाते अगर्चे रोटी का टुकड़ा या प्याज़ स-दक़ा कर के।[1]

ह़ज़रते यज़ीद बिन अबू ह़बीब से मरवी है कि ह़ज़रते मुरषद बिन अबू अ़ब्दुल्लाह यज़्नी अहले मिस्र में से वोह पहले शख़्स थे जो शाम के वक़्त मस्जिद में जाया करते थे। रावी फ़रमाते हैं कि मैं आप को जब भी मस्जिद जाते देखता तो आप के हाथ में स-दक़ा करने के लिये पैसे या रोटी या गेहूं कुछ न कुछ होता ह़त्ता कि बसा अवक़ात मैं उन्हें प्याज़ उठाए हुए भी देखता तो मैं कहता कि ऐ अबुल ख़ैर ! येह प्याज़ आप के कपड़ों को बदबूदार कर देगा तो आप फ़रमाते : ऐ अबू ह़बीब के बेटे ! मैं अपने घर में इस के सिवा और कोई चीज़ नहीं पाता कि जिसे स-दक़ा करूं, मुझे एक

مدینہ

[1] (المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عقبة بن عامر،الحديث:١٧٤٦٦،ج٥،ص٨٩٥)
(السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الزكاة، جماع أبواب صدقة التطوع، باب التحريض على الصدقة وإن قلت، الحديث:٧٧٥١،ج٤،ص٢٩٧)
(شُعَبُ الإيمان، باب في الزكاة،التحريض على صدقة التطوع،الحديث:٣٣٤٨،ج٣،ص٢١٢)

सह़ाबिये रसूल ने बयान किया कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ‘‘मोमिन का दिया हुवा स-दक़ा बरोज़े क़ियामत उस पर साया होगा।’’[1]

स-दक़ा देने वालों के लिये क़ब्र की गर्मी से ह़िफ़ाज़त और बरोज़े क़ियामत ह़ुसूले सायए रह़मत की बिशारत है। चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِيءُ عَنْ أَهْلِهَا حَرَّ الْقُبُوْرِ، وَإِنَّمَا يَسْتَظِلُّ الْمُؤْمِنُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيْ ظِلِّ صَدَقَتِهِ". [2]

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक स-दक़ा करने वालों को स-दक़ा क़ब्र की गर्मी से बचाता है, और बिला शुबा मुसलमान क़ियामत के दिन अपने स-दक़े के साए में होगा।[2]

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

رُوِيَ عَنْ مَيْمُوْنَةَ بِنْتِ سَعْدٍ أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ أَفْتِنَا عَنِ الصَّدَقَةِ؟ فَقَالَ: "إِنَّهَا حِجَابٌ مِنَ النَّارِ لِمَنِ احْتَسَبَهَا يَبْتَغِيْ بِهَا وَجْهَ اللّٰهِ عزوجل". [3]

ह़ज़रते मैमूना बिन्ते सा’द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि आप ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! स-दक़े के बारे में हमारी राहनुमाई फ़रमाइये ! फ़रमाया : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर स-दक़ा करे तो वोह (स-दक़ा) उस के और आग के दरमियान पर्दा बन जाता है।[3]

---

١ (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات،الترغيب في الصدقة والحث عليها...إلخ،الحديث:٢٨،ج٢،ص١١)

٢ (شُعَبُ الإيمان، باب الزكاة، التحريض على صدقة التطوع،الحديث:٣٣٤٧،ج٣،ص٢١٢)

٣ (مجمع الزوائد، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة،ج٣،ص١١١)

एक शख़्स ख़ुरासान से बसरा आया और उस ने ह़बीब अ़जमी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के पास दस हज़ार दिरहम बत़ौरे अमानत रखे और कहा कि आप इस के लिये बसरा में एक घर ख़रीदें ताकि जब वोह मक्का से लौटे तो उस घर में रहे। इसी दौरान लोगों को आटे की महंगाई का सामना करना पड़ा तो ह़बीब अ़जमी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने उन दिरहमों से आटा ख़रीद कर स-दक़ा कर दिया, उन से कहा गया कि उस शख़्स ने तो आप से घर ख़रीदने के लिये कहा था ! फ़रमाया : मैं ने उस के लिये जन्नत में घर ले लिया है ! अगर वोह इस पर राज़ी होगा तो ठीक, वरना मैं उसे दस हज़ार दिरहम वापस दे दूंगा। फिर जब वोह लौटा तो पूछा : ऐ अबू मुह़म्मद ! رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه क्या आप ने घर ख़रीद लिया ? जवाब दिया : हां ! मह़ल्लात, नहरों और दरख़्तों के साथ, तो वोह शख़्स बहुत ख़ुश हुवा फिर कहने लगा : मैं उस में रहना चाहता हूं। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने वोह घर **अल्लाह** तआ़ला से जन्नत में ख़रीदा है ! येह सुन कर उस शख़्स की ख़ुशी मज़ीद बढ़ गई, उस की बीवी बोली : इन से कहो कि अपनी ज़मानत की एक दस्तावेज़ लिख दें तो ह़बीब अ़जमी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने लिखा : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ जो घर ह़बीब अ़जमी ने मह़ल्लात, नहरों और दरख़्तों समेत दस हज़ार दिरहम में **अल्लाह** तआ़ला से फ़ुलां बिन फ़ुलां के लिये जन्नत में ख़रीदा है येह उस की दस्तावेज़ है। अब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह ह़बीब अ़जमी की ज़मान को पूरा फ़रमा दे। कुछ अ़र्से बा'द उस शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया। उस ने येह वसिय्यत की थी कि मेरे कफ़न में येह रुक़्आ़ डाल देना। (तदफ़ीन के बा'द) जब सुब्ह़ हुई तो लोगों ने देखा कि उस शख़्स की क़ब्र पर एक रुक़्आ़ है जिस में लिखा था कि

येह ह़बीब अ़जमी के लिये उस मकान से बराअत नामा है जो उन्हों ने फ़ुलां शख़्स के लिये ख़रीदा था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स को वोह मकान अ़ता फ़रमा दिया। उस मक्तूब को ह़बीब अ़जमी ने ले लिया और बहुत रोए और फ़रमाया : येह **अल्लाह** तआ़ला की जानिब से मेरे लिये बराअत नामा है।[1]

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में एक धोबी था जो लोगों के कपड़े आपस में तब्दील कर देता, लोगों ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को उस के मुतअ़ल्लिक़ बताया तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ इसे हलाक फ़रमा दे, एक रोज़ वोह धोबी अपने मा'मूल के मुत़ाबिक़ निकला, उस के पास तीन रोटियां थीं एक साइल आया तो उस ने एक रोटी उसे दे दी, साइल ने दुआ़ दी : **अल्लाह** तआ़ला तुझ से आफ़ाते समाविया का शर दूर फ़रमाए, धोबी ने इस दुआ़ से मुतअष्षिर हो कर उसे एक और रोटी दे दी, इस पर साइल ने दुआ़ दी : **अल्लाह** तआ़ला तुझे जुम्ला आफ़तों से मह़फ़ूज़ रखे तो उस ने तीसरी रोटी भी दे दी, इस पर दुआ़ दी : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे तौबा की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। इसी दौरान एक बहुत बड़ा सांप उस के कपड़ों की गठड़ी में दाख़िल हो चुका था। जब धोबी ने कपड़े लेने का इरादा किया तो उस सांप ने उसे डसना चाहा, एक फ़िरिश्ते ने उसी लम्ह़े उस सांप को लोहे की लगाम डाल दी और धोबी सलामती के साथ वापस आ गया।

लोगों ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया : या रूह़ल्लाह ! वोह धोबी तो सह़ीह़ सलामत वापस आ गया ! आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे बुलाया और फ़रमाया : तूने कौन सी भलाई की है ? तो उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने तीन रोटियां स-दक़ा की हैं। फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस सांप से पूछा : तूने इसे क़त्ल क्यूं न किया ? सांप ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** के नबी ! **अल्लाह**

مدینہ

1 (نزهة المجالس، باب في فضل الصدقة...إلخ،ج٢،ص٦)

तआ़ला ने आप की दुआ़ क़बूल फ़रमा ली और मुझे उसे हलाक करने के लिये भेजा मगर जब उस धोबी ने साइल को स-दक़ा दिया तो एक फ़िरिश्ते ने आ कर मुझे लोहे की लगाम डाल दी। लोग इस बात से बहुत मुतअ़ज्जिब हुए और धोबी ने तौबा कर ली।[1]

हदीष शरीफ़ में है :

عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيْجٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اَلصَّدَقَةُ تَسُدُّ سَبْعِيْنَ بَاباً مِنَ السُّوْءِ". ؎٢

हज़रते राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : ख़ातमुल मुरसलीन, रहमतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : स-दक़ा बुराई के सत्तर दरवाज़े बन्द करता है।[2]

हज़रते मन्सूर बिन अ़म्मार رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक रोज़ वा'ज़ फ़रमा रहे थे, किसी हक़दार ने चार दिरहम का सुवाल किया। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ए'लान फ़रमाया जो इस को चार दिरहम देगा मैं उस के लिये चार दुआ़एं करूंगा। उस वक़्त वहां से एक ग़ुलाम गुज़र रहा था एक वलिये कामिल की रहमत भरी आवाज़ सुन कर उस के क़दम थम गए और उस के पास जो चार दिरहम थे वोह उस ने साइल को पेश कर दिये। हज़रते सय्यिदुना मन्सूर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : बताओ कौन कौन सी चार दुआ़एं करवाना चाहते हो ? अ़र्ज़ किया ﴾1﴿ मैं ग़ुलामी से आज़ाद कर दिया जाऊं ﴾2﴿ मुझे इन दराहिम का बदला मिल जाए ﴾3﴿ मुझे और मेरे आक़ा को तौबा नसीब हो ﴾4﴿ मेरी, मेरे आक़ा की, आप की और तमाम हाज़िरीन की बख़्शिश हो जाए।

[1] (نزهة المجالس، باب في فضل الصدقة...إلخ، ج٢، ص٨)
[2] (المعجم الكبير للطبراني، الحديث:٤٤٠٢، ج٣، ص١٠٩)

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने हाथ उठा कर दुआ़ फ़रमा दी । ग़ुलाम अपने आक़ा के पास देर से पहुंचा, आक़ा ने सबबे ताख़ीर दर्याफ़्त किया तो उस ने वाक़िआ़ कह सुनाया । आक़ा ने पूछा पहली दुआ़ कौन सी थी, ग़ुलाम बोला : मैं ने अ़र्ज़ किया दुआ़ कीजिये मैं ग़ुलामी से आज़ाद कर दिया जाऊं, येह सुन कर आक़ा की ज़बान से बे साख़्ता निकला "जा तू ग़ुलामी से आज़ाद है ।" पूछा दूसरी दुआ़ कौन सी करवाई, कहा जो चार दिरहम मैं ने दे दिये हैं उस का ने'मल बदल मिल जाए । आक़ा बोल उठा : मैं ने तुझे चार दिरहम के बदले चार हज़ार दिरहम दिये । पूछा तीसरी दुआ़ क्या थी, बोला मुझे और मेरे आक़ा को गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हो जाए । येह सुनते ही आक़ा की ज़बान पर इस्तिग़्फ़ार जारी हो गया और कहने लगा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने तमाम गुनाहों से तौबा करता हूं । चौथी दुआ़ भी बता दो । कहा मैं ने इल्तिजा की, कि मेरी, मेरे आक़ा की आप जनाब की और तमाम ह़ाज़िरीने इजतिमाअ़ की मग़्फ़िरत हो जाए । येह सुन कर आक़ा ने कहा तीन बातें जो मेरे इख़्तियार में थीं वोह कर ली हैं चौथी सब की मग़्फ़िरत वाली बात मेरे इख़्तियार से बाहर है । उसी रात आक़ा ने ख़्वाब में किसी कहने वाले को सुना : "जो तुम्हारे इख़्तियार में था वोह तुम ने कर दिया और मैं अर-ह़मुर्राहि़मीन हूं, मैं ने तुम्हें, तुम्हारे ग़ुलाम को, मन्सूर को और तमाम ह़ाज़िरीन को बख़्श दिया ।"[1]

ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ

ह़ज़रत अनस बिन मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत,

مدينہ

1. (फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, जि. 1, स. 114, ब ह़वाला रौज़ुर्रयाह़ीन, स. 222)

رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "بَاكِرُوْا بِالصَّدَقَةِ، فَإِنَّ الْبَلَاءَ لَا يَتَخَطَّى الصَّدَقَةَ".[1]

पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सुब्ह़ सवेरे स-दक़ा दो कि बला स-दक़े से आगे क़दम नहीं बढ़ाती ।[1]

एक शख़्स ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर कहने लगा कि मेरा बेटा समुन्दरी सफ़र पर गया है आप **अल्लाह** तआ़ला से उस के लिये दुआ़ फ़रमाएं तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : उस की त़रफ़ से स-दक़ा दो । उस वक़्त समुन्दर में मौजें उठ रही थीं और जहाज़ डूबने के क़रीब था, जब उस शख़्स ने उस की त़रफ़ से स-दक़ा दिया तो एक कहने वाले को येह कहते सुना गया : ऐ सुवारो ! तुम्हारे लिये सलामती है । बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िदया क़बूल फ़रमा लिया । जब बेटा सफ़र से लौटा तो वालिद साह़िब को तमाम क़िस्सा बयान किया ।[2]

ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "تَصَدَّقُوْا، فَإِنَّ الصَّدَقَةَ فِكَاكُكُمْ مِنَ النَّارِ".[3]

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : स-दक़ा दिया करो बेशक स-दक़ा तुम्हारे लिये जहन्नम से बचाव का ज़रीआ़ है ।[3]

مدينه

[1] (شُعَبُ الإيمان، باب في الزكاة،التحريض على صدقة التطوع،الحديث:٣٣٥٣،ج٣،ص٢١٤)
[2] (نزهة المجالس، باب في فضل الصدقة...إلخ،ج٢،ص١٤)
[3] (شُعَبُ الإيمان،باب في الزكاة،التحريض على صدقة التطوع،الحديث:٣٣٥٥ج٣،ص٢١٤)

एक और ह़दीष में है :

عَنِ الْحَارِثِ الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ اللّٰهَ أَمَرَ يَحْيَى بْنَ زَكَرِيَّا عَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ بِخَمْسِ كَلِمَاتٍ أَنْ يَّعْمَلَ بِهَا وَيَأْمُرَ بَنِيْ إِسْرَائِيْلَ أَنْ يَّعْمَلُوْا بِهَا"، فَذَكَرَ الْحَدِيْثَ إِلٰى أَنْ قَالَ فِيْهِ: "وَآمُرُكُمْ بِالصَّدَقَةِ، وَإِنَّ مَثَلَ ذٰلِكَ كَمَثَلِ رَجُلٍ أَسَرَهُ الْعَدُوُّ، فَأَوْثَقُوْا يَدَهُ إِلٰى عُنُقِهِ، وَقَدَّمُوْهُ لِيَضْرِبُوْا عُنُقَهُ فَقَالَ: أَنَا أَفْدِيْهِ مِنْكُمْ بِالْقَلِيْلِ وَالْكَثِيْرِ فَفَدٰى نَفْسَهُ مِنْهُمْ". (الحديث)[1]

ह़ज़रते ह़ारिष अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسلَّم ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने (अपने नबी) ह़ज़रते यह़्या बिन ज़करिय्या عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पांच बातों का हुक्म दिया कि इन पर वोह ख़ुद भी अ़मल करें और बनी इस्राईल को भी अ़मल पैरा होने का हुक्म दें। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسلَّم ने उन बातों का तज़्किरा करते हुए ह़ज़रते यह़्या عَلَیْهِ السَّلَام का येह फ़रमान भी ज़िक्र फ़रमाया और मैं तुम्हें स-दक़ा करने का हुक्म देता हूं बेशक इस की मिषाल उस शख़्स की सी है जिसे दुश्मन ने क़ैद कर लिया, फिर उस के हाथ गरदन से बांध दिये और उसे गरदन मारने के लिये आगे किया तो उस ने कहा : मैं तुम्हें अपना क़लील व कषीर सब फ़िदये के तौर पर देता हूं (कि तुम मुझे छोड़ दो) और इस त़रह उस ने फ़िदया दे कर ख़ुद को उन से छुड़ा लिया।[1]

---

[1] (سنن الترمذي، كتاب الأمثال،باب ما جاء في مثل الصلاة والصيام والصدقة، الحديث:٢٨٦٣، ج٣،ص ٥٧٢)

हदीष शरीफ़ में है :

وَعَـنْ رَافِعِ بْنِ مَكِيْثٍ، رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "حُسْنُ الْمَلَكَةِ يُمْنٌ وَسُوْءُ الْخُلُقِ شُؤْمٌ وَالصَّدَقَةُ تَمْنَعُ مِيْتَةَ السُّوْءِ، وَالْبِرُّ زِيَادَةٌ فِي الْعُمُرِ". اللفظ للمشكاة[1]

ह़ज़रते राफ़ेअ़ बिन मकीष से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : खुश खुल्क़ी बरकत है और बद खुल्क़ी नुहूसत और स-दक़ा बुरी मौत से बचाता है और नेकी उ़म्र बढ़ाती है।[1]

इस ह़दीष की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस का तजरिबा बारहा हुवा कि खुश खुल्क़ की दुन्या दोस्त होती है बद खुल्क़ के सब दुश्मन, घर वाले भी और बाहर वाले भी, खुश खुल्क़ की घर व बाहर वाले सब ता'ज़ीम और ख़िदमत करते हैं, बद खुल्क़ हर जगह सज़ा ही पाता है यहां बरकत व नुहूसत से येह ही मुराद है।[2]

"स-दक़ा बुरी मौत से बचाता है" इस की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत फ़रमाते हैं : या'नी सख़ी आदमी अचानक और ग़फ़्लत की मौत से यूं ही बे सब्री व फ़िस्क़ो फ़ुजूर व ज़ुल्म की मौत से मह़फ़ूज़ रहता है اِنْ شَآءَاللّٰه इस की मौत ज़िक्रो फ़िक्र नेक आ'माल की ह़ालत में आती है बा'दे मौत लोग उसे अच्छाई से याद करते हैं, यूं ही नेकियां उ़म्र बढ़ाती हैं इस त़रह़ कि हुक्मे इलाही यूं है कि फ़ुलां बन्दा अगर गुनाह व बदकारी करता रहे तो उस की

---

[1] (سنن أبي داود، كتاب الأدب، باب في حق المملوك،الحديث:٥١٦٢،ج٥،ص٢٢٧)
(مشكاة المصابيح،كتاب النكاح، باب النفقات و حق المملوك، الحديث:٣٣٥٩،ج١،ص٦١٦)
[2] (مرآة المناجيح شرح مشكاة المصابيح،ج٥،ص١٦٧)

उम्र पचास साल है और अगर नेकियां करे तो उस की उम्र सो साल, येह ज़ियादतिये उम्र ऐसी ही है जैसे कहा जाता है कि दवा मरज़ दफ़्अ़ करती है।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ صَدَقَةَ الْمُسْلِمِ تَزِيْدُ فِي الْعُمُرِ، وَتَمْنَعُ مِيْتَةَ السُّوْءِ، وَيُذْهِبُ اللّٰهُ الْكِبْرَ وَالْفَخْرَ." ؎

ह़ज़रते अ़म्र बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक मुसलमान का स-दक़ा उम्र बढ़ाता है और बुरी मौत को रोकता है, और अल्लाह तआ़ला इस की बरकत से स-दक़ा देने वाले से तकब्बुर व तफ़ाख़ुर दूर कर देता है।[2]

एक और ह़दीष शरीफ़ में बयान फ़रमाया :

عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبِيَدِهِ عَصًا، وَقَدْ عَلَّقَ رَجُلٌ قُنُوَ حَشَفٍ، فَجَعَلَ يَطْعَنُ فِي ذٰلِكَ الْقُنْوِ، فَقَالَ:

ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दस्ते अक़्दस में लाठी लिये तशरीफ़ लाए तो देखा कि एक शख़्स ने (ग़ुरबा के लिये बत़ौरे स-दक़ा) रद्दी खजूरों का एक ख़ोशा लटका रखा है, आप उस ख़ोशे को लाठी से मारने लगे और फ़रमाया : अगर येह

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 5, स. 167)

؎ (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٣١، ج١٧، ص٢٢)

"لَوْ شَـاءَ رَبُّ هٰـذِهِ الصَّدَقَةِ تَصَـدَّقَ بِـأَطْيَبَ مِنْ هٰذَا، إِنَّ رَبَّ هٰـذِهِ الصَّـدَقَةِ يَـأْكُلُ حَشَفاً يَوْمَ الْقِيَامَةِ" [1]

स-दक़ा करने वाला चाहता तो इस से बेहतर स-दक़ा करता बेशक येह स-दक़ा करने वाला बरोज़े क़ियामत रद्दी खजूरें खाएगा।[1]

बनी इस्राईल में से एक शख़्स और उस के अहल ने तीन दिन तक खाने के लिये कुछ न पाया फिर उस की ज़ौजा ने उसे एक दिरहम दिया ताकि वोह इस से खाना ख़रीदे जब वोह बाहर निकला तो उस ने एक शख़्स को दूसरे से अपने दिरहम का मुतालबा करते हुए पाया। उस ने अपना दिरहम उस को दे दिया। और आ कर अपनी बीवी को बताया तो उस ने कहा आप ने अच्छा किया फिर उस ने अपने शोहर को ऊन कातने का तक्ला दिया तो उसे शोहर ने बेचा और उस से एक मछली ख़रीदी जिस में से एक मोती निकला उस ने वोह मोती कसीर माल के बदले बेचा फिर एक रोज़ उस के पास एक साइल आया तो उस शख़्स ने कहा : येह लो मेरा आधा माल ले लो तो उस साइल ने कहा : तुम्हें मुबारक बाद हो तुम अपना माल अपने पास ही रखो मैं तो एक फ़िरिश्ता हूं तुम्हारे लिये **अल्लाह** तआला ने उस एक दिरहम के हर क़ीरात़ के बदले सो क़ीरात़ मुक़र्रर फ़रमाए हैं और (तुम्हारी येह दौलत) उन में से एक ही क़ीरात़ है जो तुम्हें दुन्या में मिली है।[2]

---

[1] (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب ما لا يجوز من الثمرة في الصدقة، الحديث: ١٦٠٨، ج٢، ص١٧٨)
(سنن ابن ماجه، كتاب الزكاة، باب النهي أن يخرج في الصدقة شرّ ماله، الحديث: ١٨٢١، ج٢، ص ٤٠٠)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب قوله عزوجل: ﴿وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ﴾، الحديث: ٢٤٩٢، ج٣، الجزء٥، ص٤٦)

[2] (نزهة المجالس، باب في فضل الصدقة...إلخ، ج٢، ص١٥)

हदीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "تَعَبَّدَ عَابِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيْلَ، فَعَبَدَ اللّٰهَ فِي صَوْمَعَةٍ سِتِّيْنَ عَاماً، فَأُمْطِرَتِ الْأَرْضُ فَاخْضَرَّتْ، فَأَشْرَفَ الرَّاهِبُ مِنْ صَوْمَعَتِهِ، فَقَالَ: لَوْ نَزَلْتُ فَذَكَرْتُ اللّٰهَ، فَازْدَدْتُ خَيْراً، فَنَزَلَ وَمَعَهُ رَغِيْفٌ، أَوْ رَغِيْفَانِ فَبَيْنَمَا هُوَ فِي الْأَرْضِ لَقِيَتْهُ امْرَأَةٌ فَلَمْ يَزَلْ يُكَلِّمُهَا وَتُكَلِّمُهُ حَتّٰى غَشِيَهَا، ثُمَّ أُغْمِيَ فَنَزَلَ الْغَدِيْرَ يَسْتَحِمُّ، فَجَاءَهُ سَائِلٌ، فَأَوْمَأَ إِلَيْهِ أَنْ يَّأْخُذَ الرَّغِيْفَيْنِ، ثُمَّ مَاتَ فَوُزِنَتْ عِبَادَةُ سِتِّيْنَ سَنَةً بِتِلْكَ الزَّنْيَةِ فَرَجَحَتِ الزَّنْيَةُ بِحَسَنَاتِهِ، ثُمَّ وُضِعَ الرَّغِيْفُ أَوِ الرَّغِيْفَانِ

हज़रते अबू ज़र رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बनी इस्राईल में एक बहुत ही इबादत गुज़ार राहिब था उस ने अपने इबादत ख़ाने में साठ बरस तक **अल्लाह** तआला की इबादत की फिर एक रोज़ ज़मीन पर बारिश हुई जिस से ज़मीन सर सब्ज़ हो गई राहिब ने अपनी इबादत गाह से झांका तो उस ने सोचा कि अगर मैं नीचे उतर कर **अल्लाह** तआला के ज़िक्र में मश्ग़ूल हो जाऊं तो इस तरह अपनी नेकियों में इज़ाफ़ा कर लूंगा। चुनान्चे वोह नीचे उतरा उस के पास एक या दो रोटियां थीं, इसी दौरान उसे एक औरत मिली दोनों में बातें शुरूअ़ हुईं हत्ता कि उस ने उस औरत से ज़िना कर लिया। फिर उस पर ग़शी तारी हो गई इफ़ाक़ा होने पर ग़ुस्ल करने के लिये एक तालाब में उतरा तो एक साइल आया उस ने इशारा किया कि वोह दोनों रोटियां ले जाए,

مَعَ حَسَنَاتِهٖ، فَرَجَحَتْ حَسَنَاتُهٗ فَغُفِرَ لَهٗ"۔[1]

फिर वोह राहिब मर गया, तो उस की साठ सालह इ़बादत का उस ज़िना से मुवा-ज़ना किया गया तो वोह ज़िना उस की नेकियों पर ग़ालिब हो गया फिर उस की नेकियों के पलड़े में वोह एक या दो रोटियां (जो उस ने साइल को स-दक़ा की थीं) रखी गईं तो उस की नेकियां ग़ालिब आ गईं और (بفضل الله) उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी गई।[1]

स-दक़ा देने में बेहतर येह है कि नेक परहेज़ गार फ़ुक़रा में से किसी को दे, चुनान्चे इमाम ग़ज़ाली नक़्ल करते हैं कि एक आ़लिम का मा'मूल था कि वोह स-दक़ा देने में सूफ़ी फ़ुक़रा को तरजीह़ देते। उन से अ़र्ज़ की गई कि आप अगर आ़म फ़ुक़रा को स-दक़ा दें तो क्या वोह अफ़्ज़ल नहीं? जवाब दिया : येह नेक लोग हर वक़्त **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्रो फ़िक्र में रहते हैं अगर इन पर फ़ाक़ा या कोई मुसीबत आए तो इन के मशाग़िल में ख़लल आएगा लिहाज़ा मेरे नज़्दीक दुन्या के हज़ार त़लबगारों को देने से बेहतर है कि एक सच्चे दीनदार को दूं।

जब ह़ज़रते जुनैदे बग़दादी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه को येह बात बताई गई तो आप ने इसे पसन्द फ़रमाया और फ़रमाया कि येह शख़्स **अल्लाह** के वलियों में से है, मैं ने आज तक इतनी अच्छी बात न सुनी थी।

---

[1] (صحيح ابن حبان، ذكر الخبر الدال على أن الحسنة الواحدة قد يرجى...إلخ، الحديث:٣٧٨، ج٢، ص١٠٢)
(موارد الظمآن، باب ما جاء في الصدقة، الحديث:٨٢٠، ج١، ص٢٠٩)
(لسان الميزان، الحديث:١٢٧٢، ج٤، ص٤٦١)

हज़रते जुनैदे बग़दादी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की गई कि फ़ुलां दुकानदार कंगाल हो गया है और दुकान छोड़ने का इरादा रखता है तो हज़रते जुनैदे बग़दादी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने उन्हें कुछ माल भेजा और कहलवाया कि येह माल इस्ति'माल करें और दुकान बन्द न करें क्यूं कि तिजारत आप जैसे लोगों के लिये नुक़्सान देह नहीं। दर अस्ल वोह शख़्स सब्ज़ी बेचता था और सूफ़िया फ़ुक़रा से उन के ख़रीदे हुए माल की क़ीमत न लेता।[1]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ (जो इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के ख़ास शागिर्द और फ़िक़्हे हनफ़ी के आइम्मा से हैं) अहले इ़ल्म लोगों के साथ ख़ास तौर पर भलाई करते, उन से अ़र्ज़ की गई : आप सब के साथ एक सा मुआ़मला क्यूं नहीं रखते ? फ़रमाया : मैं अम्बिया के बा'द (आ़म लोगों से न कि सह़ाबा से) उ़-लमा के सिवा किसी के मक़ाम को बुलन्द नहीं जानता, एक भी आ़लिम का ध्यान अपनी ह़ाजात की वजह से बटेगा तो वोह सह़ीह़ तौर पर ख़िदमते दीन न कर सकेगा और दीनी ता'लीम पर उस की दुरुस्त तवज्जोह न हो सकेगी। लिहाज़ा इन्हें इ़ल्मी ख़िदमत के लिये फ़ारिग़ करना अफ़्ज़ल है।[2]

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : देने वाले की ग़रज़ इन बातों के सिवा नहीं होती कि उस का मक़्सद या तो फ़क़ीर का दिल ख़ुश करना और उस की मह़ब्बत का ह़ुसूल होता है इस सूरत में येह देना हदिय्या होगा, या उस का मक़्सद ह़ुसूले षवाब होता है इस सूरत में येह स-दक़ा या ज़कात होगा या फिर उस का मक़्सद शोहरत और रियाकारी होगी, फिर या तो सिर्फ़ येही (रिया व दिखावा) मक़्सूद होता है या उस में दूसरी (मज़्कूरा बाला) अग़राज़ भी शामिल होती हैं।

مدینہ

1.(मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 416,417)
2.(मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 417)

जहां तक पहली बात या'नी हदिय्या का तअ़ल्लुक़ है तो उसे लेने में कोई ह़रज नहीं क्यूं कि हदिय्या क़बूल करना रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका है लेकिन देने वाले का मक़्सद एह़सान जताना न हो क्यूं कि अगर एह़सान के त़ौर पर दिया तो (लेने वाले के लिये) ऐसी चीज़ लेने से छोड़ देना बेहतर है और अगर मा'लूम हो कि इस में से बा'ज़ माल पर एह़सान जताया जा रहा है बा'ज़ पर नहीं तो उन बा'ज़ को लौटा दे जो बत़ौरे एह़सान दिये जा रहे हों। रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में घी, पनीर और मेंढा हदिय्यतन पेश किये गए तो आप ने घी और पनीर क़बूल फ़रमा लिये और मेंढा लौटा दिया।[1]

इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن मुतवफ़्फ़ा सि. 1340 हि. फ़ज़ाइले स-दक़ात की अह़ादीष जि़क्र फ़रमा कर इन फ़ज़ाइल का पच्चीस निकात में इस त़रह़ इह़ात़ा फ़रमाते हैं :

इन ह़दीषों से षाबित हुवा कि जो मुसलमान इस अ़मल में नेक निय्यत पाक माल से शरीक होंगे उन्हें करमे इलाही व इन्आ़मे ह़ज़रत रिसालत पनाही تعالیٰ ربہٗ وتکرّم وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم से पच्चीस फ़ाइदे मिलने की उम्मीद है :

﴿1﴾ بِاِذْنِہٖ تَعَالٰی बुरी मौत से बचेंगे, सत्तर दरवाज़े बुरी मौत के बन्द होंगे।

﴿2﴾ उ़म्रें जि़यादा होंगी।

﴿3﴾ उन की गिनती बढ़ेगी।

مدینہ

۱ (إحياء علوم الدين، كتاب الفقر و الزهد،بيان آداب الفقير في قبول العطاء إذاجاء ه بغيرسؤال، ج٤،ص٢٧٦)

﴾4﴿ रिज़्क़ की वुस्अ़त माल की कषरत होगी, इस की आ़दत से कभी मोह़ताज न होंगे।

﴾5﴿ ख़ैरो बरकत पाएंगे।

﴾6﴿ आफ़तें बलाएं दूर होंगी, बुरी क़ज़ा टलेगी, सत्तर दरवाज़े बुराई के बन्द होंगे, सत्तर क़िस्म की बला दूर होगी।

﴾7﴿ इन के शहर आबाद होंगे।

﴾8﴿ शिकस्ता ह़ाली दूर होगी।

﴾9﴿ ख़ौफ़े अन्देशा ज़ाइल और इत़्मीनाने ख़ात़िर ह़ासिल होगा।

﴾10﴿ मददे इलाही शामिल होगी।

﴾11﴿ रह़मते इलाही उन के लिये वाजिब होगी।

﴾12﴿ मलाइका उन पर दुरूद भेजेंगे।

﴾13﴿ रिज़ाए इलाही के काम करेंगे।

﴾14﴿ ग़ज़बे इलाही उन पर से ज़ाइल होगा।

﴾15﴿ उन के गुनाह बख़्शे जाएंगे, मग़फ़िरत उन के लिये वाजिब होगी, उन के गुनाहों की आग बुझ जाएगी।

﴾16﴿ ख़िदमते अहले दीन में स-दक़े से बढ़ कर षवाब पाएंगे।

﴾17﴿ ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा अज्र लेंगे।

﴾18﴿ उन के टेढ़े काम दुरुस्त होंगे।

﴾19﴿ आपस में मह़ब्बतें बढ़ेंगी जो हर ख़ैरो ख़ूबी की मुत्तबेअ़ हैं।

﴾20﴿ थोड़े सर्फ़ में बहुत का पेट भरेगा कि तन्हा खाते तो दूना उठता।

﴾21﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर दरजे बुलन्द होंगे।

﴾22﴿ मौला तबारक व तआ़ला मलाइका से उन के साथ मुबाहात फ़रमाएगा।

﴾23﴿ रोजे़ क़ियामत दोज़ख़ से अमान में रहेंगे, आतशे दोज़ख़ इन पर ह़राम होगी।

﴾24﴿ आख़िरत में एह़साने इलाही से बहरा मन्द होंगे कि निहायते मक़ासिद व ग़ायते मुरादात है।

﴾25﴿ ख़ुदा ने चाहा तो उस मुबारक गुरौह में होंगे जो हुज़ूरे पुरनूर, सय्यिदे आ़लम, सरवरे अकरम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'ले अक़्दस के तसद्दुक़ में सब से पहले दाख़िले जन्नत होगा।[1]

मस्जिद में हंसने की सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : اَلضِّحْکُ فِی الْمَسْجِدِ ظُلْمَةٌ فِی الْقَبْرِ *या'नी "मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा (लाता) है।"* (الفردوس بمأثور الخطاب،ج۲،ص۴۳۱،حدیث۳۸۹۱)

जन्नत से मह़रूम

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :* لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ *या'नी "चुग़ुल ख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।"*

(صحیح البخاری،ص۵۱۲،حدیث۶۰۵۶)

1.(फ़तावा र-ज़विय्या, रिसाला : رادُّ القحط والوباء بدعوة الجیران ومواساة الفقراء जि. 23, स. 152)

राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में माल ख़र्च करना

अल्लाह तआ़ला अपनी राह में ख़र्च करने का हुक्म यूं फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ الآية (البقرة:٢/٢٥٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ***अल्लाह*** *की राह में हमारे दिये में से ख़र्च करो वोह दिन आने से पहले जिस में न ख़रीदो फ़रोख़्त है न काफ़िरों के लिये दोस्ती न शफ़ाअ़त।*

राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में क्या और किस पर ख़र्च करें ? **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ۬ قُلْ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَ الْاَقْرَبِيْنَ وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنِ وَ ابْنِ السَّبِيْلِ ؕ الآية (البقرة:٢/٢١٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोह़ताजों और राहगीर के लिये है।*

शाने नुज़ूल : येह आयत अ़म्र बिन जमूह़ के जवाब में नाज़िल हुई जो बूढ़े शख़्स थे और बड़े मालदार थे उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल किया था कि क्या ख़र्च करें और किस पर ख़र्च करें इस आयत में उन्हें बता दिया गया कि जिस क़िस्म का और जिस क़दर माल क़लील या कषीर ख़र्च करो उस में षवाब है और मसारिफ़ उस के येह हैं। **मस्अला :** आयत में स-दक़ए नाफ़िला का बयान है मां बाप को ज़कात और स-दक़ाते वाजिबा देना जाइज़ नहीं।[1] (जमल वग़ैरा)

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

और राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में इख़्लास के साथ ख़र्च करने वाले के लिये बिशारत है कि उस का माल ज़ाएअ़ नहीं होता, और इस ज़मानत को यूं बयान फ़रमाया कि ख़र्च किये हुए माल को **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी ज़ात की जानिब क़र्ज़े ह़सन से मौसूम फ़रमाया :

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضْعَافًا كَثِیْرَةًؕ وَ اللّٰهُ یَقْبِضُ وَ یَبْصُۜطُ۪ وَ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ۝
(البقرۃ:۲/۲۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *है कोई जो* ***अल्लाह*** *को क़र्ज़े ह़सन दे तो* ***अल्लाह*** *उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे और* ***अल्लाह*** *तंगी और कशाइश करता है और तुम्हें उसी की त़रफ़ फिर जाना ।*

या'नी राहे खुदा में इख़्लास के साथ ख़र्च करे राहे खुदा में ख़र्च करने को क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाया येह कमाले लुत़्फ़ो करम है बन्दा उस का बनाया हुवा और बन्दे का माल उस का अ़त़ा फ़रमाया हुवा ह़क़ीक़ी मालिक वोह और बन्दा उस की अ़त़ा से मजाज़ी मिल्क रखता है मगर क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाने में येह दिल नशीन करना मन्ज़ूर है कि जिस त़रह़ क़र्ज़ देने वाला इत़्मीनान रखता है कि उस का माल ज़ाएअ़ नहीं हुवा वोह उस की वापसी का मुस्तह़िक़ है ऐसा ही राहे खुदा में ख़र्च करने वाले को इत़्मीनान चाहिये कि वोह इस इन्फ़ाक़ की जज़ा बिल यक़ीन पाएगा और बहुत ज़ियादा पाएगा ।[1]

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

مَنۡ ذَا الَّذِیۡ یُقۡرِضُ اللّٰہَ قَرۡضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَہٗ لَہٗ وَلَہٗۤ اَجۡرٌ کَرِیۡمٌ ﴿۱۱﴾ (الحدید:۵۷/۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कौन है जो **अल्लाह** को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़ तो वोह उस के लिये दूने करे और उस को इ़ज़्ज़त का षवाब है।

या'नी खुशदिली से **अल्लाह** की राह में ख़र्च करे उस इन्फ़ाक़ को इस मुनासिबत से क़र्ज़ फ़रमाया गया कि उस पर जन्नत का वा'दा फ़रमाया गया है।[1]

अल्लाह तआ़ला ने अपनी राह में मुसलमानों से अपना मह़बूब तरीन माल ख़र्च करने के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया, चुनान्चे फ़रमान है :

لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ ۬ؕ وَمَا تُنۡفِقُوۡا مِنۡ شَیۡءٍ فَاِنَّ اللّٰہَ بِہٖ عَلِیۡمٌ ﴿۹۲﴾ (ال عمران:۳/۹۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो और तुम जो कुछ ख़र्च करो **अल्लाह** को मा'लूम है।

(बिर्र) से तक़्वा व ताअ़त मुराद है ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि यहां ख़र्च करना आ़म है तमाम स-दक़ात का या'नी वाजिबा हों या नाफ़िला सब इस में दाख़िल हैं। ह़सन का क़ौल है कि जो माल मुसलमानों को मह़बूब हो और उसे रिज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करे वोह इस आयत में दाख़िल है ख़्वाह एक खजूर ही हो (ख़ाज़िन) उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ शकर की बोरियां ख़रीद कर स-दक़ा करते थे उन से कहा गया : इस की क़ीमत ही क्यूं नहीं स-दक़ा कर देते? फ़रमाया : शकर मुझे मह़बूब व मरग़ूब है येह चाहता हूं कि राहे ख़ुदा में प्यारी चीज़ ख़र्च करूं।[2] (मदारिक)

---

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)
2. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है :

اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ فِی السَّرَّآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ الْكٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ وَ الْعَافِیْنَ عَنِ النَّاسِؕ وَ اللّٰهُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ (۱۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जो* ***अल्लाह*** *की राह में ख़र्च करते हैं ख़ुशी में और रन्ज में और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग* ***अल्लाह*** *के मह़बूब हैं।*

या'नी हर ह़ाल में ख़र्च करते हैं बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रत अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ख़र्च करो तुम पर ख़र्च किया जाएगा या'नी ख़ुदा की राह में दो तुम्हें **अल्लाह** की रह़मत से मिलेगा।[1]

एक नौ जवान ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की सोह़बत में था कि मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام को ख़बर दी कि येह शख़्स तीन रोज़ बा'द मर जाएगा तो इस बात ने ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام को ग़मगीन किया, फिर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उस शख़्स को तीन रोज़ बा'द सह़ीह़ सलामत पाया, इस के बा'द एक माह तक ठीक ठाक रहा, ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام को इस बात से बहुत तअ़ज्जुब हुवा, फिर आप के पास मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : मैं उस शख़्स के पास रूह़ क़ब्ज़ करने गया तो **अल्लाह** तआ़ला ने मुझ पर तजल्ली फ़रमाई और फ़रमाया, येह शख़्स अपनी उ़म्र पूरी करने से एक रोज़

مدینہ

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

क़ब्ल बाहर निकला और एक मिस्कीन को पाया इस ने उस मिस्कीन को बीस दिरहम दिये तो उस मिस्कीन ने दुआ़ दी कि **अल्लाह** तआ़ला तेरी उ़म्र में बरकत फ़रमाए पस उस की दुआ़ क़बूल कर ली गई और मैं ने उसे हर दिरहम के बदले एक एक साल अ़ता फ़रमा दिया।[1]

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी शोहरए आफ़ाक़ किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" में स-दक़े की फ़ज़ीलत में लिखते हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के दरवाज़े पर एक साइल ने सदा लगाई। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ौजए मोह़तरमा رحمة الله تعالى عليها गुंधा हुवा आटा रख कर पड़ोस से आग लेने गई थीं ताकि रोटी पकाएं। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वोही आटा उठा कर साइल को दे दिया। जब वोह आग ले कर आईं तो आटा नदारद (या'नी ग़ाइब)। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया, उसे रोटी पकाने के लिये ले गए हैं। बहुत पूछा तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़ैरात कर देने का वाक़िआ़ बताया, वोह बोलीं سُبْحٰنَ اللّٰه ! येह तो बहुत अच्छी बात है मगर हमें भी तो कुछ खाने के लिये दरकार है इतने में एक शख़्स एक बड़ी लगन में भर कर गोश्त और रोटी ले आया। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया देखो तुम्हें किस क़दर जल्द लौटा दिया गया गोया रोटी भी पका दी और गोश्त का सालन मज़ीद भेज दिया !

(रौज़ुर्रयाह़ीन, स. 152)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।*

مدینہ

[1] (نزهة المجالس، باب في فضل الصدقة، ج۲، ص۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में दी जाने वाली चीज़ हरगिज़ ज़ाएअ़ नहीं होती आख़िरत में अज्रो षवाब की हक़दारी तो है ही, बा'ज़ अवक़ात दुन्या में भी इज़ाफ़े के साथ हाथों हाथ इस का ने'मल बदल अ़ता किया जाता है।[1]

राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में देने से बढ़ता है घटता नहीं जैसा कि ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَا نَقَصَتْ صَدَقَةٌ مِّنْ مَّالٍ، وَمَا زَادَ اللّٰهُ عَبْدًا بِعَفْوٍ إِلَّا عِزًّا، وَمَا تَوَاضَعَ أَحَدٌ لِلّٰهِ إِلَّا رَفَعَهُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ".[2]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, स-दक़ा माल में कमी नहीं करता और **अल्लाह** तआ़ला मुआ़फ़ करने की वजह से बन्दे की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाता है और जो **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा की ख़ातिर इन्किसारी करता है तो **अल्लाह** तआ़ला उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है।[2]

---

1. (फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब आदाबे त़आ़म, जि. 1, स. 404)

2 (صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب استحباب العفو والتواضع، الحديث: ٦٩-(٢٥٨٨)،ص١٠٠٢)
(سنن الترمذي، كتاب البر والصلة، باب ما جاء في التواضع، الحديث:٢٠٢٩،ج٣،ص ١٢٥-١٢٦)
(سنن الدارمي، كتاب الزكاة، باب في فضل الصدقة، الحديث: ١٦٧٦،ص٤٩٢)
(المؤطا للإمام مالك، كتاب الصدقة، باب ما جاء في التعفف عن المسألة، الحديث: (١٨٨٥)-٢،ص١،٥٨٨)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة، الفصل الأول، الحديث: ١٨٨٩، ج١، ص ٣٥٩)

ह़दीष के इस हिस्से "स-दक़ा माल में कमी नहीं करता" के तह़त मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं, "ज़कात देने वाले की ज़कात हर साल बढ़ती ही रहती है तजरिबा है जो किसान खेत में बीज फेंक आता है वोह ब ज़ाहिर बोरियां ख़ाली कर लेता है लेकिन ह़क़ीक़त में मअ़ इज़ाफ़े के भर लेता है, घर की बोरियां चूहे, सुसरी वग़ैरा की आफ़ात से हलाक हो जाती हैं या येह मत़्लब है कि जिस माल में से स-दक़ा निकलता रहे उस में से ख़र्च करते रहो, اِنۡ شَآءَاللہ बढ़ता ही रहेगा, कूंएं का पानी भरे जाओ, तो बढ़े ही जाएगा।"[1]

इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं, इ़ज़्ज़त बढ़ाने से मुराद येह है कि **अल्लाह** तआ़ला लोगों के दिलों में उस का मक़ाम बुलन्द कर देगा।[2]

अ़ल्लामा ज़रक़ानी ने फ़रमाया, इ़ज़्ज़त बढ़ाने से मुराद येह है कि दुन्या में जो कोई उसे जानता होगा ख़न्दा पेशानी से मिलेगा और मिलने वालों के दिलों में इस की इ़ज़्ज़त भी होगी नीज़ आख़िरत में इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई से मुराद ज़ियादतिये षवाब है और ह़दीष शरीफ़ में फ़रमाया कि जो बन्दा **अल्लाह** की रिज़ा की ख़ात़िर इन्किसारी इख़्तियार करता है या'नी ग़ुलाम की त़रह़ उस की बन्दगी करता है, उस के अह़काम की बजा आ-वरी को मा'मूल बना लेता है और मम्नूआ़त से इज्तिनाब करता है तो **अल्लाह** तआ़ला लोगों में उस की ता'ज़ीम व तौक़ीर बढ़ाता है। (ह़दीष शरीफ़ में) लफ़्ज़े عَبۡد (या'नी बन्दा) फ़रमाने में इस बात की त़रफ़ इशारा है कि **अल्लाह** तआ़ला के आगे उस की शान ग़ुलाम ही की सी है। तो जो **अल्लाह** की

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 93)

2 (تنویر الحوالك شرح علی المؤطا للإمام مالك، تحت الحدیث المذکور، ص ۷۲۲)

रिज़ा की ख़ातिर इन्किसारी करता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाता है या'नी दुन्या में इस त़रह़ इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई होती है कि लोगों के दिलों में उस के लिये मह़ब्बत पैदा फ़रमा दी जाती है और दुन्या में तवाज़ोअ़ के बाइ़ष आख़िरत में भी उस के लिये बुलन्दिये मर्तबत का मुज़्दा है। अ़ल्लामा क़ुरतुबी ने फ़रमाया कि तवाज़ोअ़ **अल्लाह** तआ़ला या उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा की ख़ातिर या ह़ाकिमे आ़दिल या आ़लिमे सालेह़ के लिये है और इस पर **अल्लाह** तआ़ला दुन्या व आख़िरत में बुलन्दिये दरजात अ़त़ा फ़रमाएगा और अगर दीगर लोगों के साथ इन्किसारी से पेश आएगा और अगर इस सूरत में **अल्लाह** की रिज़ा मक़्सूद होगी तो **अल्लाह** तआ़ला लोगों के दिलों में इस की क़द्र बढ़ाएगा और उन की ज़बानों को उस की ता'रीफ़ से सरशार कर देगा और आख़िरत में भी उस को फ़राज़ ह़ासिल होगा। और जो फ़क़त़ दुन्या, दिखावे और रियाकारी की ग़रज़ से तवाज़ोअ़ इख़्तियार करेगा तो दुन्या व आख़िरत में उस के लिये कोई ए'ज़ाज़ नहीं।[1] (मुलख़्ख़सन)

इन्किसारी जो ख़ुद्दारी के साथ हो वोह बड़ी बेहतर है इस का अन्जाम बुलन्दिये दरजात है मगर बे इ़ज़्ज़ती की इन्किसारी, इन्किसारी नहीं बल्कि एह़सासे पस्ती है, जिहाद में कुफ़्र के मुक़ाबिल फ़ख़्र करना इ़बादत है, मुसलमान भाई के सामने झुकना षवाब। (﴿أَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ﴾ [الفتح:٢٩/٤٨]

तर्जमा : काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल।[2] (कन्ज़ुल ईमान))

जो बदले पर क़ादिर हो, फिर मुजरिम को मुआ़फ़ी दे दे तो इस से मुजरिम के दिल में उस की इत़ाअ़त और मह़ब्बत पैदा हो जाती है और अगर

---

1 (شرح الزرقاني على المؤطا،تحت الحديث المذكور،ج٤،ص٥٠٠)

2 (مرآة المناجيح شرح مشكاة المصابيح، ج٣،ص٩٣)

बदला लिया जाए तो उस के दिल में भी इन्तिक़ाम की आग भड़क जाती है। फ़त्हे मक्का के दिन की आ़म मुआ़फ़ी से सारे कुफ़्फ़ार मुसलमान हो कर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतीए़ फ़रमान हो गए, मुआ़फ़ी से दिलों पर क़ब्ज़े हो जाते हैं मगर मुआ़फ़ी अपने हुक़ूक़ में चाहिये न कि शरई हुक़ूक़ में, क़ौमी, मुल्की, दीनी मुजरिमों को कभी मुआ़फ़ न करो, अपने मुजरिम को मुआ़फ़ कर दो।[1]

हदीष शरीफ़ में है :

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا رَفَعَهُ قَالَ: "مَا نَقَصَتْ صَدَقَةٌ مِنْ مَالٍ، وَمَا مَدَّ عَبْدٌ يَدَهُ بِصَدَقَةٍ إِلَّا أُلْقِيَتْ فِي يَدِ اللّٰهِ قَبْلَ أَنْ تَقَعَ فِي يَدِ السَّائِلِ، وَلَا فَتَحَ عَبْدٌ بَابَ مَسْأَلَةٍ لَهُ عَنْهَا غِنًى إِلَّا فَتَحَ اللّٰهُ لَهُ بَابَ فَقْرٍ". ۲

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, स-दक़ा देने से माल कम नहीं होता और जब कोई शख़्स स-दक़ा देने के लिये अपना हाथ बढ़ाता है तो वोह माले स-दक़ा साइल के हाथ में पहुंचने से पहले **अल्लाह** तआ़ला के हाथ में पहुंच जाता है (या'नी स-दक़ा जल्द क़बूल होता है) और जो शख़्स ख़ुद पर बिला ह़ाजत सुवाल का दरवाज़ा खोलता है तो उस पर **अल्लाह** तआ़ला फ़क्र का दरवाज़ा खोल देता है।[2]

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 93)

۲ (مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ، ج۳، ص۱۱۰)

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَقُوْلُ الْعَبْدُ مَالِي مَالِي، وَإِنَّمَا لَهُ مِنْ مَالِهِ ثَلَاثٌ: مَا أَكَلَ فَأَفْنَى، أَوْ لَبِسَ فَأَبْلَى، أَوْ أَعْطَى فَاقْتَنَى مَا سِوٰى ذٰلِكَ فَهُوَ ذَاهِبٌ وَتَارِكُهُ لِلنَّاسِ".[1]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बन्दा कहता है, मेरा माल मेरा माल ह़ालां कि उस के माल सिर्फ़ तीन हैं, जो खा कर ख़त्म कर दे, या पहन कर गला दे, या दे कर जम्अ़ कर दे जो इन के इ़लावा है वोह तो जाने वाला है, और वोह इसे लोगों के लिये छोड़ता है ।[1]

या'नी फ़ख़्रो तकब्बुर के अन्दाज़ में कहता रहता है कि येह मेरा मकान है, येह मेरी जाएदाद है येह मेरा कुंवां है येह मेरा फ़ुलां माल है, येह बुरा है । इन्सान को चाहिये कि यक़ीन रखे कि मैं और मेरा माल सब **अल्लाह** तआ़ला की मिल्क है मेरे पास चन्द रोज़ा है आ़रिज़ी है ख़याल रहे कि जिसे इन्सान अपना माल कहे उस का माल या'नी अन्जाम निरा वबाल है और जो माल ज़रीअ़ए इ़बादत है वोह ज़रीअ़ए आमाल है जिस से बहुत उम्मीदें वाबस्ता हैं ।

ह़दीष शरीफ़ में "उस के माल सिर्फ़ तीन हैं" से मुराद : "या'नी जो माल इन्सान के काम आवें (आएं) वोह सिर्फ़ तीन हैं इन के इ़लावा सब दूसरों के काम आते हैं ।"[2]

---

1 (صحيح مسلم، كتاب الزهد والرقائق،الحديث: ٤ـ(٢٩٥٩)،ص ١١٣٣)
(سنن الترمذي، كتاب الزهد،الحديث: ٢٣٤٢، ج٣، ص٣٠٣)
(مشكاة المصابيح، كتاب الرقاق، الفصل الأول، ٥١٦٦، ج٢، ص٢٤٣)

2. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 7, स. 10)

बसरा के कुर्रा हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُمَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए उन दिनों आप बसरा के ह़ाकिम थे उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हमारे पड़ोस में एक शख़्स रहता है जो रोज़ादार और रात को नमाज़ पढ़ने वाला है और हम में से हर एक उस की मिष्ल होना चाहता है उस ने अपनी बेटी का रिश्ता अपने भतीजे को दिया है और वोह एक फ़क़ीर आदमी है उस के पास बेटी को जहेज़ देने के लिये कुछ नहीं है।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُمَا खड़े हुए और उन का हाथ पकड़ कर उन्हें घर के अन्दर ले गए एक सन्दूक़ खोला और उस से छे थालियां निकालीं और फ़रमाया : इन को उठा लो, उन्हों ने वोह थालियां उठाईं तो आप ने फ़रमाया : हम ने इन्साफ़ नहीं किया हम ने उसे जो कुछ दिया है वोह उसे रात के क़ियाम और रोज़े से दूर करेगा हमारे साथ चलो हम उस लड़की के जहेज़ के सिल्सिले में उस शख़्स के मददगार बनें दुन्या की इतनी ह़ैषिय्यत नहीं कि वोह किसी मोमिन को इबादते ख़ुदा वन्दी से रोक दे और हम में भी इतना तकब्बुर नहीं है कि हम **अल्लाह** तआ़ला के दोस्तों की मदद न करें चुनान्चे आप ने उन सब के साथ मिल कर जहेज़ तय्यार कर के दिया।[1]

ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, तुम में से किसे अपने वारिष का माल अपने माल से ज़ियादा प्यारा है ? सहाबा عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان ने

مدینہ

۱ (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، حكايات الأسخياء، ج ٤، ص ٣٣٣)

अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! हम में से हर एक को अपने वारिष की ब निस्बत अपना माल ज़ियादा अ़ज़ीज़ है, तो आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, तो उस का माल वोह है जो आगे भेज दे, और उस के वारिष का माल वोह है जो छोड़ जाए।[1]	وَسَلَّمَ: "اَيُّكُمْ مَالُ وَارِثِهٖ أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ مَّالِهٖ"؟، قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا مِنَّا أَحَدٌ إِلَّا مَالُهٗ أَحَبُّ إِلَيْهِ. قَالَ: "فَإِنَّ مَالَهٗ مَا قَدَّمَ، وَمَالُ وَارِثِهٖ مَا أَخَّرَ".[1]

या'नी कौन चाहता है कि मेरे पास माल न हो मेरे अ़ज़ीज़ों के पास माल हो वोह सब अमीर हों मैं फ़क़ीर कंगाल होउं इस फ़रमान का येह मक़्सद है (अशि'अ़ा) लिहाज़ा इस फ़रमाने आ़ली पर येह ए'तिराज़ नहीं कि बा'ज़ लोगों को दूसरों का माल बड़ा पसन्द होता है या येह मक़्सद है कि ऐसा कौन है जो दूसरों का माल उन के लिये संभाल कर रखे अपना माल बरबाद कर दे या बरबाद होने दे।

ख़ुलासा येह है कि माल दूसरों का है आ'माल अपने हैं जो माल ख़ैरात कर दिया जाए वोह आ'माल बन गया और जो जम्अ़ कर के छोड़ गया वोह निरा माल रहा। और जिस माल की ज़कात न दी वोह अपने लिये वबाल, वारिषों के लिये माल हुवा, ख़याल रहे कि माल से स-दक़ात व ख़ैरात करते रहना फिर **अल्लाह** व रसूल की रिज़ा के लिये वारिषों को ग़नी करने के लिये माल छोड़ना येह भी इ़बादत है।[2]

---

[1] (صحيح البخاري، كتاب الرقاق، باب ما قدّم من ماله فهو له، الحديث: ٦٤٤٢، ج٤، ص١٩٥)
(مشكاة المصابيح، كتاب الرقاق، الفصل الأول، الحديث: ٥١٦٨، ج٢، ص٢٤٤)
[2] (مرآة المناجيح شرح مشكاة المصابيح، ج٧، ص١١-١٢)

हज़रते अबुल हसन मदाइनी फ़रमाते हैं कि हज़रते इमामे हसन, हज़रते इमामे हुसैन और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم हज के लिये तशरीफ़ ले गए रास्ते में अपने सामान से बिछड़ गए तो भूक और प्यास महसूस हुई इस दौरान एक बूढ़ी औ़रत के पास से गुज़रे जो अपने ख़ैमे में थी फ़रमाया : क्या पीने के लिये कुछ है ? उस ने अ़र्ज़ की जी हां, वोह सुवारियों से उतरे तो उस के पास ख़ैमे के किनारे में सिर्फ़ एक छोटी सी बकरी थी। उस ख़ातून ने कहा इस को दोह कर इस का दूध नोश फ़रमाएं। चुनान्चे उन तीनों हज़रात ने इसी त़रह किया फिर उस औ़रत से फ़रमाया : कुछ खाने को है ? उस ने कहा इस बकरी के सिवा कुछ नहीं आप में से कोई एक इसे ज़ब्ह़ कर दे ताकि मैं आप के खाने के लिये इसे तय्यार करूं। तीनों हज़रात में से एक खड़े हुए और उसे ज़ब्ह़ कर के उस की खाल उतारी फिर उस ने उन के लिये खाना तय्यार किया। तीनों हज़रात ने खाया और धूप की शिद्दत कम होने तक ठहरे रहे जब जाने लगे तो फ़रमाया : हम कुरैश के लोग हैं हज के लिये जा रहे हैं अगर सहीह़ सलामत वापस आ गए तो हमारे पास आना हम तुम से अच्छा सुलूक करेंगे। फिर चले गए उस औ़रत का ख़ावन्द आया तो उस ने उन हज़रात और बकरी का मुआ़मला ज़िक्र किया उस शख़्स को गुस्सा आया। उस ने कहा तेरे लिये हलाकत हो तूने उन लोगों के लिये बकरी ज़ब्ह़ कर डाली जिन के बारे में तुझे कोई इ़ल्म नहीं कि कौन हैं फिर तू कहती है कि वोह कुरैश के कुछ लोग थे।

रावी कहते हैं फिर कुछ मुद्दत के बा'द उन दोनों मियां बीवी को मदीनए त़य्यिबा जाने की ज़रूरत पड़ी वोह वहां पहुंचे और ऊंटों की मेंगनियां बेच कर गुज़ारा करने लगे। वोह ख़ातून मदीनए त़य्यिबा की एक गली से गुज़र रही थी तो देखा कि हज़रते इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपने

घर के दरवाज़े में बैठे हुए हैं आप ने उस औ़रत को पहचान लिया लेकिन वोह आप को पहचान न सकी । आप ने ग़ुलाम को भेज कर ख़ातून को बुलवाया और फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** की बन्दी ! मुझे पहचानती हो ? उस ने अ़र्ज़ किया : नहीं। फ़रमाया : मैं फ़ुलां फ़ुलां दिन तुम्हारे पास मेहमान था। बूढ़ी औ़रत ने कहा मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान हों आप वोही हैं ? फ़रमाया : हां। फिर ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۃُ ने हुक्म दिया तो स-दक़े की बकरियों में से एक हज़ार बकरियां ख़रीद कर और मज़ीद एक हज़ार दीनार उसे दे कर अपने ग़ुलाम के हमराह ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۃُ के पास भेजा उन्हों ने पूछा मेरे भाई ने तुम्हें क्या दिया ? उस ने अ़र्ज़ किया एक हज़ार बकरियां और एक हज़ार दीनार। ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۃُ ने भी उसी क़दर माल देने का हुक्म दिया फिर उसे अपने ग़ुलाम के हमराह ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۃُ के पास भेजा तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۃُ ने उसे दो हज़ार बकरियां और दो हज़ार दीनार दिये और फ़रमाया अगर तुम पहले मेरे पास आतीं तो मैं तुम्हें इतना देता कि उन दोनों के लिये मुश्किल हो जाता। वोह ख़ातून चार हज़ार बकरियां और चार हज़ार दीनार ले कर अपने ख़ावन्द की त़रफ़ वापस आईं ।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "مَثَلُ

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۃُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, कन्जूस और सख़ी की मिषाल उन दो शख़्सों जैसी

---

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، حكايات الأسخياء، ج٤، ص٣٣٣)

الْبَخِيلِ وَالْمُتَصَدِّقِ كَمَثَلِ رَجُلَيْنِ، عَلَيْهِمَا جُنَّتَانِ مِنْ حَدِيدٍ، قَدِ اضْطُرَّتْ أَيْدِيهِمَا إِلَى ثُدِيِّهِمَا وَتَرَاقِيهِمَا، فَجَعَلَ الْمُتَصَدِّقُ كُلَّمَا تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ انْبَسَطَتْ عَنْهُ حَتَّى تَغْشَى أَنَامِلَهُ، وَتَعْفُوَ أَثَرَهُ، وَجَعَلَ الْبَخِيلُ كُلَّمَا هَمَّ بِصَدَقَةٍ قَلَصَتْ، وَأَخَذَتْ كُلُّ حَلْقَةٍ بِمَكَانِهَا".[1]

है जिन पर लोहे की दो ज़िरह हों और उन के हाथ उन के सीनों और गरदनों से जकड़े हुए हों सख़ी जब ख़ैरात करने का इरादा करता है तो ज़िरह फैल जाती है यहां तक कि उस के पौरों को ढांप लेती है और उस के निशानात मिटा देती है और कन्जूस जब ख़ैरात का इरादा करता है तो ज़िरह तंग हो जाती है और हर कड़ी अपनी जगह चिमट जाती है ।[1]

येह तश्बीह मुरक्कब है जिस में दो शख़्सों की पूरी ह़ालतों को दूसरे दो शख़्सों के पूरे ह़ाल से तश्बीह दी गई है या'नी कन्जूस और सख़ी की ह़ालतें उन दो शख़्सों की सी हैं जिन के जिस्म पर लोहे की ज़िरहें हैं, इन्सान की ख़ुल्क़ी और पैदाइशी मह़ब्बते माल और ख़र्च करने को दिल न चाहने को ज़िरहों से तश्बीह दी गई कि जैसे ज़िरह जिस्म को घेरे और चिमटी होती है ऐसी मह़ब्बते माल इन्सान के दिल को चिमटी होती है रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ﴾ [الحشر:٩/٥٩] **तर्जमा :** और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही काम्याब हैं। (कन्जुल ईमान))

---

[1] (صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب مثل المتصدق والبخيل،الحديث:١٤٤٣، ج١، ص٣٥٣)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة،باب مثل المنفق والبخيل،الحديث:٧٥ـ(١٠٢١)،ص٣٦٦)
(مشكاة المصابيح،كتاب الزكاة،باب الإنفاق وكراهية الإمساك،الحديث:١٨٦٤،ج٢،ص٣٥٤)

तराक़ी, तरक़ूत की जम्अ़ है, तरक़ूत वोह हड्डी है जो सीने से ऊपर और गरदन के नीचे है, चूंकि येह हड्डियां गरदन के दो त़रफ़ होती हैं इस लिये दो आदमियों की चार हड्डियां होंगी, इस लिह़ाज़ से तराक़ी जम्अ़ इर्शाद हुवा, اُضْطُرَّتْ मज्हूल फ़रमा कर इशारतन येह बताया कि इन्सान का येह बुख़्ल क़ुदरती है इख़्तियारी नहीं।

ह़दीष शरीफ़ में फ़रमाया, ज़िरह मज़ीद तंग हो जाती है और हर कड़ी अपनी जगह चिमट जाती है, "سُبْحٰنَ الله क्या नफ़ीस तश्बीह है या'नी बख़ील भी कभी ख़ैरात करने का इरादा करता है मगर उस के दिल की हिचकिचाहट उस के इरादे पर ग़ालिब आ जाती है और वोह ख़ैरात नहीं करता, और सख़ी को भी ख़ैरात करते वक़्त हिचकिचाहट होती है मगर उस का इरादा उस पर ग़ालिब आ जाता है, इसी ग़लबे पर सख़ी षवाब पाता है, फिर सख़ावत करते करते नफ़्से अम्मारा इतना दब जाता है कि उस को कभी ख़ैरात पर हिचकिचाहट पैदा ही नहीं होती, येह बहुत बुलन्द मक़ाम है जहां पहुंच कर इन्सान खुले दिल से स-दक़ा करने लगता है, हर इ़बादत का येही ह़ाल है कि पहले नफ़्से अम्मारा रोका करता है मगर जब उस की न मानी जाए तो रोकना छोड़ देता है, नफ़्स की मिषाल शीर ख़्वार बच्चे की सी है जो दूध छोड़ते वक़्त मां को बहुत परेशान करता है, मगर जब मां उस की ज़िद की परवाह नहीं करती तो वोह फिर दूध नहीं मांगता।"[1]

हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल फ़रमाते हैं, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर बिन करीज़ मस्जिद से अकेले घर जाने के लिये निकले तो क़बीला सक़ीफ़ से एक लड़का आप के पीछे हो गया और आप के साथ साथ चलने लगा ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया ऐ लड़के तुम्हें कोई ह़ाजत है? उस ने कहा अल्लाह तआ़ला आप को फ़लाह़ व दुरुस्ती

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 71,72)

अ़ता फ़रमाए मुझे कोई काम नहीं मैं ने आप को अकेले चलता देखा तो मैं ने सोचा आप की हिफ़ाज़त करूं और मैं **अल्लाह** तआ़ला की पनाह चाहता हूं कि आप को कोई मकरूह बात पहुंचे। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह ने उस का हाथ पकड़ा और उसे अपने साथ घर ले गए फिर एक हज़ार दीनार मंगवा कर उस लड़के को दिये और फ़रमाया येह ख़र्च करो तुम्हारे घर वालों ने तुम्हारी बहुत अच्छी तरबिय्यत की है।[1]

यूंही कुरैश में से एक शख़्स सफ़र से वापस आया तो रास्ते में एक देहाती को देखा जो मुफ़्लिस और बीमार था उस ने कहा हमारे इन ह़ालात के पेशे नज़र हमारी मदद करो उस आदमी ने अपने ग़ुलाम से कहा जो कुछ हमारे पास ख़र्च से बचा हो वोह इस शख़्स को दे दो तो ग़ुलाम ने उस आदमी की झोली में चार हज़ार दिरहम डाल दिये।[2]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "قَالَ رَجُلٌ: لَأَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ، فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهٖ فَوَضَعَهَا فِي يَدِ سَارِقٍ فَأَصْبَحُوْا يَتَحَدَّثُوْنَ تُصُدِّقَ اللَّيْلَةَ عَلٰى سَارِقٍ، فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ لَكَ

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि एक शख़्स ने कहा मैं स-दक़ा करूंगा वोह अपना स-दक़ा ले कर निकला और उसे एक चोर के हाथ में दे दिया सुब्ह़ को लोगों में चर्चा हुवा कि आज रात चोर को स-दक़ा दिया गया उस शख़्स ने कहा ऐ **अल्लाह** ! चोर को स-दक़ा देने पर तेरे

مدینہ
---

1 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، حكايات الأسخياء، ج٤، ص٣٣٣)

2 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، حكايات الأسخياء، ج٤، ص٣٣٤)

الْحَمْدُ عَلٰى سَارِقٍ لَأَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ، فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهٖ فَوَضَعَهَا فِي يَدِ زَانِيَةٍ فَأَصْبَحُوا يَتَحَدَّثُوْنَ تُصُدِّقَ اللَّيْلَةَ عَلٰى زَانِيَةٍ. فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى زَانِيَةٍ، لَأَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ، فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهٖ فَوَضَعَهَا فِي يَدِ غَنِيٍّ فَأَصْبَحُوا يَتَحَدَّثُوْنَ تُصُدِّقَ اللَّيْلَةَ عَلٰى غَنِيٍّ. فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى سَارِقٍ وَزَانِيَةٍ وَغَنِيٍّ فَأُتِيَ فَقِيْلَ لَهٗ: أَمَّا صَدَقَتُكَ عَلٰى سَارِقٍ: فَلَعَلَّهٗ أَنْ يَسْتَعِفَّ عَنْ سَرِقَتِهٖ، وَأَمَّا الزَّانِيَةُ: فَلَعَلَّهَا أَنْ تَسْتَعِفَّ عَنْ زِنَاهَا، وَأَمَّا الْغَنِيُّ: فَلَعَلَّهٗ يَعْتَبِرُ فَيُنْفِقُ مِمَّا أَعْطَاهُ اللّٰهُ". [1]

लिये ह़म्द है मैं स-दक़ा करूंगा फिर वोह अपना स-दक़ा ले कर निकला और एक ज़ानिया को दे दिया सुब्ह़ को लोगों ने चर्चा किया कि आज रात एक ज़ानिया को स-दक़ा दिया गया उस ने कहा ऐ **अल्लाह** ज़ानिया को स-दक़ा देने पर तेरे लिये ह़म्द है मैं स-दक़ा करूंगा फिर वोह अपना स-दक़ा ले कर निकला और एक मालदार को दे दिया सुब्ह़ को चर्चा हुवा मालदार को स-दक़ा दिया गया उस ने कहा ऐ **अल्लाह** तेरे लिये ह़म्द है चोर और ज़ानिया और मालदार को स-दक़ा देने पर तो उस के पास एक आने वाला आया और उस ने कहा चोर को स-दक़ा देने का फ़ाइदा येह होगा कि वोह चोरी छोड़ दे और ज़ानिया को स-दक़ा देने से येह है कि वोह ज़िना से आयन्दा बचे और मालदार को देने से येह है कि वोह इब्रत ह़ासिल करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दिये हुए में से ख़र्च करे।[1]

مدینہ

[1] (صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب إذا تصدق على غنيّ وهو لا يعلم، الحديث: ١٤٢١، ج١، ص٤٨٠)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب المنفق والبخيل، الحديث: ٧٨ـ(١٠٢٢)، ص٣٦٦)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب الإنفاق وكراهية الإمساك، الفصل الثالث، الحديث: ١٨٧٦، ج١، ص٣٥٦)

इमाम जलालुद्दीन सुयूती़ رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, कि इमाम अह़मद ने अपनी मुस्नद में ज़ियादती फ़रमाई कि वोह शख़्स बनी इस्राईल से था।[1]

और अ़ल्लामा नूरुद्दीन सिन्धी ने फ़रमाया कि इस ह़दीष से येह बात षाबित होती है कि साबिक़ा शरीअ़तों में जो हुक्म मश्रूअ़ हों जब तक मन्सूख़ न हुए, हमारे लिये भी मश्रूअ़ ही रहे क्यूं कि वोह शख़्स बनी इस्राईल से था जैसा कि इमाम अह़मद ने अपनी मुस्नद में फ़रमाया और उस शख़्स का ह़म्द बयान करना तअ़ज्जुब के लिये भी हो सकता है (या'नी उस ने मुतअ़ज्जिब हो कर اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ कहा) जैसा कि तअ़ज्जुब के वक़्त سُبْحٰنَ اللّٰہ कहा जाता है।[2]

और ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीष शरीफ़ की शर्ह़ में फ़रमाते हैं, या'नी तुम से पहले एक बनी इस्राईली ने अपने दिल में कहा या अपने दोस्तों या घर वालों पर अपना येह इरादा ज़ाहिर किया, या रब तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ किया कि आज मैं ख़ैरात दूंगा, ज़ाहिर येह है कि ख़ैरात से नफ़्ली स-दक़ा मुराद है मुमकिन है उस ने कोई नज़्र मानी हो जिस के पूरा करने का इरादा किया।

और रात के अंधेरे में अकेले में एक शख़्स को फ़क़ीर जान कर वोह ख़ैरात दे दी, उस ने लोगों में फैला दिया कि मुझे एक आदमी ख़ैरात दे गया, जैसा कि आवारा लोगों का त़रीक़ा है कि धोका देने पर फ़ख़्र करते हैं और धोका खाने वाले का मज़ाक़ उड़ाते हैं, उस का लोगों में चर्चा हो गया,

---

1 (حاشية العلامة السيوطي على سنن النسائي، كتاب الزكاة،باب إذا أعطاها غنياً... إلخ، الحديث: ٢٠٢٢،الجزء٥،ج٣،ص٥٩)

2 (حاشية العلامة السندي على سنن النسائي، كتاب الزكاة،باب إذا أعطاها غنياً... إلخ، الحديث: ٢٠٢٢،الجزء٥،ج٣،ص٥٩)

मिरक़ात ने फ़रमाया मुमकिन है कि लोगों को येह ख़बर इल्हामे इलाही से मा'लूम हुई हो, और हो सकता है कि कोई फ़िरिश्ता शक्ले इन्सानी में आ कर लोगों से येह कह गया हो, ग़रज़ कि उस का चर्चा हो गया।

और चोर पर स-दक़ा करने के बा वुजूद ह़म्द करना, येह कलिमा तअ़ज्जुब का है या'नी वोह शख़्स स-दक़ा ज़ाएअ़ होने पर दिल तंग नहीं हुवा बल्कि खुदा का शुक्र ही किया, और तअ़ज्जुब के त़ौर पर येह कहा, **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दे मुसीबत पर भी शुक्र ही करते हैं।

और वोह कहना कि अब फिर स-दक़ा करूंगा, या'नी मेरा वोह स-दक़ा तो बेकार गया क्यूं कि सह़ीह़ मसरफ़ पर न पहुंचा जैसे खारी ज़मीन में दाना। इस की जगह और स-दक़ा दूंगा, इस से मा'लूम हुवा कि अगर स-दक़ा सह़ीह़ जगह न पहुंचे, तो वापस न ले बल्कि उस की बजाए और स-दक़ा दे, चूंकि आज भी स-दक़ा छुपाने के लिये अंधेरी रात ही में निकला था, इस लिये एक फ़ासिक़ा ज़ानिया औ़रत को मिस्कीन जान कर ख़ैरात दे दी और धोका खा गया।

मालदार को फ़क़ीर समझ कर या येह मालदार कोई कन्जूस था जो फटे पुराने कपड़े पहने था और ह़रीस भी कि जानते हुए ख़ैरात ले ली, जैसा कि आज कल भी कन्जूसों को देखा जाता है, लिहाज़ा ह़दीष पर येह ए'तिराज़ नहीं कि देने वाले ने धोका कैसे खाया और लेने वाले ने ग़नी होने के बा वुजूद ख़ैरात ले क्यूं ली ? मौजूदा ज़माने के ह़ालात देखते हुए इन ए'तिराज़ों की गुन्जाइश ही नहीं। ज़ाहिर येह है कि ग़नी ने खुद किसी से न कहा होगा कि कन्जूस ह़रीस इन बातों का चर्चा नहीं करते बल्कि छुपाने की कोशिश करते हैं।

और बन्दे को जवाब दिये जाने का ख़ुलासा येह है कि तेरे येह तीनों स-दक़े कार आमद हैं कोई बेकार न गया, चोर और ज़ानिया के लिये तो गुनाहों से बचने का ज़रीआ़ बनेगा और ग़नी के लिये सख़ावत

की तब्लीग़ होगा, इस ह़दीष से मा'लूम हुवा कि अगर ग़लती से ज़कात ग़ैर मस्रफ़ पर ख़र्च कर दी मषलन किसी को फ़क़ीर समझ कर ज़कात दी, फिर पता लगा वोह ग़नी है, तो ज़कात अदा हो जाएगी इस का इआ़दा वाजिब नहीं, त़रफ़ैन (या'नी इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा और इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمَا) का येही क़ौल है, इन की दलील येह ह़दीष भी है क्यूं कि यहां उसे चौथी बार स-दक़ा देने का हुक्म नहीं दिया गया मगर तमाम आइम्मा फ़रमाते हैं कि इस सूरत में स-दक़ा वापस न ले हां इस में इख़्तिलाफ़ है कि ख़ुद लेने वाले को येह माल ह़लाल है या नहीं क़वी येह है कि अगर उस ने ग़लती से ले लिया है तो ह़लाल है, दानिस्ता लिया है तो ह़राम, इस की दलील ह़ज़रते मा'न इब्ने यज़ीद की वोह ह़दीष है जो बुख़ारी ने रिवायत की, कि फ़रमाते हैं मेरे वालिद ने स-दक़े के कुछ दीनार मस्जिद में रखे मैं ने उठा लिये, फिर येह वाक़िआ़ बारगाहे नबवी में पेश हुवा, तो हुज़ूर عَلَیۡہِ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ यज़ीद तुम्हारे लिये तुम्हारी निय्यत और ऐ मा'न जो तुम ने लिया वोह तुम्हारा है।[1] (फ़त्हुल क़दीर)

हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ "एह़याउल उ़लूमिद्दीन" में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करने की तरग़ीब व फ़ज़ाइल में बयान फ़रमाते हैं : हारूनुर्रशीद ने ह़ज़रते मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमत में पांच सो दीनार भेजे ह़ज़रते लैष बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को इस बात का इ़ल्म हुवा तो उन्हों ने आप की ख़िदमत में एक हज़ार दीनार भेज दिये। हारूनुर्रशीद को ग़ुस्सा आया उस ने ह़ज़रते लैष से कहा मैं ने पांच सो दीनार दिये और आप ने एक हज़ार दीनार दिये ह़ालां कि आप मेरी रिआ़या में शामिल हैं उन्हों ने फ़रमाया ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! मुझे हर रोज़ एक हज़ार दीनार की आमदनी होती है तो मैं ने शर्म मह़सूस की, कि एक दिन की आमदनी से कम दूं।

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 78 ता 80)

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते लैष बिन सा'द पर ज़कात कभी वाजिब नहीं हुई हालां कि उन की यौमिया आमदनी एक हज़ार दीनार थी ।

मन्क़ूल है कि एक औ़रत ने ह़ज़रते लैष बिन सा'द رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ से कुछ शहद मांगा तो उन्हों ने एक मशक शहद देने का हुक्म दिया । कहा गया कि इस का काम इस से कम के साथ भी चल सकता था आप ने फ़रमाया अगर्चे इस ने अपनी ज़रूरत के मुत़ाबिक़ मांगा है लेकिन चूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने हमें बा कषरत दिया है लिहाज़ा हम ने भी उसे उस की ज़रूरत से ज़ाइद दिया ।

ह़ज़रते लैष बिन सा'द رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ रोज़ाना जब तक तीन सो साठ मिस्कीनों को स-दक़ा न दे देते उस वक़्त तक कलाम न करते ।[1]

और ह़दीषे क़ुदसी है :

عَنِ الْحَسَنِ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فِیْمَا یَرْوِیْ عَنْ رَبِّہٖ عزوجل اَنَّہٗ یَقُوْلُ: "یَا ابْنَ آدَمَ اَفْرِغْ مِنْ کَنْزِکَ عِنْدِیْ وَلَا حَرَقَ، وَلَا غَرَقَ، وَلَا سَرَقَ اُوْفِیْکَہٗ اَحْوَجَ مَا تَکُوْنُ اِلَیْہِ."[2]

ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़दीषे क़ुदसी बयान फ़रमाई, रब तआ़ला फ़रमाता है : ऐ इब्ने आदम ! अपना ख़ज़ाना (स-दक़ा कर के) मेरे सिपुर्द कर दे न जलेगा न डूबेगा और न चोरी होगा तेरी शदीद ह़ाजत के वक़्त (बरोज़े क़ियामत) तुझे लौटा दूंगा ।[2]

مدینہ

1 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، حكايات الأسخياء، ج٣، ص٣٣٤)

2 (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب في الصدقة والحث عليها...إلخ، الحديث: ٣٠، ج٢، ص١١)

बुज़ुर्गाने दीन رَحمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡھِمۡ اَجۡمَعِیۡن अपने माल व मताअ़ रिज़ाए रब्बुल उ़ला عَزَّوَجَلَّ के हुसूल की ख़्वाहिश में ख़र्च करते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बड़े अज्र की उम्मीद रखते, इमाम ग़ज़ाली رَحمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सईद बिन आ़स से कुछ मांगा तो उन्हों ने एक लाख दिरहम देने का हुक्म दिया वोह शख़्स रो पड़ा। सईद बिन आ़स ने रोने की वजह पूछी तो उस ने कहा मैं इस बात पर रो रहा हूं कि ज़मीन तुम जैसे लोगों को भी खा लेगी उन्हों ने उसे मज़ीद एक लाख दिरहम देने का हुक्म दिया।

ह़ज़रते रबीअ़ बिन सुलैमान फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने इमाम शाफ़ेई رَحمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ (की सुवारी) की रिकाब पकड़ी तो आप ने फ़रमाया ऐ रबीअ़ इसे चार दिरहम दे दो और मेरी त़रफ़ से मा'ज़िरत भी करो।

ह़ज़रते आ'मश رَحمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं मेरी एक बकरी बीमार हो गई तो ह़ज़रते ख़ैषमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान सुब्ह़ो शाम उस की इयादत के लिये आते और मुझ से पूछते क्या वोह घास अच्छी त़रह़ खाती है और बच्चे उस के दूध के बिग़ैर किस त़रह़ गुज़ारा करते होंगे ? मैं जिस गद्दे पर बैठा करता था उस के नीचे वोह कुछ रक़म रख दिया करते और जाते वक़्त फ़रमाते गद्दे के नीचे जो कुछ है ले लो ह़त्ता कि बकरी की बीमारी के दौरान मुझे तीन सो से ज़ियादा दीनार दे गए।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

मदينه

1 (إحياء علوم الدين،كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، حكايات الأسخياء،ج٣،ص٣٣٤)

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: كَانَ أَبُو طَلْحَةَ أَكْثَرَ الْأَنْصَارِ بِالْمَدِيْنَةِ مَالًا مِّنْ نَخْلٍ، وَكَانَ أَحَبَّ أَمْوَالِهِ إِلَيْهِ بَيْرَحَاءُ، وَكَانَتْ مُسْتَقْبِلَةَ الْمَسْجِدِ، وَكَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْخُلُهَا وَيَشْرَبُ مِنْ مَّاءٍ فِيْهَا طَيِّبٍ. قَالَ أَنَسٌ: فَلَمَّا نَزَلَتْ هٰذِهِ الْآيَةُ: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ﴾ [آل عمران:٩٢/٣]. قَامَ أَبُو طَلْحَةَ إِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ إِنَّ اللّٰهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى يَقُوْلُ: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ﴾، وَإِنَّ أَحَبَّ أَمْوَالِيْ إِلَيَّ بَيْرَحَاءُ، وَإِنَّهَا صَدَقَةٌ لِّلّٰهِ تَعَالٰى أَرْجُوْ بِرَّهَا وَذُخْرَهَا عِنْدَ اللّٰهِ فَضَعْهَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ حَيْثُ أَرَاكَ اللّٰهُ. قَالَ: فَقَالَ

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा मदीने में तमाम अन्सार से ज़ियादा बाग़ों के मालिक थे और उन्हें ज़ियादा प्यारा बाग़ बैरह़ाअ था जो मस्जिद शरीफ़ के सामने था रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वहां तशरीफ़ ले जाते थे और वहां का बेहतरीन पानी पीते थे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब येह आयत ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰی تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ﴾ [آل عمران:٩٢/٣] नाज़िल हुई तो ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह ! रब तआ़ला फ़रमाता है कि "तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो" (कन्ज़ुल ईमान) और मुझे अपने मालों से पसन्दीदा माल बाग़ बैरह़ाअ है अब वोह **अल्लाह** के लिये स-दक़ा है मैं **अल्लाह** के पास इस का षवाब और इस का ज़ख़ीरा चाहता हूं । या रसूलल्लाह

رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "بَخٍ، ذٰلِكَ مَالٌ رَابِحٌ، ذٰلِكَ مَالٌ رَابِحٌ. وَقَدْ سَمِعْتُ مَا قُلْتَ، وَإِنِّي أَرٰى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الْأَقْرَبِيْنَ". فَقَالَ أَبُوْ طَلْحَةَ: أَفْعَلُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! فَقَسَمَهَا أَبُوْ طَلْحَةَ فِيْ أَقَارِبِهِ وَبَنِيْ عَمِّهِ.[1]

आप इसे वहां ख़र्च करें जहां रब तआ़ला आप की राय क़ाइम फ़रमाए रावी फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ख़ूब ख़ूब येह तो बड़ा नफ़्अ़ का माल है जो तुम ने कहा मैं ने सुन लिया मेरी राय है कि तुम इसे अपने अहले क़राबत में वक़्फ़ कर दो, अबू त़ल्ह़ा बोले या रसूलल्लाह मैं येही करता हूं फिर उसे अबू त़ल्ह़ा ने अपने अ़ज़ीज़ों और चचाज़ादों में तक़्सीम कर दिया।[1]

बैरह़ाअ ह़ज़रते त़ल्ह़ा के एक बाग़ का नाम है, इस नाम के मुह़द्दिषीन ने आठ मा'ना किये हैं जिन में से एक : ह़ाअ एक आदमी का नाम था जिस ने कुंवां खुदवाया था चूंकि येह कुंवां उस बाग़ में था, लिहाज़ा बाग़ भी येही हुवा, वोह कुंवां अब तक मौजूद है (ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ां साहिब नईमी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं) फ़क़ीर ने उस का पानी पिया है, दूसरे येह कि बैरह़ाअ बर वज़्ने फ़ईल है एक ही लफ़्ज़ है बराह़ से मुश्तक़ ब मा'ना खुली ज़मीन, पहली सूरत में इस के मा'ना होंगे ह़ाअ का कुंवां, दूसरी सूरत में मा'ना होंगे खुला बाग़।

مدينه

[1] (سنن الدارمي، كتاب الزكاة،باب أي الصدقة أفضل؟،الحديث:١٦٥٥،ص٤٨٤)
(صحيح البخاري، كتاب الزكاة،باب الزكاة على الأقارب،الحديث:١٤٦١،ج١،ص٣٠٩)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة،باب فضل النفقة والصدقة...إلخ،
الحديث:٤٢ـ(٩٩٨)،ص٣٦٠)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب أفضل الصدقة، الفصل الثالث، الحديث:١٩٤٥، ج١، ص٣٦٨)

हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को भी यहां का पानी बहुत महबूब था, इसी लिये हुज्जाजे बा ख़बर ज़रूर इस का पानी बरकत के लिये पीते हैं।

हज़रते अबू त़ल्ह़ा के इस अ़र्ज़ व मा'रूज़ का मक़्सद येह था कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप के इस अ़मले ख़ैर पर गवाह हो जाएं और मुसलमानों में इस वक़्फ़ का ए'लान हो जाए। ख़याल रहे कि दूसरे नफ़्ली स-दक़ात अकषर खुफ़्या देना बेहतर हैं मगर वक़्फ़ का हर त़रह़ ए'लान कर देना सख़्त ज़रूरी है ताकि आयन्दा उस मौक़ूफ़ चीज़ पर कोई क़ब्ज़ा न कर सके ह़त्ता कि मस्जिद की इमारत में मीनार गुम्बद वग़ैरा ऐसे निशानात क़ाइम कर दिये जाएं जिस से वोह दूर से ही मस्जिद मा'लूम हो इस में रिया नहीं बल्कि वक़्फ़ का बाक़ी रखना है नीज़ आप का अपना दिली इख़्लास ज़ाहिर करना रिया के लिये न था बल्कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से दुआ़ ह़ासिल करने के लिये था लिहाज़ा ह़दीषे पाक पर कोई ए'तिराज़ नहीं।

और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में बाग़ पेश करने का मक़्सद येह था कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जहां चाहें इस बाग़ की आमदनी लगा दें कि वहां ख़र्च होती रहे चूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का चाहना अपने नफ़्स की त़रफ़ से नहीं होता बल्कि रब तआ़ला की त़रफ़ से होता है इसी लिये इस त़रह़ अ़र्ज़ किया حَیۡثُ اَرَاكَ اللّٰہ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھُم अपने स-दक़े हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक से ख़र्च कराते थे ताकि इस हाथ की बरकत से क़बूल हो जाएं, रब तआ़ला फ़रमाता है : (﴿خُذۡ مِنۡ اَمۡوَالِہِمۡ صَدَقَۃً تُطَہِّرُہُمۡ وَتُزَکِّیۡہِمۡ بِہَا﴾ [التوبة:٩/١٠٣]

तर्जमा : ऐ मह़बूब उन के माल में से ज़कात तह़सील करो जिस से तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो। (कन्ज़ुल ईमान)) या'नी आप इन के मालों के

स-दक़े वुसूल फ़रमा लें और इन के ज़रीए इन्हें पाक व साफ़ फ़रमा दें आज मुसलमान ख़त्म व फ़ातिहा में अर्ज़ करते हैं नज़्रे अल्लाह, नियाज़े रसूलुल्लाह इस का माख़ज़ येह ह़दीष भी है।[1] अ़-रबी में निहायत ख़ुशी के वक़्त कहा जाता है بَخٍ بَخٍ या'नी ख़ूब ख़ूब, رَابِحٌ، رِبحٌ से बना, ब मा'ना नफ़्अ़, रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿فَمَا رَبِحَتْ تِجَارَتُهُمْ﴾ [البقرة:٢/١٦] तर्जमा : तो इन का सौदा कुछ नफ़्अ़ न लाया। (कन्ज़ुल ईमान)) या'नी (ह़दीष शरीफ़ में जो तज़्किरा हुवा कि) येह माल बहुत नफ़्अ़ वाला है जैसे लाबन दूध वाला और तामर छुवारों वाला या'नी ऐ अबू त़ल्ह़ा तुम्हें इस बाग़ के वक़्फ़ से बहुत नफ़्अ़ होगा मा'लूम होता है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को आ'माल की क़बूलिय्यत की भी ख़बर है और येह भी कि किस का कौन सा अ़मल किस दरजे का क़बूल है येह बाग़ क्यूं क़बूल न होता बाग़ भी अच्छा था वक़्फ़ करने वाले भी अच्छे या'नी सह़ाबी और जिन के तुफ़ैल किया गया वोह अच्छों के शहनशाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस बाग़ को अहले क़राबत के लिये वक़्फ़ करने का फ़रमाया, या'नी अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब फ़ुक़रा को इस का मसरफ़ बना दो कि हमेशा वोह इस की आमदनी खाया करें ताकि तुम्हें स-दक़े के साथ अहले क़राबत के हुक़ूक़ अदा करने का भी षवाब मिलता रहे ख़याल रहे कि बा'ज़ अवक़ाफ़ वोह होते हैं जिन से अमीर व ग़रीब ह़त्ता कि वक़्फ़ करने वाला भी नफ़्अ़ ह़ासिल कर सकता है जैसे कुंवां, मस्जिद, क़ब्रिस्तान, मुसाफ़िर ख़ाना।"[2]

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 126)
2. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 126)

हज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं मैं हमेशा हज़रते हम्माद बिन अबी सुलैमान से महब्बत करता हूं कि उन की त़रफ़ से मुझे एक बात पहुंची है वोही इस महब्बत का बाइ़ष है वोह येह कि वोह एक दिन अपने दराज़ गोश पर सुवार थे उन्हों ने उसे ह़रकत दी तो उस का तस्मा टूट गया वोह एक दरज़ी के पास से गुज़रे तो इरादा किया कि उतर कर इस तस्मे को ठीक करवाएं दरज़ी ने क़सम दे कर कहा कि आप न उतरें चुनान्चे उस ने खुद ही खड़े हो कर तस्मा दुरुस्त कर दिया उन्हों ने एक थैली निकाली जिस में दस दीनार थे और वोह दरज़ी के ह़वाले कर दी और मा'ज़िरत की, कि येह रक़म कम है ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने येह शे'र पढ़े :

يَـا لَهْفَ قَـلْبِـيْ عَـلٰى مَـالٍ أَجُوْدُ بِـهٖ
عَـلَى الْـمُـقِلِّيْنَ مِنْ أَهْلِ الْمُرُوْءَاتِ

إِنَّ اعْتِـذَارِيْ إِلٰـى مَـنْ جَـاءَ يَسْـأَلُنِيْ
مَـا لَيْـسَ عِـنْـدِيْ لَـمِنْ اِحْدَى الْمُصِيْبَاتِ

मेरा दिल उस माल पर अफ़्सुर्दा है जिसे मैं अहले मुरुव्वत पर ख़र्च करता हूं और जो मेरे पास आ कर मुझ से वोह चीज़ मांगता है जो मेरे पास नहीं तो उस से मेरा मा'ज़िरत करना येह भी मेरे लिये एक मुसीबत है।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

---

1 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال،بيان فضيلة السخاء، حكايات الأسخياء،ج٣،ص٣٣٦)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "خَيْرُ الصَّدَقَةِ مَا كَانَ عَنْ ظَهْرِ غِنًى، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِّنَ الْيَدِ السُّفْلٰى وَابْدَأْ بِمَنْ تَعُوْلُ"، قَالَ: وَمَنْ أَعُوْلُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: "اِمْرَأَتُكَ تَقُوْلُ: أَطْعِمْنِي إِلَّا فَارِقْنِي، خَادِمُكَ يَقُوْلُ: أَطْعِمْنِي وَاسْتَعْمِلْنِي، وَلَدُكَ يَقُوْلُ: إِلٰى مَنْ تَتْرُكُنِي"۔[1]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عنہُ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत फ़रमाते हैं, कि आप ने फ़रमाया, बेहतरीन स-दक़ा वोह है जिस के बा'द मोह़ताजी न पैदा हो और ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है, और ख़र्च करने में उन से इब्तिदा कर जो तेरे ज़ेरे कफ़ालत हैं, रावी ने अ़र्ज़ की, मेरी कफ़ालत में कौन हैं या रसूलल्लाह ? आप ने फ़रमाया : तुम्हारी बीवी जो कहे कि मुझे खाना खिलाओ वरना त़लाक़ दो, तुम्हारा ख़ादिम जो कहे कि मुझे खाना खिलाओ और मुझ से काम लो, और तुम्हारा बेटा जो कहे मुझे किस के रह़्मो करम पर छोड़ते हो ?[1]

एक शख़्स अपने दोस्त के दरवाज़े पर गया और दरवाज़ा खट-खटाया उस ने पूछा कैसे आना हुवा ? उस ने कहा मुझ पर चार सो दिरहम क़र्ज़ हैं उस ने चार सो दिरहम तोल कर उस के ह़वाले कर दिये और रोता हुवा वापस आया बीवी ने कहा अगर तुझे उन दिरहमों का देना शाक़ था तो न देते उस ने कहा मैं तो इस लिये रो रहा हूं कि मुझे उस का ह़ाल उस के बताए बिग़ैर मा'लूम न हो सका ह़त्ता कि वोह मेरा दरवाज़ा खट-खटाने पर मजबूर हुवा ।[2]

---

1 (سنن الدار قطني، كتاب النكاح، باب المهر، الحديث: ٣٧٣٨، ج٢، ص٢٠٥)

2 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، حكايات الأسخياء، ج٣، ص٣٣٧)

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ أَيُّ الصَّدَقَةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: "جَهْدُ الْمُقِلِّ، وَابْدَأْ بِمَنْ تَعُولُ" [1]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, उन्हों ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! कौन सा स-दक़ा ज़ियादा बेहतर है ? फ़रमाया ग़रीब आदमी की मशक़्क़त और (देने में) उन से शुरूअ़ करो जिन की परवरिश करते हो।[1]

جهد المقلّ की शर्ह़ में अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी ह़नफ़ी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं جهد المقلّ जीम के ज़म्मा (पेश) के साथ क़लील माल की मिक़्दार मुराद है येह भी मा'ना हैं कि वुस्अ़त और त़ाक़त मुराद है और जीम के फ़त्ह़ा (ज़बर) के साथ मशक़्क़त मुराद है। मा'ना येह हुए कि अफ़्ज़ल स-दक़ा ग़रीब की मशक़्क़त की कमाई का है या ग़रीब आदमी की मशक़्क़त की कमाई अफ़्ज़ल स-दक़ा है।[2]

"या'नी ग़रीब आदमी मेह़नत मज़्दूरी करे फिर उस में से ख़ैरात भी करे, इस का बड़ा दरजा है ख़याल रहे कि बा'ज़ लिह़ाज़ से ग़नी की ख़ैरात अफ़्ज़ल है जब कि वोह तवक्कुल में कामिल न हो और बा'ज़ लिह़ाज़ से फ़क़ीर की ख़ैरात अफ़्ज़ल है जब कि वोह और उस के घर वाले सब्रो तवक्कुल में कामिल हों। लिहाज़ा येह ह़दीष (उस ह़दीष) के ख़िलाफ़ नहीं कि स-दक़ए

مدينه

1 (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب في الرخصة في ذلك، الحديث: ١٦٧٧، ج٢، ص٢١٣)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب أفضل الصدقة، الفصل الثاني، الحديث: ١٩٣٨، ج١، ص٣٦٨)

2 (شرح سنن أبي داود للعيني، كتاب الزكاة، باب في الرخصة في ذلك، ج٦، ص٤٣١، مكتبة الرشد، المملكة العربية)

गि़ना (या'नी ग़नी होते हुए स-दक़ा करना) बेहतर है खुलासा येह है कि अगर हाथ का फ़क़ीर दिल का ग़नी थोड़ी सी ख़ैरात कर ले तो हाथ के ग़नी की बहुत सी ख़ैरात से अफ़्ज़ल है लिहाज़ा वहां ग़नी वाली ह़दीष में दिल की गि़ना मुराद हो सकती है तब भी अह़ादीष में तआ़रुज़ नहीं।"

"कोई शख़्स अपने बाल बच्चों को भूका रख कर ख़ैरात न करे, पहले उन का पेट भरो, तन ढको, फिर ख़ैरात करो येह मत़्लब नहीं कि अपनी ज़कात पहले अपने बाल बच्चों को दो, फिर दूसरों को, क्यूं कि अपनी ज़कात अपनी अवलाद और बीवी पर नहीं लगती।"[1]

मरवी है कि ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के ज़िम्मे ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के पचास हज़ार दिरहम थे एक दिन ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए तो ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया आप का माल तय्यार है क़ब्ज़ा कीजिये ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया मैं ने आप को दे दिये ताकि आप को मुरुव्वत (सख़ावत) पर मदद ह़ासिल हो।

ह़ज़रते सौ'दा बिन्ते औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं, मैं ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुई तो उन की त़बीअ़त बोझल देख कर पूछा आप को क्या हुवा? उन्हों ने फ़रमाया मेरे पास माल जम्अ़ हो गया है जिस की वजह से मैं ग़मगीन हूं मैं ने पूछा आप को क्या ग़म है अपनी क़ौम को बुला कर तक़्सीम कर दें चुनान्चे उन्हों ने अपने ग़ुलाम को भेज कर अपनी क़ौम को बुलाया और वोह माल उन में तक़्सीम कर दिया मैं ने ख़ादिम से पूछा कि कितना माल था? उस ने कहा चार लाख।[2]

1. (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 122)

٢ (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، حكايات الأسخياء، ج٣، ص٣٣٧)

हदीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "سَبَقَ دِرْهَمٌ مِائَةَ أَلْفِ دِرْهَمٍ، قَالُوْا: وَكَيْفَ؟ قَالَ: "كَانَ لِرَجُلٍ دِرْهَمَانِ تَصَدَّقَ بِأَحَدِهِمَا، وَانْطَلَقَ رَجُلٌ إِلٰى عُرْضِ مَالِهِ فَأَخَذَ مِنْهُ مِائَةَ أَلْفِ دِرْهَمٍ فَتَصَدَّقَ بِهَا".[1]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, एक दिरहम एक लाख दिरहम से सब्क़त ले गया, सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ की, वोह कैसे ? फ़रमाया (वोह यूं) कि एक शख़्स के पास फ़क़त दो दिरहम थे उस ने उन में से एक दिरहम स-दक़ा कर दिया और एक (मालदार) शख़्स अपने माल की त़रफ़ गया और उस में से उस ने एक लाख दिरहम ले कर स-दक़ा कर दिया ।[1]

क्यूं कि मालदार शख़्स ने अगर्चे पहले की ब निस्बत एक लाख गुना ज़ियादा स-दक़ा किया मगर उस के एक लाख पर पहले शख़्स का एक दिरहम ग़ालिब आ गया, वजह येह है कि उस ने अपना निस्फ़ माल राहे खुदा में स-दक़ा किया जब कि मालदार ने निस्फ़ से कम किया ।

चुनान्चे अ़ल्लामा सिन्धी फ़रमाते हैं, हदीष के ज़ाहिर मा'ना येह हैं कि अज्र, देने वाले के ह़ाल के मुत़ाबिक़ होता है न कि माल के । कि दो दिरहम वाले ने अपना निस्फ़ माल दिया जब कि ग़नी ने (अगर्चे एक लाख दिरहम दिये मगर) निस्फ़ से कम दिया था ।[2]

1 (سنن النسائي، كتاب الزكاة،باب جهد المقل،الحديث: ٢٥٢٦،الجزء٥،ج٣،ص٦٢)

2 (حاشية العلامة السندي على سنن النسائي، كتاب الزكاة،باب جهد المقل،الحديث: ٢٥٢٦، الجزء٥،ج٣،ص٦٢)

हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم ने फ़रमाया, अगर तेरे पास दुन्या आ जाए तो उसे ख़र्च कर इस लिये कि ख़र्च किया हुवा फ़ना नहीं होगा और अगर तुझ से दूर हो जाए फिर भी उसे ख़र्च करने से दरेग़ न करना क्यूं कि वोह बाक़ी नहीं रहेगी।[1]

हज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُ ने हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُ से मुरुव्वत, बहादुरी और करम के बारे में सुवाल किया तो उन्हों ने जवाबन फ़रमाया मुरुव्वत येह है कि इन्सान अपने दीन की ह़िफ़ाज़त करे नफ़्स को बचा बचा कर रखे मेहमान की मेहमान नवाज़ी अच्छी त़रह़ करे और अगर झगड़े और मकरूह काम में दाख़िल होना पड़े तो अच्छे त़रीक़े इख़्तियार करे। दिलेरी और बड़ाई येह है कि हमसाए की मुसीबत दूर करे और सब्र की जगहों में सब्र करें और करम येह है कि किसी के मांगने से पहले ख़ुद अपनी त़रफ़ से नेकी का सुलूक करे, ज़रूरत मन्द को खाना खिलाए और साइल को कुछ देने के साथ साथ उस से मेहरबानी और रह़मत का सुलूक करे।[2]

और रह़मत का सुलूक करने के मुतअ़ल्लिक़ इमाम ग़ज़ाली बहुत अच्छी ह़िकायत बयान करते हैं :

एक शख़्स ने ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُ की ख़िदमत में एक दरख़्वास्त पेश की। आप ने फ़रमाया तुम्हारी ह़ाजत पूरी कर दी गई। अ़र्ज़ किया गया ऐ नवासए रसूल ! आप उस का रुक़्आ़ पढ़ते और फिर उस के मुत़ाबिक़ जवाब देते आप ने फ़रमाया वोह मेरे सामने ज़िल्लत के साथ खड़ा रहता तो फिर उस के बारे में **अल्लाह** तआ़ला मुझ से पूछता।[3]

مدینہ

۱ (إحیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان فضیلة السخاء، الآثار، ج۳، ص۳۲۹)
۲ (إحیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان فضیلة السخاء، الآثار، ج۳، ص۳۳۰)
۳ (إحیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان فضیلة السخاء، الآثار، ج۳، ص۳۳۰)

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! मा'ना येह हैं कि इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़शिय्यते इलाही को अपने माल पर मुक़द्दम रखा और इसी में फ़लाह़ है कि माल की मह़ब्बत **अल्लाह** की मह़ब्बत पर ग़ालिब नहीं आनी चाहिये।

माल से अगर्चे गरदनें ख़रीदी जा सकती हैं मगर दिल नहीं ! चुनान्चे :

ह़ज़रते इब्ने सम्माक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं मुझे उस शख़्स पर तअ़ज्जुब होता है जो माल ख़र्च कर के ग़ुलाम ख़रीदता है लेकिन नेकी के ज़रीए़ लोगों (के दिलों) को नहीं ख़रीदता।[1]

किसी देहाती से पूछा गया कि तुम्हारा सरदार कौन है ? उस ने कहा वोह शख़्स जो हमारी गालियों को बरदाश्त करे हमारे मांगने वालों को अ़त़ा करे और हमारे जाहिलों से दर गुज़र करे।[2]

ह़ज़रते अ़ली बिन ह़ुसैन (इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं जो शख़्स मांगने वालों को देता है वोह सख़ी नहीं है बल्कि सख़ी वोह है कि जो **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त करने वालों के सिल्सिले में **अल्लाह** तआ़ला के ह़ुक़ूक़ को ख़ुद ब ख़ुद पूरा करता है। और शुक्रिया की लालच नहीं रखता क्यूं कि वोह मुकम्मल षवाब के ह़ुसूल का यक़ीन रखता है।[3]

इसी त़रह़ एक और ह़दीष में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने की तल्क़ीन की गई है :

مدینہ

۱ (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، الآثار،ج٣،ص٣٣٠)
۲ (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، الآثار،ج٣،ص٣٣٠)
۳ (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، الآثار،ج٣،ص٣٣٠)

عَنْ أُمِّ بُجَيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ إِنَّ الْمِسْكِينَ لَيَقُومُ عَلَى بَابِي فَمَا أَجِدُ لَهُ شَيْئًا أُعْطِيهِ إِيَّاهُ، فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنْ لَمْ تَجِدِي شَيْئًا تُعْطِينَهُ إِيَّاهُ إِلَّا ظِلْفًا مُحْرَقًا فَادْفَعِيهِ إِلَيْهِ فِي يَدِهِ".[1]

हज़रते उम्मे बुजैद رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنھَا से मरवी है फ़रमाती हैं, मैं ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे दरवाज़े पर कोई मिस्कीन आता है और मैं उसे देने के लिये कोई चीज़ नहीं पाती। तो उन से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, अगर तुम्हारे पास उसे देने के लिये जले हुए खुर के सिवा कुछ न हो तो वोही दे दो।[1]

या'नी कोशिश होनी चाहिये कि ख़ाली हाथ न लौटे।

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते अह़नफ़ बिन क़ैस رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ ने एक शख़्स को देखा जिस के हाथ में दिरहम था उन्हों ने पूछा येह दिरहम किस का है ? उस ने कहा मेरा है। उन्हों ने फ़रमाया उस वक़्त होगा जब तेरे हाथ से निकल जाएगा इसी मफ़्हूम में कहा गया है :

أَنْتَ لِلْمَالِ إِذَا أَمْسَكْتَهُ
فَإِذَا أَنْفَقْتَهُ فَالْمَالُ لَكْ

---

[1] (الموطا للإمام مالك، كتاب صفة النبي صلى الله تعالىٰ عليه وسلم، باب ما جاء في المسكين، الحديث:[١٧١٤]-٨، ج١، ص٥١٥)
(سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب حق السائل، الحديث: ١٦٦٧، ج٢، ص٢١٠)
(سنن الترمذي، كتاب الزكاة، باب ما جاء في حق السائل، الحديث: ٦٦٥، ج١، ص٤٧٨-٤٧٩)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب رد السائل، الحديث: ٢٥٦٣، الجزء٥، ج٣، ص٨٦)

या'नी, जब तक तू माल को रोक कर रखे तो तू माल का है और जब तू उसे ख़र्च कर दे तो माल तेरा है।[1]

अल्लाह वाले उस की राह में ख़र्च करने को ही पसन्द करते हैं इसी लिये ख़र्च करने के बा'द भी दिया हुवा कम लगता है, चुनान्चे :

अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने ह़ज़रते अस्मा बिन ख़ारिजा رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه से कहा कि मुझे आप की चन्द अच्छी आ़दात की ख़बर पहुंची है मुझ से बयान कीजिये उन्हों ने फ़रमाया कि मेरे बजाए किसी दूसरे आदमी से सुनते तो ज़ियादा बेहतर होता अ़ब्दुल मलिक ने कहा मैं आप को क़सम देता हूं कि आप ही मुझे सुनाएं।

उन्हों ने फ़रमाया ऐ अमीरल मुअमिनीन ! मैं ने अपने हम नशीं के सामने कभी पाउं नहीं फैलाए और जब भी लोगों के लिये खाना पकाया और उन को दा'वत दी तो मैं ने एह़सान के बजाए अपने ऊपर उन का एह़सान समझा और जब कभी किसी शख़्स ने मुझ से सुवाल किया तो मैं ने जो कुछ उसे दिया उसे ज़ियादा ख़याल नहीं किया।[2]

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه जब मिस्र में मरज़ुल मौत में मुब्तला हुए तो फ़रमाया फ़ुलां आदमी से कहना कि वोह मुझे ग़ुस्ल दे जब आप का इन्तिक़ाल हुवा और उस शख़्स को आप की वफ़ात का इ़ल्म हुवा तो वोह ह़ाज़िर हुवा और कहने लगा इन के अख़राजात का रजिस्टर लाओ जब रजिस्टर लाया गया तो उस ने उस में देखा कि ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه पर सत्तर हज़ार दिरहम क़र्ज़ हैं उस ने वोह

मدينه
---

1 (إحياء علوم الدين،كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، الآثار،ج٣،ص٣٣٠)
2 (إحياء علوم الدين،كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، الآثار،ج٣، ص٣٣٤-٣٣٥)

अपने नाम पर कर के अदा कर दिये और फ़रमाया कि मेरा इन को ग़ुस्ल देना येही था और इन की मुराद भी येही थी (कि मैं क़र्ज़ की मैल कुचैल से इन को पाक कर दूं) ।[1]

और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَوْ كَانَ لِيْ مِثْلُ أُحُدٍ ذَهَبًا، لَسَرَّنِيْ أَنْ لَّا يَمُرَّ عَلَيَّ ثَلَاثُ لَيَالٍ وَعِنْدِيْ مِنْهُ شَيْءٌ، إِلَّا شَيْءٌ أُرْصِدُهُ لِدَيْنٍ". [2]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, अगर मेरे पास उहुद पहाड़ बराबर भी सोना हो तो येह बात मुझे पसन्द नहीं कि उस पर तीन रातें गुज़र जाएं और कुछ भी उस में से मेरे पास रहे सिवाए उस के कि जो मैं क़र्ज़ अदा करने के लिये रख छोड़ूं ।[2]

"ह़दीष का मत़्लब बिल्कुल ज़ाहिर है, येह गुफ़्त्गू ज़ाहिर के लिहाज़ से है, वरना नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अगर चाहते तो आप के साथ सोने के पहाड़ चला करते, जैसा कि दूसरी ह़दीष में सराह़तन मज़्कूर है उस में इशारतन फ़रमाया गया कि मक़रूज़ नफ़्ली स-दक़ा न दे बल्कि पहले क़र्ज़ अदा करे, नीज़ इतनी अ़ज़ीमुश्शान सख़ावत वोह कर सकता है जिस के बाल बच्चे भी साबिर शाकिर हों वरना उन्हें भूका मार कर नफ़्ली ख़ैरात न करो । ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने सब कुछ

مدینہ

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، الآثار، ج٣، ص٣٣٥)

[2] (صحيح البخارى، كتاب في الاستقراض...الخ، باب أداء الديون، الحديث:٢٣٨٩، ج٢، ص٩٥)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب تغليظ عقوبة من لا يؤدي الزكاة، الحديث:٣١ـ(٩٩١)، ص٣٥٧)
(سنن ابن ماجة، كتاب الزهد، باب في المكثرين، الحديث: ٤١٣٢، ج٤، ص٤٨٠)

ख़ैरात कर दिया उस की वजह येह थी कि उन के घर वाले भी साबिरीन के सरदार थे लिहाज़ा येह ह़दीष के ख़िलाफ़ नहीं कि तुम पर तुम्हारी बीवी का ह़क़ भी है और तुम्हारे बच्चों का भी, क्यूं कि वहां हम जैसों के लिये क़ानून का ज़िक्र है और यहां उन हु़ज़ूर दाता के ख़ुसूसी करम का।"[1]

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं मौजूद चीज़ को पूरी मेह़नत और मह़ब्बत के साथ ख़र्च करना जूद व सख़ावत की इन्तिहा है। किसी दाना से पूछा गया कि लोगों में से कौन शख़्स आप के नज़्दीक पसन्दीदा है ? उन्हों ने फ़रमाया जिस ने मुझे ज़ियादा दिया हो। पूछा गया अगर ऐसा न हो तो ? फ़रमाया जिस को मैं ने ज़ियादा दिया हो।[2]

ख़लीफ़ा महदी ने शबीब बिन शिबा से पूछा कि आप ने मेरे घर में लोगों को कैसा पाया ? उन्हों ने जवाब दिया, अमीरल मुअमिनीन ! लोग वहां उम्मीद ले कर जाते हैं और राज़ी हो कर वापस आते हैं एक शख़्स ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه के सामने येह दो शे'र पढ़े :

إِنَّ الصَّنِيْعَةَ لَا تَكُوْنُ صَنِيْعَةً ... حَتّٰى يُصَابَ بِهَا طَرِيْقُ الْمَصْنَعِ

فَإِذَا اصْطَنَعْتَ صَنِيْعَةً فَاعْمِدْ بِهَا ... لِلّٰهِ أَوْ لِذَوِي الْقَرَابَةِ أَوْ دَعْ

एह़सान तो उस वक़्त एह़सान होता है जब वोह मौक़अ़ मह़ल के मुत़ाबिक़ हो तो जब तुम कोई एह़सान करने लगो तो **अल्लाह** तआ़ला की राह में दो या क़राबत दारों को दो या छोड़ दो।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया येह दो शे'र तो लोगों को बख़ील बना देंगे लेकिन मैं तो मूसलाधार बारिश की त़रह

مدینہ

[1] (مرآۃ المناجیح، ج۳، ص۶۹)

[2] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، الآثار، ج۳، ص۳۲۰)

नेकी करूंगा अगर वोह अच्छे लोगों तक पहुंच गई तो वोह इस के मुस्तहि़क़ हैं और अगर बुरे लोगों तक पहुंची तो मैं इस का अहल हूं।[1]

हृदीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِـىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ، عَـنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَـلَيْـهِ وَسَـلَّـمَ، قَـالَ: "بَيْنَا رَجُلٌ بِـفَلَاةٍ مِـنَ الْأَرْضِ فَسَمِعَ صَوْتاً فِـي سَـحَابَةٍ، اسْقِ حَدِيقَةَ فُلَانٍ، فَتَـنَـحَّـى ذٰلِكَ الـسَّـحَابُ فَأَفْرَغَ مَـاءَهُ فِـي حَـرَّةٍ، فَإِذَا شَرْجَةٌ مِنْ تِلْكَ الشِّرَاجِ قَدِ اسْتَوْعَبَتْ ذٰلِكَ الْـمَاءَ كُلَّهُ، فَتَتَبَّعَ الْمَاءَ فَإِذَا رَجُلٌ قَـائِـمٌ فِـي حَدِيقَتِهِ، يُحَوِّلُ الْمَاءَ بِـمِسْـحَـاتِهِ، فَقَالَ لَهُ: يَا عَبْدَ اللّٰهِ مَـا اسْـمُكَ؟ فَقَالَ: فُلَانٌ، الإِسْمُ الَّـذِي سَـمِـعَ فِي السَّحَابَةِ، فَقَالَ لَـهُ: يَـا عَـبْـدَ اللّٰهِ! لِمَ تَسْأَلُنِي عَنِ

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, एक शख़्स किसी ज़मीन के जंगल में था उस ने बादल में आवाज़ सुनी कि फ़ुलां के बाग़ को सैराब कर येह बादल एक त़रफ़ गया और पथरीली ज़मीन पर पानी बरसाया तो नालियों में से एक नाली ने येह सारा पानी जम्अ़ कर लिया तब येह शख़्स उस पानी के पीछे चल दिया देखा कि एक शख़्स अपने बाग़ में खड़ा हुवा बेलचे से पानी बाग़ में फैर रहा है उस से पूछा कि ऐ **अल्लाह** के बन्दे तेरा नाम क्या है ? वोह बोला फ़ुलां या'नी वोही नाम जो उस ने बादल में सुना था उस ने पूछा ऐ **अल्लाह** के बन्दे तू मेरा

مدینہ
---

1 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، الآثار،ج٣، ص ٣٣٠-٣٣١)

اسْمِي؟ فَقَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ صَوْتاً فِي السَّحَابِ الَّذِي هٰذَا مَاؤُهُ، وَيَقُولُ: اسْقِ حَدِيقَةَ فُلَانٍ لِاسْمِكَ، فَمَا تَصْنَعُ فِيهَا؟ قَالَ: أَمَّا إِذْ قُلْتَ هٰذَا، فَإِنِّي أَنْظُرُ إِلَى مَا يَخْرُجُ مِنْهَا فَأَتَصَدَّقُ بِثُلُثِهِ وَآكُلُ أَنَا وَعِيَالِي ثُلُثاً، وَأَرُدُّ فِيهَا ثُلُثَهُ". [1]

नाम क्यूं पूछता है तो येह बोला कि मैं ने उस बादल में जिस का येह पानी है, एक आवाज़ सुनी थी कि कोई तेरा नाम ले कर कह रहा था कि फ़ुलां के बाग़ को सैराब करो, तो तू इस में क्या नेकी करता है ? वोह बोला कि जब तू पूछता है तो बताता हूं कि मैं इस बाग़ की पैदावार में ग़ौर करता हूं तिहाई तो ख़ैरात कर देता हूं और तिहाई मैं और मेरे बाल बच्चे खाते हैं और तिहाई इस में दोबारा ख़र्च कर देता हूं।[1]

"سُبْحٰنَ اللّٰه उस नेक बन्दे की कैसी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई की गई कि पानी एक पथरीले अ़लाक़े पर बरसाया गया, फिर उसे एक नाली में जम्अ़ किया गया, उस नाली के ज़रीए़ उस के बाग़ में पानी पहुंचाया गया ख़ुद बादल उस बाग़ पर न बरसाया गया, जैसे कि वोह गुनहगार जो एक बस्ती में किसी आ़लिम के पास तौबा करने जा रहा था रस्ते में मर गया रब तआ़ला ने हुक्म दिया कि येह जिस बस्ती से क़रीब हुवा उसी के अह़काम इस पर जारी किये जाएं, नापा गया तो बिल्कुल बीच में था। तो गुनाह की बस्ती पीछे हटाई गई और तौबा की बस्ती आगे बढ़ाई गई, ख़ुद उस की लाश को ह़रकत न दी गई उस के एह़तिराम की वजह से, उस नाले के किनारे वाले खेतों को भी उस के तुफ़ैल पानी मिल गया होगा।"[2]

---

١ (مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب الإنفاق وكراهية الإمساك، الفصل الثالث، الحديث: ١٨٧٧، ج١، ص٣٥٦)

٢ (مرآة المناجيح، ج٣، ص٨٠)

हज़रते वाक़िद बिन मुहम्मद वाक़िदी फ़रमाते हैं मुझ से मेरे वालिद ने बयान किया कि उन्हों ने ख़लीफ़ा मामून को एक रुक्आ़ लिखा जिस में लिखा कि मुझ पर बहुत जि़यादा क़र्ज़ है और अब मुझ से सब्र नहीं हो सकता मामून ने रुक़्ए की पुश्त पर लिखा कि तुम ऐसे आदमी हो जिस में दो ख़स्लतें या'नी सख़ावत और ह़या जम्अ़ हैं। सख़ावत ने तुम्हारे हाथ में कुछ नहीं छोड़ा और ह़या की वजह से तुम ने अपनी ह़ालत हम से बयान नहीं की लिहाज़ा मैं तुम्हारे लिये एक लाख दिरहम का हुक्म देता हूं अगर मेरी येह कारवाई ठीक और मुनासिब है तो ख़ूब हाथ फैलाओ (सख़ावत करो) और अगर ठीक न हो तो तुम्हारा अपना क़ुसूर है तुम हारूनुर्रशीद के ज़माने में क़ाज़ी थे तो तुम ने मुझे एक ह़दीष सुनाई थी कि ह़ज़रते मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने ह़ज़रते ज़ोहरी से उन्हों ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत किया कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से फ़रमाया,

ऐ ज़ुबैर ! जान लो बेशक बन्दों के रिज़्क़ की चाबियां अ़र्श के बिल मुक़ाबिल हैं **अल्लाह** तआ़ला हर बन्दे के ख़र्च के मुताबिक़ उस की त़रफ़ भेजता है जो जि़यादा ख़र्च करता है उसे जि़यादा देता है और जो कम ख़र्च करता है उस की त़रफ़ कम भेजता है।

और आप जानते हैं, वाक़िदी ने फ़रमाया **अल्लाह** की क़सम मामून का मुझ से ह़दीष के बारे में जि़क्र करना इस इन्आ़म से जो एक लाख दिरहम पर मुश्तमिल है, जि़यादा पसन्दीदा है।[1]

सख़ावत जन्नत का दरख़्त है, चुनान्चे :

---

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، حكايات الأسخياء، ج٣، ص٣٣١-٣٣٢)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اَلسَّخَاءُ شَجَرَةٌ فِي الْجَنَّةِ، فَمَنْ كَانَ سَخِيًّا أَخَذَ بِغُصْنٍ مِّنْهَا فَلَمْ يَتْرُكْهُ الْغُصْنُ حَتّٰى يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ. وَالشُّحُّ شَجَرَةٌ فِي النَّارِ، فَمَنْ كَانَ شَحِيْحًا أَخَذَ بِغُصْنٍ مِّنْهَا، فَلَمْ يَتْرُكْهُ الْغُصْنُ حَتّٰى يُدْخِلَهُ النَّارَ"[1]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, सख़ावत जन्नत में एक दरख़्त है जो सख़ी हुवा उस ने उस दरख़्त की शाख़ पकड़ ली वोह शाख़ उसे न छोड़ेगी ह़त्ता कि उसे जन्नत में दाख़िल कर देगी और बुख़्ल आग में दरख़्त है जो बख़ील हुवा उस ने उस की शाख़ पकड़ी वोह उसे न छोड़ेगी ह़त्ता कि आग में दाख़िल करेगी।[1]

"या'नी सख़ावत की जड़ जन्नत में है और उस की शाख़ें दुन्या में, चूंकि सख़ावत की क़िस्में बहुत हैं इस लिये फ़रमाया गया कि उस दरख़्त की दुन्या में शाख़ें बहुत फैली हुई हैं, जैसे क़ुरआने करीम फ़रमाता है कि कलिमए त़य्यिबा की जड़ मुसलमान के क़ल्ब में है और शाख़ें आस्मान में हमेशा अपने फल देता है इस आयत में भी तमषील है इस ह़दीष में भी।"

"शरीअ़त में सख़ावत का अदना दरजा येह है कि इन्सान फ़र्ज़ स-दक़े अदा करे, और त़रीक़त में अदना दरजा येह है कि सिर्फ़ फ़र्ज़ पर क़नाअ़त न करे नवाफ़िल स-दक़े भी दे, ह़क़ीक़त व मा'रिफ़त वालों के हां इस का अदना दरजा येह है कि अपनी ज़रूरियात पर दूसरों की ज़रूरियात

مدینہ

[1] (شعب الإيمان،باب في الجود والسخاء،الحديث: ١٠٨٧٧، ج٧،ص٤٣٥)
(مشكاة المصابيح،كتاب الزكاة، باب الإنفاق وكراهية الإمساك، الفصل الثالث،الحديث: ١٨٨٦، ج١،ص٣٥٨)

को तरजीह़ दे उन में से हर दरजे के स-दके़ के नतीजे मुख़्तलिफ़ हैं।"[1]

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه से पूछा गया कि सख़ावत क्या है ? आप ने फ़रमाया, सख़ावत येह है कि तू **अल्लाह** तआ़ला के रास्ते में अपना माल ख़र्च करे।[2]

ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं अ़क़्ल से ज़ियादा मददगार कोई माल नहीं जहालत से बढ़ कर कोई गुनाह नहीं मश्वरा से बढ़ कर कोई पुश्त पनाह नहीं। सुनो ! **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया मैं जव्वाद व करीम हूं किसी बख़ील के लिये मुझ से राहे फ़िरार नहीं और बुख़्ल कुफ़्र (ना शुक्री) से है और कुफ़्फ़ार (ना फ़रमान) जहन्नम में जाएंगे जब कि जूदो करम ईमान का ह़िस्सा है और अहले ईमान जन्नत में जाएंगे।

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं बहुत से दीन में ना फ़रमानी करने वाले जो अपनी मईशत में तंगी का शिकार होते हैं लेकिन वोह सख़ावत की वजह से जन्नत में जाएंगे।[3]

ह़ज़रते सुफ़्यान बिन ऐनिया رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه से पूछा गया कि सख़ावत किसे कहते हैं ? आप ने फ़रमाया (मुसलमान) भाइयों से नेकी का सुलूक करना और माल अ़ता करना सख़ावत है फ़रमाया मेरे वालिदे माजिद को विराषत में पचास हज़ार दिरहम मिले तो उन्हों ने थैलियां भर भर कर अपने भाइयों को तक़्सीम कर दीं और फ़रमाया कि मैं नमाज़ में **अल्लाह** तआ़ला से अपने भाइयों के लिये जन्नत का सुवाल किया करता था तो माल में इन से बुख़्ल क्यूं करूं ?[4]

मदीना

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 91)

٢ (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، الآثار، ج٣، ص٣٣٠)

٣ (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، الآثار، ج٣، ص٣٣٠)

٤ (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، الآثار، ج٣، ص٣٣٠)

पोशीदा स-दक़ात और इस के फ़ज़ाइल

अल्लाह तबारक व तआ़ला खुफ़्या ख़ैरात करने वालों की यूं ता'रीफ़ बयान फ़रमाता है :

إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَإِنْ تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ۗ
(البقرة:٢/٢٧١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर ख़ैरात अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है और इस में तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे।*

"स-दक़ा ख़्वाह फ़र्ज़ हो या नफ़्ल जब इख़्लास से अल्लाह के लिये दिया जाए और रिया से पाक हो तो ख़्वाह ज़ाहिर कर के दें या छुपा कर दोनों बेहतर हैं, **मस्अला :** लेकिन स-दक़ए फ़र्ज़ का ज़ाहिर कर के देना अफ़्ज़ल है और नफ़्ल का छुपा कर। **मस्अला :** और अगर नफ़्ल स-दक़ा देने वाला दूसरों को ख़ैरात की तरग़ीब देने के लिये ज़ाहिर कर के दे तो येह इज़्हार भी अफ़्ज़ल है।"[1] (मदारिक)

इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه अ़लानिया तौर पर स-दक़ा देने के बारे में फ़रमाते हैं, ज़ाहिरी तौर पर देना उस जगह मुनासिब है जहां हाल का तक़ाज़ा येही हो कि अ़लानिया दिया जाए और इस की हिक्मत या तो दूसरे लोगों को तरग़ीब दिलाना होगी या इस लिये ज़ाहिर किया जाएगा कि मांगने वाले ने लोगों के हुजूम में मांगा। लिहाज़ा ऐसे वक़्त अ़लानिया देने की वजह से जिस रिया के पैदा होने का ख़ौफ़ मुतवक़्क़ेअ़ है, उस के बाइ़स स-दक़ा देने से इजतिनाब मुनासिब नहीं बल्कि स-दक़ा दे और जिस क़दर मुमकिन हो खुद को रियाकारी से बचाए

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

और येह इस लिये है कि अ़लानिया देने में एह़सान जताने और रियाकारी के इ़लावा एक और तीसरी बात भी मम्नूअ़ है और वोह फ़क़ीर का पर्दा खोलना है क्यूं कि बसा अवक़ात मोह़ताजी की सूरत में नज़र आना उस के लिये तक्लीफ़ का मूजिब होता है अलबत्ता जो सुवाल करता है तो उस ने तो अपना पर्दा खुद ही खोल दिया, लेकिन अ़लानिया देने में येह तीसरी ख़राबी मम्नूअ़ न रहेगी जैसा कि एक शख़्स के पोशीदा गुनाह को ज़ाहिर करना मम्नूअ़ है और इस के तजस्सुस में लगना और उस के तज़्किरे को मा'मूल बना लेना भी मम्नूअ़ है। मगर जो आदमी (खुद) अ़लानिया फ़िस्क़ करता है तो उस पर ह़द क़ाइम करना ज़ाहिर करना ही है लेकिन इस का सबब वोह खुद है इसी की मिष्ल रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जो आदमी ह़या का लिबादा फेंक दे उस की ग़ीबत, ग़ीबत नहीं।[1]

एक और मक़ाम पर इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, जहां तक अज़िय्यत पहुंचाने का तअ़ल्लुक़ है तो उस की ज़ाहिरी सूरतें येह हैं : साइल को झिड़कना, उसे आ़र दिलाना, सख़्त कलामी, तुर्श रूई से पेश आना, स-दक़े को जता कर साइल की इ़ज़्ज़त पामाल करना, इसी त़रह़ दीगर वोह ज़राएअ़ इख़्तियार करना जिस के सबब लोगों में उस साइल का वक़ार मजरूह़ हो।

और बात़िनी अज़िय्यत का मम्बअ़ दो बातें हैं, एक येह कि माल का अपने हाथ से निकल जाना उस पर शदीद ना गवार गुज़रता है और ला मुह़ाला येह बात मख़्लूक़ के लिये तंगी का सबब है।

दूसरी येह कि वोह अपने आप को साइल से बेहतर ख़याल करता है और उस की मोह़ताजी की वजह से उसे खुद से कमतर समझता है। येह दोनों बातें जहालत पर मब्नी हैं क्यूं कि स-दक़े का माल फ़क़ीर के ह़वाले करने को

---

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب أسرار الزكاة، بيان دقائق الآداب الباطنة في الزكاة، الوظيفة الرابعة، ج١، ص٣٠٣ـ٣٠٤)

ना पसन्द करना ह़माक़त है इस लिये कि जो एक हज़ार दिरहम की चीज़ पर एक दिरहम ख़र्च करने को पसन्द न करे तो वोह निरा अह़मक़ है। जब कि ख़र्च करने वाला अपना माल या तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और दारे आख़िरत में षवाब पाने के लिये ख़र्च करेगा और येह सब से अफ़्ज़ल है, या अपने नफ़्स को बुख़्ल की गन्दगी से पाकीज़ा करने या फिर ने'मतों के शुक्राने के त़ौर पर ख़र्च करेगा ताकि इस पर ने'मतें ज़ियादा हों। इन में से किसी भी निय्यत के साथ माल ख़र्च करने में ना पसन्दीदगी की कोई वजह नहीं।[1]

कुरआने मजीद में है :

وَ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ الآية (النساء:٤/٣٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं।*

बुख़्ल के बा'द सर्फ़े बे जा की बुराई बयान फ़रमाई कि जो लोग मह़ज़ नुमूदो नुमाइश और नाम आवरी के लिये ख़र्च करते हैं और रिज़ाए इलाही उन्हें मक़्सूद नहीं होती जैसे कि मुशरिकीन व मुनाफ़िक़ीन येह भी उन्हीं के हुक्म में हैं।[2]

ह़ज़रते सुफ़्यान फ़रमाते हैं, जो शख़्स एह़सान जताए उस का स-दक़ा फ़ासिद हो जाता है, अ़र्ज़ की गई : एह़सान जताना किसे कहते हैं? फ़रमाया उस का तज़्किरा करना और उस का बयान करना और येह भी कहा गया है कि एह़सान जताना दे कर ख़िदमत लेना भी है और फ़क़ीर को उस की मोह़ताजी पर आ़र दिलाना अज़िय्यत नाक होता है, और येह भी कहा गया है कि दिये हुए माल की वजह से बड़ाई मारे तो येह भी एह़सान जताना है और

---

1 (إحياء علوم الدين، كتاب أسرار الزكاة، بيان دقائق الآداب الباطنة في الزكاة، الوظيفة الخامسة، ج١، ص٣٠٥)

2.(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

मांगने पर झिड़क देना और बे इ़ज़्ज़ती करना अज़िय्यत पहुंचाना है।[1]

हदीष शरीफ़ में है :

عَنْ بَهْزِبْنِ حَكِيْمٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ صَدَقَةَ السِّرِّ تُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ".[2]

हज़रते बहज़ बिन हकीम अपने वालिद और वोह अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मरवी है फ़रमाते हैं, बेशक मख़्फ़ी स-दक़ा रब तआ़ला के ग़ज़ब को बुझाता है।[2]

एक और हदीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ أَبَا ذَرٍّ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا الصَّدَقَةُ؟ قَالَ: "أَضْعَافٌ مُضَاعَفَةٌ، وَعِنْدَ اللّٰهِ الْمَزِيْدُ"، ثُمَّ قَرَأَ: " ﴿مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيْرَةً﴾ [البقرة:٢/٢٤٥]

हज़रते अबी उमामा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, अबू ज़र ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم स-दक़ा क्या है ? फ़रमाया, वोह चन्द दर चन्द (दूना दून) है और **अल्लाह** के हां ज़ियादती के इ़लावा है फिर तिलावत फ़रमाई, है कोई जो **अल्लाह** को क़र्ज़े ह़सन दे तो **अल्लाह** उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे। (कन्ज़ुल ईमान)

---

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب أسرار الزكاة، بيان دقائق الباطنة في الزكاة، الوظيفة الخامسة، ج١، ص٣٠٤)

[2] (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ١٠١٨، ج ١٩، ص ٤٢١)

(مجمع الزوائد، باب صدقة السر، ج٣، ص ١١٥)

(تلخيص الحبير، باب صدقة التطوع، الحديث: ١٤٢٨، ج٣، ص ١١٤)

قِيلَ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ أَيُّ الصَّدَقَةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: "سِرٌّ إِلَى فَقِيرٍ أَوْ جُهْدٌ مِنْ مُقِلٍّ"، ثُمَّ قَرَأَ: ﴿إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ﴾[1] [البقرة:٢٧١/٢] الآية

तो अ़र्ज़ की गई या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया, छुपा कर फ़क़ीर को दिया जाए या मेहनत की कमाई का हो फिर तिलावत फ़रमाई, अगर ख़ैरात अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है। (कन्ज़ुल ईमान)[1]

चन्द दर चन्द, "इस जुम्ले के दो मत़्लब हो सकते हैं, एक येह कि स-दक़े की बरकतें दुन्या में तो चन्द दर चन्द हैं, और कल क़ियामत में जो ज़ियादतियां होंगी वोह हमारे ह़िसाब से वरा हैं रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ﴾ [البقرة:٢٧٦/٢] **तर्जमा : अल्लाह** हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को। (कन्ज़ुल ईमान)) तजरिबा भी है कि स-दक़े से माल बहुत बढ़ता है दूसरे येह कि क़ियामत में स-दक़े का षवाब दस से सात सो गुना तक है, और जो ज़ियादतियां रब अ़त़ा फ़रमाएगा, वोह ह़िसाब से ज़ियादा हैं, रब तआ़ला फ़रमाता है : [البقرة:٢٦١/٢] ﴿وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ﴾ **तर्जमा :** और **अल्लाह** इस से ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे। (कन्ज़ुल ईमान))."[2]

सात क़िस्म के लोगों को **अल्लाह** तआ़ला अपने सायए रह़मत में रखेगा, चुनान्चे :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना, सात

مدينہ

[1] (مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة، الحديث: ١٩٢٨، ج١، ص٣٦٥)
(مجمع الزوائد، باب أي الصدقة أفضل، ج٣، ص١١٥)
[2] (مرآة المناجيح شرح مشكاة المصابيح، ج٣، ص١١٦)

يَقُولُ: ”سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللّٰهُ فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ: الْإِمَامُ الْعَادِلُ، وَشَابٌّ نَشَأَ فِي عِبَادَةِ اللّٰهِ، وَرَجُلٌ قَلْبُهُ مُعَلَّقٌ فِي الْمَسَاجِدِ، وَرَجُلَانِ تَحَابَّا فِي اللّٰهِ، اجْتَمَعَا عَلَيْهِ وَتَفَرَّقَا عَلَيْهِ، وَرَجُلٌ دَعَتْهُ امْرَأَةٌ ذَاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالٍ، فَقَالَ: إِنِّي أَخَافُ اللّٰهَ، وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَأَخْفَاهَا حَتّٰى لَا تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا تُنْفِقُ يَمِينُهُ، وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللّٰهَ خَالِيًا فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ“.[1]

अश्ख़ास वोह हैं जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला उस दिन अपने सायए रह़मत में रखेगा जब उस के सिवा कोई साया न होगा, आ़दिल बादशाह, वोह जवान जो **अल्लाह** की इबादत में जवानी गुज़ारे, वोह शख़्स जिस का दिल मस्जिदों में लगा रहे, वोह दो अश्ख़ास जो **अल्लाह** की रिज़ा के लिये मह़ब्बत करें, जम्अ़ हों तो इसी मह़ब्बत पर और जुदा हों तो इसी पर, और वोह शख़्स जिसे ख़ानदानी ह़सीन औ़रत (बुराई के लिये) बुलाए वोह (शख़्स) कहे मैं **अल्लाह** से डरता हूं, और वोह शख़्स जो छुप कर ख़ैरात करे ह़त्ता कि उस का बायां हाथ न जाने कि दाहिना हाथ क्या दे रहा है, और वोह शख़्स जो तन्हाई में **अल्लाह** को याद करे तो उस की आंखें बहें ।[1]

---

[1] (الموطا للإمام مالك، كتاب الشعر، باب ما جاء في التحابين في اللّٰه،الحديث: ١٧٧٧، ص ٥٣١)
(صحيح البخاري، كتاب الأذان، باب من جلس في المسجد ينتظر الصلاة وفضل المساجد،الحديث: ٦٦٠، ج١، ص ١٦٠)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب فضل إخفاء الصدقة،الحديث: ٩١ـ(١٠٣١)، ص ٣٧٠)
(سنن الترمذي، كتاب الزهد، باب ما جاء في الحبّ في اللّٰه،الحديث: ٢٣٩١، ج٣، ص٢٢٨)
(سنن النسائي، كتاب آداب القُضاةِ، باب الإمام العادل،الحديث: ٥٣٨٠، ج٤، الجزء الثامن،ص٦١٢)
(مشكاة المصابيح، كتاب الصلاة، باب المساجد ومواضع الصلاة،الحديث: ٧٠١، ج١، ص ١٤٨)
(تاريخ مدينة الدمشق لابن عساكر، ج ٥،ص ٢١٥)
(تلخيص الحبير للإمام العسقلاني، باب صدقة التطوع، الحديث: ١٤٢٨، ج٣، ص١١٤ـ١١٥)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ "**अल्लाह** तआ़ला अपने साए में रखेगा" के तह़त फ़रमाते हैं, "या'नी अपनी रह़मत में या अ़र्शे आ'ज़म के साए में ताकि क़ियामत की धूप से मह़फ़ूज़ रहे।"

आ़दिल बादशाह से मुराद है वोह मोमिन बादशाह और हुक्काम जो रिआ़या में इन्साफ़ करते हैं। क्यूं कि दुन्या इन के साए में रहती थी लिहाज़ा येह क़ियामत में रब तआ़ला के सायए रह़मत में रहेगा। येह उन तमाम से अफ़्ज़ल है इस लिये इस का ज़िक्र सब से पहले हुवा। आ़दिल हुक्काम भी इस बिशारत में दाख़िल हैं।

"जो **अल्लाह** की इबादत में जवानी गुज़ारे" के तह़त मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "या'नी जवानी में गुनाहों से बचे और रब को याद रखे चूंकि जवानी में आ'ज़ा क़वी और नफ़्स गुनाहों की त़रफ़ माइल होता है इस लिये इस ज़माने की इबादत बुढ़ापे की इबादत से अफ़्ज़ल है,

در جوانی توبہ کردن سنت پیغمبری است ❁ وقت پیری گرگ ظالم میشود پرہیز گار

*(या'नी जवानी में **अल्लाह** की बारगाह में रुजूअ़ करना पैग़म्बरों का त़रीक़ा है और बुढ़ापे के वक़्त तो ज़ालिम भेड़िया भी परहेज़ गार बन जाता है)*

"सूफ़िया कहते हैं कि मोमिन मस्जिद में ऐसे होता है जैसे मछली पानी में और मुनाफ़िक़ ऐसा जैसे चिड़िया पिंजरे में। इसी लिये नमाज़ के बा'द बिला वजह फ़ौरन मस्जिद से भाग जाना अच्छा नहीं ख़ुदा तौफ़ीक़ दे

तो मस्जिद में पहले आओ और बा'द में जाओ। और जब बाहर आओ तो कान अज़ान की त़रफ़ लगे रहें कि कब अज़ान हो और मस्जिद को जाएं।"

अल्लाह के लिये मह़ब्बत करने से मुराद, "कि जिस की मह़ब्बत से रब राज़ी हो उस से मह़ब्बत करें और जिस की नफ़रत से रब राज़ी हो उस से नफ़रत करें बे दीन और बद अ़मल अवलाद से नफ़रत, मुत्तक़ी अज्नबी से मह़ब्बत इबादत है।

ہزار خویش کہ بیگانہ از خدا باشد ❁ فدائے یک تن بیگانہ کآشنا باشد

(हज़ारों अपने, ख़ुदा से बेगाने हैं और उस एक बेगाने पर फ़िदा जो ख़ुदा से आशना हो)

यूंही गहरे दोस्त की बद अ़क़ीदगी पर वाक़िफ़ हो कर उस से अलग हो जाना और जानी दुश्मन के तक़्वे पर ख़बरदार हो कर उस का दोस्त बन जाना बेहतरीन अ़मल है।"

"ख़ौफ़े ख़ुदा या इश्क़े जनाबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में रोए, तन्हाई की क़ैद इस लिये लगाई कि सब के सामने रोने में रिया का अन्देशा है।"

ख़ानदानी औ़रत बुलाए, "या'नी ख़ुद ऐसी औ़रत उस से बद फ़े'ली की ख़्वाहिश करे और येह इस नाज़ुक मौक़अ़ पर मह़ज़ ख़ौफ़े ख़ुदा से बच जाए येह बहुत मुश्किल है। इसी लिये रब तआ़ला ने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के इस फ़े'ले शरीफ़ की ता'रीफ़ क़ुरआन में फ़रमाई। **अल्लाह** (ऐसा तक़्वा) नसीब करे, ख़याल रहे कि ऐसे नाज़ुक मौक़अ़ पर औ़रत से येह कह देना रिया नहीं तब्लीग़ है या'नी मैं रब तआ़ला से डरता हूं तू भी डर।"

दाएं हाथ से दे और बाएं को ख़बर न हो से, "यहां स-दक़ए नफ़्ली मुराद है स-दक़ए फ़र्ज़ और चन्दे के मौक़अ़ा पर स-दक़ए नफ़्ल अ़लानिया देना मुस्तह़ब है लिहाज़ा येह ह़दीष इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं : ﴿إِنۡ تُبۡدُوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ﴾ [البقرة:٢/٢٧١] तर्जमा : अगर ख़ैरात अ़लानिया दो तो क्या ही अच्छी बात है।" (कन्ज़ुल ईमान)[1]

इमाम मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल बाक़ी ज़रक़ानी इस ह़दीष की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** के साए से मुराद येह है कि वोह साया **अल्लाह** की मिल्किय्यत में है क्यूं कि हर साया (चाहे किसी भी चीज़ का हो) **अल्लाह** ही की मिल्क है येही क़ाज़ी इयाज़ (साहिबे शिफ़ा शरीफ़) का भी क़ौल है या उस साये की **अल्लाह** तआ़ला की जानिब इज़ाफ़त का मक़्सद उस साये की बुलन्दिये शान का इज़्हार है जैसा कि का'बा को बैतुल्लाह (**अल्लाह** का घर) कहा जाता है ह़ालां कि तमाम मसाजिद **अल्लाह** ही की मिल्किय्यत हैं और येह भी कहा गया कि साये से मुराद **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत है जैसा कि कहा जाता है फ़ुलां, बादशाह के ज़ेरे साया है। इस लिये कि **अल्लाह** तआ़ला साए से मुनज़्ज़ह है क्यूं कि साया तो जिस्म का होता है और **अल्लाह** तआ़ला जिस्मानियत से पाक है।

और दाएं हाथ से दे कि बाएं को ख़बर न हो की शर्ह़ में अ़ल्लामा ज़रक़ानी फ़रमाते हैं, या'नी लोगों से छुपाए और इस ह़दीष का ज़ाहिर येह है कि येह हुक्म फ़र्ज़ और नफ़्ल दोनों स-दक़ात को शामिल है लेकिन इमाम नववी ने उ़-लमा से नक़्ल किया कि फ़र्ज़ स-दक़े को ज़ाहिर कर के देना बेहतर है।[2] मुलख़्ख़सन

मदीना

1 (مرآة المناجيح شرح مشكاة المصابيح، ج١، ص٤٣٥_٤٣٦)

2 (شرح الزرقاني على المؤطا للإمام مالك، تحت الحديث المذكور، ج٤، ص٤٠٠_٤٠١)

तीन शख़्सों को अल्लाह तआला महबूब रखता है और तीन को मबग़ूज़, चुनान्चे :

عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "ثَلَاثَةٌ يُحِبُّهُمُ اللّٰهُ، وَثَلَاثَةٌ يُبْغِضُهُمُ اللّٰهُ، فَأَمَّا الَّذِيْنَ يُحِبُّهُمُ اللّٰهُ: فَرَجُلٌ أَتٰى قَوْماً فَسَأَلَهُمْ بِاللّٰهِ، وَلَمْ يَسْأَلْهُمْ بِقَرَابَةٍ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُمْ فَمَنَعُوْهُ فَتَخَلَّفَ رَجُلٌ بِأَعْقَابِهِمْ فَأَعْطَاهُ سِرّاً لَا يَعْلَمُ بِعَطِيَّتِهِ إِلَّا اللّٰهُ وَالَّذِي أَعْطَاهُ.[1] (الحديث)

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, तीन शख़्सों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मह़बूब रखता है और तीन शख़्सों को मबग़ूज़ । जिन को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मह़बूब रखता है, उन में एक येह कि एक शख़्स किसी क़ौम के पास आया और उन से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर सुवाल किया, उस क़राबत के वासिते़ से सुवाल न किया, जो साइल और क़ौम के दरमियान है, उन्हों ने न दिया, उन में से एक शख़्स चला गया और साइल को छुपा कर दिया कि उस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जानता है और वोह शख़्स जिस को दिया और किसी ने न जाना ।[1]

स-दक़े को छुपाना बेहतर है या ज़ाहिर करना ? इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

इस मुआ़मले में इख़्लास के शैदाइयों का त़रीक़ा और है एक क़ौम के नज़्दीक छुपाना अफ़्ज़ल है जब कि दूसरी इज़्हार को बेहतर जानती है हम इन दोनों के मआ़नी और आफ़ात के रुमूज़ की जानिब रहनुमाई करते हैं फिर ह़क़ीक़त से पर्दा भी उठाएंगे :

जहां तक पोशीदगी की बात है तो इस में पांच मआ़नी हैं :

مدينه ———————————— ه

[1] (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب في صدقة السر،الحديث:٧، ج٢،ص١٧)

《1》इस त़रह़ लेने वाले का पर्दा रह जाता है क्यूं कि ज़ाहिरी त़ौर पर लेने से इस की इ़ज़्ज़त व वक़ार का पर्दा उठ जाता है, ह़ाजत सामने आ जाती है और उस इ़फ़्फ़त की सूरत से ख़ारिज हो जाता है जो पसन्दीदा है और इस से मुत्तसिफ़ शख़्स को बे ख़बर मालदार समझते हैं क्यूं कि वोह मांगने से परहेज़ करता है।

《2》 छुपा कर देने से फ़क़ीर, लोगों के दिलों (के गुमान) और ज़बानों (के चर्चे) से मह़फ़ूज़ रह जाता है क्यूं कि वोह बसा अवक़ात या तो उस से ह़सद कर बैठते हैं या उस के लेने पर नाराज़ी का इज़्हार करते हैं और उन का गुमान येह होता है कि वोह बे नियाज़ होते हुए ले रहा है या उस की निस्बत ज़ियादा लेने की त़रफ़ करते हैं ह़ालां कि ह़सद, बद गुमानी और ग़ीबत गुनाहे कबीरा हैं और इन लोगों को इन बुराइयों से बचाए रखना ही बेहतर है। ह़ज़रते अय्यूब सख़्तियानी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه ने फ़रमाया, मैं नए कपड़े नहीं पहनता कि कहीं मेरा हमसाया मुझ से ह़सद न करे। एक ज़ाहिद ने फ़रमाया कि मैं ने बसा अवक़ात अपने भाइयों के (तन्क़ीद करने के) ख़ौफ़ से किसी चीज़ के इस्ति'माल को छोड़ दिया कि कहीं वोह येह न कह बैठें कि येह इस के पास कहां से आई ? ह़ज़रते इब्राहीम तीमी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه फ़रमाते हैं कि उन के जिस्म पर एक नई क़मीस नज़र आई तो उन के एक भाई ने पूछा येह आप के पास कहां से आई है ? उन्हों ने फ़रमाया मुझे येह ह़ज़रते ख़ैसमा رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه ने पहनाई है और अगर मुझे मा'लूम होता कि उन के घर वाले इस के मुतअ़ल्लिक़ जान जाएंगे तो कभी इसे क़बूल न करता।

《3》 छुपा कर स-दक़ा देना, देने वाले के अ़मल को राज़ रखने में मुआ़विन षाबित होता है क्यूं कि ज़ाहिर कर के देने के मुक़ाबले में छुपा कर देना अफ़्ज़ल है और नेकी की तक्मील में मुआ़वनत भी नेकी है और छुपाना दोनों (लेने वाले और देने वाले) के ज़रीए़ ही मुमकिन होगा कि जब भी ज़ाहिर किया जाएगा तो देने वाले का राज़ खुल जाएगा।

एक शख़्स ने खुले आ़म किसी आ़लिम को कोई चीज़ दी तो उन्हों ने उसे वापस कर दिया फिर किसी ने पोशीदा त़ौर पर दी तो उन्हों ने क़बूल कर ली उन से इस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो फ़रमाया कि दूसरे ने अपना स-दक़ा छुपा कर देने में अदब से काम लिया तो मैं ने क़बूल किया जब कि पहले ने अपने अ़मल में बे अदबी की लिहाज़ा मैं ने उस का अ़तिय्या लौटा दिया।

किसी शख़्स ने एक सूफ़ी बुज़ुर्ग को मजलिस में कोई चीज़ दी तो उन्हों ने वापस कर दी उस ने कहा आप ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का अ़तिय्या क्यूं वापस कर दिया ? तो उन्हों ने जवाब दिया तूने ख़ालिस **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा की ख़ातिर ख़र्च की जाने वाली चीज़ में उस के ग़ैर को शरीक किया और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ पर क़नाअ़त न की तो मैं ने तेरा शिर्क (या'नी लोगों पर इज़्हार कर के न कि مَعَاذَاللّٰہ इबादत में शिर्क) वापस कर दिया।

एक आ़रिफ़ बिल्लाह बुज़ुर्ग ने पोशीदगी में वोही चीज़ क़बूल कर ली जो अ़लानिया दिये जाने पर लौटा दी थी। इस पर उन से पूछा गया तो जवाबन फ़रमाया तुम अ़लानिया दे कर **अल्लाह** तआ़ला के ना फ़रमान हुए तो मैं इस मा'सिय्यत पर तुम्हारा मुआ़विन न हुवा मगर जब ख़ुफ़्या त़ौर पर दे कर तुम **अल्लाह** तआ़ला के मुत़ीअ़ हुए तो मैं ने तुम्हारी इस भलाई में मदद की।

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी फ़रमाते हैं अगर मुझे यक़ीन हो जाता कि वोह लोग अपने स-दक़े का तज़्किरा नहीं करेंगे और न किसी से चर्चा करेंगे तो मैं उन का स-दक़ा ज़रूर क़बूल करता।

﴾4﴿ (छुपा कर देना इस लिये भी बेहतर है) क्यूं कि ज़ाहिरी त़ौर पर लेने में ज़िल्लत और तोहीन है और मोमिन अपने नफ़्स को ज़लील नहीं करता एक आ़लिम पोशीदा त़ौर पर ले लेते थे जब कि ज़ाहिर कर के दिया जाता तो न लेते और फ़रमाते, इस के इज़्हार में इ़ल्म की ज़िल्लत और उ़-लमा की इहानत है, तो मैं इ़ल्म को पस्त कर के और अहले इ़ल्म को ज़लील कर के किसी दुन्यवी चीज़ को बरतरी नहीं देता।

﴾5﴿ (छुपा कर स-दक़ा देने से) शिर्कत के शुबे से बचाव होता है, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"जिस आदमी को कोई तोह़फ़ा दिया जाए जब कि उस के पास और भी लोग मौजूद हों तो वोह सब उस तोह़फ़े में शरीक हैं।" फिर अगर वोह दी जाने वाली शै चांदी या सोना भी हो (या'नी कितनी ही क़ीमती शै हो) तो भी तोह़फ़े के ज़ुमरे से ख़ारिज न होगा।

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़्ज़ल हदिय्या जो कोई अपने भाई को भेजे चांदी है या खाना खिलाना। ह़दीष में चांदी को भी हदिय्या फ़रमाया इस से मा'लूम हुवा कि मजलिस में किसी ख़ास शख़्स को अहले मजलिस की रिज़ा मन्दी के बिग़ैर कुछ देना मकरूह है और रिज़ा मन्दी का ह़ाल मुश्तबा रहता है इस लिये तन्हाई में दे देना इस शुबा से मह़फ़ूज़ रखता है।

स-दक़ा ज़ाहिर कर के देना :

स-दक़ा ज़ाहिर कर के देने और इस का तज़्किरा करने में चार मआ़नी हैं :

﴾1﴿ इख़्लास, सच्चाई, अपने ह़ाल को धोके से सलामत रखना और दिखावे से बचे रहना।

﴾2﴿ जाह व मर्तबा को साक़ित कर देना, बन्दगी और मिस्कीनियत का इज़्हार, तकब्बुर और तवंगरी के दा'वों से आज़ाद होना और मख़्लूक़ की नज़रों में अपने नफ़्स को हक़ीर ठहराना।

एक साहिबे मा'रिफ़त बुज़ुर्ग ने अपने शागिर्द से फ़रमाया : स-दक़ा लेने को हर हालत में ज़ाहिर किया करो इस लिये कि लेते वक़्त दो क़िस्म के बन्दों से वासित़ा पाओगे, एक तो वोह शख़्स होगा कि जब तुम स-दक़ा लेने को ज़ाहिर करोगे तो वोह बद दिल होगा और येही मक़्सूद है क्यूं कि येह तुम्हारे दीन की बक़ा है और तुम्हारे नफ़्स की आफ़ात की कमी का बाइ़ष है या फिर ऐसे शख़्स से वासित़ा पड़ेगा जिस के दिल में तुम्हारे सच के इज़्हार की वजह से, तुम्हारी मह़ब्बत बढ़ेगी और येही तुम्हारा भाई चाहता है क्यूं कि वोह तुम से जितनी ज़ियादा मह़ब्बत और जितनी ज़ियादा तुम्हारी ता'ज़ीम करेगा तो इसी क़दर उस के षवाब में इज़ाफ़ा होगा।

﴾3﴿ इज़्हार के तीसरे मा'ना येह हैं कि आ़रिफ़ बिल्लाह की नज़र छुपे व ज़ाहिर दोनों ह़ाल में सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला पर होती है तो इस ह़ाल का मुख़्तलिफ़ होना आ़रिफ़ीन के नज़्दीक तौह़ीद में शिर्क है। किसी आ़रिफ़ ने फ़रमाया : हम उस शख़्स की दुआ़ का ए'तिबार नहीं करते जो पोशीदा त़ौर पे ले ले और अ़लानिया को रद कर दे। लोग मौजूद हों या ग़ाइब मख़्लूक़ की जानिब तवज्जोह करना नुक़्सान ही का मूजिब है बल्कि ज़रूरी है कि इन्सान की नज़र सिर्फ़ ज़ाते वाह़िद पर लगी रहे।

ह़िकायत की गई है कि एक शैख़ अपने एक मुरीद पर सब से ज़ियादा तवज्जोह फ़रमाते, दीगर को येह बात तक्लीफ़ का बाइ़ष बनी, चुनान्चे शैख़ साह़िब ने अपने इस मुरीद की औरों पर बड़ाई को ज़ाहिर फ़रमाना चाहा, लिहाज़ा सब मुरीदीन को एक एक मुर्ग़ी दे दी और फ़रमाया :

तुम सब मुर्ग़ियां ले जाओ और वहां जा कर ज़ब्ह़ करना जहां कोई न देखे, वोह तमाम गए और ज़ब्ह़ कर आए जब कि वोह मुरीद वैसे ही मुर्ग़ी वापस ले कर लौट आया, शैख़ साहि़ब ने उन मुरीदों से पूछा तो उन्हों ने जवाब दिया कि जो शैख़ ने हुक्म दिया हम ने किया, शैख़ ने उस ख़ास मुरीद से सुवाल किया, आप ने दीगर साथियों की त़रह़ मुर्ग़ी ज़ब्ह़ क्यूं न की ? उस मुरीद ने जवाब दिया, मुझे कोई ऐसी जगह न मिली जहां मुझे कोई भी न देखता हो, बेशक **अल्लाह** तआ़ला मुझे हर हर जगह देख रहा है। तो शैख़ साहि़ब ने फ़रमाया, इसी लिये मैं इस की त़रफ़ जि़यादा मुतवज्जेह हूं कि येह ग़ैरुल्लाह की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं।

﴾4﴿ देने में इज़्हार करने से अदाएगिये शुक्र की सुन्नत का क़ियाम होता है, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿۱۱﴾ (الضحی:۹۳/۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब की ने'मत का ख़ूब चर्चा कर।

ने'मत छुपाना ना शुक्री में दाखि़ल है, जो **अल्लाह** तआ़ला की दी हुई ने'मत को छुपाते हैं **अल्लाह** तआ़ला उन की मज़म्मत फ़रमाता है और उन्हें बख़ील फ़रमाता है। इर्शादे ख़ुदा वन्दी है :

الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ وَ یَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَ یَكْتُمُوْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ (النساء:۴/۳۷)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो आप बुख़्ल करें और औरों से बुख़्ल के लिये कहें और **अल्लाह** ने जो उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है उसे छुपाएं।*

और हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

إِذَا أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلٰى عَبْدٍ نِعْمَةً أَحَبَّ أَنْ تُرٰى نِعْمَتُهٗ عَلَيْهِ.[1] जब अल्लाह अपने किसी बन्दे को ने'मत से मुशर्रफ़ फ़रमाता है तो पसन्द फ़रमाता है कि वोह ने'मत उस पर दिखाई दे ।[1]

एक शख़्स ने किसी ज़ाहिद को छुपा कर कोई चीज़ दी तो उन्हों ने लेने से हाथ खींच लिया और फ़रमाया येह दुन्यवी है, इसे ज़ाहिर करना अफ़्ज़ल है और उख़्रवी उमूर में छुपाना अफ़्ज़ल है ।

इसी लिये एक नेक बुज़ुर्ग ने फ़रमाया, जब तुम्हें मज्मअ़ में कुछ दिया जाए तो ले लो और फिर तन्हाई में लौटा दो और इस पर शुक्र अदा करने की रग़बत दिलाई गई है ।

ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ لَّمْ يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ اللّٰهَ عزوجل.[2] जिस ने लोगों का शुक्रिया अदा न किया उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का भी शुक्र अदा न किया ।[2]

और शुक्रिया अदा करना बदला देने के क़ाइम मक़ाम है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

---

[1] (المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند مالك بن نضلة، الحديث: ١٥٩٨٧، ج٥،ص٤٥٦)
(الثقات لابن حبان، الحديث: ١٢٣٤، ج٣، ص٣٧٦)
(التمهيد لابن عبد البر، ج٣،ص٢٥٤)
(مسند الشهاب،الحديث: ١١٠٠، ج٢، ص١٦١)
(تاريخ جرجان، ج١،ص١٤٢)
(المعجم الكبير للطبراني،الحديث: ٤١٨، ج١٨، ص١٨١)
(نصب الراية، ج٤،ص٢٨٣)
[2] (المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة،الحديث: ٧٤٩٥، ج٣، ص٨٤)
(سنن الترمذي، كتاب البر والصلة، باب ما جاء في الشكر لمن أحسن إليك، الحديث: ١٩٥٥، ج٣،ص٨٩)

مَـنْ أَسْـدٰى إِلَيْـكُـمْ مَـعْـرُوْفـاً فَـكَـافِـئُـوْهُ، فَـإِنْ لَّمْ تَسْتَطِيْعُوْا فَـأَثْـنُـوْا عَلَيْهِ بِهٖ خَيْراً وَادْعُوْا لَهٗ حَتّٰـى تَـعْـلَـمُـوْا أَنَّـكُـمْ قَدْ كَافَأْتُمُوْهُ.[1]

जो आदमी तुम से नेकी से पेश आए तो उसे अच्छा बदला दो और अगर इस की त़ाक़त न रखो तो उस के दिये पर उस की ता'रीफ़ कर दो और उस के लिये दुआ़ करो ह़त्ता कि तुम्हें यक़ीन हो जाए कि बदला चुका दिया ।[1]

जब मुहाजिरीन सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने (अन्सार का) शुक्रिया अदा करना चाहा तो बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हम इन लोगों से बेहतर किसी क़ौम को नहीं जानते जिन के पास हम ठहरे हैं, इन्हों ने अपने माल हम में तक़्सीम कर दिये हमें तो ख़ौफ़ है कि कहीं येह लोग तमाम ही अज्र न ले जाएं तो ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़्मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

كُلُّ مَا شَكَرْتُمْ لَهُمْ وَأَثْنَيْتُمْ عَلَيْهِ بِهٖ فَهُوَ مُكَافَاةٌ.[2]

तुम ने जितना भी इन का शुक्रिया अदा किया और इन की मदद पर इन की ता'रीफ़ की, येही बदला है ।[2]

---

[1] (الأدب المفرد للبخاري، باب من صُنع إليه معروف فليكافئه، الحديث: ٢١٥،ص٧٧)
(سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب عطية من سأل بالله،الحديث: ١٦٧٢،ج٢، ص٢١٢)
(المستدرك على الصحيحين، الحديث: ٢٣٦٩،ج٢، ص٧٣)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب من سأل بوجه الله، الحديث: ٢٥٦٦، ج٥، الجزء الخامس، ص٨٧)
(المغني للمقدسي، ج٩،ص٤٢٣)

[2] (المصنف لابن أبي شيبة، كتاب الأدب، باب في الثناء الحسن، الحديث: ٢٦٥٠١،ج٥،ص٣٢١)
(سنن الترمذي،كتاب صفة القيامة والرقائق والورع، باب (٤٤)، الحديث: ٢٤٨٧،ج٣،ص٣٧٦ـ٣٧٧)
(مسند أبي يعلى،حميد الطويل عن أنس بن مالك،الحديث: ٣٧٨٠،ج٣،ص٢٣٨ـ٢٣٩)
(المعجم الأوسط للطبراني،الحديث: ٧٢٩٢،ج٧،ص٢٠٩)

अब जब कि आप इन बातों को समझ गए तो येह भी जान लीजिये कि इस बारे में जो इख़्तिलाफ़ मन्क़ूल हुवा वोह इख़्तिलाफ़ नफ़्से मस्अला में नहीं है बल्कि येह इख़्तिलाफ़ लोगों के अह़वाल के ए'तिबार से है। तो इस राज़ से पर्दा यूं उठता है कि हम क़त़ई फ़ैसला तो नहीं दे सकते कि पोशीदा देना हर ह़ाल में अफ़्ज़ल है या ज़ाहिर कर के ? मगर (इतना बता दें कि) निय्यतों के बदलने से अह़काम तब्दील हो जाते हैं और निय्यतें, अह़वाल व अश्ख़ास की तब्दीली से बदल जाती हैं लिहाज़ा लाज़िम है कि मुख़्लिस आदमी अपने नफ़्स की मुह़ाफ़िज़त करे ताकि न तो धोके की सूली पर लटके और न त़बीअ़त के बनावटी पन और शैत़ान के मक्र में आए।[1]

ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ زَيْنَبَ الثَّقَفِيَّةِ امْرَأَةِ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "تَصَدَّقْنَ يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ وَلَوْ مِنْ حُلِيِّكُنَّ"، قَالَتْ: فَرَجَعْتُ إِلٰى عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ، فَقُلْتُ: إِنَّكَ رَجُلٌ خَفِيْفُ ذَاتِ الْيَدِ، وَإِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ أَمَرَنَا بِالصَّدَقَةِ فَأْتِهِ فَاسْأَلْهُ، فَإِنْ كَانَ ذٰلِكَ يُجْزِي عَنِّي وَإِلَّا صَرَفْتُهَا إِلٰى غَيْرِكُمْ،

ज़ौजए ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द ह़ज़रते ज़ैनब सक़फ़िय्या رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है, फ़रमाती हैं, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ऐ औ़रतों की जमाअ़त स-दक़ा करो अगर्चे अपने ज़ेवर से ही हो, फ़रमाती हैं, मैं अ़ब्दुल्लाह की त़रफ़ लौटी। कहा : तुम कुछ मिस्कीन व तंगदस्त हो और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम को स-दक़े का हुक्म दिया है तुम वहां

---

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب أسرار الزكاة، الفصل الرابع في صدقة التطوع وفضلها وآداب أخذها وإعطائها، بيان إخفاء الصدقة وإظهارها، ج ١، ص ٣٢١-٣٢٢)

فَقَالَ عَبْدُ اللّٰهِ بَلِ ائْتِيْهِ اَنْتِ، فَانْطَلَقْتُ، فَاِذَا امْرَاَةٌ مِّنَ الْاَنْصَارِ بِبَابِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَاجَتِيْ حَاجَتُهَا قَالَتْ وَكَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ قَدْ اُلْقِيَتْ عَلَيْهِ الْمَهَابَةُ فَقَالَتْ فَخَرَجَ عَلَيْنَا بِلَالٌ فَقُلْنَا لَهٗ ائْتِ رَسُوْلَ اللّٰهِ فَاَخْبِرْهُ عَنِ امْرَاَتَيْنِ بِالْبَابِ تَسْاَلَانِكَ: اَتَجْزِيُ الصَّدَقَةُ عَنْهُمَا عَلٰى اَزْوَاجِهِمَا وَعَلٰى اَيْتَامٍ فِيْ حُجُوْرِهِمَا؟، وَلَا تُخْبِرْهُ مَنْ نَحْنُ. قَالَتْ: فَدَخَلَ بِلَالٌ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَاَلَهٗ، فَقَالَ لَهٗ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ

हाज़िर हो कर पूछ आओ अगर तुम पर मेरा स-दक़ा करना दुरुस्त हो तो ख़ैर वरना मैं आप लोगों के सिवा किसी और जगह ख़र्च करूं, फ़रमाती हैं, कि मुझ से अ़ब्दुल्लाह बोले, कि तुम ही वहां जाओ, लिहाज़ा मैं चली गई तो हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरे अक़्दस पर एक और अन्सारी बीबी थीं जिन्हें मेरे जैसा ही काम था, फ़रमाती हैं, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुदरती हैबत दी गई थी, फ़रमाती हैं, कि हमारे पास ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنہُ आए हम ने उन से अ़र्ज़ किया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जाएं और अ़र्ज़ करें कि दरवाज़े पर दो बीबियां हैं जो हु़ज़ूर से पूछती हैं कि क्या उन का अपने ख़ावन्दों और उन यतीमों पर ख़र्च कर देना जो उन की परवरिश में हों स-दक़ा बन जाएगा ? और येह न बताना कि हम कौन हैं, फ़रमाती हैं, कि ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنہُ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और मस्अला पूछा,

هُـمَـا"؟، فَقَالَ: امْرَأَةٌ مِـنَ الْأَنْصَارِ، وَزَيْنَبُ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَيُّ الزَّيَانِبِ"؟، قَالَ: امْرَأَةُ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَهُمَا أَجْرَانِ: أَجْرُ الْقَرَابَةِ، وَأَجْرُ الصَّدَقَةِ".[1]

उन से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दर्याफ़्त फ़रमाया, वोह कौन हैं ? अ़र्ज़ की, कि एक अन्सारी बीबी और ज़ैनब हैं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, कौन सी ज़ैनब ? अ़र्ज़ की अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द की ज़ौजा। तब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, कि इन्हें दोहरा षवाब है एक षवाब क़राबत का दूसरा स-दक़े का।[1]

"ग़ालिबन हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का येह इर्शाद (ऐ औ़रतों की जमाअ़त स-दक़ा किया करो) ईद के दिन था चूंकि उस ज़माने में औ़रतें भी नमाज़े ईद के लिये ईदगाह जाती थीं और उन के लिये बा'दे नमाज़ मख़्सूस वा'ज़ होता था, उस वा'ज़ में आप ने येह सुना इस ह़दीष से मा'लूम होता है कि औ़रतों के इस्ति'माली ज़ेवर पर ज़कात फ़र्ज़ है। और येह ज़कात औ़रत पर फ़र्ज़ है न कि उस के ख़ावन्द पर ख़्वाह मैके से ज़ेवर मिला हो या

---

[1] (سنن الدارمي، كتاب الزكاة، باب أي الصدقة أفضل،الحديث: ١٦٦٠، ص٤٨٤)
(صحيح البخاري،كتاب الزكاة، باب الزكاة على الزوج و الأيتام في الحجر، الحديث: ١٤٦٦،ج١،ص٣٦٠ـ٣٦١)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب فضل النفقة والصدقة على الأقربين... إلخ،الحديث: ٤٥ـ(١٠٠٠)، ص٣٦٠)
(سنن ابن ماجه، كتاب الزكاة ، باب الصدقة على ذي قرابة، الحديث: ١٨٣٤، ج٢، ص٤٠٦ـ٤٠٧)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب الصدقة على الأقارب،الحديث: ٢٥٨٣،ج٣، الجزء الخامس،ص٩٧)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب أفضل الصدقة، الحديث: ١٩٣٤، ج١، ص٣٦٦ـ٣٦٧)

सुसराल वालों ने दिया हो बशर्ते कि (उन्हों ने) मालिक कर दिया हो, लिहाज़ा येह ह़दीष इमामे आ'ज़म की दलील है इमामे शाफ़ेई के हां पहनने के ज़ेवर में ज़कात नहीं।"

और ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से जो कहा, "या'नी अगर तुम को मेरा स-दक़ा देना दुरुस्त हो तब तो मैं तुम ही को स-दक़ा दे दूं, वरना किसी और को दूं।" इस से मा'लूम हुवा ग़नी औ़रत का ख़ावन्द और ग़नी ख़ावन्द की बीवी एक दूसरे के ग़िना से ग़नी न माने जाएंगे, जैसे अमीर की बालिग़ अवलाद बाप के ग़िना से ग़नी नहीं होती, देखो ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की बीवी ग़निय्या थीं मगर खुद इब्ने मसऊ़द मिस्कीन थे।"

"ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द की कुछ अवलाद भी थी, और अब ह़ज़रते ज़ैनब उन की परवरिश फ़रमाती थीं, غیرکم इन सब से ख़िताब है, या'नी अगर तुम्हें और तुम्हारे इन बच्चों को मेरा स-दक़ा लेना दुरुस्त हो तो मैं तुम्हें दे दूं वरना दूसरों को दूं।"

और राविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا का वोह फ़रमान, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुदरती हैबत दी गई, "या'नी रब्बुल आ़लमीन ने दिलों में आप की हैबत डाल दी थी जिस की वजह से हर शख़्स बिग़ैर इजाज़त ख़िदमत में ह़ाज़िर होने, **अ़र्ज़-मा'रूज़** करने की हिम्मत न करता था, और ह़ाज़िरीने बारगाह में ऐसे ख़ामोश और बा अदब बैठते थे जैसे उन के सरों पर परन्दे हैं, हालां कि सरकार इन्तिहाई ख़लीक़ और बहुत रह़ीम व करीम थे, शे'र

ہیبتِ حق است ایں از خلق نیست ✽ ہیبت ایں مرد صاحب دلق نیست

इसी वजह से दोनों बीबियां दरवाज़े पर खड़ी रह गईं, बारगाहे पाक में बारयाब न हुईं।"

और "शायद यतीमों से उन के ख़ावन्दों की वोह अवलाद मुराद है जिन की वालिदा फ़ौत हो चुकी थी या'नी उन की सोतेली अवलाद उन्हें यतीम कहना मजाज़न है, वरना इन्सान यतीम वोह ना बालिग़ होता है जिस का बाप फ़ौत हो जाए और जानवरों में वोह बच्चा यतीम जिस की मां मर जाए, उन बीबियों का ख़याल येह था की चूंकि येह सब लोग हमारे साथ ही रहते सहते हैं और साथ खाते पीते हैं, अगर इन्हें स-दक़ा दिया गया तो उस का कुछ हि़स्सा हमारे खाने में भी आ जाएगा लिहाज़ा ना जाइज़ होना चाहिये।"

और बीबियों का येह अ़र्ज़ करना, कि येह न बताना कि हम कौन हैं, "ताकि ह़ाज़िरीन में हमारा नाम न लिया जाए और हमारा सुवाल रिया न बन जाए या हम बुला न ली जाएं।"

"ह़ज़रते बिलाल का जवाब (इब्ने मसऊ़द की ज़ौजा ज़ैनब हैं) निहायत ईमान अफरोज़ है क्यूं कि उन बीबियों ने कहा था कि हमारा नाम न बताना, हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया नाम बताओ तो हुक्मे रसूल व हुक्मे उम्मती में तआरुज़ हुवा, जनाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म को तरजीह़ हुई और उम्मती का हुक्म क़ाबिले क़बूल अ़मल न रहा : (साहि़बे) मिरक़ात ने यहां फ़रमाया कि ह़ज़रते बिलाल पर नाम बता देना फ़र्ज़े शरई हो गया, क्यूं कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म मानना फ़र्ज़ है, उन्हें दूसरी बीबी का नाम मा'लूम नहीं था वरना वोह भी बता देते।"

"सारे अइम्मा इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि ख़ावन्द अपनी बीवी को अपनी ज़कात नहीं दे सकता मगर इस में इख़्तिलाफ़ है कि बीवी ख़ावन्द को ज़कात दे सकती है या नहीं, हमारे इमामे आ'ज़म फ़रमाते हैं कि नहीं दे सकती, दीगर अइम्मा फ़रमाते हैं कि दे सकती है, उन बुज़ुर्गों की दलील येह ह़दीष है इमामे आ'ज़म फ़रमाते हैं कि यहां स-दक़ए नफ़्ल मुराद है, स-दक़ए फ़र्ज़ की तसरीह़ नहीं, नीज़ औ़रत व ख़ावन्द के माल

क़रीबन मुशतरिक होते हैं, तो जब ख़ावन्द बीवी को ज़कात न दे सका तो बीवी ख़ावन्द को ज़कात कैसे दे सकती है स-दक़े का लफ़्ज़ स-दक़ए नफ़्ली पर आ़म शाएअ़ है।"[1] (मुलख़्ख़सन)

इमाम अबू ह़ामिद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं,

पोशीदा स-दक़े का फ़ाइदा येह है कि रियाकारी और सुनाने से आज़ादी मिल जाती है। हुज़ूर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْ مُسْمِعٍ وَلَا مُرَاءٍ وَلَا مَنَّانٍ.

अल्लाह तआ़ला ऐसे शख़्स का स-दक़ा क़बूल नहीं फ़रमाता जो सुनाना चाहे न दिखावा करने वाले का, न एह़सान जताने वाले का।

और अपने स-दक़े का तज़्किरा करने वाला (दर ह़क़ीक़त) उस स-दक़े के चर्चे का त़ालिब होता है। और लोगों के मज्मअ़ में देने वाला रियाकारी का त़लबगार होता है। लिहाज़ा छुपाना और ख़ामोश रहना बाइ़से नजात है।

एक जमाअ़त ने पोशीदगी की फ़ज़ीलत में इस क़दर मुबालग़ा किया कि उन की कोशिश रही कि लेने वाला भी न जान सके कि देने वाला कौन है?

बा'ज़ तो नाबीना के हाथ में देते और बा'ज़ फ़क़ीर के रस्ते में डाल देते और फ़क़ीर की बैठक के पास यूं रख देते कि देने वाला नज़र ही न आता। और बा'ज़ तो सोए हुए फ़क़ीर के कपड़ों में डाल देते और बा'ज़ दूसरों के हाथ फ़क़ीर को यूं भिजवाते कि उसे देने वाले का इ़ल्म न हो और देने वाला पहुंचाने वाले (वकील) को छुपाने का कह रखता कि इस के बारे में न बताए इन तमाम मसाई का षमरा फ़क़त़ येह होता कि रब तआ़ला के ग़ज़ब की आग को बुझा दें और दिखावे और सुनाने से बच जाएं और अगर

[1]. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 118,120)

किसी को पहचाने बिग़ैर देना मुमकिन न हो तो वकील को दे दिया जाए ताकि वोह मिस्कीन के सिपुर्द कर दे और वोह मिस्कीन भी पहले देने वाले को न जान सके क्यूं कि मिस्कीन के जान लेने से दिखावा और एह़सान का इज़्हार दोनों का इम्कान है अलबत्ता वकील का वासित़ा रियाकारी का बाइ़ष न होगा और जब देने में शोहरत मक़्सूद हो तो अ़मल का अज्र ज़ाएअ़ हो जाता है क्यूं कि ज़कात कन्जूसी को ज़ाइल करती है और मह़ब्बते माल को कमज़ोर करती है और जाह व मर्तबे की ह़िर्स माल की मह़ब्बत से ज़ियादा जल्द नफ़्स पर ग़ालिब आती है और दोनों ही आख़िरत में हलाकत की बाइ़ष हैं मगर कन्जूसी क़ब्र में बिच्छू की शक्ल में आती है और रियाकारी गन्जे सांप की मिष्ल । और इन्सान को इन दोनों चीज़ों के कमज़ोर करने और मार डालने का हुक्म है ताकि इन की अज़िय्यत बिल्कुल न हो या कमतर हो वोह जब रिया और शोहरत का इरादा करेगा तो गोया वोह बिच्छू के बा'ज़ आ'ज़ा को सांप की ग़िज़ा बनाएगा तो ज़ाहिर है कि जिस क़दर बिच्छू कमज़ोर होगा उसी क़दर सांप ज़ोर आवर होगा इस से तो अगर वैसा ही रहने देता तो इस पर आसान होता और ग़रज़ इन सिफ़ात की ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ अ़मल करने से है मक़्सद येह कि बुख़्ल के सबब के ख़िलाफ़ तो करे और सबबे रिया की इत़ाअ़त करे इस से तो अदना चीज़ कमज़ोर हो जाएगी और क़वी और ज़ियादा क़वी होगी ।[1]

खाना खिलाने और पानी पिलाने के फ़ज़ाइल

फ़राइज़ व वाजिबात को कमा ह़क़्क़ुहू बजा लाते हुए स-दक़ात और दीगर नफ़्ली इबादात व अफ़्आ़ल के सबब अपने फ़ज़्ल से **अल्लाह** तआ़ला अपने नेक बन्दों को बे शुमार ने'मतें अ़त़ा फ़रमाता है, चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

1 (إحياء علوم الدين، كتاب أسرار الزكاة، باب دقائق الآداب الباطنة في الزكاة، الوظيفة الثالثة، ج١، ص٣٠٣)

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۝٥ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۝٦ يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝٧ وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۝٨ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ۝٩ (الدهر:٧٦/٥-٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नेक पियेंगे उस जाम में से जिस की मिलूनी काफ़ूर है वोह काफ़ूर क्या ? एक चश्मा है जिस में **अल्लाह** के निहायत ख़ास बन्दे पियेंगे अपने मह़ल्लों में उसे जहां चाहें बहा कर ले जाएंगे अपनी मन्नतें पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई फैली हुई है और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास **अल्लाह** के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते ।

“**शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा और ह़ज़रते फ़ातिमा और उन की कनीज़ फ़िज़्ज़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھُم के ह़क़ में नाज़िल हुई ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھُمَا बीमार हुए, इन ह़ज़रात ने उन की सिह़्ह़त पर तीन रोज़ों की नज़्र मानी **अल्लाह** तआ़ला ने सिह़्ह़त दी नज़्र की वफ़ा (या'नी पूरा करने) का वक़्त आया । सब साहि़बों ने रोज़े रखे ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ एक यहूदी से तीन साअ़ (साअ़ एक पैमाना है) जव लाए ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत ने एक एक साअ़ तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्त़ार का वक़्त आया और रोटियां सामने रखीं तो एक रोज़ मिस्कीन एक रोज़ यतीम और एक रोज़ असीर आया और तीनों रोज़ येह सब रोटियां उन लोगों को दे दी गईं और सिर्फ़ पानी से इफ़्त़ार कर के अगला रोज़ा रख लिया गया ।”[1]

1. (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

हदीष शरीफ़ में है :

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللّٰـهُ عَنْـهُ أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّ الْإِسْلَامِ خَيْرٌ؟ قَالَ: ”تُطْعِمُ الطَّعَامَ، وَتَقْرَأُ السَّلَامَ عَلٰى مَنْ عَرَفْتَ وَمَنْ لَّمْ تَعْرِفْ“.[1]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, कि एक शख़्स ने शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा, कि कौन सा इस्लाम अच्छा है ? फ़रमाया, खाना खिलाओ और हर जाने अन्जाने शख़्स को सलाम करो ।[1]

हकीमुल उम्मत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मज़्कूर हदीष शरीफ़ की शर्ह में उस शख़्स के सुवाल "कौन सा इस्लाम अच्छा है ?" की तशरीह़ में बयान करते हैं, "या'नी इस्लामी कामों में कौन सा काम अच्छा है ।"

हकीमुल उम्मत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मजीद फ़रमाते हैं, "सलाम सिर्फ़ इस्लामी रिश्ते से हो कारोबारी दुन्यावी तअ़ल्लुक़ात से न हो ख़याल रहे कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जवाबात साइल के सुवाल के ह़ाल के मुताबिक़ होते थे इसी लिये इस सुवाल के जवाब मुख़्तलिफ़ दिये । किसी से फ़रमाया कि बेहतरीन अ़मल नमाज़ है किसी से फ़रमाया जिहाद है यहां फ़रमाया

مدينہ

[1] (صحيح البخاري، كتاب الاستئذان، باب السلام للمعرفة وغير المعرفة،الحديث:٦٢٣٦، ج٤، ص١٤٥)
(صحيح مسلم، كتاب الإيمان، باب بيان تفاضل ...إلخ،الحديث: ٦٣ـ(٣٩)، ص ٤٠)
(سنن أبي داود، كتاب الأدب، باب في إفشاء السلام، الحديث:٥١٩٤، ج٥، ص٢٣٨)
(سنن ابن ماجه، كتاب الأطعمة، باب إطعام الطعام،الحديث: ٣٢٥٣، ج٤، ص٤)
(سنن النسائي، كتاب الإيمان، باب أي الإسلام خير،الحديث:٥٠١٥، ج٤، الجزء٨، ص ٤٨١)
(مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب السلام،الحديث: ٤٦٢٩، ج٢، ص١٦١)

बेहतरीन अ़मल खाना खिलाना, सब को सलाम करना या'नी तेरे लिये येह दो काम बेहतर हैं ख़याल रहे कि तक़्वा सलाम करना, सलाम कहलवाना सलाम लिखना लिखवाना सलाम कहला भेजना सब को शामिल है مَنْ عَرَفْتَ का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ सलाम से है खाना खिलाने से नहीं।"[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में इर्शाद है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ إِنِّي إِذَا رَأَيْتُكَ طَابَتْ نَفْسِي، وَقَرَّتْ عَيْنِي، أَنْبِئْنِي عَنْ كُلِّ شَيْءٍ؟ قَالَ: "كُلُّ شَيْءٍ خُلِقَ مِنَ الْمَاءِ". فَقُلْتُ: أَخْبِرْنِي بِشَيْءٍ إِذَا عَمِلْتُهُ دَخَلْتُ الْجَنَّةَ؟ قَالَ: "أَطْعِمِ الطَّعَامَ، وَأَفْشِ السَّلَامَ، وَصِلِ الْأَرْحَامَ، وَصَلِّ بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ، تَدْخُلِ الْجَنَّةَ بِسَلَامٍ".[2]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह जब मैं आप को देखता हूं तो मेरा दिल बाग़ बाग़ हो जाता है और आंखों को क़रार मिलता है। (या रसूलल्लाह) मुझे हर चीज़ की ख़बर अ़ता कर दीजिये, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, हर चीज़ पानी से बनी है, मैं ने अ़र्ज़ की, उस चीज़ की भी ख़बर दीजिये जिस पर अ़मल कर के मैं जन्नत में जा सकूं, फ़रमाया खाना खिलाओ, सलाम को फैलाओ और सिलए रेह़्मी करो, रात में नमाज़ पढ़ो जब लोग सोए हों, तुम सलामती के साथ जन्नत में चले जाओगे।[2]

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 6, स. 314)

٢ (المسند للإمام أحمد،مسند أبي هريرة، الحديث: ٧٩١٩، ج٣، ص١٧٤)

इसी त़रह़ दीगर आ'माले ख़ैर के इलावा बत़ौरे स-दक़ा खिलाने पिलाने वालों के लिये जन्नत की भी बिशारत है, चुनान्चे :

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اُعْبُدُوا الرَّحْمٰنَ، وَاَطْعِمُوا الطَّعَامَ، وَاَفْشُوا السَّلَامَ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ بِسَلَامٍ".[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, रह़मान की इ़बादत करो, खाना खिलाओ, सलाम फैलाओ जन्नत में सलामती से चले जाओ ।[1]

"रह़मान को पूजना बहुत जामेअ़ फ़रमान है जिस में हर क़िस्म की इ़बादतें दाख़िल हैं अगर येह ह़दीष ज़कात व रोज़े की फ़र्ज़िय्यत के बा'द की हो जब भी दुरुस्त है कि इ़बादते रह़मान में वोह चीज़ें भी आ गईं ।"[2]

खिलाने पिलाने वालों के लिये जन्नत में ख़ूब सूरत बाला ख़ाने हैं :

---

1 (المسند للإمام أحمد، مسند عبد اللّٰه بن عمرو بن العاص،الحديث: ٦٥٨٧، ج٢،ص٦١٣)
(سنن الدارمي، كتاب الأطعمة، باب في إطعام الطعام، الحديث: ١/٢٠٨٥، ص٦٤٨)
(سنن الترمذي، كتاب الأطعمة، باب ما جاء في فضل إطعام الطعام،الحديث: ١٨٥٥،ج٣، ص٣٩)
(سنن ابن ماجه،كتاب الأدب، باب إفشاء السلام،الحديث: ٣٦٩٤،ج٤، ص ٢٣١)
(مشكاة المصابيح،كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة، الحديث: ١٩٠٨،ج١،ص٣٦٢)
2 (مرآة المناجيح شرح مشكاة المصابيح، ج٣، ص١٠٣)

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ فِي الْجَنَّةِ غُرَفاً يُرٰى ظَاهِرُهَا مِنْ بَاطِنِهَا، وَبَاطِنُهَا مِنْ ظَاهِرِهَا"، فَقَالَ: أَبُوْ مَالِكٍ الْأَشْعَرِيُّ: لِمَنْ هِيَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: "هِيَ لِمَنْ أَطَابَ الْكَلَامَ، وَأَطْعَمَ الطَّعَامَ وَبَاتَ قَائِماً وَالنَّاسُ نِيَامٌ".[1]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, बेशक जन्नत में ऐसे बाला ख़ाने हैं कि जिन का ज़ाहिर अन्दर से नज़र आता है और अन्दरूनी ह़िस्सा बाहर से, तो अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की येह किस के लिये है या रसूलल्लाह ? फ़रमाया जो अच्छी बात कहे और खाना खिलाए और खड़े हो कर (या'नी नमाज़ पढ़ते हुए) रात गुज़ारे जब कि लोग सोए होते हैं।[1]

एक और ह़दीष में है :

عَنْ أَبِيْ مَالِكٍ الْأَشْعَرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ فِي الْجَنَّةِ غُرَفاً يُرٰى ظَاهِرُهَا مِنْ بَاطِنِهَا، وَبَاطِنُهَا مِنْ ظَاهِرِهَا

हज़रते अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जन्नत में ऐसे दरीचे हैं जिन का बाहर अन्दर से और अन्दर बाहर से

مدینہ

[1] (المسند للإمام أحمد،مسند عبد اللّٰه بن عمرو بن العاص،الحديث:٦٦١٥،ج٢، ص٦١٩)
(السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الصيام، باب من لم ير ...إلخ،الحديث: ٨٤٧٩،ج٤، ص٤٩٥)

أَعَدَّهَا اللّٰهُ لِمَنْ أَلَانَ الْكَلَامَ، وَأَطْعَمَ الطَّعَامَ، وَتَابَعَ الصِّيَامَ، وَصَلّٰى بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ"۔[1]

देखा जाता है येह अल्लाह ने उन के लिये बनाए जो बात नर्म करें और खाना खिलाएं और मुतवातिर रोज़े रखें और जब लोग सोते हों तो रात में नमाज़ पढ़ें ।[1]

"या'नी इन की दीवारें और किवाड़ ऐसे साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ कि निगाह को नहीं रोकते जिस का नुमूना कुछ दुन्या में शीशे की दीवारों और किवाड़ों में नज़र आता है इस शफ़्फ़ाफ़ी में उस के हुस्नो ख़ूबी की त़रफ़ इशारा है ।"

"वोह दरीचे उन लोगों के लिये हैं जिन में येह चार सिफ़ात जम्अ़ हों हर मुसलमान दोस्त या दुश्मन से नर्मी से बात करना, कुफ़्फ़ार से सख़्त कलामी भी इबादत है, रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿أَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ﴾ [الفتح:٤٨/٢٩] **तर्जमा** : काफ़िरों पर सख़्त हैं (कन्ज़ुल ईमान)) और फ़रमाता है : ﴿وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً﴾ [التوبة:٩/١٢٣]) **तर्जमा** : और चाहिये कि वोह तुम में सख़्ती पाएं (कन्ज़ुल ईमान)) हर ख़ास व आम को खाना खिलाना, इस में मशाइख़ के लंगरों का षुबूत है बा'ज़ बुज़ुर्गों के हां चरिन्दों परन्दों को भी खाना पानी दिया जाता है वोह त़आम को बहुत आम करते हैं ।"[2]

खिलाने पिलाने वालों को सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने लोगों में बेहतर फ़रमाया :

---

1 (المسند للإمام أحمد، مسند أبي مالك الأشعري،الحديث: ٢٣٢٩٣،ج٧،ص٦٠٦) (مشكاة المصابيح،كتاب الصلاة، باب التحريض على قيام الليل،الحديث: ١٢٣٢، ج١، ص٢٤٣)

2. (मिरआतुल मनाजीह शर्हे मिश्कातुल मसाबीह, जि. 2, स. 260)

عَنْ حَمْزَةَ بْنِ صُهَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ عُمَرُ لِصُهَيْبٍ: فِيكَ سَرَفٌ فِي الطَّعَامِ، فَقَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "خِيَارُكُمْ مَنْ أَطْعَمَ الطَّعَامَ".[1]

ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन सुहैब अपने वालिद से रिवायत नक़्ल करते हैं कि उन्हों ने कहा, कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सुहैब से फ़रमाया, तुम्हारे अन्दर खाने के मुआ़मले में बे ए'तिदाली है। तो उन्हों ने जवाबन अ़र्ज़ की मैं ने शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना, तुम में बेहतर वोह है जो खाना खिलाए।[1]

मुसलमान मिस्कीन को खाना खिलाना मूजिबाते रह़मत से है, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مِنْ مُوجِبَاتِ الرَّحْمَةِ إِطْعَامُ الْمُسْلِمِ الْمِسْكِينِ".[2]

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है वोह ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आलमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत नक़्ल करते हैं कि आप ने फ़रमाया, अस्बाबे रह़मत में से एक सबब नादार मुसलमान को खाना खिलाना है।[2]

स-दक़ा कर्दा खजूर और रोटी का टुकड़ा अज्र में **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल से उहुद पहाड़ की मिष्ल हो जाते हैं।

مدینہ
---

[1] (المسند للإمام أحمد، مسند صهيب، الحديث: ٢٤٤٢٢، ج٧، ص٩٢٤)

[2] (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب في إطعام الطعام...إلخ، الحديث:٩، ج٢، ص٣٣)

عَنْ عَـائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ اللّٰهَ لَيُرَبِّي لِأَحَدِكُمُ التَّمْرَةَ وَاللُّقْمَةَ كَمَا يُرَبِّي أَحَدُكُمْ فَلُوَّهُ، أَوْ فَصِيْلَهُ حَتّٰى يَكُوْنَ مِثْلَ أُحُدٍ". [1]

सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنھَا से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़्मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत नक़्ल करती हैं कि आप ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी (स-दक़ा शुदा) खजूर और लुक़्मे की इस तरह परवरिश फ़रमाता है जैसा कि तुम में कोई अपने घोड़े या ऊंट के बच्चे को पालता है, यहां तक कि वोह खजूर या लुक़्मए तआ़म (या'नी इस का अज्रो षवाब) उहुद पहाड़ की मिष्ल हो जाता है।[1]

यूं ही रोटी के एक टुकड़े या एक खजूर के दाने को स-दक़ा करने से तीन लोगों को **अल्लाह** तआ़ला जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा, ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ اللّٰهَ عزوجل لَيُدْخِلُ بِلُقْمَةِ الْخُبْزِ، وَقَبْضَةِ التَّمْرِ وَمِثْلِهِ مِمَّا يَنْفَعُ الْمِسْكِيْنَ ثَلَاثَةً الْجَنَّةَ: اَلْآمِرَ بِهِ، وَالزَّوْجَةَ الْمُصْلِحَةَ لَهُ، وَالْخَادِمَ الَّذِيْ يُنَاوِلُ

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रोटी के एक लुक़्मे या खजूर के दाने या इसी की मिष्ल मिस्कीन को फ़ाइदा पहुंचाने वाली चीज़ की वजह से तीन लोगों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा,

مدینہ

[1] (المسند للإمام أحمد، مسند عائشة رضي اللّٰه عنها، الحديث: ٢٦٦٦٤، ج٧، ص٤٩٥)

الْمِسْكِيْنَ". وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَنْسَ خَدَمَنَا".[1]

एक वोह शख़्स जो स-दक़े का हुक्म दे, दूसरे वोह बीवी जिस ने उस लुक़्मे को तय्यार किया और तीसरे वोह ख़ादिम जिस ने येह स-दक़ा मिस्कीन तक पहुंचाया, और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** तआ़ला के लिये हैं जो हमारे ख़ादिमों को भी महरूम नहीं करता।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में इर्शाद है :

عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، عَلِّمْنِيْ عَمَلًا يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ؟ قَالَ: "لَئِنْ كُنْتَ أَقْصَرْتَ الْخُطْبَةَ لَقَدْ أَعْرَضْتَ الْمَسْئَلَةَ، أَعْتِقِ النَّسَمَةَ، وَفُكَّ الرَّقَبَةَ، فَإِنْ لَّمْ تُطِقْ ذٰلِكَ فَأَطْعِمِ الْجَائِعَ، وَاسْقِ الظَّمْآنَ".[2] (ملخصاً)

ह़ज़रते बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं, एक आ'राबी आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा। अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह ! मुझे ऐसा अ़मल सिखा दीजिये जो मुझे जन्नत में ले जाए, फ़रमाया, अगर्चे तुम ने कलाम मुख़्तसर किया है मगर सुवाल वसीअ़ किया है, ग़ुलाम आज़ाद करो और गरदन छुड़ाओ अगर तुम्हें इस की त़ाक़त न हो तो भूके को खिलाओ और प्यासे को पिलाओ।[2]

पेट भर रोटी खिलाने वाले को **अल्लाह** तआ़ला दोज़ख़ से सात ख़न्दक़ें दूर फ़रमा देता है और हर ख़न्दक़ की मसाफ़त पांच सो साल है, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

---

[1] (المعجم الأوسط للطبراني، الحديث: ٥٣٠٩، ج٥، ص٢٧٨)
(المستدرك على الصحيحين، الحديث: ٧١٨٧، ج٤، ص١٤٩)

[2] (المسند للإمام أحمد، مسند البراء بن عازب، الحديث: ١٨٨٥٠، ج٦، ص٣٥١)

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ أَطْعَمَ أَخَاهُ خُبْزاً حَتّٰى يُشْبِعَهُ، وَسَقَاهُ مِنَ الْمَاءِ حَتّٰى يُرْوِيَهُ بَعَّدَهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ سَبْعَ خَنَادِقَ كُلُّ خَنْدَقٍ مَسِيْرَةُ خَمْسِمِائَةِ عَامٍ". [1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जो अपने भाई को खिला कर सैर कर दे और पिला कर सैराब कर दे, तो **अल्लाह** तआ़ला उसे जहन्नम से सात ख़न्दक़ें दूर फ़रमा देगा जिन में से हर ख़न्दक़ की दरमियानी मसाफ़त पांच सो साल होगी ।[1]

हर तर जिगर या'नी हर ज़ी रूह़ की शिकम सैरी अफ़्ज़ल स-दक़ा फ़रमा गया :

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَفْضَلُ الصَّدَقَةِ أَنْ تُشْبِعَ كَبِداً جَائِعاً". [2]

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, अफ़्ज़ल स-दक़ा येह है कि तू भूके कलेजे को सैर कर दे ।[2]

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

[1] (شعب الإيمان، باب في الزكاة، فصل في إطعام الطعام وسقي الماء، الحديث: ٣٣٦٨، ج٣، ص٢١٨)
[2] (شعب الإيمان، باب في الزكاة، فصل في إطعام الطعام وسقي الماء، الحديث: ٣٣٦٧، ج٣، ص٢١٧)

हज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जो मुसलमान किसी मुसलमान को भूक में खाना खिलाएगा तो **अल्लाह** तआ़ला उसे बरोज़े क़ियामत जन्नत के फल खिलाएगा, और जो किसी मुसलमान को प्यास में पानी पिलाएगा तो **अल्लाह** तआ़ला उसे बरोज़े क़ियामत मोहर की गई निथरी शराब पिलाएगा और जो मुसलमान किसी बे लिबास मुसलमान को कपड़ा पहनाएगा तो (क़ियामत के रोज़) **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नत की पोशाक पहनाएगा ।[1]

عَنْ أَبِي سَعِيدٍرَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَيُّمَا مُؤْمِنٍ أَطْعَمَ مُؤْمِناً عَلٰى جُوعٍ أَطْعَمَهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ ثِمَارِ الْجَنَّةِ، وَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ سَقٰى مُؤْمِناً عَلٰى ظَمَإٍ سَقَاهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الرَّحِيقِ الْمَخْتُومِ، وَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ كَسَا مُؤْمِناً عَلٰى عُرْيٍ كَسَاهُ اللّٰهُ مِنْ خُضْرِ الْجَنَّةِ". ١

मरीज़ों की तीमार दारी और भूकों, प्यासों की दाद रसी से **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुसूसी रह़मत ह़ासिल होती है, चुनान्चे इर्शाद है :

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन फ़रमाएगा ऐ इन्सान मैं बीमार हुवा तूने मेरी

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَرَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ اللّٰهَ عزوجل يَقُولُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: يَا ابْنَ آدَمَ:

مدينه

١ (سنن الترمذي، كتاب صفة القيامة والرقائق والورع، باب (١٨)، الحديث: ٢٤٤٩، ج٣، ص٣٥٨)

مَرِضْتُ فَلَمْ تَعُدْنِي قَالَ: يَا رَبِّ كَيْفَ أَعُوْدُكَ، وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ؟ قَالَ: أَمَا عَلِمْتَ أَنَّ عَبْدِي فُلَانًا مَرِضَ فَلَمْ تَعُدْهُ، أَمَا عَلِمْتَ لَوْ عُدْتَهُ لَوَجَدْتَنِي عِنْدَهُ. يَا ابْنَ آدَمَ اسْتَطْعَمْتُكَ فَلَمْ تُطْعِمْنِي. قَالَ: يَا رَبِّ كَيْفَ أُطْعِمُكَ، وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ؟ قَالَ: أَمَا عَلِمْتَ أَنَّهُ اسْتَطْعَمَكَ عَبْدِي فُلَانٌ فَلَمْ تُطْعِمْهُ، أَمَا عَلِمْتَ إِنَّكَ لَوْ أَطْعَمْتَهُ لَوَجَدْتَ ذٰلِكَ عِنْدِي. يَا ابْنَ آدَمَ اسْتَسْقَيْتُكَ، فَلَمْ تَسْقِنِي. قَالَ: يَا رَبِّ كَيْفَ أَسْقِيكَ، وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ؟ قَالَ: اسْتَسْقَاكَ عَبْدِي فُلَانٌ فَلَمْ تَسْقِهِ، أَمَا إِنَّكَ لَوْ سَقَيْتَهُ

इयादत न की बन्दा कहेगा इलाही मैं तेरी इयादत कैसे करता तू तो जहानों का रब है फ़रमाएगा, क्या तुझे ख़बर नहीं कि मेरा फ़ुलां बन्दा बीमार हुवा तो तूने उस की बीमार पुरसी न की, क्या तुझे ख़बर नहीं कि अगर तू उस की इयादत करता तो मुझे उस के पास पाता। ऐ आदमी ! मैं ने तुझ से खाना मांगा तूने मुझे न खिलाया। अ़र्ज़ करेगा इलाही ! तुझे मैं कैसे खिलाता तू तो जहानों का रब है, फ़रमाएगा क्या तुझे इल्म नहीं कि तुझ से मेरे फ़ुलां बन्दे ने खाना मांगा तूने उसे नहीं खिलाया क्या तुझे पता नहीं कि अगर तू उसे खिलाता तो मेरे पास पाता, ऐ इन्सान ! मैं ने तुझ से पानी मांगा तो तूने मुझे न पिलाया। अ़र्ज़ करेगा मौला ! मैं तुझे कैसे पिलाता तू तो जहानों का रब है, फ़रमाएगा तुझ से मेरे फ़ुलां बन्दे ने पानी मांगा तूने उसे न पिलाया अगर तू उसे पिलाता तो आज मेरे पास वोह पाता।[1]

مدینہ

1 (صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب فضل عيادة المريض، الحديث: ٤٣-(٢٥٦٩)، ص٩٩٧)
(مشكاة المصابيح، كتاب الجنائز، باب عيادة المريض وثواب المرض، الحديث: ١٥٢٨، ج١، ص٢٩٤)

“इस में इशारतन येह फ़रमाया गया कि बन्दए मोमिन बीमारी की ह़ालत में रब तआ़ला से इतना क़रीब होता है कि उस के पास आना गोया रब के पास ही आना है और उस की ख़िदमत गोया रब की इत़ाअ़त है बशर्त़े कि साबिरो शाकिर हो क्यूं कि बीमार मोमिन का दिल टूटा होता है और टूटे दिले बीमार, काशानए यार हैं ह़दीषे कु़दसी है : أَنَا عِنْدَ الْمُنْكَسِرَةِ قُلُوْبُهُمْ لِأَجْلِي , मैं टूटे दिल वालों के पास हूं, इस तरतीब से मा'लूम हो रहा है कि बीमार पुरसी अगले आ'माल से अफ़्ज़ल है, क्यूं कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस का ज़िक्र पहले किया।”

और ह़दीष शरीफ़ में जो फ़रमाया कि, अगर खिलाता तो उसे मेरे पास पाता, “या'नी उस खाने का षवाब यहां पाता, ख़याल रहे कि बीमार पुरसी के बारे में फ़रमाया तू बीमार के पास मुझे पाता और भूकों को खाना खिलाने के बारे में फ़रमाया कि तू इस का षवाब यहां पाता, मा'लूम हुवा कि बीमार पुर्सी बहुत आ'ला इ़बादत है।”

“इस ह़दीष से मा'लूम हुवा कि फ़ु़क़रा मसाकीन **अल्लाह** की रह़मत हैं इन के पास जाने, इन की ख़िदमतें करने से रब मिल जाता है, तो औलियाउल्लाह का क्या पूछना इन की सोह़बत रब से मिलने का ज़रीआ़ है मौलाना फ़रमाते हैं : शे'र

ہر کہ خواہد ہم نشینی با خدا ❁ او نشیند در حضور اولیاء

कु़रआने करीम फ़रमाता है : ﴿وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَّلَمُوْٓا﴾

तर्जमा : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें (**कन्ज़ुल ईमान**)

الآية ﴿لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّاباً رَّحِيماً﴾ [النساء:٤/٦٤) **तर्जमा :** तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं। (कन्ज़ुल ईमान)) सूफ़िया फ़रमाते हैं इस के मा'ना येह हैं कि जो गुनहगार तुम्हारे पास आ जाए वोह ख़ुदा को पा लेगा, मौलाना के शे'र का माख़ज़ येह आयत और येह ह़दीष है।"[1]

रोज़ादार मिस्कीन को खाना खिलाने वाले, जनाज़ा में शरीक होने वाले और मरीज़ की इयादत करने वालों के लिये भी जन्नत की बिशारत फ़रमाई :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ أَصْبَحَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ صَائِماً"؟، فَقَالَ: أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ: أَنَا، فَقَالَ: "مَنْ أَطْعَمَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ مِسْكِيْناً"؟، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَنَا. قَالَ: "مَنْ تَبِعَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ جَنَازَةً"؟، قَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ: أَنَا، فَقَالَ: "مَنْ عَادَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ مَرِيْضاً"؟ قَالَ: أَبُو

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, आज तुम में से किस ने रोज़ादार हो कर सुब्ह़ की ? ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ ने कहा, मैं ने। फ़रमाया, आज तुम में से किस ने मिस्कीन को खिलाया ? ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की, मैं ने। फ़रमाया आज तुम में से किस ने जनाज़े में शिर्कत की ? ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की, मैं ने। फ़रमाया : आज तुम में से किस ने किसी बीमार की इयादत की ?

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 2, स. 406)

बَكْرٍ: أَنَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا اجْتَمَعَتْ هٰذِهِ الْخِصَالُ قَطُّ فِيْ رَجُلٍ إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ".[1]

हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : मैं ने। फ़रमाया, कि जिस शख़्स में येह ख़स्लतें जम्अ़ हो जाएं वोह जन्नत ही में जाता है।[1]

हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का जमाअ़ते सहा़बा से येह सुवाल फ़रमाना, उन पर सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ की फ़ज़ीलत ज़ाहिर करने और उन्हें आप के रोज़ाना के आ'माल दिखाने के लिये है, वरना हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तो हर एक के सारे ज़ाहिर व ख़ुफ़्या आ'माल से ख़बरदार हैं।

इस ह़दीष से चन्द मस्अले मा'लूम हुए, एक येह कि शैख़ का अपने मुरीदों के ह़ालात की तफ़्तीश करना, यूंही उस्ताद का शागिर्दों के ख़ुफ़्या ह़ालात मा'लूम करना सुन्नत से षाबित है। दूसरे येह की उम्मती का नबी से, मुरीद का शैख़ से, शागिर्द का उस्ताद से अपनी ख़ुफ़्या नेकियां बयान करना रिया नहीं, बल्कि उन की दुआ़ ले कर ज़ियादा क़ाबिले क़बूल बनाना है, तीसरे येह कि ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ आ़बिद तरीन सहा़बी हैं, कि आप के रोज़ाना के येह आ'माल हैं ख़याल रहे कि أَنَا या'नी मैं कहना फ़ख़्र वग़ैरा के लिये हो तो मन्अ़ है, इज्ज़ो नियाज़ के तौ़र पर जाइज़ है, चौथे येह कि अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ब शहादते ह़दीष व क़ुरआन जन्नती हैं।[2]

---

1 (صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب من جمع الصدقة وأعمال البر،الحديث: ٨٧-(١٠٢٨)، ص٣٦٩)
(مشكاة المصابيح،كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة، الحديث: ١٨٩١،ج١،ص٣٥٩)

2. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 94,95)

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: سُئِلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّ الْأَعْمَالِ أَفْضَلُ؟، قَالَ: "إِدْخَالُكَ السُّرُوْرَ عَلٰى مُؤْمِنٍ أَشْبَعْتَ جَوْعَتَهُ، أَوْ كَسَوْتَ عَوْرَتَهُ، أَوْ قَضَيْتَ لَهُ حَاجَتَهُ". [1]

ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, ख़ातमुल मुरसलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में किसी ने अ़र्ज़ किया, कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : तुम्हारा किसी मोमिन को पेट भर खाना खिला कर या उस के सित्र को छुपा कर या उस की किसी ह़ाजत को पूरा कर के उसे ख़ुश कर देना ।[1]

मुसलमान को पेट भर खिलाने वाला जन्नत में ख़ास दरवाज़े से दाख़िल होगा, चुनान्चे :

عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ أَطْعَمَ مُؤْمِنًا حَتّٰى يُشْبِعَهُ مِنْ سَغَبٍ أَدْخَلَهُ اللّٰهُ بَابًا مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ لَا يَدْخُلُهُ إِلَّا مَنْ كَانَ مِثْلَهُ". [2]

ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़्मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत बयान करते हैं : जो किसी मुसलमान को भूक में खाना खिला कर सैर कर दे तो अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत में उस दरवाज़े से दाख़िल फ़रमाएगा जिस में से ऐसे ही लोग दाख़िल होंगे ।[2]

---

[1] (المعجم الأوسط للطبراني، الحديث: ٥٠٨١، ج٥، ص٢٠٢)

[2] (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ١٦٢، ج٢٠، ص٨٥)

=

या'नी अल्लाह तआ़ला ने भूकों को खिलाने वालों के लिये वोह फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई कि उन के लिये जन्नत का एक दरवाज़ा मुख़्तस फ़रमा दिया।

अल्लाह तआ़ला खिलाने वालों पर फ़ख़्र फ़रमाता है, ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ جَعْفَرِ الْعَبْدِيِّ وَالْحَسَنِ قَالَا: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ يُبَاهِي مَلَائِكَتَهُ بِالَّذِيْنَ يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ مِنْ عَبِيْدِهِ".[1]

ह़ज़रते जा'फ़र अ़ब्दी और ह़सन से मरवी है, फ़रमाते हैं, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने उन बन्दों से जो लोगों को खाना खिलाते हैं अपने फ़िरिश्तों के साथ मुबाहात फ़रमाता है।[1]

एक गुनहगार को फ़क़त़ पानी पिलाने पर मग़्फ़िरत मिली, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنْ نَبِيِّ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "رَجُلَانِ سَلَكَا مَفَازَةً عَابِدٌ، وَالْآخَرُ بِهِ رَهَقٌ فَعَطِشَ الْعَابِدُ حَتّٰى سَقَطَ فَجَعَلَ صَاحِبُهُ يَنْظُرُ

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, वोह आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत बयान करते हैं कि आप ने

مدينـ

[1] (الكامل في ضعفاء الرجال، ج٥،ص١١٨)
(ميزان الاعتدال في نقد الرجال، ج٥، ص٣٥٠)
(كشف الخفاء، الحديث: ١٠٨٧، ج١،ص٤٠٥)
[2] (الفتاوى الرضوية،ج٢٣،ص١٤٩۔الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب في إطعام الطعام ...إلخ،الحديث: ٢١،ج٢، ص٣٧)

إِلَيْهِ، وَهُوَ صَرِيعٌ فَقَالَ: وَاللّٰهِ
إِنْ مَاتَ هٰذَا الْعَبْدُ الصَّالِحُ
عَطَشًا، وَمَعِي مَاءٌ لَا أُصِيبُ
مِنَ اللّٰهِ خَيْرًا أَبَدًا، وَلَئِنْ
سَقَيْتُهُ مَائِي لَأَمُوْتَنَّ فَتَوَكَّلَ
عَلَى اللّٰهِ وَعَزَمَ فَرَشَّ عَلَيْهِ مِنْ
مَّائِهِ وَسَقَاهُ فَضْلَهُ، فَقَامَ
فَقَطَعَ الْمَفَازَةَ فَيُوقَفُ الَّذِي
بِهِ رَهَقٌ لِّلْحِسَابِ فَيُؤْمَرُ بِهِ
إِلَى النَّارِ فَتَسُوقُهُ الْمَلَائِكَةُ
فَيَرَى الْعَابِدَ، فَيَقُولُ: يَا فُلَانُ
أَمَا تَعْرِفُنِي؟ فَيَقُولُ: وَمَنْ
أَنْتَ؟ فَيَقُولُ: أَنَا فُلَانٌ الَّذِي
آثَرْتُكَ عَلَى نَفْسِي يَوْمَ
الْمَفَازَةِ، فَيَقُولُ: بَلَى أَعْرِفُكَ،
فَيَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ قِفُوا
فَيَقِفُونَ، فَيَجِيءُ حَتَّى يَقِفَ
فَيَدْعُو رَبَّهُ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ: قَدْ
عَرَفْتَ يَدَهُ عِنْدِي، وَكَيْفَ

फ़रमाया, दो शख़्स सह़रा से गुज़र रहे थे उन में एक इबादत गुज़ार था जब कि दूसरा गुनहगार, तो आ़बिद को प्यास लगी यहां तक कि वोह शिद्दते प्यास से गिर पड़ा तो उस के साथी ने उसे देखा कि वोह बेहोशी की ह़ालत में पड़ा हुवा है, उस ने सोचा कि अगर येह नेक बन्दा मर गया ह़ालां कि मेरे पास पानी भी है, तो **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से मैं कभी भलाई न पा सकूंगा, और अगर मैं ने इस को पानी पिला दिया तो मैं मर जाऊंगा, बहर ह़ाल उस ने **अल्लाह** पर भरोसा किया और (उस की मदद का) इरादा किया कुछ पानी उस पर छिड़का बाक़ी उसे पिला दिया तो वोह खड़ा हो गया और (दोनों ने) सह़रा तै कर लिया। (मरने के बा'द) गुनहगार का ह़िसाब होगा तो उसे जहन्नम का हुक्म सुना दिया जाएगा। उसे फ़िरिश्ते ले कर चलेंगे उसी लम्ह़े उस की नज़र नेक बन्दे पर पड़ेगी वोह कहेगा, ऐ फ़ुलां क्या तूने मुझे पहचाना? तो वोह कहेगा, तू कौन है? कहेगा मैं वोही हूं जिस ने बियाबान वाले दिन तेरी जान बचाई थी ! तो वोह कहेगा : हां हां ! पहचान गया तो वोह नेक

बन्दा फ़िरिश्तों से कहेगा, ठहरो, तो वोह ठहर जाएंगे फिर वोह आ कर रब तआला से दुआ करेगा, अ़र्ज़ करेगा ऐ परवर दगार तू इस शख़्स का मुझ पर एह्सान जानता है, कैसे इस ने मेरी जान बचाई थी ! ऐ रब इस का मुआमला मुझे सोंप दे ! **अल्लाह** तआला फ़रमाएगा वोह तेरे हवाले ! फिर वोह नेक बन्दा आएगा और अपने भाई का हाथ पकड़ कर जन्नत में ले जाएगा ।[1]

آثَرَنِي عَلَى نَفْسِهِ، يَا رَبِّ: هَبْهُ لِي فَيَقُولُ: هُوَ لَكَ فَيَجِيءُ فَيَأْخُذُ بِيَدِ أَخِيهِ فَيُدْخِلُهُ الْجَنَّةَ".[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में एक ऐसे शख़्स का बयान आया है जिस के ह़क़ में पानी पिलाने के सबब शफ़ाअ़त क़बूल हो गई ।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत बयान फ़रमाते हैं, बरोज़े क़ियामत एक जन्नती जहन्नमियों को झांकेगा तो जहन्नमियों से एक शख़्स उसे पुकारेगा और कहेगा : ऐ फ़ुलां तू मुझे जानता है ? तो वोह कहेगा नहीं, **अल्लाह** की क़सम मैं तुझे नहीं जानता, तू कौन है ? तो वोह (जहन्नमी) कहेगा मैं वोही हूं जिस के पास से तू दुन्या में गुज़रा था और पीने के लिये पानी मांगा था । और मैं ने तुझे पानी पिलाया था, तो

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ يُشْرِفُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى أَهْلِ النَّارِ، فَيُنَادِيهِ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، فَيَقُولُ: يَا فُلَانُ هَلْ تَعْرِفُنِي؟ فَيَقُولُ: لَا، وَاللّٰهِ مَا أَعْرِفُكَ مَنْ أَنْتَ؟ فَيَقُولُ: أَنَا الَّذِي مَرَرْتَ بِي فِي الدُّنْيَا فَاسْتَسْقَيْتَنِي شَرْبَةً مِنْ مَاءٍ

---

[1] (المعجم الأوسط للطبراني، الحديث: ٢٩٠٦، ج٣، ص١٩٤)

فَسَقَيْتُكَ؟ قَالَ: قَدْ عَرَفْتُ، قَالَ: فَاشْفَعْ لِي بِهَا عِنْدَ رَبِّكَ. قَالَ: فَيَسْأَلُ اللّٰهَ تَعَالَى فَيَقُولُ: إِنِّي أَشْرَفْتُ عَلَى النَّارِ فَنَادَانِي رَجُلٌ مِنْ أَهْلِهَا، فَقَالَ لِي: هَلْ تَعْرِفُنِي؟ قُلْتُ: لَا، وَاللّٰهِ مَا أَعْرِفُكَ مَنْ أَنْتَ؟ قَالَ: أَنَا الَّذِي مَرَرْتَ بِي فِي الدُّنْيَا فَاسْتَسْقَيْتَنِي شَرْبَةً مِنْ مَاءٍ فَسَقَيْتُكَ، فَاشْفَعْ لِي عِنْدَ رَبِّكَ فَشَفِّعْنِي فِيهِ فَيُشَفِّعُهُ اللّٰهُ فَيَأْمُرُ بِهِ، فَيُخْرَجُ مِنَ النَّارِ". [1]

कहेगा हां पहचान गया, तो वोह (जहन्नमी) कहेगा : तू अपने रब के पास मेरे लिये शफ़ाअ़त कर ! रावी फ़रमाते हैं, फिर वोह जन्नती रब तआ़ला से शफ़ाअ़त तृलब करेगा । अ़र्ज़ करेगा, मैं ने जहन्नम में झांका तो मुझे एक जहन्नमी ने आवाज़ दे कर कहा तू मुझे जानता है ? मैं ने जवाब दिया नहीं **अल्लाह** की क़सम ! मैं तुझे नहीं जानता तू कौन है ? तो उस ने जवाब दिया मैं वोही हूं जिस के पास से तू दुन्या में गुज़रा था और पीने के लिये पानी मांगा था और मैं ने तुझे पानी पिलाया था इस लिये अपने रब से मेरी सिफ़ारिश कर, लिहाज़ा (ऐ रब) तू इस के ह़क़ में मेरी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा, तो **अल्लाह** तआ़ला उस की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा और उस के बारे में हुक्म फ़रमाएगा लिहाज़ा उस को जहन्नम से निकाल लिया जाएगा ।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

---

[1] (التخويف من النار، الباب الثالث والعشرون في نداء أهلِ النار أهلَ الجنة...إلخ، ص١٥٨)
(الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات،الترغيب فى اطعام الطعام...الخ،الحديث ١٤٢١، ج١، ص٤٤٨)

عَنْ كُدَيْرٍ الضَّبِّيِّ أَنَّ رَجُلاً أَعْرَابِيّاً أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَخْبِرْنِي بِعَمَلٍ يُقَرِّبُنِي مِنَ الْجَنَّةِ وَيُبَاعِدُنِي مِنَ النَّارِ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَوَ هُمَا أَعْمَلَتَاكَ"؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: "تَقُوْلُ الْعَدْلَ، وَتُعْطِي الْفَضْلَ". قَالَ: وَاللّٰهِ لَا أَسْتَطِيعُ أَنْ أَقُولَ الْعَدْلَ كُلَّ سَاعَةٍ، وَمَا أَسْتَطِيعُ أَنْ أُعْطِيَ الْفَضْلَ. قَالَ: "فَتُطْعِمُ الطَّعَامَ وَتُفْشِي السَّلَامَ"؟ قَالَ: هٰذِهِ أَيْضاً شَدِيدَةٌ. قَالَ: "فَهَلْ لَكَ إِبِلٌ"؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: "فَانْظُرْ إِلَى بَعِيرٍ مِنْ إِبِلِكَ وَسِقَاءٍ، ثُمَّ اعْمِدْ إِلَى أَهْلِ بَيْتٍ لَا يَشْرَبُوْنَ الْمَاءَ إِلَّا غِبًّا فَاسْقِهِمْ

ह़ज़रते कुदैर ज़ब्बी से मरवी है कि एक आ'राबी बारगाहे नबवी में ह़ाज़िर हुए, अ़र्ज़ की, मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइये जो मुझे जन्नत से क़रीब और जहन्नम से दूर कर दे ? तो नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या इसी चीज़ ने तुम्हें मेरे पास आने और सुवाल करने पर उभारा ?'' अ़र्ज़ की हां। तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ह़क़ बात कहो और अपनी ह़ाजत से ज़ाइद को स-दक़ा कर दो।'' अ़र्ज़ की, **अल्लाह** की क़सम मैं हर वक़्त न ह़क़ बात कहने की ताक़त रखता हूं और न ज़ाइद को स-दक़ा करने की इस्तित़ाअ़त। फ़रमाया, ''तो खाना खिलाओ और सलाम को आ़म करो।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : येह भी इसी त़रह़ सख़्त है। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : ''क्या तुम्हारे पास ऊंट है ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : जी, हां ! आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अपना एक ऊंट और मश्कीज़ा ले कर उन लोगों के पास

فَلَعَلَّكَ لَا يَهْلِكُ بَعِيرُكَ، وَلَا يَنْخَرِقُ سِقَاؤُكَ حَتّٰى تَجِبَ لَكَ الْجَنَّةُ". قَالَ: فَانْطَلَقَ الْأَعْرَابِيُّ يُكَبِّرُ فَمَا انْخَرَقَ سِقَاؤُهُ، وَلَا هَلَكَ بَعِيرُهُ حَتّٰى قُتِلَ شَهِيدًا.[1]

जाओ जो बहुत कम पानी पाते हैं। उन्हें पिलाओ इस उम्मीद पर कि तुम्हारा ऊंट हलाक होने से पहले और तुम्हारा मश्कीज़ा फटने से पहले तुम्हारे लिये जन्नत वाजिब हो जाएगी।" रावी कहते हैं : आ'राबी तक्बीर कहता हुवा गया, उस के मश्कीज़े फटने से पहले और ऊंट के हलाक होने से पहले वोह जामे शहादत नोश कर गया।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا، قَالَ: أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ فَقَالَ: مَا عَمَلٌ إِنْ عَمِلْتُ بِهِ دَخَلْتُ الْجَنَّةَ؟، قَالَ: "أَنْتَ بِبَلَدٍ يُجْلَبُ بِهِ الْمَاءُ"؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: "فَاشْتَرِ بِهَا سِقَاءً جَدِيدًا، ثُمَّ اسْقِ فِيهَا حَتّٰى تَخْرِقَهَا، فَإِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَهَا

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि वोह कौन सा अ़मल है जिस के ज़रीए मैं जन्नत में जाऊं ? फ़रमाया, क्या तुम ऐसे शहर में हो जहां पानी बाहर से लाया जाता है ? अ़र्ज़ की जी हां। फ़रमाया तुम वहां एक नया मश्कीज़ा ख़रीदो फिर उस के फटने

---

[1] (المصنف لعبد الرزاق، كتاب الجامع، باب سقي الماء، الحديث: ٤٤٦٤، ج١٠، ص٦٢-٦٣)
(السنن الكبرى، كتاب الزكاة، باب ما ورد في سقي الماء، الحديث: ٧٨٠٩، ج٤، ص٣١٢)

حَتّٰی تَبْلُغَ بِهَا عَمَلَ الْجَنَّةِ". [1]

तक लोगों को पानी पिलाओ, बेशक तुम अपने मश्कीजे़ को न फाड़ोगे मगर इस (या'नी मश्कीजे़ के फटने) से पहले इस अ़मल के सबब जन्नत में पहुंच जाओगे।[1]

अपने हौज़ से ग़ैर के जानवरों को पिलाना जाइज़ व मुस्तह़सन है, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَجُلًا جَاءَ إِلَى رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّي أَنْزِعُ فِي حَوْضِي حَتّٰى إِذَا مَلَأْتُهُ لِإِبِلِي وَرَدَ عَلَيَّ الْبَعِيرُ لِغَيْرِي فَسَقَيْتُهُ فَهَلْ فِي ذٰلِكَ مِنْ أَجْرٍ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ فِي كُلِّ ذَاتِ كَبِدٍ أَجْرًا". [2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि एक शख़्स नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाजि़र हुवा अ़र्ज़ की, मैं अपने हौज़ से पानी निकालता हूं यहां तक कि मैं अपने ऊंट के लिये पानी भरता हूं तो किसी और का ऊंट भी मेरे पास आ जाता है तो उस को भी पिला देता हूं। तो क्या इस में मेरे लिये षवाब है ? फ़रमाया, हर जिगर वाले के साथ भलाई करने में अज्र है।[2]

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

---

[1] (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ١٢٦٠٥، ج١٢، ص١٠٤)

[2] (المسند للإمام أحمد، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، الحديث: ٧٠٧٥، ج٢، ص٧٢٠)

(الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب في اطعام الطعام... الخ، الحديث ١٤٢٤، ج١، ص٤٥٠)

عَنْ مَحْمُودِ بْنِ الرَّبِيعِ أَنَّ سُرَاقَةَ بْنَ جُعْشُمٍ قَالَ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ، الضَّالَّةُ تَرِدُ عَلٰى حَوْضِي فَهَلْ لِّي فِيهَا مِنْ أَجْرٍ إِنْ سَقَيْتُهَا؟ قَالَ: "اسْقِهَا، فَإِنَّ فِي كُلِّ ذَاتِ كَبِدٍ حَرَّاءَ أَجْرًا".[1]

ह़ज़रते मह़मूद बिन रबीअ़ से मरवी है कि सुराक़ा बिन जो'शम ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) भटकती ऊंटनियां मेरे हौज़ पर आ जाती हैं तो क्या मेरे लिये उन को पानी पिलाने में षवाब है ? फ़रमाया उन को पिला दिया करो हर गर्म जिगर वाले में अज्र है।[1]

इसी त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला ने एक शख़्स की मह़्ज़ कुत्ते को पानी पिलाने के सबब मग़्फ़िरत फ़रमा दी, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "بَيْنَمَا رَجُلٌ يَمْشِي بِطَرِيقٍ، اشْتَدَّ عَلَيْهِ الْحَرُّ فَوَجَدَ بِئْرًا فَنَزَلَ فِيهَا، فَشَرِبَ ثُمَّ خَرَجَ، فَإِذَا كَلْبٌ يَلْهَثُ، يَأْكُلُ الثَّرٰى مِنَ

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, एक रोज़ एक शख़्स किसी रस्ते से जा रहा था कि उसे सख़्त गर्मी मह़सूस हुई उसे एक कुंवां मिल गया वोह कुंवें में उतरा और पानी पिया, जब बाहर आया तो देखा कि एक कुत्ता हांप रहा है और प्यास की शिद्दत

[1] (صحيح ابن حبان، ذكر إعطاء اللّٰه جل وعلا الأجر لمن سقى كل ذات كبد حري،الحديث: ٥٤٢، ج٢، ص٢٩٩)
(المستدرك على الصحيحين،الحديث: ٦٥٩٩، ج٣،ص٧١٨)
(السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الزكاة، باب ما ورد في سقي الماء، الحديث: ٧٨٠٧، ج٤، ص٣١٢)
(موارد الظمآن،باب في سقي الماء،الحديث:٨٦٠،ص٢١٨)

से कीचड़ चाट रहा है उस शख़्स ने सोचा इस कुत्ते को भी मेरी ही त़रह़ प्यास लगी है, वोह दोबारा कुंवें में उतरा अपने (चमड़े के) मोज़े को पानी से भरा, और मोज़ा अपने मुंह में दबा कर बाहर आया फिर उस प्यासे कुत्ते को पानी पिला दिया उस का फ़े'ल **अल्लाह** तआला को पसन्द आया और इस पर **अल्लाह** तआला ने उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी । सहाबा ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क्या हमारे लिये चौपायों में भी अज्र है ? फ़रमाया, हर तर जिगर (या'नी ज़ी रूह़) में षवाब है ।[1]

الْعَطَشِ، فَقَالَ الرَّجُلُ: لَقَدْ بَلَغَ هٰذَا الْكَلْبَ مِنَ الْعَطَشِ مِثْلُ الَّذِي كَانَ مِنِّي، فَنَزَلَ الْبِئْرَ فَمَلَأَ خُفَّهُ مَاءً، ثُمَّ أَمْسَكَهُ بِفِيهِ حَتّٰى رَقِيَ فَسَقَى الْكَلْبَ فَشَكَرَ اللّٰهُ لَهُ، فَغَفَرَ لَهُ". قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ: إِنَّ لَنَا فِي الْبَهَائِمِ أَجْرًا؟ فَقَالَ: "فِي كُلِّ كَبِدٍ رَطْبَةٍ أَجْرٌ".[1]

बन्दे के लिये सात चीज़ें क़ब्र में जाने के बा'द भी (षवाब की सूरत में) जारी होती हैं :

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं, सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, सात चीज़ें ऐसी हैं जिन का

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "سَبْعٌ تَجْرِي لِلْعَبْدِ

مدينہ

[1] (صحيح البخاري، كتاب الأدب، باب رحمة الناس و البهائم، الحديث: ٦٠٠٩، ج٤، ص٨٩)
(صحيح مسلم، كتاب السلام، باب فضل ساقي البهائم المحترمة وإطعامها، الحديث: ١٥٣-(٢٢٤٤)، ص ٨٨٥)
(سنن أبي داود، كتاب الجهاد، باب ما يؤمر به من القيام على الدواب و البهائم، الحديث: ٢٥٥٠، ج٣، ص٣٧)

بَعْدَ مَوْتِهٖ وَهُوَ فِي قَبْرِهٖ: مَنْ عَلَّمَ عِلْماً، أَوْ كَرٰى نَهْراً، أَوْ حَفَرَ بِئْراً، أَوْ غَرَسَ نَخْلاً، أَوْ بَنٰى مَسْجِداً، أَوْ وَرَّثَ مُصْحَفاً، أَوْ تَرَكَ وَلَداً يَسْتَغْفِرُ لَهٗ بَعْدَ مَوْتِهٖ".[1]

अज्रो षवाब बन्दे को मरने के बा'द उस की क़ब्र में भी पहुंचता है, जिस ने किसी को इल्म सिखाया या कोई नहर जारी कर दी, या कुंवां खुदवा दिया, या दरख़्त लगवा दिया, या मस्जिद बनवा दी, या अपने पीछे क़ुरआन शरीफ़ विरषे में छोड़ा या ऐसी अवलाद छोड़ी जो उस की मौत के बा'द उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत करती रहे।[1]

इसी त़रह़ की फ़ज़ीलत एक और ह़दीष शरीफ़ में है कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने पानी पिलाने को सब से बड़ा अज्र फ़रमाया, चुनान्चे :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَيْسَ صَدَقَةٌ أَعْظَمَ أَجْراً مِنْ مَاءٍ".[2]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत बयान करते हैं कि आप ने फ़रमाया, किसी स-दक़े का अज्र पानी स-दक़ा करने के अज्र से ज़ियादा नहीं।[2]

ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की वालिदा फ़ौत हुई तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें उन की वालिदा के ईसाले षवाब के लिये कुंवां खोद कर वक़्फ़ कर देने का हुक्म फ़रमाया :

مدينه

1 (الديباج للسيوطي،الحديث: ١٦٣٢، ج٤،ص٢٢٨)
(حلية الاولياء،قتادة بن عامة،الحديث ٢٦٧٥، ج٢،ص٧٣٩)

2 (شعب الإيمان،الباب الثاني والعشرون في الزكاة، فصل في إطعام الطعام وسقي الماء،الحديث: ٣٣٧٨، ج٣، ص٢٢٠-٢٢١)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हज़रते सा'द शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुए अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह ! صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी वालिदा फ़ौत हो गई और वसिय्यत नहीं की, क्या मैं उन की तरफ़ से स-दक़ा करूं तो उन्हें नफ़्अ़ पहुंचेगा ? फ़रमाया, हां और तुम्हारे लिये पानी का स-दक़ा करना बेहतर है ।[1]

عَنْ أَنَسٍ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ أَنَّ سَعْدًا أَتَی النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ: إِنَّ أُمِّي تُوُفِّیَتْ، وَلَمْ تُوْصِ أَفَیَنْفَعُهَا أَنْ أَتَصَدَّقَ عَنْهَا؟ قَالَ: "نَعَمْ، وَعَلَیْكَ بِالْمَاءِ". [1]

दूसरी रिवायत में है :

हज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी वालिदा फ़ौत हो गई तो कौन सा स-दक़ा उन के लिये बेहतर है ? फ़रमाया, पानी । तो उन्हों ने कुंवां खुदवाया और कहा येह कुंवां सा'द की मां के (ईसाले षवाब के) लिये है ।[2]

عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ إِنَّ أُمِّي مَاتَتْ فَأَيُّ الصَّدَقَةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: "اَلْمَاءُ"، فَحَفَرَ بِئْرًا وَقَالَ: هٰذِهٖ لِأُمِّ سَعْدٍ. [2]

مدينه

[1] (المعجم الأوسط للطبراني، الحديث: ٨٠٦١، ج٨، ص٩١)

[2] (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب في فضل سقي الماء، الحديث: ١٦٨١، ج٢، ص٢١٤)
(سنن ابن ماجه، كتاب الأدب، باب فضل صدقة الماء، الحديث: ٣٦٨٤، ج٤، ص٢٢٥)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "नमाज़ के अह़काम" में फ़रमाते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का कहना कि येह कुंवां उम्मे सा'द के लिये है, इस के मा'ना येह हैं कि येह कुंवां सा'द की मां رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا के ईसाले षवाब के लिये है। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि मुसलमानों का गाय या बकरे वग़ैरा को बुज़ुर्गों की त़रफ़ मन्सूब करना मषलन येह कहना कि "येह सय्यिदुना ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का बकरा है" इस में कोई ह़रज नहीं कि इस से मुराद भी येही है कि येह बकरा ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ईसाले षवाब के लिये है और क़ुरबानी के जानवर को भी तो लोग एक दूसरे ही की त़रफ़ मन्सूब करते हैं, मषलन कोई अपनी क़ुरबानी की गाय लिये चला आ रहा हो और अगर आप उस से पूछें कि येह किस की है तो उस ने येही जवाब देना है "मेरी गाय है" जब येह कहने वाले पर ए'तिराज़ नहीं तो "ग़ौषे पाक का बकरा" कहने वाले पर भी कोई ए'तिराज़ नहीं हो सकता। ह़क़ीक़त में हर शै का मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है और क़ुरबानी की गाय हो या ग़ौषे पाक का बकरा हर ज़बीह़ा के ज़ब्ह़ के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिया जाता है, **अल्लाह** वस्वसों से नजात बख़्शे ! اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم [1]

कुंवां खुदवाने वाले के लिये बरोज़े क़ियामत बड़ा अज्र है, ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ جَابِرٍ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल

1. (नमाज़ के अह़काम, फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, स. 481)

قَالَ: "مَنْ حَفَرَ مَاءً لَمْ تَشْرَبْ مِنْهُ كَبِدُ حَرّٰى مِنْ جِنٍّ وَلَا إِنْسٍ وَلَا طَائِرٍ إِلَّا أَجَرَهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ"[1]

आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जो पानी का कुंवां खुदवाए तो उसे बरोज़े क़ियामत उस से हर ज़ी रूह जिन्न व इन्स और परन्दे के पानी पीने का अज्र **अल्लाह** तआ़ला अ़ता फ़रमाएगा।[1]

अपनी ज़रूरत से ज़ाइद पानी को दूसरों से रोक लेने वाले के लिये ह़दीषे पाक में वईद आई है चुनान्चे :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "ثَلَاثَةٌ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ: رَجُلٌ حَلَفَ عَلٰى سِلْعَةٍ لَقَدْ أُعْطِيَ بِهَا أَكْثَرَ مِمَّا أُعْطِيَ وَهُوَ كَاذِبٌ وَرَجُلٌ حَلَفَ عَلٰى يَمِينٍ

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़्मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, तीन शख़्स हैं जिन से क़ियामत के दिन **अल्लाह** न कलाम फ़रमाएगा और न उन्हें रह़मत की नज़र से देखेगा, एक वोह शख़्स जो किसी सामान पर क़सम खाए कि मुझे पहले इस से ज़ियादा क़ीमत मिलती रही हालां कि वोह झूटा हो और एक वोह शख़्स जो अ़स्र के बा'द झूटी

مدينه

[1] (التاريخ الكبير للبخاري، باب النون، الحديث: ١٠٤٦، ج١، ص٣٣١)
(صحيح ابن خزيمة، باب في فضل المسجد و إن صغر المسجد ضاق، الحديث: ١٢٩٢، ج٢، ص٢٦٩)

كَاذِبَةٍ بَعْدَ الْعَصْرِ لِيَقْتَطِعَ بِهَا مَالَ رَجُلٍ مُسْلِمٍ، وَرَجُلٌ مَنَعَ فَضْلَ مَاءٍ، فَيَقُوْلُ اللّٰهُ: اَلْيَوْمَ أَمْنَعُكَ فَضْلِي كَمَا مَنَعْتَ فَضْلَ مَا لَمْ تَعْمَلْ يَدَاكَ" الحديث.[1]

क़सम खाए ताकि इस क़सम से मुसलमान शख़्स का माल मारे और एक वोह शख़्स जो बचा हुवा पानी रोके, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि आज मैं तुझ से अपना फ़ज़्ल रोकता हूं जैसे तूने बचा हुवा पानी रोका था जिसे तेरे हाथों ने न बनाया था।[1]

“कलाम से कलामे मह़ब्बत और नज़र से नज़रे रह़मत मुराद है वरना ग़ज़ब का कलाम और क़हर की नज़र तो कुफ़्फ़ार पर भी होगी।”

“गुज़रगाहे आ़म पर ग़ैर मम्लूक पानी इस की ह़ाजत से ज़ाइद हो, फिर वोह मुसाफ़िरों और जानवरों को न पीने दे, लिहाज़ा इस हुक्म से वोह लोग ख़ारिज हैं जो पानी बेच कर अपना गुज़ारा करते हैं, कि वोह पानी उन के अपने कुंवें का होता है या दूर से लाया हुवा।”

वोह फ़रमान कि जिसे तेरे हाथों ने न बनाया था, “इस जुम्ले में भी इशारा इस त़रफ़ है कि अपना खोदा हुवा कुंवां या अपना जम्अ़ किया हुवा पानी अपनी मिल्किय्यत है जिसे फ़रोख़्त करना बिला कराहत जाइज़ है। يد से मुराद कोशिश और मेह़नत है।”[2]

مدینہ

1 (صحيح البخاري، كتاب المساقاة، باب من رآى أن صاحب الحوض والقربة أحق بمائه، الحديث: ٢٣٦٩، ج٢، ص٨٩-٩٠)
(صحيح مسلم، كتاب الإيمان، باب بيان غلظ...إلخ، الحديث: ١٧٣-(١٠٨)، ص٥٩)
(سنن أبي داود، كتاب البيوع والإجارات، باب في منع الماء، الحديث: ٣٤٧٤، ج٣، ص٤٨٣)
(سنن ابن ماجه، كتاب التجارات، باب ما جاء في كراهية الأيمان...الخ، الحديث: ٢٢٠٧، ج٣، ص٤٤)
(سنن النسائي، كتاب البيوع، باب الحلف ...الخ، الحديث: ٤٤٦٢، ج٤، الجزء ٧، ص٢٨٣)
(مشكاة المصابيح، كتاب البيوع، باب إحياء الموات والشرب، الحديث: ٢٩٩٥، ج١، ص٥٢٢)

2. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 4, स. 342)

जिन चीज़ों का रोकना मम्नूअ़ है इस बारे में ह़दीषे पाक में इर्शाद है :

عَنِ امْرَأَةٍ يُقَالُ لَهَا بُهَيْسَةُ عَنْ أَبِيْهَا قَالَتِ اسْتَأْذَنَ أَبِي النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَدَخَلَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ قَمِيصِهِ فَجَعَلَ يُقَبِّلُ وَيَلْتَزِمُ، ثُمَّ قَالَ: يَا نَبِيَّ اللّٰهِ مَا الشَّيْءُ الَّذِي لَا يَحِلُّ مَنْعُهُ؟ قَالَ: "اَلْمَاءُ". قَالَ: يَا نَبِيَّ اللّٰهِ مَا الشَّيْءُ الَّذِي لَا يَحِلُّ مَنْعُهُ؟ قَالَ: "اَلْمِلْحُ". قَالَ: يَا نَبِيَّ اللّٰهِ مَا الشَّيْءُ الَّذِي لَا يَحِلُّ مَنْعُهُ؟ قَالَ: "أَنْ تَفْعَلَ الْخَيْرَ خَيْرٌ لَكَ"[1]

एक औ़रत जिन्हें बुहैसा कहा जाता था, से मरवी है फ़रमाती हैं मेरे वालिद ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने की इजाज़त चाही अन्दर दाख़िल हुए तो आप की क़मीस मुबारक को उठा कर हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे अक़्दस को चूमने लगे और लिपट गए फिर अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि या रसूलल्लाह वोह क्या चीज़ है जिस का रोकना ह़लाल नहीं ? फ़रमाया कि पानी, अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि या नबिय्यल्लाह ! वोह क्या चीज़ है जिस का रोकना जाइज़ नहीं ? फ़रमाया कि नमक । अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि या नबिय्यल्लाह ! वोह क्या चीज़ है जिस का रोकना मुनासिब नहीं ? फ़रमाया कि तुम्हारा नेकी करना तुम्हारे लिये बेहतर है ।[1]

मुसलमान घास, पानी और आग में शरीक हैं, चुनान्चे :

[1] (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب ما لا يجوز منعه، الحديث: ١٦٦٩، ج٢، ص ٢١١)

عَنْ رَجُلٍ مِّنَ الْمُهَاجِرِيْنَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثًا أَسْمَعُهُ يَقُوْلُ: "اَلْمُسْلِمُوْنَ شُرَكَاءُ فِيْ ثَلَاثٍ: فِي الْكَلَإِ، وَالْمَاءِ، وَالنَّارِ".[1]

एक मुहाजिर सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہ से मरवी है फ़रमाते हैं, मैं ने तीन ग़ज़्वात में आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत की आप फ़रमाया करते थे कि मुसलमान तीन चीज़ों में शरीक हैं, घास, पानी और आग।[1]

एक और ह़दीष में तीन चीजे़ं पानी, नमक और आग बयान हुईं, चुनान्चे :

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا الشَّيْءُ الَّذِيْ لَا يَحِلُّ مَنْعُهُ؟ قَالَ: "اَلْمَاءُ، وَالْمِلْحُ، وَالنَّارُ" قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ هٰذَا الْمَاءُ، وَقَدْ عَرَفْنَاهُ، فَمَا بَالُ الْمِلْحِ وَالنَّارِ؟ قَالَ: "يَا حُمَيْرَاءُ، مَنْ أَعْطٰى نَارًا فَكَأَنَّمَا تَصَدَّقَ بِجَمِيْعِ مَا أَنْضَجَتْ تِلْكَ النَّارُ، وَمَنْ أَعْطٰى مِلْحًا فَكَأَنَّمَا تَصَدَّقَ بِجَمِيْعِ مَا

सय्यिदह आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہا से मरवी है कि आप ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह किस चीज़ का मन्अ़ करना जाइज़ नहीं ? फ़रमाया, पानी, नमक और आग। फ़रमाती हैं मैं ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह पानी तो येही है जिस का मुआ़मला हम जानते हैं, मगर नमक और आग में क्या ह़िक्मत है ? फ़रमाया ऐ ह़ुमैरा ! जो किसी को आग दे तो गोया उस ने वोह सब दिया जो (खाना वग़ैरा) आग पकाएगी, और जो किसी को नमक दे तो गोया उस ने वोह सब कुछ

مدینہ

[1] (سنن أبي داود، كتاب البيوع والإجارات، الحديث: ٣٤٧٧، ج٣، ص٤٨٤)

أَنْضَجَتْ تِلْكَ النَّارُ، وَمَنْ أَعْطَى مِلْحاً فَكَأَنَّمَا تَصَدَّقَ بِجَمِيعِ مَا طَيَّبَ ذٰلِكَ الْمِلْحُ، وَمَنْ سَقَى مُسْلِماً شَرْبَةً مِنْ مَاءٍ حَيْثُ يُوْجَدُ الْمَاءُ فَكَأَنَّمَا أَعْتَقَ رَقَبَةً، وَمَنْ سَقَى مُسْلِماً شَرْبَةً مِنْ مَاءٍ حَيْثُ لَا يُوْجَدُ الْمَاءُ فَكَأَنَّمَا أَحْيَاهَا". [1]

स-दक़ा किया जिस को इस नमक ने लज़्ज़त दी, और जिस ने किसी मुसलमान को ऐसी जगह पानी पिलाया जहां पानी दस्तयाब हो तो गोया उस ने एक गुलाम आज़ाद किया और ऐसी जगह किसी मुसलमान को पानी पिलाया जहां पानी दस्तयाब न हो तो गोया उस ने एक गुलाम को ज़िन्दा कर दिया।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اَلْمُسْلِمُوْنَ شُرَكَاءُ فِي ثَلَاثٍ: فِي الْمَاءِ، وَالْكَلَإِ، وَالنَّارِ، وَثَمَنُهُ حَرَامٌ". قَالَ أَبُوْ سَعِيْدٍ يَعْنِي: اَلْمَاءَ الْجَارِيَ. [2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है, फ़रमाते हैं, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, मुसलमान तीन चीज़ों में शरीक हैं पानी, घास और आग में और इस की क़ीमत (लेना) ह़राम है। अबू सईद ने फ़रमाया इस से मुराद जारी पानी है।[2]

---

[1] (سنن ابن ماجه، كتاب الرهون، باب المسلمون شركاء في ثلاث، الحديث: ٢٤٧٤، ج٣، ص١٨٧)

[2] (سنن أبي داود، كتاب البيوع والإجارات، باب في منع الماء، الحديث: ٣٤٧٧، ج٣، ص٤٨٤)

(سنن ابن ماجه، كتاب الرهون، باب المسلمون شركاء في ثلاث، الحديث: ٢٤٧٢، ج٣)

(مشكاة المصابيح، كتاب البيوع، باب إحياء الموات والشرب، الحديث: ٣٠٠١، ج١، ص٥٥٣)

"यहां पानी से वोह पानी मुराद है जो न किसी की मेह़नत से ह़ासिल हुवा हो न किसी के बरतन में भरा हो जैसे जंगल, बारिश, सैलाब का पानी मगर अपनी नहर, घड़े, अपनी नाली का पानी इस से ख़ारिज है। ऐसे ही घास से वोह घास मुराद है जो ग़ैर मम्लूक ज़मीन में खड़ी हो, अपनी मम्लूक ज़मीन की घास, ऐसे ही वोह घास जो काट कर अपने घर में रख ली मम्लूक है। आग से मुराद येह है कि किसी शख़्स को अपने चराग़ की रोशनी में बैठने, आग तापने से नहीं रोक सकते, यूं ही अपनी शम्अ़ से दूसरे को शम्अ़ जलाने से मन्अ़ नहीं कर सकते, बा'ज़ ने फ़रमाया कि आग से मुराद चक़माक़ पथ्थर है लिहाज़ा हर शख़्स अपनी आग से चिंगारी लेने से मन्अ़ कर सकता है कि इस की मिल्क है, और इस से आग कम भी हो जाती है।"[1]

मस्जिद की ज़ियारत की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है : "बेशक मस्जिदें ज़मीन में ***अल्लाह*** *तआ़ला के घर हैं और* ***अल्लाह*** *तआ़ला पर ह़क़ है कि वोह (अपने घर की) ज़ियारत करने वाले का इकराम (इ़ज़्ज़त) करे।"* (طبرانی کبیر،ج۱۰،ص۶۱،حدیث۱۰۳۲۴)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "या'नी मस्जिदें वोह जगहें हैं जिन्हें ***अल्लाह*** *तआ़ला ने अपनी रह़मतों को उतारने के लिये चुना है।"*

(फ़ैज़ुल क़दीर, जि. 2, स. 552, दारुल फ़िक्र)

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 4, स. 344)

क़र्ज़ देने और तंगदस्त पर आसानी करने के फ़ज़ाइल

चूंकि क़र्ज़ देना भी स–दक़े की एक क़िस्म है, जैसा कि पहले बाब में जि़क्र गुज़रा, लिहाज़ा इस बाब में اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ क़र्ज़ देने और तंगदस्त पर आसानी करने के फ़ज़ाइल में वारिद होने वाली अहादीषे तय्यिबा का बयान होगा, चुनान्चे हदीष शरीफ़ में है :

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "كُلُّ قَرْضٍ صَدَقَةٌ".[1]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर क़र्ज़ स–दक़ा है।[1]

एक और हदीष में फ़रमाया :

عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: "مَنْ مَنَحَ مَنِيْحَةَ لَبَنٍ، اَوْ وَرِقٍ، اَوْ هَدٰى زُقَاقًا كَانَ لَهُ مِثْلُ عِتْقِ رَقَبَةٍ".[2]

हज़रते बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो दूध वाला जानवर आ़रियतन दे या चांदी क़र्ज़ दे या किसी को रास्ता बताए तो उसे गु़लाम आज़ाद करने के बराबर षवाब है।[2]

مدينه

1 (شعب الإيمان، باب في الزكاة، فصل في القرض، الحديث:٣٥٦٣، ج٣،ص٢٨٤)
(المعجم الكبير، الحديث:٣٤٩٨، ج٤، ص ٤٧١)

2 (سنن الترمذي، كتاب البر الصلة، باب ما جاء في المنحة، الحديث:١٩٥٧، ج٣، ص٩٠)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة، الحديث:١٩١٧، ج١، ص٣٦٣)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीष की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी किसी को दूध का जानवर कुछ रोज़ के लिये आ़रियतन देना कि वोह उस का दूध पी ले या किसी ह़ाजत मन्द को कुछ रुपिया क़र्ज़ देना या नाबीना या ना वाक़िफ़ को रास्ता बता देने का षवाब गुलाम आज़ाद करने के बराबर है जब क़र्ज़ देने का येह षवाब हुवा तो ख़ैरात दे देने का कितना होगा खुद सोच लो। उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं कि कभी क़र्ज़ देना स-दक़ा देने से बढ़ जाता है क्यूं कि स-दक़ा तो ग़ैर ह़ाजत मन्द भी ले लेता है मगर क़र्ज़ ज़रूरत मन्द ही लेता है इस ह़दीष से मा'लूम हुवा कि कभी मा'मूली नेकी का षवाब बड़े से बड़े काम से बढ़ जाता है, प्यासे को एक घूंट पानी पिला कर उस की जान बचा लेने का षवाब सेंकड़ों रुपिया ख़ैरात करने से ज़ियादा है, इस लिये ह़दीष शरीफ़ में है कि क़ियामत में नेकियों का षवाब ब क़द्रे अ़मल मिलेगा।[1]

स-दक़ा देना दस गुना षवाब रखता है जब कि क़र्ज़ देना अठारह गुना, ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "رَأَيْتُ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِي عَلٰى بَابِ الْجَنَّةِ مَكْتُوْبًا: اَلصَّدَقَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا وَالْقَرْضُ بِثَمَانِيَةَ عَشَرَ فَقُلْتُ: يَا جِبْرِيْلُ مَا بَالُ

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिलआ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : शबे मे'राज मैं ने जन्नत के दरवाज़े पर लिखा देखा स-दक़ा दस गुना और क़र्ज़ अठारह गुना (ज़ियादा अज्र रखता) है मैं ने कहा : ऐ जिब्रील !

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 107)

اَلْقَرْضِ اَفْضَلُ مِنَ الصَّدَقَةِ؟ قَالَ: لِاَنَّ السَّائِلَ يَسْأَلُ وَعِنْدَهُ وَالْمُسْتَقْرِضُ لَا يَسْتَقْرِضُ اِلَّا مِنْ حَاجَةٍ"۔ [1]

क़र्ज़ के स-दक़े से अफ़्ज़ल होने की क्या वजह है ? तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : इस लिये कि साइल मांगता है हालां कि उस के पास माल मौजूद होता है जब कि क़र्ज़ लेने वाला बिला ज़रूरत क़र्ज़ नहीं लेता।[1]

यूंही एक मरतबा क़र्ज़ देने का षवाब दो मरतबा स-दक़ा करने के बराबर है, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَا مِنْ مُسْلِمٍ يُقْرِضُ مُسْلِمًا قَرْضًا مَرَّةً اِلَّا كَانَ كَصَدَقَتِهَا مَرَّتَيْنِ"۔ [2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मुसलमान किसी मुसलमान को एक मरतबा क़र्ज़ देता है तो वोह ऐसे होता है जैसे दो मरतबा स-दक़ा किया हो।[2]

यूं ही तंगदस्त के साथ शफ़्क़त और नर्मी का बरताव रखने वाले के लिये बरोज़े क़ियामत मग़्फ़िरत की बिशारत है, या'नी जो शख़्स दुन्या में परेशान ह़ाल के लिये आसानी फ़राहम करेगा तो **अल्लाह** तआ़ला उसे दुन्या में भी चैन अ़ता करेगा और आख़िरत में भी राह़त उस का मुक़द्दर होगी, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में बयान है :

---

[1] (سنن ابن ماجه، كتاب الصدقات، باب القرض، الحديث: ٢٤٣١، ج٣، ص١٦٣۔١٦٤)

[2] (سنن ابن ماجه، كتاب الصدقات، باب القرض، الحديث: ٢٤٣٠، ج٣، ص١٦٣)
(الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب في القرض...الخ، الحديث: ١٣٣٩، ج١، ص٤٢٦)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ يَسَّرَ عَلٰى مُعْسِرٍ يَسَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ". [1]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी तंगदस्त पर आसानी करे तो **अल्लाह** तआला दुन्या व आख़िरत में उस पर आसानी फ़रमाएगा।[1]

एक और ह़दीष में है :

عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ رَجُلًا كَانَ فِيْمَنْ قَبْلَكُمْ أَتَاهُ الْمَلَكُ لِيَقْبِضَ رُوْحَهُ فَقِيْلَ لَهُ: هَلْ عَمِلْتَ مِنْ خَيْرٍ؟ قَالَ: مَا أَعْلَمُ قِيْلَ لَهُ أُنْظُرْ قَالَ: مَا أَعْلَمُ شَيْئًا غَيْرَ أَنِّيْ كُنْتُ أُبَايِعُ النَّاسَ فِي الدُّنْيَا وَأُجَازِيْهِمْ فَأُنْظِرُ الْمُوْسِرَ وَأَتَجَاوَزُ عَنِ الْمُعْسِرِ فَأَدْخَلَهُ اللّٰهُ الْجَنَّةَ. [2]

हज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम से अगले लोगों में एक शख़्स था जिस के पास उस की रूह़ क़ब्ज़ करने फ़िरिश्ता आया तो उस से कहा गया कि क्या तूने कोई नेकी की है ? वोह बोला : मैं नहीं जानता उस से कहा गया : ग़ौर तो कर। बोला : इस के सिवा कुछ और नहीं जानता कि मैं दुन्या में लोगों से तिजारत करता था और उन पर तक़ाज़ा करता था तो अमीर को मोहलत दे देता और ग़रीब को मुआ़फ़ी। चुनान्चे **अल्लाह** तआला ने उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया।[2]

[1] (سنن ابن ماجه، كتاب الصدقات، باب إنظار المعسر، الحديث:٢٤١٧، ج٣، ص١٥٦)
[2] (سنن الدارمي، كتاب البيوع، باب في السماحة، الحديث:٢٥٤٩، ١/ ٨٢٩) =

किसी पर नर्मी सिर्फ़ माली इम्दाद की सूरत ही में नहीं तिजारती मुआ़मलात में भी हो सकती है। चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में एक शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ बयान हुवा :

عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: "أُتِيَ اللّٰهُ بِعَبْدٍ مِنْ عِبَادِهٖ، آتَاهُ اللّٰهُ مَالًا فَقَالَ لَهُ: مَاذَا عَمِلْتَ فِي الدُّنْيَا؟ قَالَ: وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا قَالَ: يَا رَبِّ آتَيْتَنِيْ مَالَكَ. فَكُنْتُ أُبَايِعُ النَّاسَ، وَكَانَ مِنْ خُلُقِي الْجَوَازُ. فَكُنْتُ أَتَيَسَّرُ عَلَى الْمُوْسِرِ، وَأُنْظِرُ الْمُعْسِرَ، فَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: أَنَا أَحَقُّ بِذَا مِنْكَ، تَجَاوَزُوْا عَنْ عَبْدِيْ".[1]

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि **अल्लाह** तआ़ला के बन्दों में से एक बन्दा उस के पास लाया गया जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने माल अ़ता किया था तो **अल्लाह** तआ़ला ने उस से पूछा कि तूने दुन्या में क्या अ़मल किया ? रावी कहते हैं लोग **अल्लाह** तआ़ला से कोई बात छुपा नहीं सकते, चुनान्चे उस ने कहा ऐ मेरे रब ! तूने मुझे माल अ़ता किया मैं लोगों से ख़रीदो फ़रोख़्त करता था और मेरी आ़दत थी कि मैं दर गुज़र करता पस मैं मालदार पर आसानी करता और तंगदस्त को मोहलत देता **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया मैं इस (दर गुज़र करने) का तुझ से ज़ियादा ह़क़दार हूं (ऐ फ़िरिश्तो !) मेरे बन्दे से दर गुज़र करो।[1]

= (صحيح البخاري، كتاب البيوع، باب من أنظر معسراً، الحديث:٢٠٧٧، ج٢،ص١٠-١١)
(صحيح مسلم، كتاب المساقاة، باب فضل إنظار المعسر،الحديث:١٥٦٠،٦٠٧)
(مشكاة المصابيح، كتاب البيوع،باب المساهلة فى المعاملات، الحديث:٢٧٩١، ج١، ص٥١٨)

[1] (صحيح مسلم، كتاب المساقاة، باب فضل إنظار المعسر،الحديث:١٥٦٠،ص٦٠٧-٦٠٨)

यूं ही एक और शख़्स का तज़्किरा पढ़िये जिस ने तिजारती मुआ़मलात में अपने मुलाज़िमीन को हर किसी से नर्मी का बरताव रखने का हुक्म दे रखा था तो **अल्लाह** तआ़ला ने इस के सबब उस पर नर्मी फ़रमाई, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي مَسْعُوْدٍ الْبَدَرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "حُوْسِبَ رَجُلٌ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ فَلَمْ يُوْجَدْ لَهُ مِنَ الْخَيْرِ شَيْءٌ إِلَّا أَنَّهُ كَانَ يُخَالِطُ النَّاسَ وَكَانَ مُوْسِرًا وَكَانَ يَأْمُرُ غِلْمَانَهُ أَنْ يَتَجَاوَزُوْا عَنِ الْمُعْسِرِ. قَالَ اللّٰهُ عزوجل: نَحْنُ أَحَقُّ بِذٰلِكَ تَجَاوَزُوْا عَنْهُ".[1]

ह़ज़रते अबू मसऊ़द बदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम से अगले लोगों में से एक शख़्स का मुह़ासबा किया गया उस के पास कोई नेक अ़मल न पाया गया सिवाए इस के कि वोह आ़म लोगों में घुल मिल जाता ह़ालां कि वोह मालदार था और अपने ख़ादिमीन को हुक्म दिया करता कि वोह तंगदस्त से दर गुज़र करें। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : हम इस बात के ज़ियादा ह़क़दार हैं, (ऐ फ़िरिश्तो !) इस से भी दर गुज़र करो।[1]

एक और ह़दीष में इर्शादे नबवी है :

مدينه ـــــــــــــــــــــــــــ ه

[1] (صحيح مسلم، كتاب المساقاة، باب فضل إنظار المعسر،الحديث:١٥٦١،ص٦٠٧)
(سنن الترمذي، كتاب البيوع،باب ماجاء في إنظارالمعسر والرفق به،الحديث:١٣٠٧،ج٢،ص٣١٧)
(المعجم الكبير للطبراني،الحديث:٥٣٧،ج١٧،ص٢٠١)

عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: "مَنْ اَنْظَرَ مُعْسِرًا فَلَهٗ كُلَّ يَوْمٍ مِثْلُهٗ صَدَقَةٌ". ثُمَّ سَمِعْتُهٗ يَقُوْلُ: "مَنْ اَنْظَرَ مُعْسِرًا فَلَهٗ كُلَّ يَوْمٍ مِثْلَيْهِ صَدَقَةٌ" فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ سَمِعْتُكَ تَقُوْلُ: مَنْ اَنْظَرَ مُعْسِرًا فَلَهٗ كُلَّ يَوْمٍ مِثْلُهٗ صَدَقَةٌ، ثُمَّ سَمِعْتُكَ تَقُوْلُ: مَنْ اَنْظَرَ مُعْسِرًا فَلَهٗ كُلَّ يَوْمٍ مِثْلَيْهِ صَدَقَةٌ؟ قَالَ لَهٗ: "كُلَّ يَوْمٍ مِثْلُهٗ صَدَقَةٌ قَبْلَ اَنْ يَحِلَّ الدَّيْنُ، فَاِذَا حَلَّ فَاَنْظَرَهٗ فَلَهٗ بِكُلِّ يَوْمٍ مِثْلَيْهِ صَدَقَةٌ".[1]

हज़रते बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : मैं ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : जो किसी तंगदस्त को मोहलत दे उस के लिये रोज़ाना क़र्ज़ के बराबर स-दक़ा करने का षवाब है। फिर मैं ने एक मरतबा आप को येह फ़रमाते सुना कि जो किसी तंगदस्त को मोहलत दे उस के लिये रोज़ाना क़र्ज़ से दो गुना स-दक़ा करने का षवाब है। तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं ने आप को इर्शाद फ़रमाते सुना था कि जो किसी तंगदस्त को मोहलत दे उस के लिये रोज़ाना क़र्ज़ के बराबर स-दक़ा करने का षवाब है। फिर मैं ने आप को येह फ़रमाते सुना कि जो किसी तंगदस्त को मोहलत दे उस के लिये रोज़ाना क़र्ज़ से दो गुना स-दक़ा करने का षवाब है। (इस की क्या वजह है ?) आप ने इर्शाद फ़रमाया : रोज़ाना क़र्ज़ के बराबर स-दक़ा करने का षवाब अदाएगी का वक़्त आने से पहले है और जब अदाएगी का वक़्त आ पहुंचे फिर वोह मक़रूज़ को मज़ीद मोहलत दे तो उस के लिये रोज़ाना क़र्ज़ से दो गुना स-दक़ा करने का षवाब है।[1]

مدینہ

[1] (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب في التيسير على المعسر...إلخ، الحديث:٨، ج٢، ص٢٢)

एक और हदीष में तंगदस्त पर आसानी करने वाले की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई गई :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ نَفَّسَ عَنْ مُؤْمِنٍ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ الدُّنْيَا، نَفَّسَ اللّٰهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِّنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ. وَمَنْ يَسَّرَ عَلٰى مُعْسِرٍ، يَسَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا، سَتَرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ. وَاللّٰهُ فِي عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِي عَوْنِ أَخِيهِ وَمَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَلْتَمِسُ فِيهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللّٰهُ لَهُ طَرِيقًا إِلَى الْجَنَّةِ. وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللّٰهِ يَتْلُوْنَ كِتَابَ اللّٰهِ وَيَتَدَارَسُوْنَهُ بَيْنَهُمْ، إِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ، وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ،

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी मुसलमान से दुन्यवी मुसीबतों में से कोई मुसीबत दूर की तो **अल्लाह** तआला उस से रोज़े क़ियामत की मुसीबतों में से एक मुसीबत दूर कर देगा और जो किसी तंगदस्त पर आसानी करेगा **अल्लाह** तआला उस पर दुन्या व आख़िरत में आसानियां फ़रमाएगा और जो किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करेगा, **अल्लाह** तआला दुन्या व आख़िरत में उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा। **अल्लाह** तआला बन्दे की मदद पर रहता है जब तक कि बन्दा अपने भाई की मदद पर रहे, और जो तलाशे इल्म में किसी रास्ते पर चले तो **अल्लाह** तआला उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देगा और कोई क़ौम **अल्लाह** तआला के घरों में से किसी घर में क़ुरआन पढ़ने और आपस में क़ुरआन सीखने सिखाने के लिये जम्अ़ होती है तो उन पर सकीना नाज़िल होता

وَحَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ، وَذَكَرَهُمُ اللّٰهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ. وَمَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ"[1]

है और उन्हें रह़मत ढांप लेती है और फ़िरिश्ते घेर लेते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस जमाअ़त में याद करता है जो उस के पास है । और जिसे अ़मल पीछे कर दे उसे नसब नहीं बढ़ा सकता ।[1]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी साहि़ब رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस ह़दीष की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी तुम किसी की फ़ानी मुसीबत दफ़्अ़ करो **अल्लाह** तुम से बाक़ी मुसीबत दफ़्अ़ फ़रमाएगा तुम मोमिन को फ़ानी दुन्यवी आराम पहुंचाओ **अल्लाह** तुम्हें बाक़ी उख़्रवी आराम देगा क्यूं कि बदला एह़सान का एह़सान है येह ह़दीष बहुत जामेअ़ है किसी मुसलमान के पाउं से कांटा निकालना भी ज़ाएअ़ नहीं जाता ह़दीष का मत़लब येह नहीं कि सिर्फ़ क़ियामत ही में बदला मिलेगा बल्कि क़ियामत में बदला ज़रूर मिलेगा अगर्चे कभी दुन्या में भी मिल जाए ।

जो मक़्रूज़ को मुआ़फ़ी या मोहलत दे, ग़रीब की ग़ुरबत दूर करे तो اِنْ شَآءَاللّٰه दीन व दुन्या में उस की मुश्किलें आसान होंगी । मिरक़ात में फ़रमाया कि इस हुक्म में मोमिन काफ़िर सब शामिल हैं काफ़िर मुसीबत ज़दा की मुसीबत दूर करने पर भी षवाब मिल जाता है बल्कि ह़दीष शरीफ़ में है कि एक बाज़ारी औ़रत ने प्यासे कुत्ते को पानी पिला कर जान बचाई **अल्लाह** ने उसे इसी पर बख़्श दिया ।

"जो किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करे" इस के तह़्त ह़कीमुल उम्मत फ़रमाते हैं : या तो इस त़रह़ कि नंगे को कपड़े पहनाए या उस के छुपे

مدینہ

[1] (صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء والتوبة والاستغفار، باب فضل الاجتماع علی تلاوة القرآن وعلی الذکر، الحدیث:٢٦٩٩، ص١٠٣٩)
(سنن الترمذي، کتاب القراء ات، ١٢۔ باب، الحدیث:٢٩٤٥، ج٤، ص٤١)
(مشکاة المصابیح، کتاب العلم، الفصل الأول، الحدیث:٢٠٤، ج١، ص٦٠)

हुए ऐब ज़ाहिर न करे बशर्ते कि इस ज़ाहिर न करने से दीन या क़ौम का नुक़्सान न हो वरना ज़रूर ज़ाहिर कर दे कुफ़्फ़ार के जासूसों को पकड़वाए, खुफ़्या साज़िशें करने वालों के राज़ को तश्त अज़ बाम करे, ज़ुल्मन क़त्ल की तदबीर करने की मज़्लूम को ख़बर दे दे, अख़्लाक़ और हैं मुआ़मलात और सियासियात कुछ और।

"जो तलाशे इ़ल्म में किसी रास्ते पर चले" इस के तह़त ह़कीमुल उम्मत फ़रमाते हैं : जो इ़ल्मे दीन सीखने या दीनी फ़तवा ह़ासिल करने के लिये आ़लिम के घर जाए सफ़र कर के या चन्द क़दम तो इस की बरकत से **अल्लाह** दुन्या में उस पर जन्नत के काम आसान करेगा मरते वक़्त ईमान नसीब करेगा क़ब्रो ह़श्र के ह़िसाब में काम्याबी और पुल सिरात़ पर आसानी अ़ता फ़रमाएगा। जन्नत के रास्ते में सब चीज़ें दाख़िल हैं इस से मा'लूम हुवा कि इ़ल्म के लिये सफ़र करना बहुत षवाब है। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام त़लबे इ़ल्म के लिये ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के पास सफ़र कर के गए, ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक ह़दीष के लिये एक माह का सफ़र तै कर के अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास पहुंचे।

"**अल्लाह** के घरों में से किसी घर में" इस के तह़त ह़कीमुल उम्मत फ़रमाते हैं : यहां **अल्लाह** के घर से मुराद मस्जिदें, दीनी मद्रसे और सूफ़िया की ख़ानक़ाहें हैं जो **अल्लाह** के ज़िक्र के लिये वक़्फ़ हैं यहूदो नसारा के इ़बादत ख़ाने इस से ख़ारिज हैं कि वहां तो मुसलमान को बिला ज़रूरत जाना ही मन्अ़ है। दर्से क़ुरआन से मुराद क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत तज्वीद के अह़काम सीखना हैं लिहाज़ा इस में सर्फ़, नह़्व, फ़िक़्ह, ह़दीष, तफ़्सीर वग़ैरा के दर्स शामिल हैं जैसा कि मिरक़ात वग़ैरा में है, इसी लिये तिलावत के बा'द दर्स का अ़लाह़िदा ज़िक्र फ़रमाया।

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : सकीना **अल्लाह** की एक मख़्लूक़ है जिस के उतरने से दिलों को चैन नसीब होता

है कभी अब्र की शक्ल में नुमूदार होती है और देखी भी जाती है इस की बरकत से दिल से ग़ैरे ख़ुदा का ख़ौफ़ जाता रहता है। रह़मत से ख़ालिस रह़मत मुराद है जो ब वक़्ते ज़िक्र ज़ाकिर को हर त़रफ़ से घेरती है फ़िरिश्तों से सय्याह़ीन फ़िरिश्ते मुराद हैं जो ज़िक्र की मजलिसें ढूंडते फिरते हैं वरना आ'माल लिखने वाले और ह़िफ़ाज़त करने वाले फ़िरिश्ते हर वक़्त इन्सान के साथ रहते हैं मक़्सद येह है कि जहां मज्मअ़ के साथ ज़िक्रुल्लाह हो रहा हो वहां येह तीन रह़मतें उतरती हैं इस से मा'लूम हुवा कि तन्हा ज़िक्र से जमाअ़त का मिल कर ज़िक्र करना अफ़्ज़ल है जमाअ़त की नमाज़ का दरजा ज़ियादा कि अगर एक की क़बूल सब की क़बूल।[1]

"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस जमाअ़त में याद करता है जो उस के पास है" इस की वज़ाह़त करते हुए मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : या'नी फ़िरिश्तों की जमाअ़त, इस की शर्ह़ में वोह ह़दीष कि फ़रमाया नबी صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो रब को अकेले याद करे रब भी उसे ऐसे ही याद करता है जो जमाअ़त में याद करे रब उसे फ़िरिश्तों में याद करता है। क़ुरआने करीम फ़रमाता है : ﴿فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ﴾ [البقرة:٢/١٥٢] **तर्जमा :** तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा। (कन्ज़ुल ईमान)) उस रब की याद का अषर येह पड़ता है कि मख़्लूक़ उस बन्दे को याद करने लगती है बुज़ुर्गों के मज़ारात पर ज़ाइरीन का हुजूम वहां ज़िक्रुल्लाह की धूम इसी याद का नतीजा है।

"जिसे अ़मल पीछे कर दे उसे नसब नहीं बढ़ा सकता" इस के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी नसब की शराफ़त अ़मल की कमी को पूरा न करेगी, शे'र :

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 1, स. 189,190)

بندۂ عشق شدی ترکِ نسب کن جامی ❁ کہ دریں راہ فلاں ابنِ فلاں چیزے نیست

(या'नी, इश्क़ वाला बन्दा बन ऐ जामी ! नसब को छोड़ दे कि इस (इश्क़) की राह में फ़ुलां बिन फ़ुलां की कोई हैसिय्यत नहीं)

क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि नूह عَلَیْهِ السَّلَام की किश्ती में कुत्ते बिल्लों के लिये जगह थी मगर उन के काफ़िर बेटे किन्आ़न के लिये जगह न थी मक़्सद येह है कि शरीफ़ुन्नसब आ'माल से ला परवाह न हो जाएं येह मन्शा नहीं कि शराफ़ते नसब कोई चीज़ ही नहीं।[1]

एक और ह़दीष में है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ فَرَّجَ عَنْ مُسْلِمٍ كُرْبَةً جَعَلَ اللّٰهُ تَعَالٰى لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شُعْبَتَيْنِ مِنْ نُوْرٍ عَلَى الصِّرَاطِ يَسْتَضِيْءُ بِضَوْئِهِمَا عَالَمٌ لَا يُحْصِيْهِمْ إِلَّا رَبُّ الْعِزَّةِ".[2]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसलमान से परेशानी दूर करेगा तो बरोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला पुल सिरात़ पर उस के लिये दो नूर के बुक़्ए रोशन फ़रमाएगा जिन की ज़िया से इस क़दर मख़्लूक़ मुस्तफ़ीज़ होगी जिन की ता'दाद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता।[2]

तंगदस्त को मोहलत देने या क़र्ज़ मुआ़फ़ कर देने वाले बरोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला की रह़मत के साए में होंगे, चुनान्चे ह़दीषे पाक में है :

مدینہ

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 1, स. 190)

2 (الترغیب و الترھیب، کتاب الصدقات، الترغیب في التیسیر علی المعسر...إلخ، الحدیث:١٠، ج٢، ص٢٢)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ أَنْظَرَ مُعْسِرًا، أَوْ وَضَعَ لَهُ أَظَلَّهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ".[1]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी तंगदस्त को मोहलत दे या कुछ क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दे तो **अल्लाह** तआ़ला बरोज़े क़ियामत उसे अपने अ़र्श के साए में रखेगा कि जिस दिन उस के सिवा कोई साया न होगा।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: "مَنْ نَفَّسَ عَنْ غَرِيْمِهِ أَوْ مَحٰى عَنْهُ كَانَ فِي ظِلِّ الْعَرْشِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ".[2]

हज़रते अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : जो अपने मक़रूज़ को मोहलत दे या क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दे तो वोह बरोज़े क़ियामत अ़र्श के साए में होगा।[2]

एक और ह़दीष में है :

مدينه

1 (سنن الترمذي، كتاب البيوع، باب ماجاء في إنظار المعسر والرفق به، الحديث: ١٣٠٦، ج٢، ص٣١٧)
2 (المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي قتادة الأنصاري، الحديث: ٢٢٩٢٦، ج٧، ص٥٠٦)

हज़रते अबू युस्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : मैं गवाही देता हूं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि बरोज़े क़ियामत लोगों में सब से पहले **अल्लाह** के (अ़र्श के) के साए में वोह शख़्स पनाह लेगा जो किसी तंगदस्त मक़रूज़ को मोहलत दे यहां तक कि वोह कोई चीज़ पाए (जिस से अपना क़र्ज़ अदा कर सके) या अपना मुत़ालबा येह कहते हुए स-दक़ा कर दे कि येह **अल्लाह** की रिज़ा की ख़ातिर तुझ पर स-दक़ा है और क़र्ज़ की दस्तावेज़ को फाड़ दे।[1]

عَنۡ أَبِي الۡيُسۡرِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ قَالَ: أَشۡهَدُ عَلٰى رَسُوۡلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ لَسَمِعۡتُهُ يَقُوۡلُ: "إِنَّ أَوَّلَ النَّاسِ يَسۡتَظِلُّ فِي ظِلِّ اللّٰهِ يَوۡمَ الۡقِيَامَةِ لَرَجُلٌ أَنۡظَرَ مُعۡسِراً حَتّٰى يَجِدَ شَيۡئاً أَوۡ تَصَدَّقَ عَلَيۡهِ بِمَا يَطۡلُبُهُ يَقُوۡلُ: مَالِي عَلَيۡكَ صَدَقَةٌ ابۡتِغَاءَ وَجۡهِ اللّٰهِ، وَيُخَرِّقُ صَحِيۡفَتَهُ"

तंगदस्त पर आसानी करने वाले के लिये दुआ़ओं की क़बूलिय्यत का मुज़्दा है, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं : शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो चाहे

عَنِ ابۡنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنۡهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ: "مَنۡ أَرَادَ أَنۡ

مدینہ

1 (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٣٧٧، ج ١٩، ص ١٦٧)

تُسْتَجَابَ دَعْوَتُهُ وَأَنْ تُكْشَفَ كُرْبَتُهُ فَلْيُفَرِّجْ عَنْ مُعْسِرٍ"۔[1]

कि उस की दुआ़ क़बूल की जाए और उस की मुश्किल आसान फ़रमाई जाए तो उसे चाहिये कि तंगदस्त पर आसानी करे ।[1]

तंगदस्त को मोहलत देने की फ़ज़ीलत में एक और रिवायत :

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ أَنْظَرَ مُعْسِرًا إِلٰى مَيْسَرَتِهِ أَنْظَرَهُ اللّٰهُ بِذَنْبِهِ إِلٰى تَوْبَتِهِ"۔[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं : ख़ातमुल मुरसलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी तंगदस्त को उस के ख़ुशह़ाल होने तक मोहलत दे तो अल्लाह तआ़ला उसे गुनाहों से तौबा करने तक मोहलत फ़रमाएगा ।[2]

مدینہ

[1] (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب في التيسير على المعسر...إلخ، الحديث:١٣، ج٢، ص٢٣)

[2] (المعجم الكبير للطبراني، الحديث:١١٣٣٠، ج١١، ص١٥١)

औ़रत का अपने शोहर के माल से स-दक़ा करना

औ़रत ख़ावन्द की वोह ही चीज़ स-दक़ा कर सकती है जिसे स-दक़ा करने की शोहर की जानिब से आ़दतन इजाज़त होती है, और अगर मा'लूम हो कि फ़ुलां चीज़ स-दक़ा करने से शोहर नाराज़ होगा या कोई ख़ास शै जो मर्द ने अपने लिये रखी हो ऐसी चीज़ों का स-दक़ा करना औ़रत के लिये जाइज़ नहीं ।

औ़रत अगर नेक निय्यती और शोहर की रिज़ामन्दी से स-दक़ा करे तो उस औ़रत, उस के शोहर और जिस ख़ादिम के ज़रीए़ स-दक़ा दे, सब के लिये अज्र है, चुनान्चे :

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:"إِذَا أَنْفَقَتِ الْمَرْأَةُ مِنْ طَعَامِ بَيْتِهَا غَيْرَ مُفْسِدَةٍ كَانَ لَهَا أَجْرُهَا بِمَا أَنْفَقَتْ، وَلِزَوْجِهَا أَجْرُهُ بِمَا اكْتَسَبَ، وَلِلْخَادِمِ مِثْلُ ذٰلِكَ، لَا يَنْقُصُ بَعْضُهُمْ مِنْ أَجْرِ بَعْضٍ شَيْئًا".[1]

सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है, फ़रमाती हैं : सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब औ़रत अपने घर के खाने से कुछ ख़ैरात करे बशर्ते कि बरबादी की निय्यत न हो तो उसे ख़ैरात करने का षवाब होगा और उस के ख़ावन्द को कमाने का षवाब और ख़ादिम को भी उस के बराबर, जिन में कोई दूसरे के षवाब से कुछ कम न करेगा ।[1]

---

1 (صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب أجر الخادم إذا تصدق بأمر صاحبه غير مفسدة، الحديث: ١٤٣٧، ج١، ص٣٥٢)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب أجر الخازن الأمين والمرأة إذا تصدقت من بيت زوجها غير مفسدة...إلخ، الحديث: ١٠٢٣، ص٣٦٧)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب صدقة المرأة من مال الزوج، الحديث: ١٩٤٧، ج١، ص٣٦٩)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीष की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : अगर्चे ह़दीषे पाक में खाने की ख़ैरात का ज़िक्र है मगर इस में तमाम वोह मा'मूली चीज़ें दाख़िल हैं जिन के ख़ैरात करने की ख़ावन्द की त़रफ़ से आ़दतन इजाज़त होती है जैसे फटा पुराना कपड़ा, टूटा जूता वग़ैरा और खाने में भी आ़म खाना रोटी सालन दाख़िल है जिस की ख़ैरात करने से ख़ावन्द नाराज़ नहीं होता, अगर ख़ावन्द ने कोई ख़ास ह़ल्वा या मा'जून अपने घर के ख़र्च के लिये बहुत रुपिया ख़र्च कर के तय्यार की है तो इस में से ख़ैरात की औ़रत को इजाज़त नहीं मिरक़ात ने फ़रमाया यहां ख़र्च करने में बच्चों पर ख़र्च करना मेहमानों की ख़ात़िर तवाज़ोअ़ पर ख़र्च भिकारी फ़क़ीर पर ख़र्च सब ही शामिल है मगर शर्त़ येह ही है कि माल बरबाद करने की निय्यत न हो बल्कि ह़ुसूले षवाब का इरादा हो और इतना ही ख़र्च करे जितने ख़र्च कर देने की आ़दत होती है ।[1]

एक और रिवायत :

عَنْ عَطَاءٍ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ سُئِلَ عَنِ الْمَرْأَةِ هَلْ تَتَصَدَّقُ مِنْ بَيْتِ زَوْجِهَا؟ قَالَ: لَا إِلَّا مِنْ قُوتِهَا، وَالْأَجْرُ بَيْنَهُمَا، وَلَا يَحِلُّ لَهَا أَنْ تَتَصَدَّقَ مِنْ مَالِ زَوْجِهَا إِلَّا

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से औ़रत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया कि क्या वोह अपने शोहर के घर में से स-दक़ा कर सकती है ? फ़रमाया : नहीं, सिवाए अपनी ग़िज़ा के और इस का अज्र दोनों को मिलेगा औ़रत के लिये ह़लाल नहीं कि शोहर की इजाज़त के बिग़ैर उस के माल से स-दक़ा दे और रज़ीन अ़ब्दरी ने अपनी जामेअ़ में इन

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़ मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 127)

بِـإِذْنِـهِ. زاد رزين العبدري في جـامعه: فَـإِنْ أَذِنَ لَهَا فَالْأَجْرُ بَيْـنَهُـمَا، فَإِنْ فَعَلَتْ بِغَيْرِ إِذْنِهِ فَالْأَجْرُ لَهُ، وَالْإِثْمُ عَلَيْهَا.[1]

अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा किया कि अगर औ़रत शोहर की इजाज़त से स-दक़ा करे तो दोनों को षवाब मिलेगा और अगर शोहर की इजाज़त के बिग़ैर स-दक़ा करे तो शोहर को इस का षवाब मिलेगा और औ़रत गुनहगार होगी ।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَـنْ عَبْـدِ اللّٰـهِ بْـنِ عَمْـرِو بْنِ الْـعَـاصِ رَضِـيَ الـلّٰـهُ عَنْهُـمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَـلَّمَ قَـالَ: "لَا يَـجُـوْزُ لِامْرَأَةٍ عَطِيَّةٌ إِلَّا بِإِذْنِ زَوْجِـهَا".[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : औ़रत का अपने शोहर की इजाज़त के बिग़ैर अ़ति़य्या देना जाइज़ नहीं ।[2]

इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई मुतवफ़्फ़ा सि. 911 हि. इस ह़दीष की शर्ह़ में फ़रमाते हैं :

أي من مال الزوج وإلا فالعطية من مالها لا يحتاج إلى إذنٍ عند الجمهور.[3]

مدينه

---

[1] (مصنف عبد الرزاق، كتاب الزكاة،باب صدقة المرأة بغير إذن زوجها،الحديث:٧٣٠٣،ج٤،ص١١٤)

(سنن أبي داود، كتاب الزكاة،باب المرأة تتصدق من بيت زوجها،الحديث:١٦٨٨،ج٢،ص٢١٧)

(السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الزكاة،باب من حمل هذه الأخبار على أنها تعطيه من الطعام الذي أعطاها ...إلخ، الحديث:٧٨٥٣،ج٤،ص٣٢٤)

(الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات،ترغيب المرأة في الصدقة من مال زوجها...إلخ، الحديث:٣،ج٢،ص٣٢)

[2] (سنن النسائي، كتاب الزكاة،باب عطية المرأة بغير إذن زوجها،الحديث:٢٥٣٩،ج٣،الجزء٥،ص٧٠)

[3] (حاشية السيوطي على سنن النسائي، كتاب الزكاة،باب عطية المرأة بغير إذن زوجها،الحديث: ٢٥٣٩،ج٣،الجزء٥،ص٧٠)

या'नी (ह़दीष शरीफ़ में जो मुमानअ़त फ़रमाई गई वोह) शोहर के माल से है, वरना औ़रत को अपने माल से स-दक़ा करने के लिये जम्हूर उ़-लमा के नज़्दीक किसी की इजाज़त दरकार नहीं।[3]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، مَا لِيْ مَالٌ إِلَّا مَا أَدْخَلَ عَلَيَّ الزُّبَيْرُ أَفَأَتَصَدَّقُ؟ قَالَ: "تَصَدَّقِيْ، وَلَا تُوْعِيْ فَيُوْعٰى عَلَيْكِ".[1]

ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से मरवी है फ़रमाती हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मेरे पास (मेरे शोहर) ज़ुबैर के दिये हुए माल के सिवा कुछ नहीं तो क्या मैं स-दक़ा करूं ? फ़रमाया : स-दक़ा कर और रोक मत कि तुझ से रोका जाए।[1]

وَفِيْ رِوَايَةٍ: أَنَّهَا جَاءَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا نَبِيَّ اللّٰهِ! لَيْسَ لِيْ شَيْءٌ إِلَّا مَا أَدْخَلَ عَلَيَّ الزُّبَيْرُ، فَهَلْ عَلَيَّ جُنَاحٌ أَنْ أَرْضَخَ مِمَّا يُدْخِلُ عَلَيَّ؟ قَالَ: "اِرْضَخِيْ مَا اسْتَطَعْتِ، وَلَا تُوْعِيْ فَيُوْعِيَ اللّٰهُ عَلَيْكِ".[2]

और एक रिवायत में है कि आप नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुईं, अ़र्ज़ की : या नबिय्यल्लाह ! ज़ुबैर के दिये के सिवा मेरे पास कुछ नहीं अगर मैं ज़ुबैर के दिये हुए से थोड़ा स-दक़ा करूं तो मुझ पर गुनाह तो नहीं ? फ़रमाया : ब क़द्रे इस्तिताअ़त ख़र्च कर और रोक मत कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ से (अपना रिज़्क़) रोके।[2]

مدينه

1 (صحيح البخاري، كتاب الهبة وفضلها والتحريض عليها، باب هبة المرأة لغير زوجها وعتقها ...الخ، الحديث: ٢٥٩٠، ج٢، ص١٥٣)

2 (صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب الحث على الإنفاق وكراهة الإحصاء، الحديث: ١٠٢٩، ص٣٦٩)

(السنن الكبرى للنسائي، كتاب الزكاة، الإحصاء في الصدقة، الحديث: ٢٣٣٢، ج٢، ص٣٨)=

ह़लाल व ह़राम माल से स-दक़ा करना

अल्लाह तआ़ला की बारगाह में सिर्फ़ ह़लाल माल क़ाबिले क़बूल है, **अल्लाह** तआ़ला इस का षवाब पहाड़ की मिष्ल अ़ता फ़रमाता है, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ تَصَدَّقَ بِعَدْلِ تَمْرَةٍ مِنْ كَسْبٍ طَيِّبٍ، وَ لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ إِلَّا الطَّيِّبَ، فَإِنَّ اللّٰهَ يَتَقَبَّلُهَا بِيَمِيْنِهِ، ثُمَّ يُرَبِّيْهَا لِصَاحِبِهَا، كَمَا يُرَبِّي أَحَدُكُمْ فَلُوَّهُ، حَتّٰى تَكُوْنَ مِثْلَ الْجَبَلِ".[1]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो ह़लाल कमाई से खजूर के बराबर स-दक़ा करे, और **अल्लाह** तआ़ला सिर्फ़ ह़लाल ही को क़बूल करता है, तो **अल्लाह** तआ़ला उसे दाहिने हाथ में क़बूल करता है फिर स-दक़ा वाले के लिये उस की ऐसी परवरिश करता है जैसे तुम में से कोई अपने बछेरे की परवरिश करता है यहां तक कि वोह स-दक़ा पहाड़ की मानिन्द हो जाता है।[1]

---

[1] (سنن النسائي المجتبى، كتاب الزكاة،باب الإحصاء في الصدقة، الحديث: ٢٥٥٠، ج٣، الجزء٥، ص٧٧) =
(صحيح ابن حبان، كتاب الزكاة، ذكر الاباحة للمرأة أن تتصدق...الخ، الحديث:٣٣٥٧،ج٨، ص١٤٤)
(السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الزكاة، باب كراهة البخل والشح والإقتار، الحديث:٧٨١٤، ج٤، ص٣١٣-٣١٤)
(المؤطا للإمام مالك، كتاب الصدقة،باب الترغيب في الصدقة،الحديث:١٨٧٤،ص٥٥٥)
(سنن الدارمي، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة، الحديث:١٦٧٥،١/ص٤٩٢) =

"खजूर के बराबर स-दक़ा करे" इस के मुतअ़ल्लिक़ ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : या'नी मा'मूली से मामूली चीज़ **अल्लाह** की राह में दे, अ़रब शरीफ़ में खजूर मा'मूली चीज़ है, फिर इस की क़ाश तो बहुत ही मा'मूली हुई।

"**अल्लाह** तआ़ला सिर्फ़ ह़लाल ही क़बूल फ़रमाता है" इस की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत फ़रमाते हैं : येह बहुत ही अहम क़ानून है कि ख़ैरात ह़लाल कमाई से की जाए तब ही क़बूल होगी ह़त्ता कि ह़ज भी त़य्यिब व पाक कमाई से करे यहां दो क़ाइदे याद रखना चाहियें : एक येह कि माले मख़्लूत़ से उजरत, स-दक़ा, दा'वत वग़ैरा लेना जाइज़ है। देखो मूसा عَلَیۡهِ السَّلَام ने फ़िरऔ़न के हां और ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللهُ تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अबू त़ालिब के हां परवरिश पाई जिन का माल मख़्लूत़ था अगर उस माल पर ह़राम के अह़काम जारी होते तो रब तआ़ला अपने इन मह़बूबों को वहां परवरिश न कराता, दूसरा येह कि माले ह़राम दो क़िस्म का है एक वोह जो इन्सान की मिल्किय्यत में आता ही नहीं जैसे ज़िना की उजरत, सूद का पैसा और बैए़ बात़िल के मुआ़वज़े, सुवर, शराब वग़ैरा की क़ीमतें। दूसरा वोह कि मालिक की मिल्क में आ जाता है अगर्चे मालिक इस कारोबार पर गुनहगार होता है जैसे बैए़ बिश्शर्त़ वग़ैरा तमाम फ़ासिद बैओं की क़ीमत और ना जाइज़ पेशों (गाने बजाने, दाढ़ी मूंडने वग़ैरा) की उजरत। पहली क़िस्म का ह़राम

مدینہ
= (صحيح البخاري، كتاب الزكاة،باب الصدقة من كسب طيب، الحديث: ١٤١٠، ج١، ص٤٧٦)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب قبول الصدقة من الكسب الطيب وتربيتها،الحديث:١٠١٤، ص٣٦٤)
(سنن الترمذي، كتاب الزكاة، باب ما جاء في فضل الصدقة،الحديث:٦٦١، ج١، ص٤٧٦)
(سنن ابن ماجه، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة،الحديث:١٨٤٢، ج٢، ص٤١١)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب الصدقة من غلول،الحديث:٢٥٢٤، ج٣،الجزء٥، ص٦١)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة،الحديث:١٨٨٨، ج١، ص٣٥٩)

किसी के क़ब्ज़े में पहुंचे ह़राम ही रहेगा क्यूं कि पहला शख़्स ही इस का मालिक न बना और दूसरी क़िस्म का ह़राम दूसरे की मिल्क में पहुंच कर इस के लिये ह़लाल होगा, वोह जो फ़ुक़हा फ़रमाते हैं कि जिस के पास ह़राम या मशकूक पैसा हो वोह दूसरे से क़र्ज़ ले कर ह़ज या स-दक़ा करे और अपने माल से वोह क़र्ज़ अदा कर दे इस से मुराद येही आख़िरी ह़राम है क्यूं कि मिल्क बदलने से हुक्म बदल जाता है। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "لَهَا صَدَقَةٌ وَلَنَا هَدِيَّةٌ"

ह़कीमुल उम्मत मज़ीद फ़रमाते हैं : दाहिने हाथ में क़बूल करने से मुराद राज़ी हो कर क़बूल फ़रमाता है और मत़्लब येह है कि माल व निय्यते ख़ैर का स-दक़ा रिज़ाए इलाही का बाइ़ष है और वोह स-दक़े के वक़्त से ले कर क़ियामत तक भारी होता रहेगा ह़त्ता कि मीज़ान में सारे गुनाहों पर ग़ालिब आ जाएगा जैसे अच्छी ज़मीन में बोई हुई अदरक, आलू वग़ैरा इस ह़दीष की ताईद इस आयत से है (﴿يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ﴾ "[البقرة:٢/٢٧٦] तर्जमा : **अल्लाह** हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को (कन्ज़ुल ईमान))।[1]

ह़राम माल से चाहे कितना ही स-दक़ा ख़ैरात कर ले बे सूद है और बजाए मूजिबे षवाब के बाइ़षे वबाल है, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 92,93)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो ह़राम माल जम्अ़ करे फिर उस से स-दक़ा दे तो उस में उस के लिये कोई अज्र नहीं और उस का वबाल उसी पर होगा ।[1]

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم: "مَنْ جَمَعَ مَالاً حَرَاماً، ثُمَّ تَصَدَّقَ بِهِ لَمْ يَكُنْ لَهُ فِيْهِ أَجْرٌ، وَكَانَ إِصْرُهُ عَلَيْهِ".[1]

माले ह़राम से स-दक़ा करने के बारे में आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या में इर्शाद फ़रमाते हैं :

फ़तावा ज़हीरिया में है :

رجل دفع الی فقیر من المال الحرام شیئا یرجوا به الثواب یکفر

(किसी शख़्स ने फ़क़ीर को ह़राम माल में से कुछ दिया और इस पर षवाब की उम्मीद रखी तो काफ़िर हो जाएगा ।)

اقول وباللہ التوفیق (मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ से कहता हूं) तह़क़ीक़ मक़ाम येह है कि अगर उस ने इस माले ह़राम को अपनी मिल्के ख़ास जान कर बत़ौरे तबर्रोअ़ तसद्दुक़ किया जैसे मुसलमान अपने पाकीज़ा माल को ब निय्यते नफ़्ल व तत़व्वोअ़ तक़र्रुबन इलल्लाह स-दक़ा करता और उस पर अपने रब्बे करीम से उम्मीदे षवाब रखता है कि बे ईजाबे शरअ़ उस ने अपनी ख़ुशी से अपने पाक माल का हिस्सा अपने रब की रिज़ा के लिये सर्फ़ किया, जब तो येह तसर्रुफ़ हुक्मे शरअ़ से जुदा और येह

مدینہ

[1] (صحیح ابن حبان، کتاب الزکاۃ، ذکر البیان بأن المال... الخ، الحدیث: ۳۳۶۷، ج۸، ص۱۵۳)
(السنن الکبری للبیہقی، کتاب الزکاۃ، باب الدلیل علی أن من أدی فرض اللہ في الزکاۃ فلیس علیہ أکثر منہ إلا أن... إلخ، الحدیث: ۷۲۴۰، ج۴، ص۱۴۱)

ख़याल शरए़ मुत़ह्हर के ख़िलाफ़ है, और इस पर हरगिज़ इस के लिये षवाब नहीं इसी की बा'ज़ सूरतों में फ़ुक़हा ने हुक्मे तक्फ़ीर किया, और अगर यूं न था बल्कि इस माल को ख़बीष व नापाक ही जाना और अपने गुनाह पर नादिम हो कर ताइब हुवा और ब हुक्मे शरअ़ अपने तसर्रुफ़ में लाना ना जाइज़ समझा और अपने नफ़्स को उस में तसर्रुफ़ से रोका और अज़ां जा कि इस के अरबाब मा'लूम न रहे बजा आवरिये हुक्मे शरअ़ के लिये उसे तसद्दुक़ किया और इसी बजा आवरिये फ़रमान पर उम्मीद वारे षवाब हुवा तो बेशक इस में अस्लन ह़रज नहीं बल्कि इसी का उसे शरअ़न हुक्म था और इस तसद्दुक़ पर अगर्चे षवाबे स-दक़ा नहीं मगर इस इम्तिषाले हुक्म का षवाब बेशक है बल्कि येह फ़े'ल इस की तौबा का ततिम्मा है और तौबा क़त्अ़न मूजिबे रिज़ाए इलाही व षवाबे उख़्रवी है।[1]

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का कार्ड पुर कर के हर मदनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हि़फ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

1. (फ़तावा रज़विय्या, किताबुल ग़सब, जि. 19, स. 658)

स-दक़ा दे कर रुजूअ़ करना कैसा है ?

स-दक़ा दे कर वापस लेना निहायत ही क़बीह़ व ना पसन्दीदा है, ह़दीष शरीफ़ में ऐसा करने वाले को उस कुत्ते से तश्बीह दी गई जो क़ै कर के चाट ले, चुनान्चे :

عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: حَمَلْتُ عَلٰى فَرَسٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَأَضَاعَهُ الَّذِيْ كَانَ عِنْدَهُ، فَأَرَدْتُّ أَنْ أَشْتَرِيَهُ، وَظَنَنْتُ أَنَّهُ يَبِيْعُهُ بِرُخْصٍ، فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ:"لَا تَشْتَرِهِ وَلَا تَعُدْ فِيْ صَدَقَتِكَ وَإِنْ أَعْطَاكَهُ بِدِرْهَمٍ، فَإِنَّ الْعَائِدَ فِيْ صَدَقَتِهِ كَالْكَلْبِ الَّذِيْ يَعُوْدُ فِيْ قَيْئِهِ"[1]

ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं ने किसी को **अल्लाह** की राह में घोड़ा दिया, जिस के पास वोह घोड़ा था उस ने उसे बरबाद कर दिया, मैं ने चाहा कि घोड़ा ख़रीद लूं मेरा ख़याल था कि सस्ता बेच देगा, मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा आप ने फ़रमाया : उसे न ख़रीदो और अपना स-दक़ा वापस न लो अगर्चे तुम्हें एक दिरहम में दे दे क्यूं कि अपने स-दक़े में रुजूअ़ करने वाला उस कुत्ते की त़रह होता है जो क़ै कर के चाट ले।[1]

---

[1] (مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا يعود في الصدقة، الحديث: ١٩٥٤، ج١، ص٣٧٠)

"अपना स-दक़ा वापस न लो अगर्चे तुम्हें एक दिरहम में दे दे" इस के तह़त ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस जुम्ले की बिना पर बा'ज़ उ-लमा फ़रमाते हैं कि अपने दिये हुए स-दक़े का ख़रीदना ह़राम है, मगर ह़क़ येह है कि मकरूहे तन्ज़ीही है, और कराहत की वजह भी येह है कि उस मौक़अ़ पर फ़क़ीर स-दक़ा देने वाले की गुज़श्ता मेहरबानी का ख़याल करते हुए उसे सस्ता दे देगा और येह क़ीमत की कमी स-दक़े की वापसी है, मषलन अगर सो रुपिये का माल उस ने अस्सी में दे दिया तो गोया स-दक़ा देने वाले ने बीस रुपिया स-दक़ा कर के वापस ले लिये।

"अपने स-दक़े में रुजूअ़ करने वाला उस कुत्ते की त़रह़ है जो क़ै कर के चाट ले" इस के तह़त ह़कीमुल उम्मत رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस तश्बीह से मा'लूम हो रहा है कि मुमानअ़ते तन्ज़ीही है क्यूं कि कुत्ते के अपनी क़ै को चाट लेने से उस का पेट तो भर ही जाएगा मगर येह काम घिनावना है ऐसे ही अपने स-दक़े को ख़रीद लेने से मिल्किय्यत तो ह़ासिल हो ही जाएगी अगर्चे काम बहुत बुरा है येही तश्बीह हिबा वापस लेने वाले पर भी दी गई है ह़ालां कि हिबा की वापसी बिल इत्तिफ़ाक़ जाइज़ है अगर्चे मकरूह है।[1]

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 131)

स-दक़ात की वुसूलयाबी के फ़ज़ाइल और इस में ख़ियानत पर वईदें

हदीष शरीफ़ में है :

हज़रते राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : अल्लाह की रिज़ा के लिये हक़ के मुताबिक़ स-दक़ा वुसूल करने वाला अपने घर लौटने तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले ग़ाज़ी की तरह है।[1]

عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيْجٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: "اَلْعَامِلُ عَلَى الصَّدَقَةِ بِالْحَقِّ لِوَجْهِ اللّٰهِ تَعَالٰى كَالْغَازِيْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَرْجِعَ إِلٰى أَهْلِهِ".[1]

इस हदीष की शर्ह में मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : या'नी जैसे मुजाहिद जाते आते हर ह़ाल में इ़बादत का षवाब पाता है ऐसे ही इन्साफ़ वाला आ़मिल हर ह़ाल में षवाब पाएगा क्यूं कि मुजाहिद इस्लाम के फैलाने का ज़रीआ़ है और येह आ़मिल इस्लामी क़ानून फैलाने, मालदारों को उन के फ़रीज़े से फ़ारिग़ करने और फ़ुक़रा को उन का ह़क़ दिलाने का ज़रीआ़, इस ह़दीष से मा'लूम हुवा कि अगर निय्यत ख़ैर हो तो दीनी ख़िदमत पर तनख़्वाह लेने की वजह से इस का षवाब कम नहीं

مدينه

[1] (سنن أبي داود، كتاب الخراج والإمارة والفيء، باب في السعاية على الصدقة، الحديث: ٢٩٣٦، ج٣، ص٢٣٥)
(سنن الترمذي، كتاب الزكاة، باب ما جاء في العامل على الصدقة بالحق، الحديث: ٦٤٥، ج١، ص٤٦٧)
(سنن ابن ماجه، كتاب الزكاة، باب ما جاء في عمّال الصدقة، الحديث: ١٨٠٩، ج٢، ص٣٩٤)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، الفصل الثاني، الحديث: ١٧٨٥، ج١، ص٣٣٩)

होता, देखो इन आ़मिलों को पूरी उजरत दी जाती थी मगर साथ में येह षवाब भी था, चुनान्चे मुजाहिद को ग़नीमत भी मिलती है और षवाब भी, ह़ज़राते खुलफ़ाए राशिदीन सिवाए ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के सब ने ख़िलाफ़त पर तनख़्वाहें लीं मगर षवाब किसी का कम नहीं हुवा, ऐसे ही वोह उ़-लमा या इमाम व मुअज़्ज़िन जो तनख़्वाह ले कर ता'लीम, अज़ान, इमामत के फ़राइज़ अन्जाम देते हैं अगर उन की निय्यत ख़िदमते दीन है तो اِنۡ شَآءَاللہ षवाब भी ज़रूर पाएंगे।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ أَبِي مُوسٰى الْأَشْعَرِي رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: "إِنَّ الْخَازِنَ الْمُسْلِمَ الْأَمِينَ الَّذِي يَنْقُلُ مَا أُمِرَ بِهِ فَيُعْطِيهِ كَامِلًا مُوَفَّرًا طَيِّبَةً بِهِ نَفْسُهُ فَيَدْفَعُهُ إِلَى الَّذِي أُمِرَ بِهِ أَحَدُ الْمُتَصَدِّقِينَ".[2]

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत बयान करते हैं कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक मुसलमान अमानत दार ख़ाज़िन जिसे किसी को कुछ देने का हुक्म दिया गया और उस ने उसे कामिल तौ़र पर खुश दिली के साथ पहुंचा दिया तो वोह भी स-दक़ा करने वालों में से है।[2]

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 18)

2 (صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب أجر الخادم إذا تصدق بأمر صاحبه غير مفسدة، الحديث: ١٤٣٨، ج١، ص٣٥٢)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب أجر الخازن الأمين والمرأة إذا تصدقت من بيت زوجها غير مفسدة... إلخ، الحديث: ١٠٢٣، ص٣٦٧)

एक और ह़दीष शरीफ़ :

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ख़ातमुल मुरसलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत बयान फ़रमाते हैं कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेहतरीन कमाई स-दक़ा वुसूल करने वाले की कमाई है जब कि वोह अपने काम में मुख़्लिस हो ।[1]

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "خَيْرُ الْكَسْبِ كَسْبُ يَدِ الْعَامِلِ إِذَا نَصَحَ".[1]

एक और रिवायत :

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا अपने वालिद से और वोह ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़्मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया : जिसे हम किसी काम पर लगा दें, फिर हम उसे मुआ़वज़ा दे दें तो इस के बा'द जो कुछ लेगा वोह ख़ियानत है ।[2]

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنِ اسْتَعْمَلْنَاهُ عَلٰى عَمَلٍ فَرَزَقْنَاهُ رِزْقًا فَمَا أَخَذَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَهُوَ غُلُولٌ".[2]

= (سنن أبي داود، كتاب الزكاة،باب أجر الخازن،الحديث:١٦٨٤،ج٢،ص٢١٥)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب أجر الخازن إذا تصدق بإذن مولاه،الحديث:٢٥٥٩،ج٣، الجزء٥، ص٨٣)
[1] (المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة،الحديث:٨٣٩٣،ج٣،ص٢٧٨)
[2] (سنن أبي داود،كتاب الخراج والإمارة والفيء،باب في أرزاق العمال،الحديث:٢٩٤٣،ج٣،ص٢٣٨)
(مشكاة المصابيح،كتاب الإمارة والقضاء، باب رزق الولاة وهداياهم، الحديث:٣٧٤٨، ج٢، ص١٦)

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "या'नी अपनी तनख़्वाह के इलावा जो कुछ छुपा कर लेगा वोह चोरी व ख़ियानत होगा।[1]"

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَبَعَثَہُ عَلَی الصَّدَقَۃِ فَقَالَ: "یَا أَبَا الْوَلِیْدِ اِتَّقِ اللّٰہَ لَا تَأْتِیْ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ بِبَعِیْرٍ تَحْمِلُہُ لَہُ رُغَاءٌ أَوْ بَقَرَۃٍ لَھَا خُوَارٌ أَوْ شَاۃٍ لَھَا ثُغَاءٌ". قَالَ: یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ إِنَّ ذٰلِکَ لَکَذٰلِکَ؟ قَالَ: "إِيْ وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِیَدِہٖ". قَالَ: فَوَالَّذِيْ بَعَثَکَ بِالْحَقِّ لَا أَعْمَلُ لَکَ عَلٰی شَیْءٍ أَبَدًا.[2]

ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें स-दक़ात की वुसूल याबी के लिये भेजा तो फ़रमाया : ऐ अबू वलीद ! अल्लाह से डर, क़ियामत के दिन यूं न आना कि तुम बिलबिलाता हुवा ऊंट या चीख़ती हुई गाय या मम्याती हुई बकरी उठाए हुए हो। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! येह मुआ़मला ऐसा ही है ? फ़रमाया : हां ! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है। अ़र्ज़ की : तो क़सम है उस ज़ाते पाक की जिस ने आप को ह़क़ के साथ मबऊ़ष फ़रमाया मैं कभी किसी चीज़ का आ़मिल न बनूंगा।[2]

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 5, स. 388)

2 (السنن الکبری للبیھقي، کتاب الزکاۃ، باب غلول الصدقۃ، الحدیث:۷۶۶۳، ج۴، ص۲۶۷)

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ عَدِيِّ بْنِ عُمَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "مَنِ اسْتَعْمَلْنَاهُ مِنْكُمْ عَلٰى عَمَلٍ فَكَتَمَنَا مِخْيَطًا فَمَا فَوْقَهُ كَانَ غُلُولًا يَأْتِي بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ". فَقَامَ إِلَيْهِ رَجُلٌ أَسْوَدُ مِنَ الْأَنْصَارِ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ اقْبَلْ عَنِّي عَمَلَكَ قَالَ: "وَمَا لَكَ"؟ قَالَ: سَمِعْتُكَ تَقُولُ كَذَا وَكَذَا. قَالَ: "وَأَنَا أَقُولُ الْآنَ: مَنِ اسْتَعْمَلْنَاهُ مِنْكُمْ عَلٰى عَمَلٍ فَلْيَجِيْ بِقَلِيلِهِ وَكَثِيرِهِ، فَمَا أُوتِيَ مِنْهُ أَخَذَ وَمَا نُهِيَ عَنْهُ انْتَهٰى". [1]

ह़ज़रते अ़दी बिन उ़मैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम तुम में से जिसे किसी काम पर आ़मिल बनाएं फिर वोह हम से सूई या इस से भी कमतर चीज़ छुपा ले तो येह ख़ियानत है, जिसे क़ियामत के दिन लाएगा। तो आप की बारगाह में एक ह़ब्शी अन्सारी शख़्स खड़े हुए रावी कहते हैं : गोया कि मैं उन की जानिब देख रहा हूं और अ़र्ज़ करने लगे : या रसूलल्लाह ! आप मुझ से अपना काम वापस क़बूल फ़रमा लीजिये। नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या हुवा ? अ़र्ज़ की : मैं ने आप को इस त़रह़ फ़रमाते सुना। आप ने फ़रमाया : मैं अब भी येही कहता हूं कि जिसे हम किसी काम पर आ़मिल बनाएं तो वोह क़लील व कसीर हमारी बारगाह में ले कर ह़ाज़िर हो और फिर उस में से जो उसे दिया जाए वोह ले और जिस से मन्अ़ किया जाए उस से बाज़ रहे।[1]

---

[1] (صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب تحریم ھدایا العمّال، الحدیث: ۱۸۳۳، ص ۷۳۵)
(مشکاۃ المصابیح، کتاب الزکاۃ، الفصل الأول، الحدیث: ۱۷۸۰، ج ۱، ص ۳۳۸)

इस ह़दीष़ की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : या'नी ख़ियानत छोटी हो या बड़ी क़ियामत में सज़ा और रुस्वाई का बाइ़ष़ है खुसूसन जो ख़ियानत ज़कात वग़ैरा में की जाए क्यूं कि येह इ़बादत में ख़ियानत है और इस में **अल्लाह** का ह़क़ मारना है और फ़क़ीरों को उन के ह़क़ से मह़रूम करना, रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ﴾[آل عمران:۳/۱۶۱] **तर्जमा** : और जो छुपा रखे वोह क़ियामत के दिन अपनी छुपाई चीज़ ले कर आएगा (कन्ज़ुल ईमान)) ।[1]

एक और ह़दीष़ शरीफ़ :

عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: إِسْتَعْمَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا مِنَ الْأَزْدِ يُقَالُ لَهُ ابْنُ اللُّتْبِيَّةِ عَلَى الصَّدَقَةِ، فَلَمَّا قَدِمَ قَالَ: هٰذَا لَكُمْ وَهٰذَا أُهْدِيَ لِي. فَخَطَبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَحَمِدَ اللّٰهَ وَأَثْنٰى عَلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: "أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّي أَسْتَعْمِلُ رِجَالًا مِنْكُمْ عَلٰى أُمُوْرٍ مِمَّا وَلَّانِيَ اللّٰهُ فَيَأْتِي أَحَدُهُمْ

ह़ज़रते अबू हुमैद साइ़दी से मरवी है, फ़रमाते हैं : शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़ष़े नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़बीला अज़्द के एक शख़्स को जिन्हें इब्ने लुत्बिय्यह कहा जाता था स-दक़े पर आ़मिल बनाया, जब वोह वापस आए तो बोले : येह तुम्हारा है और येह मुझे हदिय्यतन दिया गया, तब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुत़्बा दिया **अल्लाह** की ह़म्दो ष़ना की फिर फ़रमाया : ह़म्दो ष़ना के बा'द सुनो ! कि हम तुम में से बा'ज़ को उन चीज़ों पर आ़मिल बनाते हैं जिन का **अल्लाह** तआ़ला ने हमें

مدینہ

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3 स. 15)

فَيَقُولُ: هٰذَا لَكُمْ، وَهٰذِهِ هَدِيَّةٌ أُهْدِيَتْ لِي، فَهَلَّا جَلَسَ فِي بَيْتِ أَبِيهِ أَوْ بَيْتِ أُمِّهِ فَيَنْظُرُ أَيُهْدٰى لَهُ أَمْ لَا ؟ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا يَأْخُذُ أَحَدٌ مِنْهُ شَيْئًا إِلَّا جَاءَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَحْمِلُهُ عَلٰى رَقَبَتِهِ إِنْ كَانَ بَعِيرًا لَهُ رُغَاءٌ أَوْ بَقَرًا لَهُ خُوَارٌ أَوْ شَاةً تَيْعَرُ ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتّٰى رَأَيْنَا عُفْرَتَيْ إِبْطَيْهِ ثُمَّ قَالَ اَللّٰهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ اَللّٰهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ“۔[1]

वाली बनाया तो उन में से बा'ज़ आ कर कहते हैं कि येह तुम्हारा है और येह मुझे हदिय्या नज़राना दिया गया तो वोह अपने मां बाप के घर क्यूं न बैठ रहा ? फिर देखता कि उसे नज़राना मिलता है या नहीं, उस की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि कोई शख़्स उस में से कुछ न लेगा मगर क़ियामत के दिन उसे अपनी गरदन पर उठाए लाएगा अगर ऊंट है तो वोह बिलबिलाता होगा या गाय है तो वोह चीख़ती होगी या बकरी कि मम्याती होगी। फिर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने हाथ उठाए ह़त्ता कि हम ने हुज़ूर की बग़लों की सफ़ेदी देखी फिर अ़र्ज़ किया इलाही ! क्या मैं ने तब्लीग़ कर दी ऐ मौला क्या मैं ने तब्लीग़ कर दी।[1]

"येह मुझे हदिय्या दिया गया है" इस के तह़्त ह़कीमुल उम्मत फ़रमाते हैं : या'नी उन के पास वुसूल कर्दा ज़कात से ज़ियादा माल था जो ज़कात देने वालों ने उन्हें बत़ौरे हदिय्या इलावा ज़कात दिया था, येह उन सह़ाबी की इन्तेहाई दियानत दारी है कि उस हदिय्ये को घर न रख गए सब कुछ बारगाह शरीफ़ में पेश कर दिया और अस्ल वाक़िआ़ बयान कर दिया।

مدينه

[1] (صحيح البخاري، كتاب الهبة وفضلها والتحريض عليها،باب من لم يقبل الهدية لعلة،الحديث: ٢٥٩٧،ج٢،ص١٥٤_١٥٥)
(صحيح مسلم، كتاب الإمارة،باب تحريم هدايا العمال، الحديث:١٨٣٢،ص٧٣٤_٧٣٥)
(سنن أبي داود، كتاب الخراج والإمارة والفيء،باب في هدايا العمال،الحديث:٢٩٤٦،ج٣،ص٢٣٩)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة،الفصل الأول،الحديث:١٧٧٩،ج١،ص٣٣٨)

"अपने मां बाप के घर क्यूं न बैठा रहा फिर देखता उसे नज़्राना मिलता है या नहीं" इस के तह़्त ह़कीमुल उम्मत फ़रमाते हैं : या'नी येह नज़्राना नहीं है बल्कि रिश्वत है कि इस के ज़रीए़ साहि़बे निसाब आयन्दा अस्ल ज़कात से कुछ कम कराने की कोशिश करेंगे, नीज़ जब उसे काम की उजरत पूरी हम देते हैं तो येह हदिय्या क्या चीज़ है, फ़ुक़हा फ़रमाते हैं कि हुक्काम के नज़्राने और ख़ास दा'वतें रिश्वत हैं, हां ह़ाकिम आ़म दा'वते वलीमा वग़ैरा खा सकता है, नीज़ जो नज़्राने, हदिय्या और डालियां इस के ह़ाकिम बनने के बा'द शुरूअ़ हों वोह सब रिश्वतें हैं, हां जिन लोगों के साथ उस का पहले ही से लैन दैन हो और इस के मा'ज़ूल होने के बा'द भी वोही लैन दैन रहे वोह रिश्वत नहीं, जैसे अ़ज़ीज़ों और क़दीमी अह़बाब से न्यौते, भाजी वग़ैरा, इन मसाइल की अस्ल येह ह़दीष है।

ह़कीमुल उम्मत फ़रमाते हैं : जो आ़मिल ज़कात में चोरी या ख़ियानत करे या ज़कात देने वालों से रिश्वत वुसूल करे, ग़रज़ कि बिल वासित़ा या बिला वासित़ा जिस त़रह़ भी ख़ुफ़्यतन या अ़लानियतन कुछ ले लफ़्ज़ "مِنْهُ" इन सब को शामिल है। (मिरक़ात) ग़रज़ कि यहां ज़कात की चोरी ही मुराद नहीं क्यूं कि उन साहि़ब ने कोई चोरी न की थी, ख़याल रहे कि यहां तो गरदन पर उठाने का ज़िक्र है क़ुरआन शरीफ़ में पीठों पर लादने का इर्शाद हुवा : ﴿وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ﴾ [الأنعام:٦/٣١] तर्जमा : और वोह अपने बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए हैं (कन्ज़ुल ईमान)) क्यूं कि आयत में कुफ़्फ़ार का ज़िक्र है और यहां गुनहगार मुसलमान का। चूंकि कुफ़्फ़ार के गुनाह ज़ियादा और भारी होंगे इस लिये वोह पीठों पर लादेंगे और मुसलमान गुनहगार के गुनाह उन से कम और हलके होंगे, इस लिये गरदन पर उठाएंगे, येह भी कह सकते हैं कि पीठ की इन्तिहा गरदन है, लिहाज़ा गरदन पर उठाना गोया पीठ पर ही उठाना है मगर पहली बात ज़ियादा क़वी है।

हक़ीमुल उम्मत मजीद फ़रमाते हैं : अगर ख़ियानतन या रिश्वतन ऊंट, गाय, बकरी या कोई और जानवर भी लिया होगा तो उसे भी अपनी गरदन पर उठाए फिरेगा, बोझ से दबेगा भी और उन आवाज़ों की वजह से सारे (लोगों) में बदनाम होगा, मा'लूम हुवा कि नेकियों पर क़ियामत में इन्सान सुवार होगा और बदियां इन्सान पर सुवार होंगी। ख़याल रहे कि **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत में मुसलमानों के ख़ुफ़्या गुनाह न खोलेगा सत्तारी फ़रमाएगा मगर जो बे ग़ैरत दुन्या में अ़लानिया गुनाह करें और इन पर फ़ख़्र भी करें वोह ज़रूर खुलेंगे, लिहाज़ा येह ह़दीष ऐ़ब पोशी की अह़ादीष के ख़िलाफ़ नहीं।[2]

एक दूसरी ह़दीष शरीफ़ :

عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: بَعَثَنِي رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَاعِيًا ثُمَّ قَالَ: "اِنْطَلِقْ أَبَا مَسْعُوْدٍ لَا أُلْفِيَنَّكَ تَجِيءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلٰى ظَهْرِكَ بَعِيْرٌ مِنْ إِبِلِ الصَّدَقَةِ لَهُ رُغَاءٌ قَدْ غَلَلْتَهُ" قَالَ: إِذًا لَا أَنْطَلِقُ قَالَ: "إِذًا لَا أُكْرِهُكَ".[२]

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे आ़मिल बना कर भेजा तो फ़रमाया : ऐ अबू मसऊ़द ! जाओ मैं तुम्हें क़ियामत के दिन हरगिज़ इस ह़ाल में आते न पाऊं कि तुम्हारी पीठ पर स-दक़े का ऊंट बिलबिलाता हो जिस की तुम ने ख़ियानत की हो। उन्हों ने अ़र्ज़ की : फिर तो मैं नहीं जाता। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : फिर मैं भी तुम्हें मजबूर नहीं करता।[2]

1.(मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 13, 14)

٢ (سنن أبي داود، كتاب الخراج والإمارة والفيء، باب غلول الصدقة، الحديث: ٢٩٤٧، ج٣، ص٣٤٠)

एक और ह़दीष शरीफ़ पढ़िये और दर्से इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये :

عَنْ أَبِي رَافِعٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَلَّى الْعَصْرَ ذَهَبَ إِلٰى بَنِي عَبْدِ الْأَشْهَلِ فَيَتَحَدَّثُ عِنْدَهُمْ حَتّٰى يَنْحَدِرَ لِلْمَغْرِبِ. قَالَ أَبُوْ رَافِعٍ: فَبَيْنَمَا النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُسْرِعٌ إِلَى الْمَغْرِبِ مَرَرْنَا بِالْبَقِيْعِ، فَقَالَ: "أُفٍّ لَكَ أُفٍّ لَكَ"، فَكَبُرَ ذٰلِكَ فِي ذَرْعِي، فَاسْتَأْخَرْتُ وَظَنَنْتُ أَنَّهُ يُرِيْدُنِي، فَقَالَ: "مَا لَكَ امْشِ"، فَقُلْتُ: أَحْدَثْتَ حَدَثًا؟ قَالَ: "وَمَا لَكَ؟" قُلْتُ: أَفَّفْتَ بِي؟ قَالَ: "لَا، وَلٰكِنْ هٰذَا فُلَانٌ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब अ़स्र की नमाज़ अदा फ़रमा लेते तो बनी अ़ब्दिल अश्हल के पास तशरीफ़ ले जाते उन से गुफ़्तगू फ़रमाते यहां तक कि नमाज़े मग़रिब के लिये लौट आते । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक बार जब नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तेज़ी से मग़रिब के लिये लौट रहे थे तो हमारा गुज़र बक़ीअ़ (क़ब्रिस्तान) से हुवा । तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम पर अफ़्सोस है, तुम पर अफ़्सोस है, येह बात मुझ पर गिरां गुज़री मैं पीछे हुवा और समझा कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे फ़रमा रहे हैं । आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या हुवा चलो ? मैं ने (अपने जी में) कहा शायद मुझ से कुछ हो गया (जो बारगाहे नाज़ में ना गवार गुज़रा है) आप ने फ़रमाया, क्या हुवा मैं ने अ़र्ज़ की : आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ पर

अफ़्सोस किया ? आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नहीं । (तुम पर नहीं) बल्कि येह फ़ुलां शख़्स था जिसे मैं ने बनी फ़ुलां से ज़कात वुसूल करने भेजा तो इस ने धारीदार ऊनी चादर ख़ियानतन छुपा ली लिहाज़ा इस पर उस जैसी आग की चादर डाल दी गई ।[1]

بَعَثْتُهُ سَاعِياً عَلٰى بَنِي فُلَانٍ فَغَلَّ نَمِرَةً فَدُرِّعَ عَلٰى مِثْلِهَا مِنَ النَّارِ".[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ज़कात में ह़द से तजावुज़ करने वाला ज़कात न देने वाले की त़रह़ है ।[2]

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اَلْمُعْتَدِيْ فِي الصَّدَقَةِ كَمَانِعِهَا".[2]

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस ह़दीष के दो मा'ना हो सकते हैं, एक येह कि जो आ़मिल ज़कात वुसूल करने में ज़ियादती करे या ज़ियादा ले या बेहतरीन माल ले, वोह ऐसा ही गुनहगार है जैसे ज़कात न देने वाला, या जो मालिक ज़कात देने में ज़ियादती करे कि या तो कम देने की कोशिश करे या नाक़िस या टाल मटोल करे वोह ऐसा ही गुनहगार है जैसे ज़कात न देने वाला, उ़-लमा फ़रमाते हैं कि ज़कात ख़ुशदिली से दो, इसे इ़बादत समझो टेक्स न समझो, मुस्तह़िक़ को दो, जानबूझ कर ग़ैर

---

[1] (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات،فصل،الترغيب في العمل على الصدقة بالتقوى...إلخ،الحديث:١١، ج١،ص٢٨٩)

[2] (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب في زكاة السائمة،الحديث:١٥٨٥،ج٢،ص١٦٦)
(سنن الترمذي، كتاب الزكاة،باب ما جاء في المعتدي في الصدقة،الحديث:٦٤٦،ج١،ص٤٦٨)
(سنن ابن ماجه، كتاب الزكاة، باب ما جاء في عمّال الصدقة، الحديث:١٨٠٨،ج٢،ص٣٩٣)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب ما تجب فيه الزكاة،الحديث:١٨٠١، ج١، ص٣٤٣)

मुस्तह़िक़ को न दो, दे कर एह़सान न जताओ अगर अपने अ़ज़ीज़ फ़क़ीर को दी है तो उसे त़ा'ना न दो बल्कि इस का ज़िक्र कभी भी न करो कि इन से स-दक़ा बात़िल हो जाता है, रब तआ़ला फ़रमाता है :

﴿لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى﴾ (البقرۃ:۲/۲٦٤) **तर्जमा :** अपने स-दक़े बात़िल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर (कन्ज़ुल ईमान)) और येह सब ह़द से बढ़ने में दाख़िल हैं।[1]

मस्जिद से मह़ब्बत की फ़ज़ीलत

*ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने उल्फ़त निशान है : "जो मस्जिद से उल्फ़त (मह़ब्बत) रखता है **अल्लाह** तआ़ला उस से उल्फ़त रखता है।"* (طبرانی اوسط،حدیث۲۳۷۹)

*ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस की शर्ह़ में लिखते हैं : "मस्जिद से उल्फ़त, रिज़ाए इलाही के लिये इस में ए'तिकाफ़, नमाज़, ज़िक्रुल्लाह, और शरई मसाइल सीखने सिखाने के लिये बैठे रहने की आ़दत बनाना है। और **अल्लाह** तआ़ला का इस बन्दे से मह़ब्बत करना इस त़रह़ है कि **अल्लाह** तआ़ला उस को अपने सायए रह़मत में जगह अ़त़ा फ़रमाता और उस को अपनी ह़िफ़ाज़त में दाख़िल फ़रमाता है।"* (फ़ैज़ुल क़दीर, जि. 6, स. 107)

सुल्त़ाने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "मस्जिदों को बच्चों और पागलों और ख़रीदो फ़रोख़्त और झगड़े और आवाज़ बुलन्द करने और ह़ुदूद क़ाइम करने और तलवार खींचने से बचाओ।" (ابن ماجہ، ج۱،ص۴۱۵حدیث۷۵۰)

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 35)

क़नाअ़त की अ़ज़मत और सुवाल की मज़म्मत

इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : जान लो कि फ़क़्र क़ाबिले ता'रीफ़ है लेकिन फ़क़ीर को चाहिये कि वोह क़नाअ़त करने वाला, लोगों से लालच न रखने वाला, इन के अमवाल पर नज़र न रखने वाला हो और न ही माल कमाने पर ह़रीस हो कि चाहे जिस त़रह़ भी ह़ासिल हो। येह उसी वक़्त मुमकिन है जब कि वोह खाने, पहनने और रहने में ब क़द्रे ज़रूरत पर क़नाअ़त करे।[1]

ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا تَزَالُ الْمَسْأَلَةُ بِاَحَدِكُمْ حَتّٰى يَلْقَى اللّٰهَ تَعَالٰى، وَلَيْسَ فِيْ وَجْهِهِ مُزْعَةُ لَحْمٍ".[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सुवाल करता रहेगा यहां तक कि वोह अल्लाह से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस के चेहरे पर गोश्त का कोई टुकड़ा न होगा।[2]

इसी त़रह़ एक ह़दीष शरीफ़ में सुवाल या'नी मांगने को साइल के चेहरे पर ख़राशों का सबब फ़रमाया गया है, चुनान्चे :

---

1 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم الحرص والطمع ومدح القناعة واليأس مما في أيدي الناس، ج٣، ص٣١٨)

2 (صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب من سأل الناس تكثرًا، الحديث:١٤٧٤، ج١، ص٣٦٣)

(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب كراهة المسألة للناس، الحديث:١٠٤٠، ص٣٧٢)

عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ الْمَسَائِلَ كُدُوْحٌ يَكْدَحُ بِهَا الرَّجُلُ وَجْهَهُ، فَمَنْ شَاءَ أَبْقٰى عَلٰى وَجْهِهِ، وَمَنْ شَاءَ تَرَكَ إِلَّا أَنْ يَّسْأَلَ ذَا سُلْطَانٍ، أَوْ فِيْ أَمْرٍ لَا يَجِدُ مِنْهُ بُدًّا". [1]

ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक सुवालात ख़राशें हैं कि आदमी सुवाल कर के अपने मुंह को नोचता है तो जो चाहे अपने चेहरे पर इसे बाक़ी रखे और जो चाहे छोड़ दे मगर येह कि आदमी साहि़बे सल्त़नत से अपना ह़क़ मांगे या उस सूरत में मांगे कि इस के सिवा चारए कार न हो ।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: "اَلْمَسْأَلَةُ كُدُوْحٌ فِيْ وَجْهِ صَاحِبِهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَمَنْ شَاءَ فَلْيَسْتَبْقِ عَلٰى وَجْهِهِ". [2] الحديث.

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं : मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : मांगना बरोज़े क़ियामत मंगते के चेहरे पर ख़राशें षाबित होगा, तो जो चाहे अपने चेहरे पर इसे बाक़ी रखे ।[2]

مدينه

1 (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب ما تجوز فيه المسألة،الحديث:١٦٣٩، ج٢، ص١٩٨)
(سنن الترمذي، كتاب الزكاة،باب ما جاء في النهي عن المسألة،الحديث:٦٨١، ج١، ص٤٨٨)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب مسألة الرجل ذا السلطان،الحديث:٢٥٩٨، ج٣،الجزء٥، ص١٠٥)
2 (شعب الإيمان،باب في الزكاة، فصل في الاستعفاف عن المسألة،الحديث:٣٥١٠، ج٣،ص٢٧٠)

मांगने वाले का चेहरा भी बिगड़ जाता है, चुनान्चे :

عَنْ مَسْعُوْدِ بْنِ عَمْرٍو رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا یَزَالُ الْعَبْدُ یَسْأَلُ وَھُوَ غَنِیٌّ حَتّٰی یَخْلَقَ وَجْھُہٗ فَمَا یَکُوْنُ لَہٗ عِنْدَ اللّٰہِ وَجْہٌ".[1]

हज़रते मसऊद बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है की शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी ग़नी होने के बा वुजूद मांगता रहता है हत्ता कि उस का चेहरा बोसीदा हो जाता है वोह जब **अल्लाह** तआला की बारगाह में हाज़िर होगा तो उस का चेहरा नहीं होगा।[1]

एक और हदीष शरीफ़ :

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ : "مَنْ سَأَلَ النَّاسَ فِیْ غَیْرِ فَاقَةٍ نَزَلَتْ بِہٖ، أَوْ عِیَالٍ لَا یُطِیْقُھُمْ جَاءَ یَوْمَ الْقِیَامَةِ بِوَجْہٍ لَیْسَ عَلَیْہِ لَحْمٌ".[2]

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं : ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आलमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आलमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स लोगों से सुवाल करे हालां कि न उसे फ़ाक़ा पहुंचा और न ही इतने बाल बच्चे हैं जिन की ताक़त नहीं रखता तो बरोज़े क़ियामत यूं आएगा कि उस के चेहरे पर गोश्त न होगा।[2]

مدینہ

1 (المعجم الکبیر للطبراني،الحدیث:٧٩٠،ج٢٠،٣٣٣)
(الإصابة فی تمییز الصحابة، مسعود بن عمرو،ج٦،ص٨٠،دارالکتب العلمیة بیروت)
2 (شعب الإیمان، باب في الزکاة، فصل في الاستعفاف عن المسألة،الحدیث:٣٥٢٦، ج٣،ص٢٧٤)

हज़रते मुहम्मद बिन वासेअ़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ख़ुश्क रोटी को पानी के साथ तर कर के खाते और फ़रमाते जो शख़्स इस पर क़नाअ़त करता है वोह किसी का मोह़ताज नहीं होता।[1]

अगर मा'लूम हो जाए कि मांगने में क्या कराहत है तो कोई न मांगे, चुनान्चे :

عَنْ عَائِذِ بْنِ عَمْرٍو رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ اَنَّ رَجُلًا اَتَی النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَسَاَلَہٗ فَاَعْطَاہُ، فَلَمَّا وَضَعَ رِجْلَہٗ عَلٰی اُسْکُفَّۃِ الْبَابِ. قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ: "لَوْ تَعْلَمُوْنَ مَا فِی الْمَسْاَلَۃِ مَا مَشٰی اَحَدٌ اِلٰی اَحَدٍ یَسْاَلُہٗ شَیْئًا".[2]

हज़रते आइज़ बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ने आ कर सुवाल किया आप ने अ़ता फ़रमाया जब (लौटते हुए) उस शख़्स ने दहलीज़ पर क़दम रखा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर लोगों को मा'लूम होता कि सुवाल करने में क्या है तो कोई किसी के पास मांगने न जाता।[2]

इमाम ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی फ़रमाते हैं : सुवाल से बचना उसी वक़्त मुमकिन है जब कि खाने, लिबास और रिहाइश में ब क़द्रे ज़रूरत पर क़नाअ़त करे कि इस की मिक़्दार भी कम हो और अदना क़िस्म का हो और अपनी तवज्जोह को एक दिन या एक महीने की त़रफ़ मबज़ूल रखे और महीने के बा'द जो कुछ है उस में दिल चस्पी से गुरेज़ करे अगर ज़ियादती की चाह रखेगा या त़वील उम्मीद क़ाइम करेगा तो क़नाअ़त के ए'ज़ाज़ से महरूम

---

1 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، الآثار، ج٣، ص٣٢٠)

2 (السنن الكبرى للنسائي، كتاب الزكاة، الصدقة على الأقارب، الحديث: ٢٣٦٧، ج٢، ص٥٠)

हो जाएगा और लाज़िमन लालच की गर्द में आलूदा होगा और हि़र्स की ज़िल्लत बरदाश्त करना पड़ेगी। फिर हि़र्स और लालच इसे बुरी आ़दात और बुराइयों के इर्तिकाब की त़रफ़ ले जाएंगी जिस से मुरुव्वत ख़त्म हो जाएगी।

हि़र्स व लालच तो इन्सान की फ़ित़रत में रखी गई हैं येही वजह है कि इन्सान फ़ित़रतन क़नाअ़त बहुत कम करता है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर इनसान के पास सोने की दो वादियां हों तो वोह तीसरी वादी तलाश करता है और इन्सान के पेट को मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती और जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ करे तो **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत उस की त़रफ़ मुतवज्जेह होती है।

ह़ज़रते अबू वाक़िद लैसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : जब आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वह़्य आती तो हम आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते और आप हमें उस वह़्य की ता'लीम फ़रमाते, एक दिन मैं ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा तो आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है बेशक हम ने माल नमाज़ क़ाइम करने, ज़कात अदा करने के लिये उतारा है और अगर इन्सान के पास सोने की एक वादी हो तो वोह पसन्द करता है कि उस के पास दूसरी वादी भी हो और अगर दूसरी भी हो तो वोह चाहेगा कि तीसरी भी हो और इन्सान के पेट को तो सिर्फ़ मिट्टी ही भर सकती है और जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ करता है **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत उस की त़रफ़ आती है।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में ग़नी के सुवाल की क़बाह़त का बयान हुवा, चुनान्चे :

---

1 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم الحرص والطمع ومدح القناعة واليأس مما في أيدي الناس، ج٣، ص٣١٨)

عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَسْأَلَةُ الْغَنِيِّ شَيْنٌ فِي وَجْهِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَسْأَلَةُ الْغَنِيِّ نَارٌ إِنْ أُعْطِيَ قَلِيْلًا فَقَلِيْلٌ وَإِنْ أُعْطِيَ كَثِيْرًا فَكَثِيْرٌ". [1]

हज़रते इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ग़नी का मांगना बरोजे़ क़ियामत उस के चेहरे पर ऐब होगा और ग़नी का मांगना आग है, अगर थोड़ा दिया गया तो थोड़ी और ज़ियादा दिया गया तो ज़ियादा ।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ سَأَلَ وَهُوَ غَنِيٌّ عَنِ الْمَسْأَلَةِ يُحْشَرُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَهِيَ خُمُوْشٌ فِي وَجْهِهِ". [2]

हज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स सुवाल करे हालां कि वोह सुवाल से बे परवाह है तो बरोजे़ क़ियामत उस का हश्र यूं होगा कि वोह सुवाल उस के चेहरे पर ख़राशें होगा ।[2]

एक रिवायत में है कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने रब तआ़ला से अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! तेरा कौन सा बन्दा ज़ियादा ग़नी है ? **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : वोह शख़्स जो मेरे दिये पर सब से ज़ियादा क़नाअ़त करे । अ़र्ज़ की : सब से ज़ियादा अ़द्ल करने वाला कौन है ? **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया जो अपने आप से इन्साफ़ करता है ।[3]

---

1 (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٤٠٠، ج١٨، ص١٧٥)
2 (المعجم الأوسط للطبراني، الحديث: ٥٤٦٧، ج٥، ص٣٣٢)
3 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان ذم الحرص والطمع ومدح القناعة واليأس مما في أيدي الناس، ج٣، ص٣١٩)

عَـنْ مَسْعُـوْدِ بْـنِ عَـمْـرٍو رَضِـيَ الـلّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَّهُ اُتِيَ بِرَجُلٍ يُصَلِّيْ عَلَيْـهِ فَـقَالَ: "كَمْ تَرَكَ"؟ قَـالُـوْا: دِيْـنَـارَيْنِ اَوْ ثَلَاثَةً. قَـالَ: "تَرَكَ كَيَّتَيْنِ اَوْ ثَلَاثَ كَيَّـاتٍ"، فَـلَـقِيْتُ عَبْدَ اللّٰهِ بْـنَ الْـقَاسِمِ مَوْلٰى اَبِيْ بَكْرٍ فَـذَكَرْتُ ذٰلِكَ لَهُ، فَقَالَ لَهُ: ذَاكَ رَجُـلٌ كَـانَ يَسْـاَلُ النَّاسَ تَكَثُّرًا.[1]

हज़रते सय्यिदुना मसऊ़द बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक मय्यित को नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के लिये लाया गया । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : इस ने क्या छोड़ा ? लोगों ने अ़र्ज़ की : दो या तीन दीनार । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इस ने दो या तीन दाग़ छोड़े । रावी कहते हैं मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ग़ुलाम अ़ब्दुल्लाह बिन क़ासिम से मिला और उसे येह बात बताई । उन्हों ने बताया कि वोह आदमी माल बढ़ाने के लिये सुवाल किया करता था ।[1]

बिला ज़रूरत मांगने को अंगारे चुनने की मिषल फ़रमाया गया चुनान्चे :

عَـنْ حَبْشِـيِّ بْنِ جُنَادَةَ رَضِـيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: "اَلَّـذِيْ يَسْـاَلُ مِنْ غَيْـرِ حَـاجَةٍ كَمَثَلِ الَّذِيْ يَلْتَقِطُ الْجَمْرَ".[2]

ह़ज़रते ह़ब्शी बिन जुनादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : जो बिग़ैर ह़ाजत सुवाल करता है वोह उस की त़रह़ है जो अंगारे चुनता है ।[2]

مدینہ

[1] (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، فصل، الترهيب من المسألة وتحريمها مع الغِنىٰ، الحديث:١١، ج٢، ص٢٩٥)

[2] (شعب الإيمان،باب في الزكاة،فصل في الاستعفاف عن المسألة،الحديث:٣٥١٧، ج٣، ص٢٧١)

एक और रिवायत :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ سَأَلَ النَّاسَ أَمْوَالَهُمْ تَكَثُّرًا، فَإِنَّمَا يَسْأَلُ جَمْرًا فَلْيَسْتَقِلَّ أَوْ لِيَسْتَكْثِرْ" [1]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स माल बढ़ाने के लिये सुवाल करता है वोह अंगारा मांगता है, अब चाहे कम मांगे या ज़ियादा ।[1]

इस ह़दीष की शर्ह़ में मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : या'नी बिला सख़्त ज़रूरत भीक मांगे, ब क़द्रे ह़ाजत माल रखता हो ज़ियादती के लिये मांगता फिरे वोह गोया दोज़ख़ के अंगारे जम्अ़ कर रहा है चूंकि येह माल दोज़ख़ में जाने का सबब है इसी लिये इसे अंगारा फ़रमाया । इस ह़दीष से आज कल के आ़म पेशावर भिकारियों को इ़ब्रत लेनी चाहिये ।[2]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

---

1 (صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب كراهة المسألة للناس، الحديث: ١٠٤١، ص ٣٧٢)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له المسألة ومن تحل له، الحديث: ١٨٣٩، ج ١، ص ٣٤٩)

2. (मिरआतुल मनाजिह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 55)

عَـنْ عَلِيٍّ رَضِـيَ الـلّٰـهُ تَعَالٰى عَـنْهُ قَـالَ: قَـالَ رَسُـوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : "مَـنْ سَأَلَ مَسْأَلَةً عَنْ ظَهْرِ غِنًى، اسْتَكْثَرَ بِهَا مِنْ رَضْفِ جَهَنَّمَ". قَـالُوْا: وَمَـا ظَهْرُ غِنًى؟ قَالَ: "عَشَاءُ لَيْلَةٍ". [1]

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो ग़नी होते हुए सुवाल करे वोह जहन्नम के तपते पथ्थर बढ़ा रहा है। सह़ाबा ने अ़र्ज़ की : ग़िना से क्या मुराद है ? फ़रमाया : रात का खाना।[1]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हर दिन एक फ़िरिश्ता आवाज़ देता है ऐ इब्ने आदम ! थोड़ा जो तुम्हें किफ़ायत करे उस से ज़ियादा बेहतर है जो तुम्हें सरकश बना दे।[2]

हज़रते समीत़ बिन इजलान رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ऐ इन्सान ! तुम्हारा पेट एक बालिश्त मक्अ़ब है फिर वोह तुझे दोज़ख़ में क्यूं ले जाता है।

किसी दाना से पूछा गया कि आप का माल क्या है ? उन्हों ने जवाब दिया : ज़ाहिर में अच्छी ह़ालत में रहना, बात़िन में मियाना रवी इख़्तियार करना और जो कुछ लोगों के पास है उस से मायूस होना।[3]

مدینہ

۱ (سنن الدار قطني، كتاب الزكاة، باب الغنى التي يحرم السؤال،الحديث:١٩٨٠،ج١،ص١٠٥)
۲ (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال،ج٣،ص٣٢٠)
۳ (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال،ج٣،ص٣٢٠)

हदीष शरीफ़ में है :

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ سَأَلَ النَّاسَ وَلَهُ مَا يُغْنِيْهِ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَسْئَلَتُهُ فِيْ وَجْهِهِ خُمُوْشٌ أَوْ خُدُوْشٌ أَوْ كُدُوْحٌ"، قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! مَا يُغْنِيْهِ؟ قَالَ: "خَمْسُوْنَ دِرْهَمًا أَوْ قِيْمَتُهَا مِنَ الذَّهَبِ".[1]

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद से मरवी है, फ़रमाते हैं : ख़ातमुल मुरसलीन, रहमतुल्लिल आलमीन, शफ़ीउल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आलमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो लोगों से मांगे हालां कि उस के पास इतना है जो उसे बे परवाह कर दे तो क़ियामत में इस तरह आएगा कि उस के सुवाल उस के चेहरे में खुरचन या ख़ारिश या ज़ख़्म होंगे, अ़र्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह ! क़द्रे ग़िना क्या है ? फ़रमाया : पचास दिरहम या इस क़ीमत का सोना ।[1]

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस हदीष की शर्ह में फ़रमाते हैं : या'नी उस के पास रोज़ मर्रा की ज़रूरियात खाना कपड़ा है और कोई ख़ास ज़रूरत दरपेश नहीं ।

मज़ीद फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि तीनों ही अल्फ़ाज़ اَوْ के साथ हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही के हैं, रावी का शक नहीं और इन तीनों के अलग अलग मा'ना हैं, हर दूसरे लफ़्ज़ में पहले से तरक़्क़ी ज़ियादा

मدينه

[1] (سنن أبي داود، كتاب الزكاة،باب من يعطى من الصدقة وحد الغنى،الحديث:١٦٢٦،ج٢،ص١٨٩)
(سنن ابن ماجه، كتاب الزكاة،باب من سأل عن ظهر غنى،الحديث:١٨٤٠،ج٢،ص٤١٠)
(سنن الترمذي، كتاب الزكاة،باب ما جاء من تحل له الزكاة،الحديث:٦٥٠،ج١،ص٤٧٠)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب حد الغنى، الحديث:٢٥٩١،ج٣،الجزء٥،ص١٠٢)
(مشكاة المصابيح،كتاب الزكاة، باب من لا تحل له المسألة ومن تحل له،الحديث:١٨٤٧،ج١، ص٣٤٩)

है, जैसा कि हम ने तर्जमे में ज़ाहिर कर दिया, चूंकि बे ज़रूरत भिकारी तीन क़िस्म के थे मा'मूली कभी कभी मांग लेने वाले, और हमेशा के भिकारी, ज़िद्दी हट धर्म भिकारी, इसी लिये उन के चेहरों के आषार भी तीन त़रह़ के हुए जैसी भीक वैसा उस का अषर लिहाज़ा اَوْ तक़्सीम के लिये है शक के लिये नहीं ।

ख़याल रहे कि जिस निसाब से सुवाल ह़राम होता है उस की मिक़्दारें मुख़्तलिफ़ आई हैं, यहां तो पचास दिरहम या'नी क़रीबन साढ़े बारह रुपै इर्शाद हुए,[1] दूसरी रिवायत में एक ओक़िया इर्शाद हुवा या'नी चालीस दिरहम, तीसरी रिवायत में दिन रात का खाना इर्शाद हुवा, लिहाज़ा बा'ज़ शारिह़ीन ने इन दोनों ह़दीषों को दिन रात के खाने वाली ह़दीष से मन्सूख़ माना, लेकिन चूंकि हर शख़्स की ह़ाजत मुख़्तलिफ़ होती है, बड़े कुम्बे वाले का रोज़ाना ख़र्च ज़ियादा होता है दरमियानी कुम्बे वाले का दरमियाना और अकेले आदमी का ख़र्चा भी बहुत मा'मूली, सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के येह तीन इर्शाद तीन क़िस्म के लोगों के लिह़ाज़ से हैं, जैसा मौक़अ़ और जैसा मस्अला पूछने वाला वैसा ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का जवाब, ह़कीम की हर बात ह़िक्मत से होती है, लिहाज़ा ह़दीष में तआ़रुज़ नहीं, और मुमकिन है कि ह़ुरमते सुवाल का ह़ुक्म तदरीजन आहिस्तगी से वारिद हुवा हो, अव्वलन पचास दिरहम वालों को रोका गया हो, फिर चालीस वालों को आख़िर में दिन रात के खाने पर क़ुदरत रखने वाले को, जैसे शराब का ह़ाल हुवा, क्यूं कि अहले अ़रब सुवाल के आ़दी थे, एक दम सुवाल छोड़ न सकते थे इस लिये येह तरतीब बरती गई ।[2]

---

1. येह तख़्मीना सय्यिदी ह़कीमुल उम्मत के ज़माने का है क़ारी पचास दिरहम का तख़्मीना 13.125 तोला चांदी की क़ीमत से ए'तिबार करे । (मुअल्लिफ़)

2. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 61, 62)

अपनी ह़ाजात आ़म लोगों के बजाए रब तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ करने से **अल्लाह** तआ़ला जल्द ग़िना अ़ता फ़रमाता है। चुनान्चे :

عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ أَصَابَتْهُ فَاقَةٌ فَأَنْزَلَهَا بِالنَّاسِ لَمْ تُسَدَّ فَاقَتُهُ. وَمَنْ أَنْزَلَهَا بِاللهِ، أَوْشَكَ اللّٰهُ لَهُ بِالْغِنٰى، إِمَّا بِمَوْتٍ عَاجِلٍ، أَوْ غِنًى آجِلٍ". [1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द से मरवी है, फ़रमाते हैं : ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़्मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिसे फ़ाक़ा पहुंचा और उस ने लोगों के सामने बयान किया तो उस का फ़ाक़ा बन्द न किया जाएगा और अगर उस ने **अल्लाह** से अ़र्ज़ की तो **अल्लाह** जल्द उसे बे नियाज़ कर देगा ख़्वाह जल्द मौत से या आयन्दा ग़िना से।[1]

इस ह़दीष की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत फ़रमाते हैं : या'नी अपनी ग़रीबी की शिकायत लोगों से करता फिरे और बे सब्री ज़ाहिर करे और लोगों को अपना ह़ाजत रवा जान कर उन से मांगना शुरूअ़ कर दे तो इस का अन्जाम येह होगा कि उसे मांगने की आ़दत पड़ जाएगी, जिस में बरकत न होगी और हमेशा फ़क़ीर ही रहेगा।

आप मज़ीद फ़रमाते हैं : जो अपना फ़ाक़ा लोगों से छुपाए रब तआ़ला की बारगाह में दुआ़एं मांगे और ह़लाल पेशे में कोशिश करे तो रब तआ़ला उसे मांगने की ज़रूरत डालेगा ही नहीं, अगर उस के नसीब में

مدینہ

[1] (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب في الاستعفاف، الحديث:١٦٤٥، ج٢، ص٢٠٢)
(سنن الترمذي، كتاب الزهد، باب ما جاء في الهمّ في الدنيا وحبها، الحديث:٢٣٢٦، ج٣، ص٢٩٦)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من تحل له المسألة ومن لا تحل له، الحديث:١٨٥٢، ج١، ص٣٥٢)

दौलत मन्दी नहीं है तो उसे ईमान पर मौत नसीब कर के जन्नत की ने'मतें अ़ता फ़रमाएगा और अगर दौलत मन्दी नसीब में है तो वोह जल्दी न सही देर से ही अ़ता फ़रमा देगा कि उस की कमाई में बरकत देगा ।[1]

जि़यादतिये माल की हि़र्स में भीक मांगना यक़ीनन जहन्नम के अंगारे जम्अ़ करना है, चुनान्चे :

عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ سَأَلَ النَّاسَ لِيُثْرِيَ مَالَهُ، فَإِنَّمَا هِيَ رَضْفٌ مِنَ النَّارِ مُلْهَبَةٌ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُقِلَّ، وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْثِرْ".[2]

ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोजे़ शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स लोगों से सुवाल करे इस लिये कि अपने माल को बढ़ाए तो वोह जहन्नम का गर्म पथ्थर है, अब उसे इख़्तियार है कि चाहे कम मांगे या जि़यादा ।[2]

क़नाअ़त की अ़ज़मत और सुवाल की मज़म्मत में एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ حَكِيْمِ بْنِ حِزَامٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: جَاءَ مَالٌ مِنَ الْبَحْرَيْنِ فَدَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعَبَّاسَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ فَحَفَنَ لَهُ، ثُمَّ

ह़ज़रते ह़कीम बिन हि़ज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, बह़रैन से माल आया तो आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को बुला कर लप

مدینہ

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 65, 66)

۲ (صحیح ابن حبان،الحدیث:۳۳۹۱،ج۸،ص۱۸۵)

भर दिया, फिर फ़रमाया : और दूं ? अ़र्ज़ की : हां ! आप ने लप भर और दिया फिर फ़रमाया : और दूं ? अ़र्ज़ की : हां ! आप ने लप भर और दिया फिर फ़रमाया : और दूं ? अ़र्ज़ की : हां ! तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने बा'द वालों के लिये भी कुछ रहने दो (रावी फ़रमाते हैं) फिर आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे बुलाया और लप भर दिया तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह मेरे लिये अच्छा है या बुरा ? फ़रमाया : अच्छा नहीं बल्कि बुरा है। तो आप ने जो मुझे अ़त़ा फ़रमाया था मैं ने वापस कर दिया और अ़र्ज़ की : उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है आप के बा'द किसी और से कोई अ़त़िय्या न लूंगा। मुह़म्मद बिन सीरीन का बयान है कि ह़कीम कहते हैं मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अल्लाह तआ़ला से दुआ़ फ़रमाएं कि मेरे लिये बरकत फ़रमा दे। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई : ऐ अल्लाह ! इन की तिजारत में बरकत दे।[1]

قَالَ: "أَزِيْدُكَ"؟ قَالَ: نَعَمْ، فَحَفَنَ لَهُ، ثُمَّ قَالَ: "أَزِيْدُكَ"؟ قَالَ: نَعَمْ، فَحَفَنَ لَهُ ثُمَّ قَالَ: "أَزِيْدُكَ"؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: "أَبْقِ لِمَنْ بَعْدَكَ"، ثُمَّ دَعَانِيْ، فَحَفَنَ لِيْ، فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، خَيْرٌ لِّيْ أَوْ شَرٌّ لِّيْ؟ قَالَ: "لَا. بَلْ شَرٌّ لَّكَ"، فَرَدَدْتُ عَلَيْهِ مَا أَعْطَانِيْ ثُمَّ قُلْتُ: لَا وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهِ لَا أَقْبَلُ مِنْ أَحَدٍ عَطِيَّةً بَعْدَكَ. قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ سِيْرِيْنَ: قَالَ حَكِيْمٌ: فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ادْعُ اللّٰهَ أَنْ يُّبَارِكَ لِيْ. قَالَ: "اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُ فِيْ صَفْقَةِ يَدِهِ".[1]

مدینہ

[1] (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٣١٣٦، ج٣، ص٢٠٥)

क़नाअ़त करने और सुवाल से इजतिनाब की शान में वारिद एक और ह़दीष शरीफ़ :

ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक अश्जई رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : हम नव, आठ या सात अश्ख़ास नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त नहीं करते ? ह़ालांकि हम ने कुछ अ़र्से पहले बैअ़त कर ली थी, तो हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम तो बैअ़त कर चुके हैं, आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा फ़रमाया : क्या तुम लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त नहीं करते ? तो हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम तो बैअ़त कर चुके हैं । आप ने फिर फ़रमाया : क्या तुम लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त नहीं करते ? रावी कहते हैं : तो हम ने अपने हाथ बढ़ा दिये और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! बैअ़त तो हम कर चुके हैं, अब किस बात पर बैअ़त करें ? फ़रमाया :

عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ الْأَشْجَعِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تِسْعَةً أَوْ ثَمَانِيَةً أَوْ سَبْعَةً، فَقَالَ: "أَلَا تُبَايِعُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ"؟ وَكُنَّا حَدِيْثَ عَهْدٍ بِبَيْعَةٍ، فَقُلْنَا: قَدْ بَايَعْنَاكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: "أَلَا تُبَايِعُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ" فَقُلْنَا قَدْ بَايَعْنَاكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، ثُمَّ قَالَ: "أَلَا تُبَايِعُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ"؟ قَالَ: فَبَسَطْنَا أَيْدِيَنَا وَقُلْنَا: قَدْ بَايَعْنَاكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ فَعَلَامَ نُبَايِعُكَ؟ قَالَ: "عَلٰى أَنْ

تَعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهٖ شَيْئًا، وَالصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ، وَتُطِيعُوا وَأَسَرَّ كَلِمَةً خَفِيَّةً وَلَا تَسْأَلُوا النَّاسَ شَيْئًا"، فَلَقَدْ رَأَيْتُ بَعْضَ أُولٰئِكَ النَّفَرِ يَسْقُطُ سَوْطُ أَحَدِهِمْ، فَمَا يَسْأَلُ أَحَدًا يُنَاوِلُهُ إِيَّاهُ.[1]

इस बात पर कि **अल्लाह** की इबादत करोगे और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओगे, पन्ज वक़्ता नमाज़ की पाबन्दी करोगे, **अल्लाह** व रसूल की फ़रमां बरदारी करोगे और एक बात आहिस्ता से फ़रमाई कि लोगों से किसी चीज़ का सुवाल नहीं करोगे। (रावी कहते हैं) मैं ने इन ह़ज़रात में से बा'ज़ को देखा है कि उन में से किसी का कोड़ा (सुवारी पर से) गिर जाता तो किसी से सुवाल न करते कि उठा दे।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में इस त़रह़ का मज़्मून है, चुनान्चे :

عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ يُبَايِعُ"؟ فَقَالَ ثَوْبَانُ مَوْلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بَايِعْنَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ. قَالَ: "عَلٰى أَنْ لَّا تَسْأَلَ أَحَدًا شَيْئًا"

ह़ज़रते अबू उमामा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त़्त़र पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कौन बैअ़त करेगा ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा गुलाम षौबान ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह हमें बैअ़त फ़रमा लीजिये, आप ने फ़रमाया : इस बात पर (बैअ़त करो) कि किसी से कुछ न मांगोगे। ह़ज़रते

मدينه

[1] (صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب كراهة المسألة للناس، الحديث:١٠٤٣، ص٣٧٣)
(سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب كراهية المسألة، الحديث:١٦٤٢، ج٢، ص٢٠١)
(سنن ابن ماجه، كتاب الجهاد، باب البيعة، الحديث:٢٨٦٧، ج٣، ص٣٩٨-٣٩٩)

فَقَالَ ثَوْبَانُ: فَمَا لَهُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: "اَلْجَنَّةُ" فَبَايَعَهُ ثَوْبَانُ. قَالَ أَبُوْ أُمَامَةَ: فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ بِمَكَّةَ فِي أَجْمَعِ مَا يَكُوْنُ مِنَ النَّاسِ يَسْقُطُ سَوْطُهُ وَهُوَ رَاكِبٌ، فَرُبَّمَا وَقَعَ عَلٰى عَاتِقِ رَجُلٍ فَيَأْخُذُ الرَّجُلُ فَيُنَاوِلُهُ فَمَا يَأْخُذُهُ حَتّٰى يَكُوْنَ هُوَ يَنْزِلُ فَيَأْخُذُهُ.[1]

षौबान رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ऐसे शख़्स के लिये क्या अज्र है ? फ़रमाया : जन्नत ! तो ह़ज़रते षौबान बैअ़त से सरफ़राज़ हुए। ह़ज़रते अबू उमामा कहते हैं कि मैं ने मक्का में कषीर लोगों के दरमियान भी आप (या'नी षौबान) को देखा कि सुवारी की ह़ालत में आप का कोड़ा गिर जाता (तो उठा देने के लिये किसी को न कहते) बल्कि बसा अवक़ात किसी शख़्स के कन्धे पर गिर पड़ता तो वोह शख़्स उसे पकड़ कर आप को देता तो आप न लेते ह़त्ता कि खुद नीचे उतरते और कोड़ा उठा लेते।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: أَوْصَانِيْ خَلِيْلِيْ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِسَبْعٍ: حُبِّ الْمَسَاكِيْنِ، وَأَنْ أَدْنُوَ مِنْهُمْ، وَأَنْ أَنْظُرَ إِلٰى مَنْ هُوَ أَسْفَلَ مِنِّيْ، وَلَا أَنْظُرَ إِلٰى مَنْ فَوْقِيْ، وَأَنْ أَصِلَ رَحِمِيْ وَإِنْ جَفَانِيْ،

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : मुझे मेरे ख़लील صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सात बातों की वसिय्यत फ़रमाई है, मिस्कीनों से मह़ब्बत की और येह कि उन से क़रीब हो जाऊं, अपने से कम तर को देखूं और अपने से बरतर को न देखूं, अपने रिश्तेदारों से सिलए रेह़्मी करूं अगर्चे वोह मुझ से बे वफ़ाई करें, और कषरत

مدینہ

[1] (المعجم الكبير للطبراني، الحديث:٧٨٣٢، ج٨، ص٢٠٦)

وَأَنْ أُكْثِـرَ مِنْ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِـاللّٰهِ، وَأَنْ أَتَكَلَّمَ بِمُرِّ الْحَقِّ لَا تَـأْخُـذَنِي فِي اللّٰهِ لَوْمَةُ لَائِمٍ، وَأَنْ لَا أَسْأَلَ النَّاسَ شَيْئاً.

से لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِـاللّٰهِ पढ़ूं, ह़क़ बात कहूं और **अल्लाह** तआ़ला के मुआ़मले में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करूं, लोगों से कुछ न मांगूं।[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۀ ने का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۀ से पूछा कि उ़-लमा के दिलों से इ़ल्म को कौन सी चीज़ ले जाती है जब कि वोह उसे समझ भी लेते हैं और याद भी कर लेते हैं? उन्हों ने फ़रमाया : नफ़्स की ह़िर्स और ह़ाजात की त़लब।

एक शख़्स ने ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۀ से ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۀ के इस क़ौल की वज़ाह़त पूछी तो उन्हों ने फ़रमाया : जब आदमी किसी चीज़ की लालच करता है तो उसे त़लब करता है यूं वोह अपना दीन खो बैठता है जहां तक ह़िर्स का तअ़ल्लुक़ है तो नफ़्स की ह़िर्स कभी इस चीज़ की त़रफ़ जाती है तो कभी उस चीज़ की त़रफ़ ह़त्ता कि वोह किसी भी चीज़ के हाथों से निकल जाने को पसन्द नहीं करता और बा'ज़ अवक़ात तुम्हें किसी शख़्स से ग़रज़ होती है और उस से कोई काम होता है फिर जब वोह तुम्हारा काम पूरा कर देता है तो तुम्हारी नकील उस के हाथ में चली जाती है वोह जहां चाहता है तुम्हें ले जाता है वोह तुम पर क़ादिर होता है और तुम उस के सामने झुकते हो और दुन्या की मह़ब्बत के बाइ़स जब तुम उस के पास से गुज़रते हो तो उसे सलाम करते हो जब वोह बीमार होता है तो उस की इ़यादत करते हो तुम उसे रिज़ाए ख़ुदावन्दी की ख़ात़िर सलाम नहीं करते और न ही इ़यादत से रिज़ाए इलाही मक़्सूद होती है पस अगर तुम्हें उस से कोई काम न होता तो तुम्हारे लिये अच्छा था फिर ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۀ ने फ़रमाया कि येह बात फ़ुलां फ़ुलां की सो बातों से बेहतर है।[2]

مدینہ

1 (المصنف لابن أبي شيبة، كتاب الزهد، ما ذكر عن نبيناصلى اللّٰه تعالٰى عليه وسلم في الزهد، الحديث:٣٤٣٣٩، ج٧، ص١٠٢)

2 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، الآثار، ج٣، ص٣٢١-٣٢٢)

सुवाल की मज़म्मत में वारिद एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ حَكِيْمِ بْنِ حِزَامٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ قَالَ: "يَا حَكِيْمُ، هٰذَا الْمَالُ خَضِرٌ حُلْوٌ، فَمَنْ أَخَذَهُ بِسَخَاوَةِ نَفْسٍ بُوْرِكَ لَهُ فِيْهِ، وَمَنْ أَخَذَهُ بِإِشْرَافِ نَفْسٍ لَمْ يُبَارَكْ لَهُ فِيْهِ، وَكَانَ كَالَّذِيْ يَأْكُلُ وَلَا يَشْبَعُ، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِّنَ الْيَدِ السُّفْلٰى". قَالَ حَكِيْمٌ فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَالَّذِيْ بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لَا أَرْزَأُ أَحَدًا بَعْدَكَ شَيْئًا حَتّٰى أُفَارِقَ الدُّنْيَا، فَكَانَ أَبُوْ بَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ يَدْعُوْ حَكِيْمًا لِيُعْطِيَهُ الْعَطَاءَ، فَيَأْبٰى أَنْ يَقْبَلَ مِنْهُ شَيْئًا، ثُمَّ إِنَّ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ

ह़ज़रते ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मांगा हुज़ूर ने दिया मैं ने फिर मांगा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे और दिया मैं ने फिर मांगा हुज़ूर ने फिर दिया, फिर मुझ से फ़रमाया : ऐ ह़कीम ! येह माल ख़ुशनुमा ख़ुश ज़ाएक़ा है जो इसे दिली ला परवाही से लेगा उस के लिये इस में बरकत होगी और जो इसे नफ़्सानी त़म्अ़ से लेगा उस के लिये इस में बरकत न होगी और वोह उस की त़रह़ होगा जो खाए और सैर न हो, और ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है, ह़ज़रते ह़कीम फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को ह़क़ के साथ भेजा कि मैं आप के सिवा किसी से कुछ न मांगूंगा ह़त्ता कि दुन्या छोड़ दूं। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ आप को (अपने दौरे ख़िलाफ़त में) अ़तिय्या देने के लिये बुलाते तो आप कुछ भी क़बूल करने से इन्कार

दَعَاهُ لِيُعْطِيَهُ فَأَبَى أَنْ يَّقْبَلَهُ، فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِيْنَ: أُشْهِدُكُمْ عَلٰى حَكِيْمٍ أَنِّيْ أَعْرِضُ عَلَيْهِ حَقَّهُ الَّذِيْ قَسَمَ اللّٰهُ لَهُ فِيْ هٰذَا الْفَيْءِ، فَيَأْبٰى أَنْ يَّأْخُذَهُ، وَلَمْ يَرْزَأْ حَكِيْمٌ أَحَداً مِنَ النَّاسِ بَعْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتّٰى تُوُفِّيَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ.[1]

करते फिर उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने (अपने दौरे ख़िलाफ़त में) आप को अ़तिय्या देने के लिये बुलाया तो आप ने लेने से इन्कार कर दिया। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : ऐ मुसलमानों की जमाअ़त ! मैं तुम्हें ह़कीम के बारे में गवाह बनाता हूं कि मैं इन को इन का वोह ह़क़ पेश करता हूं जो **अल्लाह** तआ़ला ने ग़नीमत से इन का हि़स्सा मुक़र्रर फ़रमाया है तो आप इसे लेने से इन्कार करते हैं। ह़ज़रते ह़कीम ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द किसी से कुछ न मांगा ह़त्ता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ दुन्या से रुख़्सत हो गए।[1]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इस ह़दीष की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग मांगने को ऐब न समझते थे बिला ज़रूरत भी दस्ते सुवाल दराज़ करते थे, नौ मुस्लिम ह़ज़रात इसी आ़दत के मुत़ाबिक़ अव्वलन मांगते थे, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अकषर उन्हें दे कर सुवाल से मन्अ़ फ़रमाते थे।

मदीना

[1] (صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب الاستعفاف عن المسألة،الحديث:١٤٧٢، ج١، ص٣٦٢)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة،باب بيان أن اليد العليا خير من اليدالسفلى...إلخ،الحديث:١٠٣٥، ص٣٧١)
(سنن الترمذي، كتاب صفة القيامة والرقائق والورع، ٢٩باب،الحديث:٢٤٦٣، ج٣، ص٣٦٦)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب مسألة الرجل في أمر لابد له منه،الحديث:٢٦٠١، ج٣، الجزء٥، ص١٠٦)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة،باب من لا تحل له المسألة ومن تحل له،الحديث:١٨٤٢، ج١، ص٣٥٠)

मज़ीद फ़रमाते हैं कि ला परवाही से मुराद त़म्अ़ और हवस का मुक़ाबिल है, या'नी जो माल तो ले लेकिन सब्रो क़नाअ़त के साथ कि ना जाइज़ की त़रफ़ नज़र न उठाए और जाइज़ माल की भी हवस न हो तो अगर्चे उस के पास माल थोड़ा हो मगर बरकत होगी, क्यूं कि उस में **अल्लाह** व रसूल की रिज़ा शामिल होगी, ख़याल रहे कि माल की ज़ियादती और है, बरकत कुछ और, ज़ियादतिये माल कभी हलाक कर देती है मगर बरकते माल दीन व दुन्या में रब तआ़ला की रह़मत होती है बरकत वाला थोड़ा पानी प्यास बुझा देता है, बहुत सा पानी डुबो देता है देखो त़ालूत के जिन साथियों ने नह्र से एक चुल्लू पानी पर क़नाअ़त की, वोह काम्याब रहे और बहुत सा पीने वाले मारे गए, क्यूं कि चुल्लू में बरकत थी और उस में मह़ज़ कषरत।

"जो खाए और सैर न हो" इस की वज़ाह़त में मुफ़्ती साहि़ब फ़रमाते हैं : जूउ़ल बक़र बीमारी वाला खाने से सैर नहीं होता और इस्तिस्क़ा वाला पानी से, इन दोनों की येह भूक और प्यास कभी हलाकत का बाइ़ष हो जाती है, हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने माल की हवस को जूउ़ल बक़र क़रार दिया।

मज़ीद फ़रमाते हैं : ऊपर वाले हाथ से मुराद देने वाला और नीचे वाले से मांग कर लेने वाला, ख़्वाह देने वाला नज़राने के त़ौर पर नीचा हाथ कर के ही दे और लेने वाला ऊपर हाथ कर के ही उठाए, मगर फिर भी देने वाला ही ऊंचा है, यहां देने और लेने से मुराद भीक देना और लेना है अवलाद का मां बाप को देना, मुरीदे सादिक़ का अपने शैख़े कामिल की ख़िदमत में कुछ पेश करना, अन्सार का हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़राने पेश करना इस हुक्म से अ़लाहि़दा हैं, अगर हमारी खालों के जूते बनें और रिश्तए जान के तस्मे और हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उसे इस्ति'माल फ़रमा लें तो इन के ह़क़ का करोड़वां हि़स्सा अदा न हो इस

ह़दीष से बा'ज़ लोग कहते हैं कि ग़िना फ़क़्र से बेहतर है, और ग़निय्ये शाकिर, फ़क़ीरे साबिर से अफ़्ज़ल, मगर ह़क़ येह है कि फ़क़ीरे साबिर ग़निय्ये शाकिर से अफ़्ज़ल है, हमारी इस तक़रीर से येह ह़दीष ग़नी के अफ़्ज़ल होने की दलील नहीं हो सकती क्यूं कि यहां भिकारी फ़क़ीर का ज़िक्र है न कि साबिर का बा'ज़ सूफ़िया फ़रमाते हैं कि यहां ऊपर वाले हाथ से फ़क़ीरे साबिर मुराद है और नीचे वाले से भिकारी, तब तो سُبْحٰنَ اللّٰہ बहुत लुत्फ़ की बात है।

मुफ़्ती साहिब मजीद फ़रमाते हैं : "بَعْد" के मा'ना "सिवा" बहुत ही मुनासिब हैं जो शैख़ ने इख़्तियार किये या'नी आप से तो जीते जी क़ब्र में ह़श्र में मांगता ही रहूंगा क्यूं न मांगू मैं भिकारी आप दाता, रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ﴾ [النساء:٤/٦٤] **तर्जमा :** और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब तुम्हारे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हों (कन्ज़ुल ईमान)) और फ़रमाता है : ﴿وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ﴾ [الضحی:٩٣/١٠] **तर्जमा :** और मंगता को न झिड़को (कन्ज़ुल ईमान)) आप से मांगने में हमारी इ़ज़्ज़त है, हां आप के सिवा किसी से न मांगूंगा, शे'र

उन के दर की भीक छोड़ूं सरवरी के वासिते

उन के दर की भीक अच्छी, सरवरी अच्छी नहीं

कल क़ियामत में सारी मख़्लूक़ ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से शफ़ाअ़त वग़ैरा की भीक मांगेगी, ह़ज़रते ह़कीम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने येह वा'दा ऐसा पूरा किया कि अगर घोड़े से आप का कोड़ा गिर जाता तो ख़ुद उतर कर लेते किसी से मांगते नहीं।[1]

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 57, 58)

सुवाल से गुरेज़ करने पर जन्नत की बिशारत है, चुनान्चे :

عَنْ ثَوْبَانَ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم: "مَنْ یَّکْفُلُ لِیْ اَنْ لَّا یَسْاَلَ النَّاسَ شَیْئًا اَتَکَفَّلُ لَہٗ بِالْجَنَّۃِ" فَقُلْتُ: اَنَا فَکَانَ لَا یَسْاَلُ اَحَدًا شَیْئًا.[1]

ह़ज़रते षौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मुझे इस की ज़मानत दे कि लोगों से कुछ न मांगेगा तो मैं उस के लिये जन्नत का ज़ामिन हूं तो मैं ने कहा : मैं ! चुनान्चे वोह किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे।[1]

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीषे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी जो मुझ से भीक न मांगने का अ़हद करे तो मैं उस की चार चीज़ों का ज़िम्मादार होता हूं, ज़िन्दगी तक़्वा पर, मौत ईमान पर, काम्याबी क़ब्र में, छुटकारा ह़श्र में, क्यूं कि जन्नत इन चार चीज़ों के बा'द नसीब होगी इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी जन्नत का मालिक व मुख़्तार बनाया है क्यूं कि बिग़ैर इख़्तियार ज़मानत कैसी, येह भी मा'लूम हुवा कि सुवाल से बचने वाले को हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी अमान में ले लेते हैं फिर उस पर न शैत़ान का दाव चले, न नफ़्से अम्मारा क़ाबू पाए, जिसे वोह अपने दामन में छुपा लें उस का कोई क्या बिगाड़ सकता है, येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का तसर्रुफ़ और हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام की अम्नो अमान आ़लम में क़ियामत तक जारी है, क्यूं कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की येह ज़मानत सिर्फ़ सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم के लिये नहीं ता क़ियामत हर सुवाल से बचने वाले मोमिन के लिये है। शे'र

مدینہ

[1] (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب في الاستعفاف، الحديث:١٦٤٣، ج٢، ص٢٠٢)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له المسألة ومن تحل له، الحديث١٨٥٧، ج١، ص٣٥٣)

ढूंडा ही करें सद्रे क़ियामत के सिपाही
वोह किस को मिले जो तेरे दामन में छुपा हो

यहां शैख़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया कि अम्बियाए किराम की येह ज़मानतें बि इज़्ने इलाही हैं और बरह़क़ हैं ह़त्ता कि एक पैग़म्बर का नाम ही ज़ुल किफ़्ल है क्यूं कि वोह अपनी उम्मत के लिये जन्नत के कफ़ील हो गए थे।

मज़ीद फ़रमाते हैं : सब से पहले इस ह़दीष पर ख़ुद ह़ज़रते षौबान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ऐसा अ़मल किया कि वफ़ात तक किसी से कुछ न मांगा, मा'लूम हुवा कि इ़ल्म पर आ़लिम ख़ुद अ़मल करे।[1]

सुवाल का अन्जाम फ़क़्र है चुनान्चे :

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "ثَلَاثٌ وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ إِنْ كُنْتُ لَحَالِفًا عَلَيْهِنَّ: لَا يَنْقُصُ مَالٌ مِنْ صَدَقَةٍ فَتَصَدَّقُوْا، وَلَا يَعْفُوْ عَبْدٌ عَنْ مَظْلَمَةٍ يَبْتَغِي بِهَا وَجْهَ اللّٰهِ إِلَّا رَفَعَهُ اللّٰهُ بِهَا عِزًّا، وَلَا يَفْتَحُ عَبْدٌ بَابَ مَسْأَلَةٍ إِلَّا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْهِ بَابَ فَقْرٍ.

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुह़म्मद की जान है तीन बातें हैं जिन पर मैं क़सम खा सकता हूं, स-दक़े से माल कम नहीं होता तो स-दक़ा दिया करो और बन्दा **अल्लाह** की रिज़ा की ख़ातिर ज़ुल्म को दर गुज़र नहीं करता मगर **अल्लाह** तआ़ला बरोज़े क़ियामत उसे इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाएगा और बन्दा सुवाल का दरवाज़ा न खोलेगा मगर **अल्लाह** तआ़ला उस पर फ़क़ीरी का दरवाज़ा खोल देगा।[2]

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 68)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : जब तुम में से कोई शख़्स अपनी ज़रूरत तलब करे तो नर्मी से तलब करे और किसी के पास जा कर येह न कहे कि तुम ऐसे हो तुम ऐसे हो कि उस की पीठ तोड़ दे (या'नी ता'रीफ़ में मुबालग़ा करता जाए) क्यूं कि रिज़्क़ तो इतना ही मिलेगा जो उस के नसीब में है।

बनू उमय्या में से किसी ने हज़रते अबू हाज़िम رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ को ख़त़ लिखा और क़सम दे कर कहा जो हाजात हों मुझे बताएं हज़रते अबू हाज़िम رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ ने जवाबन लिखा : मैं ने अपनी हाजात अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के हां पेश कर दी हैं तो वोह जो कुछ देगा क़बूल करूंगा और जो कुछ मुझ से रोक रखेगा उस पर सब्र करूंगा।[1]

मांगने वाला ह़क़ीक़तन आग तलब करता है, चुनान्चे :

हज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने फ़ुलां, फ़ुलां को सुना वोह बहुत अच्छी ता'रीफ़ करते हैं और कहते हैं कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें दो दीनार अ़ता फ़रमाए। रावी कहते हैं : तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

عَنْ أَبِی سَعِیْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: قَالَ عُمَرُ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ لَقَدْ سَمِعْتُ فُلَانًا وَفُلَانًا یُحْسِنَانِ الثَّنَاءَ یَذْکُرَانِ أَنَّكَ أَعْطَیْتَهُمَا دِیْنَارَیْنِ. قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ:

---

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، الآثار، ج٣، ص٣٢٠)

"وَاللّٰهِ لٰكِنَّ فُلَانًا مَا هُوَ كَذٰلِكَ لَقَدْ أَعْطَيْتُهُ مَا بَيْنَ عَشَرَةٍ إِلَى مِائَةٍ فَمَا يَقُوْلُ ذٰلِكَ أَمَا وَاللّٰهِ إِنَّ أَحَدَكُمْ لَيُخْرِجُ مَسْأَلَتَهُ مِنْ عِنْدِي يَتَأَبَّطُهَا" يَعْنِي تَكُوْنُ تَحْتَ إِبْطِهِ نَارًا، فَقَالَ: قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَ تُعْطِيْهَا إِيَّاهُمْ؟ قَالَ: "فَمَا أَصْنَعُ؟ يَأْبَوْنَ إِلَّا ذٰلِكَ، وَيَأْبَى اللّٰهُ لِيَ الْبُخْلَ".[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! फ़ुलां का मुआ़मला तो ऐसा नहीं, मैं ने तो उसे दस से सो के दरमियान दिये हैं वोह ऐसा क्यूं कहता है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम में से कोई मुझ से अपनी मत़्लूबा शै बग़ल में दबाए ले जाता है, या'नी उस की बग़ल के नीचे आग होती है। रावी कहते हैं : ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! तो फिर आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें क्यूं अ़ता करते हैं ? आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं क्या करूं ? वोह इस के बिग़ैर राज़ी नहीं और **अल्लाह** तआ़ला मेरे लिये बुख़्ल को ना पसन्द फ़रमाता है।[1]

साह़िबे नुज़्हतुल मजालिस फ़रमाते हैं कि मैं ने तफ़्सीरे उ़लाई में सूरए यासीन शरीफ़ की तफ़्सीर में देखा कि एक मरतबा ईसा عَلَیْہِ السَّلَام एक गाउं से गुज़रे तो वहां वालों को रास्तों में मुर्दा ह़ालत में पाया तो आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उन के मुतअ़ल्लिक़ पूछा, **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें वह़्य फ़रमाई कि जब रात हो तो इन को पुकारियेगा येह आप को जवाब देंगे। जब रात हुई तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उन्हें पुकारा, उन में से एक बोला : लब्बैक ऐ रूह़ल्लाह ! ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : तुम्हारा क्या मुआ़मला है ?

مدینہ

[1] (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، فصل بالترهيب من المسألة وتحريمها مع الغنى، الحديث: ٢٨، ج ١، ص ٣٠٠)

उस ने जवाब दिया : हम दिन आ़फ़िय्यत में गुज़ारते थे और रातें ख़्वाहिशात में। आप عَلَيۡهِ السَّلَام ने फ़रमाया : क्यूं ? उस ने जवाब दिया : इस लिये कि हम दुन्या से यूं मह़ब्बत करते थे जैसे बच्चा मां से मह़ब्बत करता है जब कोई दुन्यावी अच्छाई पाते तो बहुत ख़ुश होते और जब कोई मुसीबत पड़ती तो रोते थे। ह़ज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام ने फ़रमाया : तुम्हारे साथियों को क्या हुवा वोह क्यूं जवाब नहीं देते ? अ़र्ज़ की : इन्हें अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आग की लगामें डाले हुए हैं। ह़ज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام ने फ़रमाया : तो तुम कैसे इन के दरमियान जवाब दे रहे हो ? अ़र्ज़ की : मैं इन में से नहीं मैं तो बस इन पर अ़ज़ाब नाज़िल होते वक़्त इन के दरमियान से गुज़र रहा था तो वोह अ़ज़ाब मुझ पर भी आ पहुंचा और मैं जहन्नम के किनारे एक बाल से लटका हुवा हूं पस मैं नहीं जानता कि मैं इस से नजात पाऊंगा या नहीं ?[1]

तीन क़िस्म के लोगों का सुवाल करना जाइज़ है। चुनान्चे :

عَنۡ أَبِي بِشۡرٍ قُبَيۡصَةَ بۡنِ الۡمُخَارِقِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ قَالَ: تَحَمَّلۡتُ حَمَالَةً، فَأَتَيۡتُ رَسُوۡلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ أَسۡأَلُهُ فِيۡهَا فَقَالَ: "أَقِمۡ حَتّٰى تَأۡتِيَنَا الصَّدَقَةُ فَنَأۡمُرَ لَكَ بِهَا"

ह़ज़रते अबू बिश्र क़ुबैसा बिन मुख़ारिक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : मैं एक क़र्ज़ का ज़ामिन बन गया था, तो ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में उस के लिये कुछ मांगने को ह़ाज़िर हुवा, तो ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : ठहरो

مدينہ

[1] (نزهة المجالس،باب الزهد والقناعة والتوكل،ج٢،ص٢٤)

ثُمَّ قَالَ: "يَا قَبِيصَةُ، إِنَّ الْمَسْأَلَةَ لَا تَحِلُّ إِلَّا لِأَحَدِ ثَلَاثَةٍ: رَجُلٍ تَحَمَّلَ حَمَالَةً فَحَلَّتْ لَهُ الْمَسْأَلَةُ حَتّٰى يُصِيبَهَا ثُمَّ يُمْسِكُ، وَرَجُلٍ أَصَابَتْهُ جَائِحَةٌ اِجْتَاحَتْ مَالَهُ فَحَلَّتْ لَهُ الْمَسْأَلَةُ حَتّٰى يُصِيبَ قِوَامًا مِنْ عَيْشٍ - أَوْ قَالَ - سِدَادًا مِنْ عَيْشٍ، وَرَجُلٍ أَصَابَتْهُ فَاقَةٌ حَتّٰى يَقُولَ ثَلَاثَةٌ مِنْ ذَوِي الْحِجٰى مِنْ قَوْمِهِ: لَقَدْ أَصَابَتْ فُلَانًا فَاقَةٌ، فَحَلَّتْ لَهُ الْمَسْأَلَةُ حَتّٰى يُصِيبَ قِوَامًا مِنْ عَيْشٍ - أَوْ قَالَ - سِدَادًا مِنْ عَيْشٍ، فَمَا سِوَاهُنَّ مِنَ الْمَسْأَلَةِ يَا قَبِيصَةُ سُحْتٌ يَأْكُلُهَا صَاحِبُهَا سُحْتًا".[1]

ह़त्ता कि स-दक़ा आ जाए तो हम उस का तुम्हारे लिये हुक्म दे देंगे फिर फ़रमाया : ऐ क़ुबैसा ! तीन शख़्सों के सिवा किसी को मांगना जाइज़ नहीं एक वोह जो किसी क़र्ज़ का ज़ामिन हो गया हो उसे मांगना जाइज़ है ह़त्ता कि ब क़द्रे क़र्ज़ पा ले फिर बाज़ रहे, एक वोह जिस पर आफ़त आ जाए जो उस का माल बरबाद कर दे उसे मांगना ह़लाल है ह़त्ता कि ज़िन्दगानी का क़ियाम पाए या फ़रमाया कि ज़िन्दगी की दुरुस्ती पाए, और एक वोह जिसे फ़ाक़ा पहुंच जाए ह़त्ता कि उस की क़ौम के तीन अ़क़्लमन्द शख़्स गवाही दें कि फुलां को फ़ाक़ा पहुंचा है तो उसे मांगना ह़लाल है ह़त्ता कि ज़िन्दगी का क़ियाम या फ़रमाया : ज़िन्दगी की दुरुस्ती पाए, ऐ क़ुबैसा ! इन तीन बातों के सिवा मांगना ह़राम है कि मांगने वाला ह़राम खाता है ।[1]

مدینہ

[1] (سنن الدارمي، كتاب الزكاة، باب من تحل له الصدقة،الحديث:١٦٨٤، ص٤٩٣)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب من تحل له المسألة،الحديث:١٠٤٤، ص٣٧٣)
(سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب ما تجوز فيه المسألة،الحديث:١٦٤٠، ج٢، ص١٩٨ـ١٩٩)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة،باب الصدقة لمن تحمل بحمالة،الحديث:٢٥٨٠، ج٣،الجزء٥، ص٩٣)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة،باب من لا تحل له المسألة ومن تحل له،الحديث:١٨٣٧، ج١، ص٣٤٩)

"क़र्ज़ का ज़ामिन बन गया था" इस की वज़ाहत करते हुए मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस ज़मानत की सूरत येह होती है कि दो क़ौमें दैत या दूसरे क़र्ज़ की वजह से आपस में लड़ने लगें, कोई उन में सुल्ह़ कराने और दफ़्ए़ शर के लिये मकरूज़ का क़र्ज़ या मक़्तूल की दैत अपने ज़िम्मे ले ले या'नी दफ़्ए़ फ़साद या सुल्ह़ कराने के लिये माल का ज़ामिन बन जाना या अपने ज़िम्मे ले लेना।

"ठहरो ह़त्ता कि स-दक़ा आ जाए" इस के तह़्त ह़कीमुल उम्मत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : स-दक़े से मुराद ज़ाहिरी जानवरों की पैदावार की ज़कात है जो हुकूमते इस्लामिया वुसूल करती थी या माले बात़िनी या'नी सोने चांदी वग़ैरा की ज़कात जो ग़नी सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर करते थे ताकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही ख़ैरात कर दें और हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से ख़ैरात क़बूल हो या'नी ऐ क़ुबैसा ! इतना तवक़्क़ुफ़ करो कि ज़कात वुसूल हो जाए तो उस से तुम्हारा ज़रे ज़मानत अदा कर दिया जाएगा।

"ब क़द्रे क़र्ज़ पा ले फिर बाज़ रहे" इस के तह़्त फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि ऐसा ज़ामिन अगर्चे मालदार भी हो तो स-दक़ा मांग सकता है क्यूं कि येह मांगना अपने लिये नहीं बल्कि उस मकरूज़ फ़क़ीर के लिये है जो फ़क़ीर है जिस का येह ज़ामिन है, रब तआ़ला ने ज़कात के मसारिफ़ में ग़ारिमीन (मकरूज़ों) का भी ज़िक्र फ़रमाया है वोह येह ही मकरूज़ हैं।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ में सुवाल से इजतिनाब की ता'लीम फ़रमाई गई, चुनान्चे :

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 54)

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اِسْتَغْنُوْا عَنِ النَّاسِ، وَلَوْ بِشُوْصِ السِّوَاكِ".[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं : ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लोगों से मांगने से एह़तिराज़ करो अगर्चे मिस्वाक ही क्यूं न हो।[1]

ह़ज़रते उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : बेशक लालच फ़क़्र है और (लोगों से) ना उम्मीदी, मालदारी है जो शख़्स लोगों के पास मौजूद चीज़ों से ना उम्मीद हो जाए तो वोह लोगों से बे नियाज़ हो जाता है।

किसी दाना से पूछा गया कि मालदारी क्या है ? उन्हों ने जवाब दिया : तेरा ख़्वाहिश कम करना और जो कुछ मौजूद हो उसी पर राज़ी रहना मालदारी है।[2]

ब इस्रार मांगने वाले को **अल्लाह** तआ़ला ना पसन्द फ़रमाता है (نعوذ باللہ من ذلک), चुनान्चे :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰى يَأْمَنَ جَارُهُ بَوَائِقَهُ

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत फ़रमाते हैं कि आप ने फ़रमाया : बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं होता जब तक उस का हमसाया उस की शरारतों से

مدینہ

[1] (المعجم الكبير للطبراني، الحديث:١٢٢٥٧، ج١١، ص٤٤٤)
[2] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، الآثار، ج٣، ص٣٢٠)

وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَسْكُتْ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْغَنِيَّ الْحَلِيمَ الْمُتَعَفِّفَ، وَيُبْغِضُ الْبَذِيَّ الْفَاجِرَ السَّائِلَ الْمُلِحَّ". رواه البزار.[1]

महफ़ूज़ न हो और जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अपने मेहमान का एह्तिराम करे और जो अल्लाह और रोजे़ क़ियामत पर ईमान रखता हो उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे, बेशक अल्लाह तआला सुवाल से बचने वाले ग़नी बुर्दबार को पसन्द फ़रमाता है और बद गो फ़ाजिर ब इसरार मांगने वाले को ना पसन्द फ़रमाता है।[1]

किसी दाना से पुछा गया कि समझदार के लिये ज़ियादा ख़ुशी का बाइ़ष क्या चीज़ है और ग़म दूर करने में कौन सी चीज़ ज़ियादा मुआविन षाबित हो सकती है? उन्हों ने जवाब दिया : उस के लिये ज़ियादा ख़ुशी का बाइ़ष वोह नेक आ'माल हैं जो उस ने आगे भेजे हों और उस का ग़म उसी वक़्त दूर हो सकता है जब वोह अल्लाह तआला के फ़ैसले पर राज़ी हो।[2]

जहन्नम में दाख़िल होने वाले पहले तीन अश्ख़ास में फ़ाजिर फ़क़ीर भी शामिल है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "عُرِضَ عَلَيَّ أَوَّلُ

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

---

[1] (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، فصل، الترهيب من المسألة وتحريمها مع الغنى، الحديث: ٣١، ج ١، ص ٣٠١)

[2] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، الآثار، ج ٣، ص ٣٢٠)

ثَلَاثَةٍ يَّدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ، وَأَوَّلُ ثَلَاثَةٍ يَدْخُلُوْنَ النَّارَ، فَأَمَّا أَوَّلُ الثَّلَاثَةِ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ: فَالشَّهِيْدُ، وَعَبْدٌ مَمْلُوْكٌ أَدّٰى حَقَّ اللّٰهِ وَنَصَحَ لِسَيِّدِهِ، وَفَقِيْرٌ مُتَعَفِّفٌ ذُوْ عِيَالٍ، وَأَمَّا أَوَّلُ ثَلَاثَةٍ يَدْخُلُوْنَ النَّارَ فَسُلْطَانٌ مُسَلَّطٌ وَذُوْ ثَرْوَةٍ مِنَ الْمَالِ لَمْ يُعْطِ حَقَّ مَالِهِ وَفَقِيْرٌ فَخُوْرٌ.[1]

मुझ पर वोह तीन शख़्स पेश किये गए जो पहले जन्नत में जाएंगे और वोह तीन भी जो पहले जहन्नम में जाएंगे। वोह तीन जो पहले जन्नत में जाएंगे उन में एक शहीद है, दूसरा वोह गुलाम जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हक़ अदा करे और अपने आक़ा के लिये मुख़्लिस हो और वोह मोह़ताज इ़यालदार जो सुवाल से परहेज़ करे और वोह तीन जो पहले जहन्नम में जाएंगे उन में एक ज़बर दस्ती मुसल्लत़ ह़ाकिम है दूसरा ऐसा साह़िबे सरवत जो अपने माल की ज़कात अदा न करे और तीसरा फ़ाजिर फ़क़ीर।[1]

किसी दाना ने फ़रमाया कि मैं ने सब से ज़ियादा ग़मगीन ह़ासिदों को पाया और सब से ख़ुशह़ाल उस शख़्स को पाया जो ज़ियादा क़नाअ़त करता है और ख़्वाहिशात वाली चीज़ों पर सब्र करता है। जो शख़्स तारिकुदुन्या हो उस की ज़िन्दगी आसानी से गुज़रती है और जो आ़लिम ज़ियादा कोताही करता है उसे नदामत ज़ियादा होती है।[2]

مدینہ

١ (السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الزكاة، باب ما ورد من الوعيد فيمن كنز مال زكاة ولم يؤد زكاته، الحديث: ٧٢٢٧، ج٤، ص١٣٨)

٢ (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، الآثار، ج٣، ص٣٢٠)

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ، وَذَكَرَ الصَّدَقَةَ، وَالتَّعَفُّفَ عَنِ الْمَسْأَلَةِ: "اَلْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِّنَ الْيَدِ السُّفْلٰى، وَالْعُلْيَا هِيَ الْمُنْفِقَةُ، وَالسُّفْلٰى هِيَ السَّائِلَةُ".

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से मरवी है, कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा थे, स-दक़े का और मांगने से बाज़ रहने का ज़िक्र फ़रमा रहे थे येह फ़रमाया कि ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है ऊपर वाला हाथ ख़र्च करने वाला है और नीचे वाला हाथ मांगने वाला है।[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ैद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं एक राहिब के पास से गुज़रा तो मैं ने पूछा : आप कहां से खाते हैं ? उस ने कहा : मेहरबान ख़बर रखने वाले (अल्लाह तआला) की गन्दुम के ढेर से खाता हूं जिस ने चक्की या'नी मेरे दांत बनाए हैं वोही पिसा हुवा दे देता है। वोह क़ादिर ख़बर रखने वाला पाक है।[2]

---

1 (صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب لاصدقة إلا عن ظهرغنى، الحديث:١٤٢٩، ج١، ص٣٥٠)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب بيان أن اليدالعلياخيرمن اليدالسفلى...إلخ، الحديث١٠٣٣، ص٣٧٠)
(سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب في الاستعفاف، الحديث:١٦٤٨، ج٢، ص٢٠٣)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب الصدقة عن ظهرغنى، الحديث:٢٥٣٣، ج٣، الجزء٥، ص٦٦)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له المسألة ومن تحل له، الحديث:١٨٤٣، ج١، ص٣٥٠)
2 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، الآثار، ج٣، ص٣٢٢)

एक और हदीष शरीफ़ :

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "اَلْاَيْدِي ثَلَاثَةٌ اَيْدٍ فَيَدُ اللّٰهِ الْعُلْيَا وَيَدُ الْمُعْطِي الَّتِي تَلِيْهَا وَيَدُ السَّائِلِ اَسْفَلُ إِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ فَاسْتَعِفُّوْا مِنَ السُّؤَالِ مَا اسْتَطَعْتُمْ، وَمَنْ اَعْطَاهُ اللّٰهُ خَيْرًا فَلْيُرَ عَلَيْهِ، وَابْدَاْ بِمَنْ تَعُوْلُ، وَارْتَضِخْ مِنَ الْفَضْلِ، وَلَا تُلَامُ عَلٰى كَفَافٍ وَلَا تَعْجِزْ عَنْ نَفْسِكَ".[1]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हाथ तीन हैं एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हाथ है जो सब से ऊपर है, और दूसरा देने वाले का हाथ है जो उस के नज़्दीक है और तीसरा मांगने वाले का हाथ है जो क़ियामत तक सब से नीचे है लिहाज़ा जिस क़दर मुमकिन हो सुवाल करने से बचो और जिसे **अल्लाह** तआ़ला कोई ने'मत अ़ता करे तो चाहिये कि वोह उस पर नज़र भी आए और (ख़र्च करने में) उन से शुरूअ़ कर जो तेरी परवरिश में हैं और अपनी ज़रूरत से ज़ाइद माल में से स-दक़ा कर, ब क़द्रे ज़रूरत रोकने पर मलामत नहीं और ख़ुद को मह़रूम न रखो ।[1]

एक और हदीष शरीफ़ :

عَنْ حَكِيْمِ بْنِ حِزَامٍ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ

हज़रते ह़कीम बिन हि़ज़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने

مدينـه

[1] (السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الزكاة، باب بيان اليد العليا و اليد السفلى، الحديث: ٧٨٨٦، ج ٤، ص ٣٣٣)

بہرو بر صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है और उन से इब्तिदा कर जो तेरी परवरिश में हैं और अच्छा स-दक़ा वोह है जिस के बा'द तवंगरी बाक़ी रहे और जो सुवाल से बचना चाहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बचा लेगा और जो ग़नी बनना चाहे **अल्लाह** उसे ग़नी कर देगा।[1]	وَسَلَّم : "اَلْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلٰى، وَابْدَأْ بِمَنْ تَعُوْلُ، وَخَيْرُ الصَّدَقَةِ مَا كَانَ عَنْ ظَهْرِ غِنًى، وَمَنْ يَسْتَعْفِفْ يُعِفَّهُ اللّٰهُ، وَمَنْ يَسْتَغْنِ يُغْنِهِ اللّٰهُ."

सुवाल की मज़म्मत में एक और ह़दीष़ शरीफ़ :

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से मरवी है कि कुछ अन्सारी लोगों ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया हुज़ूर ने उन्हें दिया उन्हों ने फिर मांगा हुज़ूर ने अ़ता फ़रमाया फिर उन्हों ने मांगा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़ता फ़रमाया ह़त्ता कि वोह माल जो आप के पास था ख़त्म हो गया, आप ने फ़रमाया : जो कुछ माल मेरे पास होगा वोह तुम से हरगिज़ बचा न रखूंगा,	عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ أُنَاسًا مِنَ الْأَنْصَارِ سَأَلُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَعْطَاهُمْ، ثُمَّ سَأَلُوْهُ فَأَعْطَاهُمْ، ثُمَّ سَأَلُوْهُ فَأَعْطَاهُمْ، حَتّٰى إِذَا نَفِدَ مَا عِنْدَهُ قَالَ: "مَا يَكُوْنُ عِنْدِي مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ أَدَّخِرَهُ عَنْكُمْ، وَمَنِ اسْتَعَفَّ يُعِفَّهُ اللّٰهُ، وَمَنْ يَسْتَغْنِ يُغْنِهِ اللّٰهُ، وَمَنْ يَتَصَبَّرْ يُصَبِّرْهُ اللّٰهُ، وَمَا

مدينه

[1] (صحيح البخاري، كتاب الزكاة،باب لا صدقة إلا عن ظهرغنى،الحديث:١٤٢٧،ج١،ص٣٥٠)

और जो सुवाल से बचना चाहे अल्लाह उसे बचाएगा और जो ग़नी बनना चाहे अल्लाह उसे ग़नी कर देगा और जो सब्र चाहे अल्लाह तआ़ला उसे सब्र अ़ता करेगा और अल्लाह ने सब्र से बेहतर और वसीअ़ अ़ता किसी को न दी।[1]

أَعْطَى اللّٰهُ أَحَدًا عَطَاءً هُوَ خَيْرٌ لَّهُ، وَأَوْسَعُ مِنَ الصَّبْرِ"۔[1]

इस ह़दीष की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه फ़रमाते हैं : वोह ह़ज़रात मांगते रहे और ह़ुज़ूर صَلَّى الله تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم देते रहे उन्हें सब कुछ दे कर मस्अला बताया, इस में तब्लीग़ भी है और सख़ावते मुत़्लक़ा का इज़्हार भी। मा'लूम हुवा कि बिला ज़रूरत मांगने वालों को देना ह़राम नहीं अगर्चे उन्हें मांगना मम्नूअ़ है ख़याल रहे कि जिस को ह़ुज़ूर صَلَّى الله تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ ख़ुश हो कर दिया है वोह बहुत अ़र्से तक ख़त्म न हुवा, चुनान्चे ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنهَا और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنهُ को थोड़े थोड़े जव अ़ता फ़रमाए थे जो उन बुज़ुर्गों ने सालहा साल खाए और खिलाए, फिर जब तोले तो उतने ही थे मगर तोलने से ख़त्म हो गए, ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنهُ के हां साढ़े चार सैर जव की रोटी पर सैंकड़ों आदमियों की दा'वत फ़रमाई।

---

[1] (سنن الدارمي، كتاب الزكاة، باب في الاستعفاف عن المسألة، الحديث:١٦٥٢، ص٤٨١)
(صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب الاستعفاف عن المسألة، الحديث:١٤٦٩، ج١، ص٣٦١)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب فضل التعفف و الصبر، الحديث:١٠٥٣، ص٣٧٦)
(سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب في الاستعفاف، الحديث:١٦٤٤، ج٢، ص٢٠٢)
(سنن الترمذي، كتاب البر و الصلة، باب ما جاء في الصبر، الحديث:٢٠٢٤، ج٣، ص١٢٣)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب الاستعفاف عن المسألة، الحديث: ٢٥٨٧، ص١٠٠)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له المسألة ومن تحل له، الحديث:١٨٤٤، ج١، ص٣٥٠)

हकीमुल उम्मत رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه मजीद फ़रमाते हैं : येह ह़दीष इस ह़दीषे कुदसी की शर्ह़ है أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي या'नी रब तआ़ला फ़रमाता है कि मैं अपने बन्दे के गुमान के क़रीब रहता हूं इस का ज़ुहूर आख़िरत में तो होगा ही कि अगर बन्दा मुआ़फ़ी की उम्मीद करता हुवा मर जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه उसे मुआ़फ़ी ही मिलेगी, अकषर दुन्या में भी हो जाता है कि जो क़र्ज़ न लेने न मांगने का ख़ुदा के भरोसे पर पूरा इरादा कर ले तो **अल्लाह** तआ़ला उसे इन से बचा ही लेता है और जो येह कोशिश करे कि दुन्या वालों से ला परवाह रहूं तो बहुत ह़द तक **अल्लाह** तआ़ला उसे ला परवाह ही रखता है, मगर येह फ़क़त़ ज़बानी दा'वा न हो अ़मली कोशिश भी हो कि कमाने में मश्ग़ूल रहे, ख़र्च दरमियाना रखे, गुलछर्रे न उड़ाए **अल्लाह** रसूल सच्चे हैं इन के वा'दे ह़क़, ग़लती हम कर जाते हैं।

"जो सब्र चाहे **अल्लाह** तआ़ला उसे सब्र अ़त़ा करेगा" इस के तह़्त मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : रब तआ़ला की अ़त़ाओं में से बेहतरीन और बहुत गुन्जाइश वाली अ़त़ा सब्र है कि रब तआ़ला ने इस का ज़िक्र नमाज़ से पहले फ़रमाया :

﴿اِسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ﴾ [البقرة:٢/١٥٣] **तर्जमा :** सब्र और नमाज़ से मदद चाहो (कन्ज़ुल ईमान)) और साबिर के साथ **अल्लाह** होता है, नीज़ सब्र के ज़रीए इन्सान बड़ी बड़ी मशक़्क़तें बरदाश्त कर लेता है और बड़े बड़े दरजे ह़ासिल कर लेता है, रब तआ़ला ने अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में फ़रमाया : ﴿اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا﴾ [ص:٤٤] हम ने उन्हें बन्दए साबिर पाया, सब्र ही की बरकत से ह़ज़रते हु़सैन رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنْهُ सय्यिदुश्शुहदा हुए।[1]

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिशकातुल मसाबीह़, जि 3, स. 59-60)

और गि़ना कषरते माल का नाम नहीं बल्कि अस्ल गि़ना तो दिल की तवंगरी है, चुनान्चे :

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया : अमीरी ज़ियादा माल व अस्बाब से नहीं बल्कि अमीरी दिल की गि़ना से है।[1]

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَيْسَ الْغِنٰى عَنْ كَثْرَةِ الْعَرَضِ، وَلٰكِنَّ الْغِنٰى غِنَى النَّفْسِ".[1]

ह़कीमुल उम्मत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीष की तशरीह़ करते हुए रक़म त़राज़ हैं : दिल की गि़ना से मुराद क़नाअ़त व सब्र, रिज़ा बर क़ज़ा है। ह़रीस मालदार फ़क़ीर है क़नाअ़त वाला ग़रीब अमीर है, शे'र

توانگری نہ بمال است نزد اہل کمال ❁ کہ مال تالبِ گور است بعداز اں اعمال

(या'नी अहले कमाल के हां तवंगरी व ख़ुशह़ाली माल से नहीं कि माल तो क़ब्र के किनारे तक है इस के बा'द तो आ'माल हैं)

हो सकता है कि ग़नी नफ़्स से मुराद कमालाते रूह़ानिया हों कि इस की बरकत से दौलत मन्द उस के दरवाज़े की ख़ाक चाटते हैं देख लो दाता गन्ज बख़्श और ख़्वाजा अजमेरी के आस्ताने। رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا

---

[1] (صحيح البخاري، كتاب الرقاق، باب الغنى غنى النفس، الحديث: ٦٤٤٦، ج٤، ص١٩٧)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب ليس الغنى عن كثرة العرض، الحديث: ١٠٥١، ص٣٧٥)
(سنن الترمذي، كتاب الزهد، باب ما جاء أن الغنى غنى النفس، الحديث: ٢٣٧٣، ج٣، ص٣١٨)
(سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب القناعة، الحديث: ٤١٣٧، ج٤، ص٤٨٢)
(مشكاة المصابيح، كتاب الرقاق، الفصل الأول، الحديث: ٥١٧٠، ج٢، ص٢٤٤)

हज़रते अ़ली फ़रमाते हैं, शे'र

رضينا قسمة الجبّار فينا ❁ لنا علم وللجهال مال

فإنّ المال يفني عن قريب ❁ وإنّ العلم باقٍ لا يزال[1]

(हम अपने दरमियान रब तआ़ला की तक़्सीम पर राज़ी हैं, कि हमारे लिये इल्म है और जाहिलों के लिये माल, बेशक माल जल्द फ़ना हो जाएगा और बेशक इल्म बाक़ी रहेगा ज़ाइल न होगा)[1]

हदीष शरीफ़ में है :

عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِي رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "يَا أَبَا ذَرٍّ أَتَرٰى كَثْرَةَ الْمَالِ هُوَ الْغِنٰى"؟ قُلْتُ: نَعَمْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، قَالَ: "أَفَتَرٰى قِلَّةَ الْمَالِ هُوَ الْفَقْرَ"؟ قُلْتُ: نَعَمْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ. قَالَ: "إِنَّمَا الْغِنٰى غِنَى الْقَلْبِ".[2]

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : मुझ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! क्या तुम कषरते माल को ग़िना समझते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : हां ! या रसूलल्लाह ! आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम माल की कमी को फ़क्र समझते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : हां ! या रसूलल्लाह ! आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अस्ल ग़िना तो दिल की तवंगरी है ।[2]

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 7, स. 11, 12)

٢ (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، فصل، الترهيب من المسألة وتحريمها مع الغنى، الحديث: ٤٢، ج١، ص٣٠٤)

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَيْسَ الْمِسْكِيْنُ الَّذِي تَرُدُّهُ اللُّقْمَةُ وَاللُّقْمَتَانِ، وَالتَّمْرَةُ وَالتَّمْرَتَانِ، وَلٰكِنَّ الْمِسْكِيْنَ الَّذِي لَا يَجِدُ غِنًى يُغْنِيْهِ، وَلَا يُفْطَنُ لَهُ فَيُتَصَدَّقُ عَلَيْهِ، وَلَا يَقُوْمُ فَيَسْأَلُ النَّاسَ"۔[1]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मिस्कीन वोह नहीं जिसे एक दो लुक़्मे या एक दो छूहारे लौटा दें बल्कि मिस्कीन वोह है कि इतना न पाए जो उसे लोगों से बे नियाज़ कर दे और उसे पहचाना भी न जाए कि उसे स-दक़ा दिया जाए और न ही ख़ुद उठ कर लोगों से सुवाल करे।[1]

या'नी जिस मिस्कीनियत पर षवाब है और साबिरों के ज़ुमरे में दाख़िल है वोह येह भिकारी फ़क़ीर नहीं है बल्कि येह तो आ़म ह़ालात में उसी सुवाल पर गुनहगार है कि जब वोह भीक मांगने के लिये इतनी दौड़ धूप कर सकता है तो वोह कमाने के लिये भी कर सकता है, हां साबिर वोह मिस्कीन है जो ह़ाजत मन्द हो मगर फिर किसी पर अपनी ह़ाजत ज़ाहिर न करे, अपने फ़क़्र को छुपाने की कोशिश करे, उसी मिस्कीन की रब तआ़ला ने क़ुरआने पाक में ता'रीफ़ फ़रमाई है कि फ़रमाया :

مدینہ

1 (صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب قول الله تعالى: ﴿لَا يَسْأَلُوْنَ النَّاسَ إِلْحَافًا﴾ وكَمِ الغنى، الحديث: ١٤٧٩، ج١، ص٣٦٤)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب المسكين الذي لا يجد غنى... إلخ، الحديث: ١٠٣٩، ص٣٧٢)
(سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب من يعطى من الصدقة وحد الغنى، الحديث: ١٦٣١، ج٢، ص١٩٣)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب تفسير المسكين، الحديث: ٢٥٧١، ج٣، الجزء٥، ص٩٠)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له الصدقة، الحديث: ١٨٢٨، ج١، ص٣٤٧)

(﴿لِلۡفُقَرَآءِ الَّذِیۡنَ اُحۡصِرُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ﴾الآیة [البقرة:۳/۲۷۳] तर्जमा : उन फ़क़ीरों के लिये जो राहे ख़ुदा में रोके गए (कन्ज़ुल ईमान)) ख़याल रहे कि जिस मिस्कीनियत की दुआ हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मांगी है वोह मिस्कीनियते दिल है या'नी दिल में इज्ज़ो इन्किसार होना, तकब्बुर व ग़ुरूर न होना, ऐसा शख़्स अगर मालदार भी हो तो मुबारक मिस्कीन है, और जिन अहादीष में फ़क्र व मिस्कीनियत से पनाह मांगी गई है वोह ऐसी तंगदस्ती है जो फ़ित्ने में मुब्तला कर दे, लिहाज़ा अहादीष में तआरुज़ नहीं और न ए'तिराज़ है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तो मिस्कीनियत की दुआ की मगर रब तआला ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बादशाह बना दिया येह दुआ क़बूल न हुई ।[1]

जिस ने ब किफ़ायत रिज़्क़ पाया और क़नाअ़त की वोह काम्याब है। चुनान्चे :

عَنۡ عَبۡدِ اللّٰہِ بۡنِ عَمۡرٍو رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا اَنَّ رَسُوۡلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ قَالَ: "قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ اَسۡلَمَ، وَرُزِقَ کَفَافًا، وَقَنَّعَہُ اللّٰہُ بِمَا آتَاہُ." [2]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह काम्याब हो गया जो मुसलमान हुवा और ब क़द्रे किफ़ायत रिज़्क़ दिया गया और अल्लाह ने उसे अपने अ़ता कर्दा पर क़नाअ़त दी ।[2]

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 49)

[2] (صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب في الکفاف و القناعة،الحدیث:۱۰۵٤،ص۳۷٦)

(سنن الترمذي، کتاب الزهد،باب ما جاء في الکفاف و الصبرعلیه،الحدیث:۲۳٤۸،ج۳،ص۳۰۷)

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الرقاق، الفصل الأول،الحدیث:٥۱٦٥،ج۲،ص۲٤۳)

हकीमुल उम्मत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस हदीष की शर्ह में फ़रमाते हैं : या'नी जिसे ईमान व तक़्वा ब क़द्रे ज़रूरत माल और थोड़े माल पर सब्र येह चार ने'मतें मिल गईं, उस पर **अल्लाह** का बड़ा ही करम व फ़ज़्ल हो गया, वोह काम्याब रहा और दुन्या से काम्याब गया।[1]

अबू मुहम्मद यज़ीदी फ़रमाते हैं : मैं हारूनुर्रशीद के पास गया तो देखा कि वोह एक काग़ज़ को देख रहा है जिस की तहरीर सोने की है जब मुझे देखा तो हंस पड़ा मैं ने कहा : **अल्लाह** तआला अमीरुल मुअमिनीन को सलामत रखे क्या कोई फ़ाइदा मन्द चीज़ है ? उस ने कहा : हां मैं ने बनू उमय्या के एक ख़ज़ाने को इन दो शे'रों में पाया तो इन को अच्छा समझा और इन के साथ तीसरा शे'र भी मिला दिया, फिर मुझे वोह शे'र सुनाए :

إِذَا سَدَّ بَابٌ عَنْكَ مِنْ دُوْنِ حَاجَةٍ
فَدَعْهُ لِأُخْرٰى يَنْفَتِحُ لَكَ بَابُهَا
فَإِنَّ قِرَابَ الْبَطْنِ يَكْفِيكَ مِلْؤُهُ
وَيَكْفِيكَ سَوْآتُ الْأُمُوْرِ اجْتِنَابُهَا
وَلَا تَكُ مِبْذَالًا لِعِرْضِكَ وَاجْتَنِبْ
رُكُوْبَ الْمَعَاصِي يَجْتَنِبْكَ عِقَابُهَا

जब तेरी हाजत पूरी हुए बिग़ैर एक दरवाज़ा बन्द हो जाए तो उस को दूसरी हाजत के लिये छोड़ दे तेरे लिये उस का दरवाज़ा खुल जाएगा पेट के मश्कीज़े का भर जाना तेरे लिये काफ़ी है और बुराई के कामों से परहेज़ भी काफ़ी है, अपनी इ़ज़्ज़त को दाव पर न लगा और गुनाहों पर सुवार होने से बच सजा से बच जाएगा।[2]

---

1. (मिरआतुल मनाजीह शर्हे मिश्कातुल मसाबीह, जि. 5, स. 9)

۲ (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، الآثار، ج٣، ص ٣٢١)

ज़रूरियात से बाक़ी मांदा ख़र्च करने में भी फ़ज़ीलत है, चुनान्चे :

عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "يَا ابْنَ آدَمَ إِنَّكَ أَنْ تَبْذُلَ الْفَضْلَ خَيْرٌ لَكَ، وَأَنْ يُمْسِكَهُ شَرٌّ لَكَ، وَلَا تُلَامُ عَلٰى كَفَافٍ، وَابْدَأْ بِمَنْ تَعُولُ، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلٰى".[1]

हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ इब्ने आदम ! बचे हुए का ख़र्च करना तेरे लिये बेहतर है और इस का रोकना तेरे लिये बुरा है और ब क़द्रे ज़रूरत रोकने पर मलामत नहीं और उन से शुरूअ़ कर जो तेरी परवरिश में हैं और ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है ।[1]

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीष की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी अपनी ज़रूरियात से बचा हुवा माल ख़र्च कर देना ख़ुद तेरे लिये ही मुफ़ीद है कि इस से तेरा कोई काम न रुकेगा और तुझे दुन्या व आख़िरत में इवज़ मिल जाएगा, और इसे रोके रखना ख़ुद तेरे लिये ही बुरा है क्यूं कि वोह चीज़ सड़ गल या और त़रह़ ज़ाएअ़ हो जाएगी और तू षवाब से मह़रूम हो जाएगा, इसी लिये हुक्म है कि नया कपड़ा पाओ तो पुराना कपड़ा ख़ैरात कर दो, नया जूता रब तआ़ला दे तो पुराना जूता जो तुम्हारी ज़रूरत से बचा हुवा है किसी फ़क़ीर को दे दो कि तुम्हारे घर का कूड़ा निकल जाएगा और उस का भला हो जाएगा ।[2]

مدینہ

١ (صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب بيان أن اليد العليا خير من اليد السفلى...إلخ، الحديث:١٠٣٦، ص ٣٧١)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب الإنفاق وكراهية الإمساك، الحديث:١٨٦٣، ج١، ص٣٥٤)

2. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 70)

ह़दीष शरीफ़ में लालच को फ़क़्र फ़रमाया गया, चुनान्चे :

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم: "إِيَّاكُمْ وَالطَّمَعَ، فَإِنَّهُ هُوَ الْفَقْرُ، وَإِيَّاكُمْ وَمَا يُعْتَذَرُ مِنْهُ"[1]

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं : नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लालच से बचो क्यूंकि लालच ही फ़क़्र है और उस काम से बचो जिस में उ़ज़्र करना पड़े।[1]

ह़ज़रते शा'बी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है कि एक शख़्स ने क़ुम्बुरह (चन्डोल परिन्दा) शिकार किया, उस ने कहा : तुम मेरे साथ क्या करना चाहते हो ? उस शख़्स ने कहा : मैं तुझे ज़ब्ह़ कर के खाऊंगा। परन्दे ने कहा : **अल्लाह** की क़सम ! न मैं तेरी ख़्वाहिश को पूरा कर सकता हूं और न ही मुझे खा कर तू सैर होगा अलबत्ता मैं तुझे तीन बातें सिखाता हूं जो मुझे खाने से बेहतर हैं एक बात तो अभी सिखाऊंगा जब कि तेरे क़ब्ज़े में हूं दूसरी बात उस वक़्त सिखाऊंगा जब दरख़्त पर चला जाऊंगा और तीसरी बात उस वक़्त बताऊंगा जब पहाड़ पर चला जाऊंगा। उस आदमी ने कहा : पहली बात बताओ। परन्दे ने कहा : गुज़री हुई बात पर अफ़्सोस न करना। उस ने उसे छोड़ दिया जब परन्दा दरख़्त पर चला गया तो उस ने कहा : दूसरी बात बताओ। परन्दे ने कहा : जो काम न हो सके उस के होने का यक़ीन न करना। फिर वोह उड़ कर पहाड़ पर जा बैठा और कहा : ऐ बद बख़्त ! अगर तू मुझे ज़ब्ह़ करता तो मेरे पोटे में से दो मोती निकालता हर मोती का वज़्न बीस मिषक़ाल है। ह़ज़रते शा'बी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह सुन कर उस शख़्स को अफ़्सोस हुवा और कहा : तीसरी बात बता। परन्दे

---

1 (المعجم الأوسط للطبراني، الحديث: ٧٧٥٤، ج٧، ص ٣٧٠)

ने कहा : तू पहली दो बातें भूल चुका है तीसरी बात कैसे बताऊं, क्या मैं ने तुझे नहीं कहा था कि गुज़री हुई बात पर अफ़्सोस न करना और जो काम न हो सके उस के होने का यक़ीन न करना ? मैं तो एक गोश्त, ख़ून और परों का मज्मूआ़ हूं और येह सब कुछ मिला कर भी बीस मिषक़ाल नहीं हो सकते तो मेरे पोटे में बीस बीस मिषक़ाल के दो मोती कैसे हो सकते हैं ? फिर वोह परन्दा उड़ कर चला गया। येह मिषाल इन्सान के ज़ियादा लालच करने से मुतअ़ल्लिक़ है कि इस के सबब आदमी ह़क़ बात को पाने से अन्धा हो जाता है ह़त्ता कि जो काम न हो सकता हो वोह उस के बारे में ख़याल करता है कि हो जाएगा।[1]

क़नाअ़त न ख़त्म होने वाला ख़ज़ाना है, चुनान्चे :

عَنْ جَابِرٍ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ: "اَلْقَنَاعَۃُ کَنْزٌ لَا یَفْنٰی".[2]

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़नाअ़त ऐसा ख़ज़ाना है जो कभी ख़त्म नहीं होता।[2]

ह़ज़रते इब्ने सम्माक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि उम्मीद तेरे दिल में एक रस्सी है जो पाउं की बेड़ी बनी हुई है तो दिल से उम्मीद को निकाल दे तेरे पाउं से बेड़ी ख़ुद ब ख़ुद निकल जाएगी।[3]

---

1 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، الآثار، ج٣، ص٣٢١)
2 (كتاب الزهد الكبير للبيهقي، الحديث: ١٠٤، ج٢، ص٨٨)
3 (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، الآثار، ج٣، ص٣٢١)

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ عُبَيْدِ اللّٰهِ بْنِ مُحْصِنٍ الْخُطَمِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ أَصْبَحَ مِنْكُمْ آمِنًا فِي سِرْبِهِ مُعَافًى فِي بَدَنِهِ، عِنْدَهُ قُوْتُ يَوْمِهِ فَكَأَنَّمَا حِيزَتْ لَهُ الدُّنْيَا بِحَذَافِيرِهَا"[1]

ह़ज़रते उ़बैदुल्लाह बिन मोह़सिन ख़ु-त़मी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स तुम में से सुब्ह़ पाए कि उस के दिल में अम्नो अमान हो, उस के जिस्म में तन्दुरुस्ती हो, उस के पास उस दिन का खाना हो तो गोया उस के लिये दुन्या पूरी की पूरी जम्अ़ कर दी गई ।[1]

इस ह़दीष की शर्ह़ में मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : سِرب सीन के फ़त्ह़ा या कस्रा से ر के सुकून से ब मा'ना रास्ता, चेहरा, सीना, दिल, नफ़्स, यहां ब मा'ना दिल है, या'नी उस को न दुश्मन का ख़ौफ़ हो, न अ़ज़ाबे इलाही का ख़त़रा, क्यूं कि उस का दुश्मन कोई न हो और उस ने कुफ़्रिय्या गुनाह न किया हो, अहले अ़रब कहते हैं لَيْسَ الْعِيْدُ لِمَنْ لَبِسَ الْجَدِيْدَ إِنَّمَا الْعِيْدُ لِمَنْ آمَنَ الْوَعِيْد या'नी ईद उस की नहीं जो नए कपड़े पहन ले, बल्कि ईद उस की है जो अ़ज़ाब से अम्न में हो ।[2]

---

1. (سنن الترمذي، كتاب الزهد، ٣٤ـ باب، الحديث: ٢٣٤٦، ج٣، ص٣٠٥)
(سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب القناعة، الحديث: ٤١٤١، ج٤، ص٤٨٤)
(مشكاة المصابيح، كتاب الرقاق، الفصل الثاني، الحديث: ٥١٩١، ج٢، ص٢٤٧)

2. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 7, स. 28)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُما ने फ़रमाया : एक रोज़ हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام समुन्दर के किनारे तशरीफ़ ले जा रहे थे कि एक मोमिन और एक काफ़िर को मछलियां पकड़ते देखा मोमिन **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र में मशग़ूल था मगर शिकार हाथ नहीं आ रहा था जब कि काफ़िर अपने बुतों का नाम ले रहा था कि उस के जाल में मछली आ गई तो मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने इस पर तअ़ज्जुब फ़रमाया, **अल्लाह** तआ़ला ने आप पर वह्य नाज़िल फ़रमाई : ऐ मूसा ! देखो ! आप عَلَیْہِ السَّلَام ने देखा तो जन्नत में एक हौज़ पर सोने से मोमिन बन्दे का नाम लिखा था जिस में बे शुमार मछलियां थीं और जहन्नम में एक आग का मह़ल था जिस पर काफ़िर का नाम लिखा था और उस में बे शुमार सांप और बिच्छू थे कि जिन की ता'दाद का इल्म **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी को नहीं, **अल्लाह** तआ़ला ने मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को वह्य फ़रमाई : ऐ मूसा ! मेरे मोमिन बन्दे से फ़रमाइये कि उसे समुन्दर की मछलियां ज़ियादा पसन्द हैं या जन्नत की ने'मतें ? तो वोह शख़्स रोया और अ़र्ज़ की : ऐ रब ! अगर तू मुझ से रिज़्क़ रोकता है तो मैं तेरी रिज़ा की ख़ातिर खाने से सब्र करता हूं तो मछलियों से क्यूं न सब्र करूं।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ जिस में हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक अन्सारी सह़ाबी को सुवाल से बचने की तरग़ीब दी, चुनान्चे :

عَنْ أَنَسٍ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ أَتَی النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि एक अन्सारी ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में

مدینہ
1 (نزهة المجالس،باب الزهد و القناعة و التوکل، ج ٢، ص ٢٥)

فَسَأَلَهُ، فَقَالَ: "أَمَا فِي بَيْتِكَ شَيْءٌ؟" قَالَ: بَلَى. حِلْسٌ نَلْبَسُ بَعْضَهُ، وَنَبْسُطُ بَعْضَهُ، وَقَعْبٌ نَشْرَبُ فِيهِ مِنَ الْمَاءِ. قَالَ: "ائْتِنِي بِهِمَا"، فَأَتَاهُ بِهِمَا فَأَخَذَهُمَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ، وَقَالَ: "مَنْ يَشْتَرِي هٰذَيْنِ". قَالَ رَجُلٌ: أَنَا آخُذُهُمَا بِدِرْهَمٍ. قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ يَزِيدُ عَلَى دِرْهَمٍ" مَرَّتَيْنِ. قَالَ رَجُلٌ: أَنَا آخُذُهُمَا بِدِرْهَمَيْنِ فَأَعْطَاهُمَا إِيَّاهُ وَأَخَذَ الدِّرْهَمَيْنِ فَأَعْطَاهُمَا الْأَنْصَارِيَّ، وَقَالَ: "اِشْتَرِ بِأَحَدِهِمَا طَعَامًا فَانْبِذْهُ إِلَى أَهْلِكَ، وَاشْتَرِ بِالْآخَرِ قَدُومًا فَأْتِنِي بِهِ"، فَأَتَاهُ بِهِ فَشَدَّ فِيهِ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى

हाज़िर हो कर सुवाल किया, आप ने फ़रमाया कि क्या तेरे घर में कुछ नहीं ? अ़र्ज़ किया : हां एक टाट है जो हम कुछ ओढ़ लेते हैं कुछ बिछा लेते हैं और एक लकड़ी का पियाला है जिस में हम पानी पीते हैं । फ़रमाया : दोनों हमारे पास ले आओ । वोह येह दोनों चीज़ें ले कर हाज़िर हुए, उन्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने हाथ में लिया और फ़रमाया : इन्हें कौन ख़रीदता है ? एक शख़्स ने कहा : मैं एक दिरहम इवज़ लेता हूं, आप ने फ़रमाया : एक दिरहम से ज़ियादा कौन देता है ? एक साहिब बोले कि मैं दो दिरहम में लेता हूं, आप ने वोह दोनों चीज़ें उन्हें दे दीं और दो दिरहम ले कर उन अन्सारी को दिये और फ़रमाया : इन में से एक का ग़ल्ला ख़रीद कर अपने घर में डाल दो और दूसरे की कुल्हाड़ी ख़रीद कर मेरे पास लाओ, वोह हुज़ूर के पास कुल्हाड़ी लाए हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते अक़्दस से उस में दस्ता डाला,

फिर फ़रमाया : जाओ लकड़ियां काटो और बेचो और अब मैं तुम्हें पन्दरह दिन तक न देखूं। उन्हों ने ऐसा ही किया फिर जब हाज़िर हुए तो उन के पास दस दिरहम थे उन्हों ने कुछ दिरहमों का कपड़ा ख़रीदा और कुछ का ग़ल्ला, हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारे लिये येह इस से बेहतर है कि क़ियामत के दिन सुवाल तुम्हारे मुंह पर छाला बन कर आता सुवाल दुरुस्त नहीं मगर तीन शख़्स के लिये ऐसी मोहताजी वाले के लिये जो उसे ज़मीन पर लिटा दे या तावान वाले के लिये जो रुस्वा कर दे या ख़ून वाले के लिये जो उसे तक्लीफ़ पहुंचाए।[1]

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُوْدًا بِيَدِهٖ، ثُمَّ قَالَ: "اِذْهَبْ فَاحْتَطِبْ وَبِعْ، وَلَا أَرَيَنَّكَ خَمْسَةَ عَشَرَ يَوْمًا"، فَفَعَلَ فَجَاءَ وَقَدْ أَصَابَ عَشَرَةَ دَرَاهِمَ فَاشْتَرٰى بِبَعْضِهَا ثَوْبًا وَبِبَعْضِهَا طَعَامًا فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "هٰذَا خَيْرٌ لَكَ مِنْ أَنْ تَجِيْءَ الْمَسْأَلَةُ نُكْتَةً فِيْ وَجْهِكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، إِنَّ الْمَسْأَلَةَ لَا تَصْلُحُ إِلَّا لِثَلَاثٍ: لِذِيْ فَقْرٍ مُدْقِعٍ، أَوْ لِذِيْ غُرْمٍ مُفْظِعٍ، أَوْ لِذِيْ دَمٍ مُوْجِعٍ".[1]

इस ह़दीष की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : या'नी एक दिरहम के जव ख़रीद कर अपनी बीवी को दे ताकि वोह पीस कर पका कर खुद भी खाए तुझे और बच्चों को भी खिलाए, और दूसरे दिरहम की कुल्हाड़ी ख़रीद कर मुझे दे जा और रोटी खा कर फिर आना,

مدينه

[1] (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب ما تجوز فيه المسألة، الحديث: ١٦٤١، ج٢، ص٢٠٠-٢٠١)
(سنن ابن ماجه، كتاب التجارات، باب بيع المزايدة، الحديث: ٢١٩٨، ج٣، ص٣٨)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له المسألة ومن تحل له، الحديث: ١٨٥١، ج١، ص٣٥٢)

इस से दो मस्अले मा'लूम हुए, एक येह कि फ़क़ीर नादार पर भी बीवी बच्चों का ख़र्चा वाजिब है, क्यूं कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह न फ़रमाया कि बीवी से भी कमाई करा, दूसरे येह कि कमाना सिर्फ़ मर्द पर लाज़िम है न कि बीवी पर कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुल्हाड़ी सिर्फ़ मर्द को दी, दो कुल्हाड़ियां ले कर औ़रत व मर्द में तक़्सीम न फ़रमाईं, इस से वोह लोग इ़ब्रत पकड़ें जो लड़कियों से कमाई कराने के लिये बी.ए, एम.ए करा रहे हैं और जो ज़रूरी मसाइल लड़कियों को सीखना फ़र्ज़ हैं उन से बिल्कुल बे ख़बर हैं।

"तुम्हें पन्दरह दिन तक न देखूं" इस की वज़ाह़त करते हुए ह़कीमुल उम्मत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस से दो मस्अले मा'लूम हुए, एक येह कि जंगली लकड़ियां शिकारी जानवरों की त़रह़ आ़म मुबाह़ हैं जो क़ब्ज़ा कर ले वोह उस का मालिक है कि वोह उसे बेच भी सकता है, दूसरे येह कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बि इज़्ने इलाही मालिके अह़काम हैं, देखो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के लिये इन पन्दरह दिनों की जमाअ़त से नमाज़ मुआ़फ़ फ़रमा दी ह़त्ता कि दरमियान में जुमुआ़ भी आया वोह भी उस के लिये मुआ़फ़ रहा, इसी दौरान में उसे मस्जिदे नबवी में आना मम्नूअ़ हो गया क्यूं कि उस को फ़रमाया गया : "तुझ को मैं देखूं नहीं" अब अगर वोह मस्जिद में ह़ाज़िर होते, तो इस मुमानअ़त के मुर्तकिब होते, उन्हों ने उस ज़माने में दिन की नमाज़ जंगल में और रात की घर पढ़ीं। (चन्द सुत़ूर के बा'द फ़रमाते हैं) येह उन की ख़ुसूसियात में से है, अब किसी ताजिर या पेशावर को येह जाइज़ नहीं कि कारोबार में मश्ग़ूल रह कर जमाअ़त तर्क करे।

मज़ीद फ़रमाते हैं : ह़लाल पेशा ख़्वाह कितना ही मा'मूली हो भीक मांगने से अफ़्ज़ल है कि इस में दुन्या व आख़िरत में इ़ज़्ज़त

है, अफ़्सोस आज बहुत से लोग इस ता'लीम को भूल गए, मुसलमानों में सदहा ख़ानदान पेशावर भिकारी हैं ।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَأَنْ يَّأْخُذَ أَحَدُكُمْ أَحْبُلَهُ فَيَأْتِيَ بِحُزْمَةٍ مِّنْ حَطَبٍ عَلٰى ظَهْرِهٖ فَيَبِيْعَهَا، فَيَكُفَّ بِهَا وَجْهَهُ خَيْرٌ لَّهُ مِنْ أَنْ يَّسْأَلَ النَّاسَ أَعْطَوْهُ أَمْ مَنَعُوْهُ".

ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में से कोई अपनी रस्सी ले कर जाए और अपनी पीठ पर लकड़ियों का गठ्ठा लाद कर लाए फिर उसे बेचे और यूं अपने चेहरे को सुवाल की ज़िल्लत से बचाए येह उस के लिये इस से बेहतर है कि लोगों से सुवाल करे और लोग उसे दें या मन्अ़ कर दें ।[2]

अपने हाथ की कमाई का खाना ही बेहतर है । चुनान्चे :

عَنِ الْمِقْدَامِ بْنِ مَعْدِيْكَرِبَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا أَكَلَ أَحَدٌ

ह़ज़रते मिक़्दाम बिन मा'दी कर्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, वोह शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले

---

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 64, 65)

बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि किसी ने उस खाने से बेहतर कोई खाना नहीं खाया जो अपने हाथ से कमाया हो, **अल्लाह** के नबी दावूद عَلَيۡهِ السَّلَام अपने हाथ से कमा कर खाते थे।[1]

طَعَاماً خَيراً مِنْ أَنْ يَأْكُلَ مِنْ عَمَلِ يَدِهِ، وَإِنَّ نَبِيَّ اللّٰهِ دَاوُدَ عليه السلام كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلِ يَدِهِ"۔[1]

इस ह़दीषे पाक की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं : हाथों से मुराद पूरी ज़ात है, हाथ से कमाए या पाउं से या आंख या ज़बान से ग़रज़े कि अपनी क़ुव्वत से ह़लाल रोज़ी कमाए, रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ﴾[شوریٰ:٤٢/٣٠] **तर्जमा :** जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (कन्ज़ुल ईमान)) वहां भी أَيۡدِي या'नी हाथों से ज़ात ही मुराद है, मक़्सद येह है कि दूसरों की कमाई पर अपना गुज़ारा न करे ख़ुद मेह़नत करे।

"दावूद عَلَيۡهِ السَّلَام अपने हाथ से कमा कर खाते थे" इस के तह़्त मुफ़्ती साह़िब फ़रमाते हैं : बा वुजूदे कि आप बादशाह थे मगर आप ने कभी ख़ज़ाने से अपने पर ख़र्च न किया बल्कि रोज़ाना एक ज़िरह बनाते थे जिसे छे हज़ार दिरहम में फ़रोख़्त करते थे, दो हज़ार अपने बाल बच्चों पर ख़र्च फ़रमाते थे और चार हज़ार फ़ुक़राए बनी इस्राईल पर ख़ैरात करते थे। (मिरक़ात) उ़-लमा फ़रमाते हैं कि ब क़द्रे ज़रूरत कमाई फ़र्ज़ है और ज़ियादा मुबाह़ और फ़ख़्र व ज़ियादतिये माल के लिये कमाई मकरूह है।[2]

1 (صحيح البخاري، كتاب البيوع، باب كسب الرجل وعمله بيده، الحديث:٢٠٧٢، ج٢، ص١٠)
(مشكاة المصابيح، كتاب البيوع، باب الكسب وطلب الحلال، الحديث:٢٧٥٩، ج١، ص٥١٣)
2. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 4, स. 226, 227)

अगर मांगना वाक़ेई ना गुज़ीर हो तो नेक लोगों से मांगा जाए, चुनान्चे :

عَـنِ ابْـنِ الْفِـرَاسِـيِّ، أَنَّ الْـفِـرَاسِـيَّ قَـالَ: قُـلْـتُ لِـرَسُـوْلِ الـلّٰـهِ صَـلَّى اللّٰهُ تَـعَـالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : أَسْأَلُ يَـا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ صَـلَّى الـلّٰـهُ تَـعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "لَا، وَإِنْ كُنْتَ لَا بُدَّ فَسَلِ الصَّالِحِيْنَ". [1]

इब्ने फ़िरासी से मरवी है कि फ़िरासी फ़रमाते हैं : मैं ने ख़ातमुल मुरसलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़्बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं मांग सकता हूं ? तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नहीं और मांगना पड़ जाए तो नेकों से मांग।[1]

इस ह़दीष के तह़्त मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मत़्लब येह है कि बिला सख़्त मजबूरी किसी से कुछ मांगो मत, जब सख़्त मजबूर हो जाओ, जिस से शरअ़न मांगना दुरुस्त हो जाए तो अल्लाह के मुत्तक़ी व नेक बन्दों ही से मांगो क्यूं कि इन की रोज़ी ह़लाल होगी नीज़ उस में बरकत होगी जो तुम्हें भी नसीब हो जाएगी नीज़ वोह तुम्हें ला'नत मलामत न करेंगे झिड़केंगे नहीं नीज़ वोह तुम्हारे ह़क़ में दुआ़ भी करेंगे जिस से तुम्हारी फ़क़ीरी दूर हो जाएगी। येह हुक्म भीक मांगने के मुतअ़ल्लिक़ है मगर बरकत ह़ासिल करने के लिये इन के तबर्रुकात मांगना बहुत ही बेहतर है जिस पर बादशाहों को फ़ख़्र होता है। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बाल शरीफ़, तहबन्द,

مدينه

[1] (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب في الاستعفاف، الحديث:١٦٤٦، ج٢، ص٢٠٢)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب سؤال الصالحين، الحديث:٢٥٨٦، ج٣، الجزء٥، ص٩٩)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من تحل له المسألة ومن لا تحل له، الحديث:١٨٥٣، ج١، ص٣٥٢)

फ़ज़ालह, पानी हुज़ूरे अन्वर عَلَيْهِ السَّلَام से मांगा है बाल और तहबन्द शरीफ़ अपनी क़ब्रों में ले गए हैं, हुज़ूर ख़्वाजा अजमेरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के लंगर का दलिया सलातीने दक्कन मांग मांग कर हासिल करते हैं हम को इस पर फ़ख़्र है हम गदाए आस्तानए ग़ौषिया हैं رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ[1]

लालच फ़क्र है और दूसरों के माल से ना उम्मीद हो जाना तवंगरी है। चुनान्चे :

عَنْ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: تَعْلَمُنَّ أَيُّهَا النَّاسُ! أَنَّ الطَّمَعَ فَقْرٌ، وَأَنَّ الْإِيَاسَ غِنًى، وَأَنَّ الْمَرْءَ إِذَا يَئِسَ عَنْ شَيْءٍ اسْتَغْنٰى عَنْهُ. رواه رزين.[2]

हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : ऐ लोगो ! यक़ीन रखो कि लालच फ़क़ीरी है और ना उम्मीदी ग़िना है और इन्सान जब किसी चीज़ से मायूस हो जाता है तो उस से ला परवाह हो जाता है।[2]

इस हदीष की शर्ह में मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इसी लिये कहा जाता है कि मायूसी भी एक क़िस्म की राहत है, किसी ने हज़रते अबू मोहसिन शाज़िली से कीमिया पूछी, आप ने फ़रमाया : मख़्लूक़ से उम्मीद तोड़ो और तक़्दीर पर शाकिर रहो, सब से बड़ी कीमिया येह है, शे'र :

آس بگزار پادشاہی کن ❁ گردن بے طمع بلند بود[3]

किसी दाना ने फ़रमाया कि इन्सान का मुआमला भी अजीब है अगर उसे कहा जाए कि तू दुन्या में हमेशा रहेगा तो इसे जम्अ़ करने की इस क़दर हिर्स न होती जितनी अब है हालां कि नफ़्अ़ हासिल करने की मुद्दत कम है और ज़िन्दगी चन्द दिनों की है।[4]

---

1. (मिरआतुल मनाजीह शर्हे मिश्कातुल मसाबीह, जि. 3, स. 66)

2. (مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له المسئلة ومن تحل له، الحديث: ١٨٥٦، ج١، ص٣٥٣)

3. (मिरआतुल मनाजीह शर्हे मिश्कातुल मसाबीह, जि. 3, स. 67, 68)

4. (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، الآثار، ج٣، ص٣٢٢)

हिर्स व लालच का इलाज और हुसूले क़नाअ़त की दवा

इमाम ग़ज़ाली رَحمۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ हिर्स और लालच का इलाज बयान फ़रमाते हैं कि येह दवा तीन चीज़ों का मुरक्कब हे, सब्र, इल्म और अ़मल और पांच बातों में येह तीनों चीज़ें आती हैं।

﴾1﴿ पहली बात अ़मल है या'नी गुज़र बसर में मियाना रवी और ख़र्च में किफ़ायत। जो शख़्स क़नाअ़त में बुज़ुर्गी चाहता हो उसे चाहिये कि सिर्फ़ ब ज़रूरत ख़र्च करे और ह़त्तल इम्कान अपने ऊपर अ़य्याशी का दरवाज़ा बन्द करे एक मोटे खुरदरे कपड़े पर क़नाअ़त करे और जो खाना मुयस्सर हो उसी पर साबिर व शाकिर हो जिस क़दर मुमकिन हो सालन कम इस्ति'माल करे और अपने नफ़्स को इस बात की आ़दत डाले। अगर वोह साहि़बे औलाद हो तो उन को भी इसी मिक़्दार पर रखे क्यूं कि येह मिक़्दार अदना मेह़नत से भी ह़ासिल हो जाती है और त़लब भी अच्छी रहती है क़नाअ़त के सिल्सिले में अस्ल चीज़ ए'तिदाल है और इस से हमारी (या'नी इमाम ग़ज़ाली की) मुराद ख़र्च करने में नर्मी इख़्तियार करना और बुरे त़रीक़े से बचना है।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الْأَمْرِ كُلِّهِ

बेशक **अल्लाह** तआ़ला तमाम मुआ़मलात में नर्मी को पसन्द करता है।

(सही़ह़ बुख़ारी, किताबुल अदब)

और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَا عَالَ مَنِ اقْتَصَدَ.

जो शख़्स ए'तिदाल इख़्तियार करेगा तंगदस्त नहीं होगा।

और फ़रमाया :

ثَلَاثٌ مُنْجِيَاتٌ: خَشْيَةُ اللّٰهِ فِي السِّرِّ وَالْعَلَانِيَةِ وَالْقَصْدُ فِي الْغِنٰى وَالْفَقْرِ وَالْعَدْلُ فِي الرِّضَا وَالْغَضَبِ.

तीन बातें नजात देने वाली हैं पोशीदा और ज़ाहिरी हालत में **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़, मालदारी और फ़क्र में ए'तिदाल और हालते रिज़ा और ग़ज़ब में इन्साफ़ से काम लेना।

एक और रिवायत में है कि एक शख़्स ने हज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ को देखा कि आप ज़मीन से एक दाना चुन रहे थे और फ़रमा रहे थे कि ज़िन्दगी सहूलत के साथ गुज़ारना समझदारी की दलील है।

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اَلْاِقْتِصَادُ حُسْنُ السَّمْتِ وَالْهَدْيُ الصَّالِحُ جُزْءٌ مِّنْ بِضْعٍ وَّعِشْرِيْنَ جُزْءً مِّنَ النُّبُوَّةِ.

मियाना रवी अच्छा त़रीक़ा और अच्छी सीरत नुबुव्वत का चौबीसवां ह़िस्सा है।

(सुननो अबी दावूद)

(मत़्लब येह है कि येह ख़साइल अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ख़साइल हैं और इन को अपनाना इन की इक़्तिदा करना है वरना नुबुव्वत के अज्ज़ा नहीं होते। (मिस्बाहुस्सालिकीन))

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

اَلتَّدْبِيْرُ نِصْفُ الْمَعِيْشَةِ

तदबीर से काम लेना निस्फ़ मईशत है।

(मुस्नदुल फ़िरदौस)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنِ اقْتَصَدَ أَغْنَاهُ اللّٰهُ، وَمَنْ بَذَّرَ أَفْقَرَهُ اللّٰهُ، وَمَنْ ذَكَرَ اللّٰهَ عزوجل أَحَبَّهُ اللّٰهُ. (مجمع الزوائد، كتاب الزهد)

जो शख़्स (अख़राजात में) ए'तिदाल क़ाइम रखेगा, अल्लाह तआ़ला उसे मालदार बनाएगा, और जो आदमी ज़रूरत से ज़ाइद ख़र्च करता है अल्लाह तआ़ला उसे फ़क़ीर कर देता है और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करता है अल्लाह तआ़ला उसे पसन्द करता है।

और फ़रमाया :

إِذَا أَرَدْتَّ أَمْرًا فَعَلَيْكَ بِالتُّؤَدَةِ حَتّٰى يَجْعَلَ اللّٰهُ لَكَ فَرَجًا وَّمَخْرَجًا. (البر والصلة لابن المبارك)

जब तुम किसी काम का इरादा करो (और वोह तुम पर शाक़ हो) तो तुम पर ताख़ीर लाज़िम है ह़त्ता कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिये कुशादगी करे और रास्ता खोल दे।

ख़र्च करने में ताख़ीर करना (या'नी जल्द बाज़ी में सब कुछ ख़र्च न करना) निहायत अहम बात है।

﴾2﴿ जब फ़िलह़ाल माल काफ़ी हो तो मुस्तक़्बिल के लिये ज़ियादा परेशानी की ज़रूरत नहीं है और इस बात पर उम्मीद कम रखना तुम्हारे लिये मुआ़विन षाबित होगा ह़क़ीक़त येह है कि जिस क़दर रिज़्क़ तुम्हारे लिये मुक़द्दर (लिख दिया गया) है वोह तुम्हारे पास ज़रूर आएगा अगर्चे शदीद ह़िर्स न करो क्यूं कि ज़ियादा ह़िर्स रिज़्क़ के पहुंचने का सबब नहीं है बल्कि अल्लाह तआ़ला के वा'दे पर पुख़्ता यक़ीन होना चाहिये क्यूं कि इर्शादे ख़ुदा वन्दी है :

وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا. (هود:٦/١١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मए करम पर न हो।*

मज़ीद येह कि शैतान उसे मोह़ताजी से डराता भी है और बे ह़याई का हुक्म देता है और कहता है कि अगर तुम माल जम्अ़ करने और इसे ज़ख़ीरा बनाने की ह़िर्स नहीं करोगे तो कभी ऐसा होगा कि बीमार पड़ जाओगे और कभी आ़जिज़ हो जाओगे और मांग कर ज़लील होना पड़ेगा, तो वोह ज़िन्दगी भर त़लबे माल में उसे थकाता रहता है क्यूं कि उसे फ़क़्र का डर होता है, और शैत़ान उस पर हंसता है कि वोह तक्लीफ़ बरदाश्त कर रहा है और उस के साथ साथ वोह अल्लाह तआ़ला से ग़ाफ़िल भी है जिस की वजह सिर्फ़ येह है कि वोह दूसरे मौक़ए की मशक़्क़त और तक्लीफ़ का वहम रखता है ह़ालां कि हो सकता है उसे मुस्तक़्बिल में येह परेशानी उठाना न पड़े इसी क़िस्म के मुआ़मले में कहा गया है :

وَمَنْ يُنْفِقُ السَّاعَاتِ فِي جَمْعِ مَالِهِ
مَخَافَةَ فَقْرٍ فَالَّذِي فَعَلَ الْفَقْرُ

जो शख़्स फ़क़्र के ख़ौफ़ से अपने अवक़ात माल जम्अ़ करने में सर्फ़ करता है वोह ख़ुद ही फ़क़्र का सबब है।

ह़ज़रते ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दो साह़िब ज़ादे, आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आप ने उन दोनों से फ़रमाया :

لَا تَيْـأَسَـا مِـنَ الرِّزْقِ مَـا تَهَـزْهَـزَتْ رُؤُوْسُكُمَـا فَـإِنَّ الْإِنْسَـانَ تَلِدُهُ أُمُّهُ أَحْمَرَ لَيْسَ عَلَيْهِ قِشْرٌ ثُمَّ يَرْزُقُهُ اللّٰهُ تَعَالٰى.

जब तक तुम्हारे सरों में ह़रकत है तुम रिज़्क़ से मायूस न हो इन्सान को उस की मां जनती है तो वोह सुर्ख़ रंग का होता है उस पर चमड़ा भी नहीं होता फिर अल्लाह तआ़ला ही उसे रिज़्क़ देता है।

और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पास से गुज़र फ़रमाया जब कि वोह ग़मगीन थे तो आप ने फ़रमाया :

لَا تُكْثِرْ هَمُّكَ مَا قُدِّرَ يَكُنْ وَمَا تُرْزَقْ تَأْتِكَ. (الترغيب والترهيب)

ज़ियादा ग़मगीन न हो जो मुक़द्दर में है वोह होगा और जो रिज़्क़ लिखा गया है वोह आएगा।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

أَلَا أَيُّهَـا النَّـاسُ أَجْمِلُوْا فِي الطَّلَبِ، فَإِنَّهُ لَيْسَ لِعَبْدٍ إِلَّا مَا كُتِبَ لَهُ وَلَنْ يَذْهَبَ عَبْدٌ مِنَ الدُّنْيَا حَتّٰى يَأْتِيَهُ مَا كُتِبَ لَهُ مِنَ الدُّنْيَا وَهِيَ رَاغِمَةٌ.

ऐ लोगो ! सुनो ! अच्छी त़लब किया करो क्यूं कि बन्दे के लिये जो कुछ लिखा गया है वोही उसे मिलेगा और कोई शख़्स दुन्या से नहीं जाता जब तक उस के लिये मुक़द्दर की गई दुन्या उस के पास ज़लील हो कर न आ जाए।

बन्दा ह़िर्स से उस वक़्त तक बरी नहीं हो सकता जब तक वोह बन्दों के रिज़्क़ से मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला की तदबीर पर अच्छा ए'तिक़ाद न रखे और येह अ़क़ीदा होना चाहिये कि अच्छी त़लब हो तो ज़रूर मिलेगा। बल्कि उसे इस बात का यक़ीन होना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला की जानिब से बन्दे को जो ज़ियादा रिज़्क़ मिलता है वोह उन मक़ामात से आता है जिन के बारे में उस का गुमान भी नहीं होता।

इर्शादे खुदा वन्दी है :

وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًاۙ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ (الطلاق:٦٥/٢-٣)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां से उस का गुमान न हो ।

तो जिस दरवाज़े से उसे रिज़्क़ का इन्तिज़ार था अगर वोह बन्द हो जाए तो इस से उस के दिल में इज़्तिराब और परेशानी नहीं आनी चाहिये ।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला अपने मोमिन बन्दे को वहां से रिज़्क़ देता है जिस के बारे में उस का गुमान नहीं होता । (कन्जुल उ़म्माल)

ह़ज़रते सुफ़्यान رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अल्लाह से डरो तुम किसी मुत्तक़ी को मोह़ताज नहीं देखोगे या'नी अल्लाह तआ़ला किसी मुत्तक़ी को यूं नहीं छोड़ता कि उस की ज़रूरतें पूरी न हों बल्कि अल्लाह तआ़ला मुसलमानों के दिलों में डालता है कि वोह उस तक उस का रिज़्क़ पहुंचाएं ।

ह़ज़रते मुफ़ज़्ज़ल ज़बी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं मैं ने एक देहाती से कहा तुम कहां से खाते पीते हो ? उस ने कहा ह़ाजियों की नज़्र से, मैं ने कहा जब वोह चले जाते हैं तो फिर कहां से खाते हो ? इस पर वोह रो पड़ा और कहने लगा अगर हम यूं ज़िन्दगी गुज़ारते कि हमें मा'लूम होता तो हम ज़िन्दा न रहते ।

ह़ज़रते अबू ह़ाज़िम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने दुन्या को दो चीज़ों की सूरत में पाया एक वोह जो मेरे लिये है तो मैं उस के वक़्त से पहले उस के लिये जल्दी नहीं करता अगर्चे मैं उसे आस्मानों और ज़मीन की

क़ुव्वत से त़लब करूं और दूसरी चीज़ वोह है जो मेरे ग़ैर के लिये है वोह मुझे पहले भी नहीं मिली और आयन्दा भी नहीं मिलेगी दूसरों की चीज़ को मुझ से उसी ज़ात ने रोका है जिस ने मेरी चीज़ को उन से रोका है तो मैं इन दो बातों में अपनी ज़िन्दगी क्यूं तबाह करूं।

तो मा'रिफ़त की जहत से ह़िर्स और लालच का इलाज येही है और इसे ह़ासिल करना ज़रूरी है ताकि शैत़ान का डराना और मोह़ताजी का ख़ौफ़ दिलाना ख़त्म हो जाए।

﴾3﴿ इस बात की पहचान ह़ासिल होनी चाहिये कि क़नाअ़त में दूसरों से बे नियाज़ी की इ़ज़्ज़त ह़ासिल होती है और लालच और ह़िर्स की सूरत में ज़िल्लत का सामना करना पड़ता है। जब आदमी के दिल में येह बात बैठ जाए तो वोह क़नाअ़त की त़रफ़ माइल होता है और उस का जज़्बा पैदा होता है क्यूं कि ह़िर्स की सूरत में मशक़्क़त बरदाश्त करना पड़ती है और लालच, ज़िल्लत से ख़ाली नहीं होती जब कि क़नाअ़त में ख़्वाहिश और ज़वाइद से सब्र की तक्लीफ़ बरदाश्त करना होती है और येह वोह तक्लीफ़ है जिस पर सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला ही मुत्त़लेअ़ होता है और इस में आख़िरत का षवाब भी है। जब कि लालच और ह़िर्स ऐसी चीज़ें हैं कि जिन की त़रफ़ लोगों की नज़रें माईल होती हैं या'नी ह़रीस और लालची शख़्स की ह़िर्स व त़म्अ़ लोगों से पोशीदा नहीं रहती और इस का वबाल और गुनाह अलग है। इ़ज़्ज़ते नफ़्स चली जाती है और ह़क़ की इत्तिबाअ़ की त़ाक़त भी नहीं रहती क्यूं कि जो शख़्स ज़ियादा ह़िर्स और लालच करता है वोह लोगों का ज़ियादा मोह़ताज होता है लिहाज़ा वोह लोगों को ह़क़ की त़रफ़ बुला नहीं सकता और वोह मुनाफ़क़त से काम लेता है ऐसे आदमी का दीन हलाक हो जाता है और जो आदमी अपने नफ़्स की इ़ज़्ज़त को पेट की ख़्वाहिश पर तरजीह़ नहीं देता उस की अ़क़्ल बहुत कमज़ोर है और ईमान नाक़िस है।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

عِزُّ الْمُؤْمِنِ اسْتِغْنَاؤُهٗ عَنِ النَّاسِ. मोमिन की इ़ज़्ज़त लोगों से बे नियाज़ रहना है।

क़नाअ़त में आज़ादी भी है और इ़ज़्ज़त भी, इसी लिये कहा गया है जिस से कुछ लेना चाहता है उस से बे नियाज़ रह उस की मिष्ल हो जाएगा जिस से कोई ह़ाजत त़लब करेगा उस का असीर हो जाएगा और जिस पर चाहे एह़सान कर उस का अमीर हो जाएगा।

﴾4﴿ यहूदो नसारा की ऐ़श परस्ती, ज़लीलो रुस्वा क़िस्म के लोगों, बे वुक़ूफ़ कुर्दों (कुर्द एक क़बीला है) उजड्ड देहातियों और ऐसे लोगों की ह़ालत को देख जिन का न कोई दीन है और न अ़क़्ल, फिर अम्बियाए किराम और औलियाए किराम के अह़वाल मुलाह़ज़ा कर ख़ुलफ़ाए राशिदीन और बाक़ी सह़ाबए किराम के ह़ालाते ज़िन्दगी देख ताबिई़न को देख और फिर इन की बातें ग़ौर से सुन कर इन के ह़ालात का मुत़ालआ़ कर और इस के बा'द अपनी अ़क़्ल को इख़्तियार दे कि वोह ज़लीलो रुस्वा क़िस्म के लोगों की पैरवी को पसन्द करती है या उन लोगों की इक़्तिदा चाहती है जो अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ हैं ताकि मई़शत की तंगी और थोड़े रिज़्क़ पर क़नाअ़त आसान हो जाए अगर पेट को ही ज़ियादा भरना है तो गधा ज़ियादा खाता है अगर जिमाअ़ की फ़िरावानी चाहता है तो इस से ख़िन्ज़ीर का रुत्बा ज़ियादा होगा अगर लिबास और सुवारियों की ज़ीनत मत़्लूब है तो कई यहूदियों को ज़ियादा ज़ीनत ह़ासिल है और अगर थोड़े पर क़नाअ़त और राज़ी रहे तो इस सूरत में सिर्फ़ अम्बियाए किराम और औलियाए किराम के साथ शरीक होगा।

﴾5﴿ माल जम्अ़ करने का जो ख़त़रा है उसे समझना चाहिये जैसा कि हम ने इस की आफ़ात के ज़िक्र में बयान किया है। इस में चोरी लूट खसूट और ज़ाएअ़ होने का ख़त़रा रहता है और जब हाथ ख़ाली होता है तो अम्न और

फ़रागत होती है हम ने माल की आफ़ात के सिलसिले में जो कुछ ज़िक्र किया है उन सब पर गौर करना चाहिये इस के इलावा पांच सो साल तक जन्नत से दूर रहेगा और जब वोह ब क़द्रे किफ़ायत पर क़नाअ़त नहीं करता तो अग़निया के गुरौह में शामिल होता है और फ़ुक़रा की फ़ेहरिस्त से निकल जाता है और येह ग़ौरो फ़िक्र इस त़रह़ पूरी होगी कि दुन्या के मुआमले में हमेशा अपने से नीचे के लोगों की त़रफ़ देखे ऊपर वालों की त़रफ़ न देखे क्यूं कि शैत़ान हमेशा उस की नज़र को ऊपर वालों की त़रफ़ फैरता है और कहता है कि त़लबे माल में कोताही क्यूं करते हो ह़ालां कि मालदार लोगों को अच्छे अच्छे खाने और उ़म्दा लिबास ह़ासिल हैं और दीन के मुआमले में शैत़ान उस की निगाह को अपने से नीचे वालों की त़रफ़ फैरता है और कहता है कि अपने नफ़्स को क्यूं मशक़्क़त और तंगी में डालते हो और **अल्लाह** तआ़ला से डरते रहते हो ह़ालां कि फ़ुलां शख़्स तुझ से ज़ियादा इल्म रखता है और वोह **अल्लाह** तआ़ला से नहीं डरता तमाम लोग ऐ़शो इ़शरत में मश्ग़ूल हैं तुम इन से कहां मुम्ताज़ होना चाहते हो।

ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मुझे मेरे ख़लील (नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने वसिय्यत फ़रमाई है कि मैं (दुन्या के मुआमले में) अपने से नीचे दरजे वाले को देखूं ऊपर वाले को नहीं। (مجمع الزوائد، کتاب الوصایا)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

إِذَا نَظَرَ أَحَدُكُمْ إِلَى مَنْ فَضَّلَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ فِي الْمَالِ وَالْخَلْقِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى مَنْ هُوَ أَسْفَلَ مِنْهُ مِمَّنْ فُضِّلَ عَلَيْهِ.

(صحيح البخاري، كتاب الرقاق)

जब तुम में से कोई शख़्स उस आदमी को देखे जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने माल और ख़ल्क़त में इस पर फ़ज़ीलत दी है तो उसे चाहिये कि उस की त़रफ़ देखे जो इस से कमतर है और इसे उस पर फ़ज़ीलत दी गई है ।

इन उमूर के साथ क़नाअ़त की सिफ़त ह़ासिल करने पर क़ादिर हो जाएगा तो अस्ल बात येह है कि सब्र करे और उम्मीद कम रखे और येह बात जान ले कि दुन्या में उस के सब्र की इन्तिहा चन्द रोज़ा है लेकिन उस का नफ़्अ़ एक त़वील ज़माने तक होगा पस वोह उस मरीज़ की त़रह़ है जो दवाई की कड़वाहट पर सब्र करता है क्यूं कि उसे शिफ़ा के इन्तिज़ार की शदीद लालच होती है ।[1]

सुवाल करना कैसा है ?

सुवाल करने के बारे में बहुत ज़ियादा मुमानअ़त आई है और इस सिलसिले में इजाज़त भी दी गई है । शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

لِلسَّائِلِ حَقٌّ وَلَوْ جَاءَ عَلَى فَرَسٍ

(سنن أبي داود، كتاب الزكاة)

मांगने वाले का ह़क़ है अगर्चे घोड़े पर आए ।

एक दूसरी ह़दीष में है :

[1] (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان علاج الحرص والطمع والدواء الذي يكتسب به صفة القناعة، ج٣، ص٣٢٢-٣٢٥)

رُدُّوا السَّائِلَ وَلَوْ بِظِلْفٍ مُحَرَّقٍ साइल का सुवाल पूरा करो अगर्चे जला हुवा खुर दे कर ।

अस्ल के ए'तिबार से सुवाल ह़राम है और ज़रूरत के तह़्त या किसी अहम ह़ाजत की सूरत में जो ज़रूरत के क़रीब हो, मांगना जाइज़ है अगर इस से बच सकता हो तो सुवाल ह़राम होगा हम ने येह कहा कि अस्ल में सुवाल ह़राम है क्यूं कि मांगने की सूरत में तीन ह़राम काम करना पड़ते हैं :

पहला काम : अल्लाह तआ़ला पर शिक्वा का इज़्हार, क्यूं कि सुवाल फ़क़्र का इज़्हार है और अल्लाह तआ़ला की ने'मत की कमी का ज़िक्र ऐन शिक्वा है और जिस त़रह़ किसी मम्लूक ग़ुलाम का मांगना अपने मालिक पर ता़'न व तश्नीअ़ है इसी त़रह़ बन्दों का सुवाल करना अल्लाह तआ़ला की ज़ात पर ता़'न है और येह काम ह़राम है और ज़रूरत के बिग़ैर ऐसा करना जाइज़ नहीं जैसा कि मुर्दार ज़रूरत के वक़्त ही ह़लाल होता है ।

दूसरा काम : मांगने में ग़ैरे ख़ुदा के सामने ज़िल्लत इख़्तियार करना है और मोमिन के लिये जाइज़ नहीं कि अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी के सामने ज़लील व रुस्वा होता फिरे बल्कि उसे चाहिये कि अपने आक़ा के सामने ही आ़जिज़ी इख़्तियार करे क्यूं कि इस में उस की इ़ज़्ज़त है बाक़ी तमाम लोग इस की त़रह़ बन्दे हैं लिहाज़ा ज़रूरत के बिग़ैर उन के सामने ज़िल्लत व रुस्वाई इख़्तियार न करे । और सुवाल करने में मसऊल अ़न्ह (जिस से सुवाल किया गया) के मुक़ाबिल साइल की ज़िल्लत है ।

तीसरा काम : आ़म तौ़र पर मांगने वाले को मसऊल अ़न्ह की त़रफ़ से अज़िय्यत पहुंचती है क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात वोह दिल की

खुशी से ख़र्च करना नहीं चाहता पस अगर वोह साइल से ह़या करते हुए या रियाकारी के त़ौर पर ख़र्च करे तो येह लेने वाले पर ह़राम है और अगर वोह मन्अ़ करे तो बा'ज़ अवक़ात वोह ह़या करते हुए मन्अ़ करते वक़्त अपने नफ़्स में अज़िय्यत मह़सूस करता है क्यूं कि अपने आप को बख़ील की शक्ल में देखता है कि ख़र्च करने में माल का नुक़्सान है और मन्अ़ करने में इ़ज़्ज़त का नुक़्सान है और येह दोनों काम अज़िय्यत नाक हैं और साइल ही ईज़ा का सबब बना और ईज़ा रसानी ज़रूरत के बिग़ैर ह़राम है।

अब जब तुम इन तीनों बातों को समझ गए तो तुम्हें नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इर्शादे गिरामी की समझ भी आ गई होगी कि आप ने फ़रमाया :

مَسْـئَلَةُ النَّاسِ مِنَ الْفَوَاحِشِ مَا اُحِلَّ مِنَ الْفَوَاحِشِ غَيْرُهَا.

लोगों से मांगना फ़ाह़िश कामों से है और फ़वाह़िश में से इस के सिवा कुछ मुबाह़ नहीं किया गया।

तो देखिये नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मांगने को फ़ाह़िश (गुनाहे कबीरा) क़रार दिया है और येह बात मख़्फ़ी नहीं है कि फ़ाह़िश काम ज़रूरत के वक़्त ही जाइज़ होता है जैसे कि आदमी का लुक़्मा फंस जाए और उस के पास शराब के सिवा कुछ न हो (तो ब दिले न ख़्वास्ता) उसे इस्ति'माल कर सकता है।

और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ سَاَلَ عَنْ غِنًى فَاِنَّمَا يَسْتَكْثِرُ مِنْ جَمْرِ جَهَنَّمَ.

जो शख़्स मालदार होने के बा वुजूद मांगता है वोह जहन्नम के अंगारे ज़ियादा करता है।

और आप صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

مَـنْ سَأَلَ وَلَهُ مَا يُغْنِيهِ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَـامَةِ وَوَجْهُـهُ عَظْمٌ يَتَقَعْقَعُ وَلَيْسَ عَلَيْهِ لَحْمٌ.
(المستدرك للحاكم، كتاب الزكوٰة)

जो शख़्स सुवाल करे और उस के पास इतना है जो उसे बे परवाह करे वोह क़ियामत के दिन यूं आएगा कि उस का चेहरा ह़रकत करती हुई एक हड्डी होगी जिस पर गोश्त नहीं होगा।

दूसरी रिवायत में इस त़रह़ है :

وَكَـانَتْ مَسْأَلَتُهُ خُدُوشًا وَكُدُوحًا فِي وَجْهِهِ. (سنن أبي داود، كتاب الزكوٰة)

उस का सुवाल उस के चेहरे पर ख़राशें होगा।

तो येह अल्फ़ाज़ मांगने की ह़ुरमत और सख़्ती में वाज़ेह़ हैं।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक जमाअ़त को इस्लाम पर बैअ़त फ़रमाया तो उन पर सुनने और मानने की शर्त़ रखी फिर एक बात आहिस्ता से फ़रमाई कि

وَلَا تَسْأَلُوا النَّاسَ شَيْئًا.
(المسند للإمام أحمد، مرويات عوف بن مالك)

लोगों से किसी चीज़ का सुवाल न करोगे।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आ़म तौ़र पर सुवाल से बचने का ह़ुक्म देते और फ़रमाते :

مَـنْ سَـأَلَنَا أَعْطَيْنَاهُ وَمَنِ اسْتَغْنٰى أَغْـنَـاهُ الـلّٰـهُ وَمَـنْ لَّمْ يَسْأَلْنَا فَهُوَ أَحَبُّ إِلَيْنَا.
(المسند، مرويات أبي سعيد الخدري)

जो शख़्स हम से मांगे हम उसे देंगे और जो ग़नी बनना चाहे **अल्लाह** तआ़ला उसे ग़नी कर देगा और जो हम से सुवाल न करे वोह ही हमें ज़ियादा मह़बूब है।

और आप ने इर्शाद फ़रमाया :

لوگوں سے بے نیاز رہو اور جس قدر اِسْتَغْنُوْا عَنِ النَّاسِ وَمَا قَلَّ مِنَ السُّؤَالِ فَهُوَ خَيْرٌ. सुवाल कम हो वोही बेहतर है।

(المعجم الكبير للطبراني: ١٢٢٥٧)

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप से भी ? आप ने फ़रमाया : हां मुझ से भी।[1]

नौ मौलूद की त़रह़ गुनाहों से पाक

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर छे दिन शव्वाल में रखे तो गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है।" (مجمع الزوائد، ج٣، ص٤٢٥، حدیث٥١٠٢)

गोया उ़म्र भर का रोज़ा रखा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : "जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर इन के बा'द छे 6 शव्वाल में रखे। तो ऐसा है जैसे दहर का (या'नी उ़म्र भर के लिये) रोज़ा रखा।"

(صحيح مسلم، ص٥٩٢، حديث١١٦٤)

[1] (إحياء علوم الدّين، كتاب الفقر والزهد، بيان تحريم السؤال بغير ضرورة وآداب الفقير المضطر إليه، ج٤، ص٢٨٠-٢٨٢)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर मांगना

अल्लाह के नाम पर सुवाल करना निहायत क़बीह़ है ऐसा करने वाले को ह़दीष में मलऊ़न फ़रमाया गया, यूं ही जिस से अल्लाह के नाम का सुवाल किया जाए और वोह देने की इस्तित़ाअ़त रखते हुए भी न दे तो उसे भी मलऊ़न फ़रमाया गया, चुनान्चे :

عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: "مَلْعُوْنٌ مَنْ سَأَلَ بِوَجْهِ اللّٰهِ، وَمَلْعُوْنٌ مَنْ سُئِلَ بِوَجْهِ اللّٰهِ، ثُمَّ مَنَعَ سَائِلَهُ مَا لَمْ يَسْأَلْ هُجْرًا".[1]

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना, मलऊ़न है वोह जो अल्लाह के नाम पर मांगे और मलऊ़न है वोह जिस से अल्लाह के नाम का सुवाल हुवा फिर मांगने वाले को देने से मन्अ़ कर दे जब तक कि वोह कोई क़बीह़ सुवाल न करे।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنِ اسْتَعَاذَ بِاللّٰهِ فَأَعِيْذُوْهُ، وَمَنْ سَأَلَ بِاللّٰهِ فَأَعْطُوْهُ وَمَنْ

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जो तुम से अल्लाह की पनाह ले उसे पनाह दे दो और जो अल्लाह के नाम पर मांगे उसे कुछ दो और जो तुम्हे दा'वत दे उस की दा'वत क़बूल

مدینہ

[1] (مسند الروياني، مسند أبي موسى الأشعري،الحديث: ٤٩٥، الجزء١، ص١٩٦)

دَعَاكُمْ فَأَجِيْبُوْهُ، وَمَنْ صَنَعَ إِلَيْكُمْ مَعْرُوْفاً فَكَافِئُوْهُ، فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوْا مَا تُكَافِئُوْهُ فَادْعُوْا لَهٗ حَتّٰى تَرَوْا أَنَّكُمْ قَدْ كَافَأْتُمُوْهُ"۔[1]

करो और जो कोई तुम्हारे साथ भलाई करे उस का बदला करो अगर बदले की चीज़ न पाओ तो उस को दुआएं दो यहां तक कि यक़ीन हो जाए कि तुम ने उस का बदला कर दिया ।[1]

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه "उसे पनाह दो" के तह़त फ़रमाते हैं : "या'नी जो तुम्हारी सख़्ती या ग़ैर की सख़्ती से तुम्हारे पास **अल्लाह** की पनाह मांगे तो उसे दे दो, कि अगर तुम किसी को मारना चाहते हो तो मुआ़फ़ी दे दो या कोई दूसरा उस पर सख़्ती करना चाहता है और तुम दफ़्अ़ कर सकते हो तो कर दो, येह हुक्म अपने ज़ाती मुआ़मलात में है, क़ौम या दीन के मुजरिम को हरगिज़ मुआ़फ़ नहीं कर सकते, अगर्चे वोह कैसी ही पनाह ले ताकि अम्न व दीन में ख़लल न पड़े, लिहाज़ा येह ह़दीष उस के ख़िलाफ़ नहीं, कि आप ने फ़ाति़मा फ़ख़्रूमिया को जिस ने चोरी कर ली थी मुआ़फ़ी न दी ।"

और "दा'वत क़बूल करो" के तह़त फ़रमाते हैं : "ब शर्ते़ कि वोह दा'वत मम्नूआ़ते शरइय्या से ख़ाली हो लिहाज़ा जिस वलीमा में नाच गाना ख़ास खाने की जगह हो वहां न जाए, ऐसे ही मय्यित के खाने पर रस्मी दा'वत क़बूल न करे, लिहाज़ा येह फ़रमान फ़तवा फ़ुक़हा के ख़िलाफ़ नहीं ।"

مدينه

[1] (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب عطية من سأل بوجه اللّٰه، الحديث: ١٦٧٢، ج٢، ص٢١٢)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب من سأل بوجه اللّٰه عزوجل، الحديث: ٢٥٦٦، ج٣، ص٨٧)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب أفضل الصدقة، الحديث: ١٩٤٣، ج١، ص٣٦٨)

और "भलाई का बदला करो" इस तरह कि वोह जिस क़िस्म का सुलूक तुम से करे, क़ौली, अ़मली, माली तुम भी उस से वैसा सुलूक करो, रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿هَلْ جَزَآءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ﴾ [الرحمن:٦٠/٥٥] तर्जमा : नेकी का बदला क्या है मगर नेकी (कन्ज़ुल ईमान)) और फ़रमाता है : ﴿وَأَحْسِن كَمَآ أَحْسَنَ اللّٰهُ إِلَيْكَ﴾ [القصص:٢٨/٧٧] तर्जमा : और एह़सान कर जैसा अल्लाह ने तुझ पर एह़सान किया (कन्ज़ुल ईमान)) येह हुक्म हम जैसे कम हिम्मत लोगों के लिये है हिम्मत वाले तो अपने दुश्मनों की बुराई का बदला मुआ़फ़ी और भलाई से करते हैं, शे'र

लिया ज़ुल्म का अ़फ़्व से इन्तिक़ाम ✽ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

और "दुआएं दो" के तह़त लिखते हैं : "इस तरह कहो جَزَاكَ اللّٰهُ या उस का खाना खा कर कहो اَللّٰهُمَّ أَطْعِمْ مَنْ أَطْعَمَنَا وَاسْقِ مَنْ سَقَانَا वग़ैरा ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को जब कोई साइल दुआएं देता, तो आप पहले उसे दुआएं देतीं, फिर भीक अ़ता फ़रमातीं किसी ने पूछा कि आप अ़ता से पहले दुआ क्यूं देती हैं फ़रमाया ताकि येह मेरा स-दक़ा इ़वज़ से बचा रहे "[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

ह़ज़रते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, मलऊन है वोह जो अल्लाह के नाम पर मांगे और मलऊन है वोह जिस से अल्लाह के नाम पर मांगा गया और मंगते को मन्अ़ कर दे।[2]

عَنْ رَافِعٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَلْعُوْنٌ مَنْ سَأَلَ بِوَجْهِ اللّٰهِ، وَمَلْعُوْنٌ مَنْ سُئِلَ بِوَجْهِ اللّٰهِ فَمَنَعَ سَائِلَهُ".[2]

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 124)

2 (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٩٤٣، ج٢٢، ص٣٧٧)

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِشَرِّ الْبَرِيَّةِ"؟ قَالُوْا: بَلٰى يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ: قَالَ: "اَلَّذِيْ يُسْأَلُ بِاللّٰهِ وَلَا يُعْطِيْ".[1]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें लोगों में से बद तरीन शख़्स के बारे में न बताऊं ? सह़ाबा ने अ़र्ज़ की, ज़रूर या रसूलल्लाह , फ़रमाया, वोह जिस से **अल्लाह** के नाम पर मांगा जाए और न दे ।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर सुवाल करने के बारे में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام का वाक़िआ़ बयान फ़रमाया, चुनान्चे :

عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "أَلَا أُحَدِّثُكُمْ عَنِ الْخَضِرِ"؟ قَالُوْا: بَلٰى يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ. قَالَ: "بَيْنَمَا هُوَ ذَاتَ يَوْمٍ يَمْشِيْ فِيْ سُوْقِ بَنِيْ إِسْرَائِيْلَ أَبْصَرَهُ رَجُلٌ مُكَاتَبٌ، فَقَالَ: تَصَدَّقْ عَلَيَّ، بَارَكَ اللّٰهُ فِيْكَ فَقَالَ الْخَضِرُ: آمَنْتُ بِاللّٰهِ

ह़ज़रते अबू उमामा से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام के बारे में न बताऊं ? सह़ाबा ने अ़र्ज़ की, ज़रूर या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم , फ़रमाया : एक रोज़ वोह बनी इस्राईल के बाज़ार से गुज़र रहे थे कि एक मुकातब शख़्स ने आप को देखा **(मुकातब उस ग़ुलाम को कहते हैं जिस ने अपने आक़ा से माल की अदाएगी के बदले आज़ादी का मुआ़हदा किया हुवा हो ।** (مختصر القدوری، کتاب المکاتب، ص ٣٧٦) और अ़र्ज़ किया कि मुझे कुछ स-दक़ा दीजिये **अल्लाह** तआ़ला आप को बरकत दे, तो

مدینہ

[1] (المسند للإمام أحمد،مسند أبي هريرة،الحديث: ٩١٣١،ج٣، ص ٤٤١)

हज़रते खिज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया, मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया, हर काम में **अल्लाह** की मशिय्यत है तुम्हें देने के लिये इस वक़्त मेरे पास कुछ नहीं, तो उस मिस्कीन ने कहा मैं आप से **अल्लाह** के नाम का सुवाल करता हूं आप ज़रूर मुझे स-दक़ा दें मैं आप के चेहरे पर सख़ावत व फ़य्याज़ी के आषार देखता हूं और आप से बरकत की उम्मीद रखता हूं तो खिज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया, मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया मेरे पास तुम्हें देने के लिये कुछ नहीं मगर येह कि तुम मुझे ही ले लो और मुझे बेच डालो ! तो उस मिस्कीन ने कहा, क्या येह दुरुस्त रहेगा ? फ़रमाया, हां तुम ने मुझ से अम्रे अ़ज़ीम के साथ सुवाल किया है बेशक मैं तुम्हें अपने रब के नाम पर मांगने पर मायूस नहीं करूंगा मुझे बेच दो । सरकार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, तो वोह मुकातब खिज़्र عَلَیْہِ السَّلَام को लिये बनी इस्राईल के बाज़ार में गया और आप को चार सो दिरहम में बेच दिया फिर आप عَلَیْہِ السَّلَام ख़रीदार के हां त़वील मुद्दत यूं रहे कि उस ने आप से कोई काम न

مَا شَاءَ اللّٰهُ مِنْ أَمْرٍ يَكُونُ
مَا عِنْدِي شَيْءٌ أُعْطِيكَهُ،
فَقَالَ الْمِسْكِينُ: أَسْأَلُكَ
بِوَجْهِ اللّٰهِ لَمَا تَصَدَّقْتَ
عَلَيَّ، فَإِنِّي نَظَرْتُ
السَّمَاحَةَ فِي وَجْهِكَ
وَرَجَوْتُ الْبَرَكَةَ عِنْدَكَ،
فَقَالَ الْخَضِرُ: آمَنْتُ بِاللّٰهِ
مَا عِنْدِي شَيْءٌ أُعْطِيكَهُ إِلَّا
أَنْ تَأْخُذَنِي فَتَبِيعَنِي، فَقَالَ
الْمِسْكِينُ: وَهَلْ يَسْتَقِيمُ
هٰذَا؟ قَالَ: نَعَمْ، أَقُولُ لَقَدْ
سَأَلْتَنِي بِأَمْرٍ عَظِيمٍ أَمَا إِنِّي
لَا أُخَيِّبُكَ بِوَجْهِ رَبِّي
بِعْنِي. قَالَ: فَقَدَّمَهُ إِلَى
السُّوقِ فَبَاعَهُ بِأَرْبَعِ مِائَةِ
دِرْهَمٍ فَمَكَثَ عِنْدَ
الْمُشْتَرِي زَمَانًا لَا
يَسْتَعْمِلُهُ فِي شَيْءٍ، فَقَالَ:

लिया, तो एक रोज़ आप ने फ़रमाया, तुम ने मुझे भलाई की ग़रज़ से ख़रीदा है तो मुझे किसी काम का तो कहो, उस ने अ़र्ज़ की, मुझे येह पसन्द नहीं कि आप को मशक़्क़त में डालूं क्यूं कि आप बूढ़े और ज़ईफ़ हैं, तो ख़िज़्र عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया, मुझ पर कुछ गिरां नहीं तो उस ने अ़र्ज़ की, उठिये और इस पथ्थर को यहां से दूसरी जगह मुन्तक़िल कर दें, ह़ालां कि छे से कम अफ़राद दिन भर में भी उस पथ्थर को दूसरी जगह मुन्तक़िल नहीं कर सकते थे। फिर वोह शख़्स किसी काम से गया जब लौटा तो आप उस पथ्थर को दूसरी जगह मुन्तक़िल कर चुके थे, कहने लगा, बहुत ख़ूब आप ने इस त़ाक़त का मुज़ाहरा किया जिस का मुझे गुमान भी न था, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, फिर उस शख़्स को सफ़र पर जाना पड़ गया तो आप عَلَیْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ की, मैं आप को अमानत दार समझता हूं आप मेरे पीछे मेरे घर और माल के निगहबान रहें तो आप عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया, आप मुझे कोई काम कह जाइये, तो उस ने अ़र्ज़ की मुझे येह पसन्द नहीं कि आप को मशक़्क़त में डालूं तो आप عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया , मुझ पर कोई मशक़्क़त न होगी आप

إِنَّمَا اشْتَرَيْتَنِي الْتِمَاسَ خَيْرٍ
عِنْدِي فَأَوْصِنِي بِعَمَلٍ.
قَالَ: أَكْرَهُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ
إِنَّكَ شَيْخٌ كَبِيرٌ ضَعِيفٌ.
قَالَ: لَيْسَ يَشُقُّ عَلَيَّ. قَالَ:
قُمْ فَانْقُلْ هٰذِهِ الْحِجَارَةَ،
وَكَانَ لَا يَنْقُلُهَا دُوْنَ سِتَّةِ
نَفَرٍ فِي يَوْمٍ فَخَرَجَ الرَّجُلُ
لِبَعْضِ حَاجَتِهِ، ثُمَّ انْصَرَفَ
وَقَدْ نَقَلَ الْحِجَارَةَ فِي
سَاعَةٍ. قَالَ: أَحْسَنْتَ
وَأَجْمَلْتَ وَأَطَقْتَ مَا لَمْ
أَرَكَ تُطِيقُهُ. قَالَ: ثُمَّ عَرَضَ
لِلرَّجُلِ سَفَرٌ فَقَالَ: إِنِّي
أَحْسِبُكَ أَمِينًا فَاخْلُفْنِي فِي
أَهْلِي وَمَالِي خِلَافَةً
حَسَنَةً. قَالَ: وَأَوْصِنِي
بِعَمَلٍ. قَالَ: إِنِّي أَكْرَهُ أَنْ
أَشُقَّ عَلَيْكَ قَالَ:

कहिये, तो उस ने कहा मेरे आने तक मेरे घर के लिये ईंटें बनाइये, सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, फिर वोह शख़्स सफ़र पर चला गया जब लौटा तो आप उस के घर की ता'मीर मुकम्मल कर चुके थे तो उस ने ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ की, ख़ुदा के लिये मुझे बताइये कि आप का क्या मुआमला है ? तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया, आप ने मुझ से ख़ुदा का वासित़ा दे कर सुवाल किया है ह़ालां कि इसी वासित़ा देने ने मुझे इस ग़ुलामी में डाला, ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया मैं आप को बता देता हूं कि मैं कौन हूं, मैं ही ख़िज़्र हूं कि जिस के मुतअ़ल्लिक़ आप ने सुन रखा है (एक रोज़) मुझ से एक मिस्कीन ने स-दक़ा मांगा उसे देने के लिये उस वक़्त मेरे पास कोई चीज़ न थी, फिर उस ने मुझ से **अल्लाह** के नाम पर मांगा तो मैं ने उसे अपनी ज़ात पर इख़्तियार दे दिया, तो उस ने मुझे बेच दिया और मैं तुम्हें ख़बरदार करता हूं कि जिस शख़्स से **अल्लाह** के नाम का सुवाल हो और वोह मांगने वाले को तही दस्त लौटा दे ह़ालां कि वोह देने की इस्तित़ाअ़त भी रखता हो तो

لَيْسَ يَشُقُّ عَلَيَّ. قَالَ: فَاضْرِبْ مِنَ الطِّيْنِ لِبَيْتِيْ حَتّٰى أَقْدَمَ عَلَيْكَ. قَالَ: فَمَرَّ الرَّجُلُ لِسَفَرِهٖ قَالَ: فَرَجَعَ الرَّجُلُ وَقَدْ شَيَّدَ بِنَاءَهُ قَالَ: أَسْأَلُكَ بِوَجْهِ اللّٰهِ مَا سَبَبُكَ وَمَا أَمْرُكَ؟ قَالَ: سَأَلْتَنِيْ بِوَجْهِ اللّٰهِ وَوَجْهُ اللّٰهِ أَوْقَعَنِيْ فِيْ هٰذِهِ الْعُبُوْدِيَّةِ، فَقَالَ الْخَضِرُ سَأُخْبِرُكَ مَنْ أَنَا أَنَا الْخَضِرُ الَّذِيْ سَمِعْتَ بِهٖ سَأَلَنِيْ مِسْكِيْنٌ صَدَقَةً فَلَمْ يَكُنْ عِنْدِيْ شَيْءٌ أُعْطِيْهِ فَسَأَلَنِيْ بِوَجْهِ اللّٰهِ فَأَمْكَنْتُهُ مِنْ رَقَبَتِيْ فَبَاعَنِيْ وَأُخْبِرُكَ أَنَّهُ مَنْ سُئِلَ بِوَجْهِ اللّٰهِ فَرَدَّ سَائِلَهُ وَهُوَ يَقْدِرُ وَقَفَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ جِلْدَةً،

وَلَا لَحْمَ لَهُ يَتَقَعْقَعُ، فَقَالَ الرَّجُلُ: آمَنْتُ بِاللّٰهِ، شَقَّقْتُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ وَلَمْ أَعْلَمْ. قَالَ: لَا بَأْسَ أَحْسَنْتَ وَاتَّقَنْتَ، فَقَالَ الرَّجُلُ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا نَبِيَّ اللّٰهِ احْكُمْ فِي أَهْلِي بِمَا شِئْتَ، أَوِ اخْتَرْ فَأُخَلِّي سَبِيلَكَ. قَالَ: أُحِبُّ أَنْ تُخَلِّيَ سَبِيلِي فَأَعْبُدَ رَبِّي فَخَلَّى سَبِيلَهُ، فَقَالَ الْخَضِرُ: الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَوْثَقَنِي فِي الْعُبُودِيَّةِ، ثُمَّ نَجَّانِي مِنْهَا".

क़ियामत के दिन लरज़ता हुवा यूं खड़ा होगा कि उस के बदन पर गोश्त न होगा सिर्फ़ खाल होगी, तो उस शख़्स ने अ़र्ज़ की मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया मैं ने ला इल्मी में आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मशक़्क़त में मुब्तला कर दिया, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कोई बात नहीं तुम ने अच्छा मुआ़मला किया और मुझ पर ए'तिमाद किया। तो ख़रीदार ने अ़र्ज़ की, आप पर मेरे मां बाप क़ुरबान ऐ **अल्लाह** के नबी ! मेरे अहल के बारे में जैसा आप चाहें हुक्म फ़रमाएं या चाहें तो आप को आज़ाद कर दूं तो ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया, मुझे येह ज़ियादा पसन्द है कि आप मुझे आज़ाद कर दें ताकि मैं अपने रब की बन्दगी करता रहूं तो उस शख़्स ने उन्हें आज़ाद कर दिया तो ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** के लिये जिस ने मुझे इस ग़ुलामी में षाबित क़दम रखा फिर मुझे इस से नजात अ़ता फ़रमाई।[1]

---

1 (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٧٥٣٠، ج٨، ص١١٣)
(الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، ترهيب السائل أن يسأل... الخ، الحديث٦، ج١، ص٣١١)

मांगने में इसरार करना

मांगने में इसरार करना बहुत क़बीह़ फ़े'ल है कि न सिर्फ़ मांगने वाले कि इ़ज़्ज़त कम होती चली जाती है बल्कि येह अम्र देने से इन्कार करने वाले पर भी गिरां गुज़रता है। मांगने वाले को येह यक़ीन होना चाहिये कि राज़िक़े बरह़क़ **अल्लाह** तआ़ला है दीगर अस्बाब तो उसी के पैदा कर्दा हैं, चुनान्चे :

عَـنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ رَضِيَ اللّٰـهُ تَـعَالٰى عَنْهُ قَـالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَـلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تُلْحِفُوْا فِي الْمَسْأَلَةِ، فَوَاللّٰهِ لَا يَسْـأَلُـنِي أَحَدٌ مِنْكُمْ شَيْئًا فَتُخْرِجُ لَهُ مَسْأَلَتُهُ مِنِّي شَيْئًا، وَأَنَا لَهُ كَارِهٌ، فَيُبَارَكُ لَهُ فِيمَا أَعْطَيْتُهُ." [1]

ह़ज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, मांगने में ज़ारी (ज़िद) न करो **अल्लाह** की क़सम ऐसा नहीं हो सकता कि मेरे ना चाहते हुए तुम में कोई मुझ से कुछ मांग कर ले जाए और फिर उस में बरकत दी जाए।[1]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं "या'नी सुवाल पर अड़ न जाओ कि सामने वाला देना न चाहे और तुम बिग़ैर लिये टलना न चाहो, मांगना एक ऐ़ब है और इस पर अड़ना दस गुना ऐ़ब, रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا﴾ [البقرة:٢/٢٧٣]-" ।"

तर्जमा : लोगों से सुवाल नहीं करते कि गिड़गिड़ाना पड़े (कन्ज़ुल ईमान)।

---

[1] (سنن الدارمي، كتاب الزكاة، باب التشديد على...الخ،الحديث: ١٦٤٤ ص ٤٨٠)
(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب النهي عن المسألة، الحديث: ٩٩-(١٠٣٨)، ص ٣٧١)
(سنن النسائي، كتاب الزكاة، باب الإلحاف في المسألة، الحديث: ٢٥٩٢، ج٢، الجزء٥، ص ١٠٢)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له المسألة ومن تحل له،الحديث: ١٨٤٠، ج١، ص ٣٥٠)

"हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जि़क्र तो अपना फ़रमाया मगर क़ानूने कुल्ली फ़रमाया कि जो भिकारी भी जि़द या अड़ से भीक वुसूल करे, देने वाला देना न चाहे, तो उस से भीक में सख़्त बे बरकती होगी, इमाम ग़ज़ाली फ़रमाते हैं, जो फ़क़ीर येह जानते हुए भीक ले कि देने वाला शख़्स शर्मो नदामत की वजह से दे रहा है उस का दिल देने को न चाहता था, तो येह माल भिकारी के लिये ह़राम है, ख़याल रहे कि भिकारी की जि़द और है चन्दा करने वालों का लिह़ाज़ कुछ और, जि़द ह़राम है लिह़ाज़ का येह हु़क्म नहीं, आज मस्जिदों मद्रसों के चन्दों में उ़मूमन देखा गया है कि शहर का बड़ा मुअ़ज़्ज़ज़ मालदार आदमी जि़यादा वुसूल कर सकता है, फिर अपने लिये मांगने और दीनी कामों के लिये चन्दा करने के अह़काम में फ़र्क़ है।"[1]

एक दूसरी ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: "إِنَّمَا أَنَا خَازِنٌ، فَمَنْ أَعْطَيْتُهُ عَنْ طِيْبِ نَفْسٍ فَيُبَارَكُ لَهُ فِيْهِ، وَمَنْ أَعْطَيْتُهُ عَنْ مَسْأَلَةٍ، وَشَرَهٍ كَانَ كَالَّذِيْ يَأْكُلُ وَلَا يَشْبَعُ".[2]

ह़ज़रते मुआ़विया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना, बेशक मैं (अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ख़ज़ानों का) ख़ाजि़न हूं तो जिसे मैं ख़ुशदिली से कुछ दूं उस में लेने वालों के लिये बरकत अ़ता फ़रमाई जाती है और जिसे उस के मांगने पर और उस की हि़र्स की वजह से (न कि अपने दिल की ख़ुशी से) दूं तो वोह उस की मिष्ल है जो खाता है और सैर नहीं होता।[2]

1. (मिरआतुल मनाजीह़ , जि. 3, स. 56)

[2] (صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب النھی عن المسألۃ، الحدیث:۹۸۔(۱۰۳۷)،ص ۳۷۱)

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تُلْحِفُوا فِي الْمَسْأَلَةِ، فَإِنَّهُ مَنْ يَسْتَخْرِجُ مِنَّا شَيْئًا بِهَا لَمْ يُبَارَكْ لَهُ فِيْهِ".[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, मांगने में ज़िद न करो बेशक जो हम से ज़िद कर के कुछ लेना चाहे तो इस में उस के लिये बरकत नहीं।[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ الرَّجُلَ يَأْتِيْنِي فَيَسْأَلُنِي فَأُعْطِيْهِ فَيَنْطَلِقُ، وَمَا يَحْمِلُ فِي حِضْنِهِ إِلَّا النَّارَ".[2]

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, मेरे पास कोई शख़्स आ कर किसी चीज़ का सुवाल करे और मैं उसे अ़ता करूं (ह़ालां कि न वोह ह़ाजत मन्द हो और न ही मैं ख़ुशदिली से देना चाहूं बल्कि उस के इसरार की वजह से उसे कुछ दूं) और वोह उसे ले कर चला जाए तो वोह अपने दामन में आग ही उठा कर जाता है।[2]

---

[1] (الفردوس بمأثور الخطاب، الحديث: ٧٣٧٤، ج٥، ص٣٣)

[2] (مسند عبد بن حميد،الحديث: ١١١٣، ج١، ص٣٣٥)
(صحيح ابن حبان، الحديث: ٣٣٩٢، ج٨، ص١٨٦)
(موارد الظمآن،الحديث: ٨٤٧، ج١، ص٢١٦)

एक और रिवायत :

عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: بَيْنَمَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْسِمُ ذَهَبًا، إِذْ أَتَاهُ رَجُلٌ، فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ أَعْطِنِي، فَأَعْطَاهُ، ثُمَّ قَالَ: زِدْنِي فَزَادَهُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ وَلّٰى مُدْبِرًا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَأْتِيْنِي الرَّجُلُ فَيَسْأَلُنِي فَأُعْطِيْهِ، ثُمَّ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيْهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ وَلّٰى مُدْبِرًا، وَقَدْ جَعَلَ فِي ثَوْبِهِ نَارًا إِذَا انْقَلَبَ إِلٰى أَهْلِهِ".[1]

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं, एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सोना तक़्सीम फ़रमा रहे थे कि एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह मुझे दीजिये तो आप ने अ़ता किया फिर अ़र्ज़ की : मुझे ज़ियादा दें तो आप ने उसे मज़ीद अ़ता फ़रमाया उस ने तीन मरतबा मांगा और आप ने उसे हर बार अ़ता फ़रमाया फिर वोह लौट गया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, मेरे पास एक शख़्स आता है और मुझ से मांगता है मैं उसे देता हूं वोह फिर मांगता है तो मैं उसे देता हूं तीन मरतबा, फिर वोह लौट जाता है और बिला शुबा जब वोह अपने घर वालों के पास जाता है तो वोह अपने कपड़ों में आग ले कर जाता है।[1]

---

[1] (صحيح ابن حبان، ج٨، ص٥٦)
(موارد الظمآن، الحديث: ٨٤٨، ج١، ص٢١٦)

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ: قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ لَقَدْ سَمِعْتُ فُلَانًا وَفُلَانًا يُحْسِنَانِ الثَّنَاءَ يَذْكُرَانِ أَنَّكَ أَعْطَيْتَهُمَا دِيْنَارَيْنِ. قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "وَاللّٰهِ لٰكِنَّ فُلَانًا مَا هُوَ كَذٰلِكَ لَقَدْ أَعْطَيْتُهُ مَا بَيْنَ عَشَرَةٍ إِلٰى مِائَةٍ فَمَا يَقُوْلُ ذٰلِكَ أَمَا وَاللّٰهِ إِنَّ أَحَدَكُمْ لَيُخْرِجُ مَسْأَلَتَهُ مِنْ عِنْدِيْ يَتَأَبَّطُهَا" يَعْنِيْ تَكُوْنُ تَحْتَ إِبْطِهِ نَارًا، فَقَالَ: قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَ تُعْطِيْهَا إِيَّاهُمْ؟ قَالَ: "فَمَا أَصْنَعُ؟ يَأْبَوْنَ إِلَّا ذٰلِكَ، وَيَأْبَى اللّٰهُ لِيَ الْبُخْلَ".[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने फ़ुलां, फ़ुलां को सुना वोह बहुत अच्छी ता'रीफ़ करते हैं और कहते हैं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें दो दीनार अ़त़ा फ़रमाए। रावी कहते हैं : तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! फ़ुलां का मुआ़मला तो ऐसा नहीं, मैं ने तो उसे दस से सो के दरमियान दिये हैं वोह ऐसा क्यूं कहता है ? **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! तुम में से कोई मुझ से अपनी मत़्लूबा शै बग़ल में दबाए ले जाता है, या'नी उस की बग़ल के नीचे आग होती है। रावी कहते हैं : ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! तो फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें क्यूं अ़त़ा करते हैं ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं क्या करूं ? वोह इस के बिग़ैर राज़ी नहीं और **अल्लाह** तआ़ला मेरे लिये बुख़्ल को ना पसन्द फ़रमाता है।[1]

مدينه
---

١ (الأحاديث المختارة، الحديث: ١٢٠، ج١، ص٢٢٥)
(موارد الظمآن، باب شكر المعروف، الحديث: ٢٠٧٤، ج١، ص٥٠٦)

बिग़ैर सुवाल के मिलने वाली शै लेने का हुक्म

आम फ़ह्म ज़बान में इसे तोह़फ़े से ता'बीर किया जाता है और इस्तिलाहे शरअ़ में इसे हिबा कहा जाता है, जिस के मा'ना बिला इवज़ किसी शख़्स को अपनी किसी चीज़ का मालिक बना देना है। और तोह़फ़ा देने की ह़दीष शरीफ़ में ता'रीफ़ भी बयान की गई और इसे ज़ियादतिये मह़ब्बत का ज़रीआ़ भी फ़रमाया गया है।

चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْطِيْنِي الْعَطَاءَ، فَأَقُوْلُ أَعْطِهِ مَنْ هُوَ إِلَيْهِ أَفْقَرُ مِنِّي. قَالَ: فَقَالَ: "خُذْهُ إِذَا جَاءَكَ مِنْ هٰذَا الْمَالِ شَيْءٌ، وَأَنْتَ غَيْرُ مُشْرِفٍ وَلَا سَائِلٍ، فَخُذْهُ فَتَمَوَّلْهُ، فَإِنْ شِئْتَ كُلْهُ، وَإِنْ شِئْتَ تَصَدَّقْ بِهِ، وَمَا لَا فَلَا تُتْبِعْهُ نَفْسَكَ".

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कोई माल अ़ता फ़रमाते तो मैं अ़र्ज़ करता : आप मुझ से ज़ियादा ज़रूरत मन्द को दें, फ़रमाते हैं : इस पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते : जब येह माल तुम्हारे पास सुवाल और लालचे नफ़्स के बिग़ैर आए तो उसे ले लो और अपना कर लो फिर अगर चाहो तो उसे अपने सर्फ़ में लाओ और अगर चाहो तो स-दक़ा कर दो और जो माल इस तरह न आए तो उस के पीछे अपने नफ़्स को न डालो।

सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं : इसी वजह से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर किसी से कोई चीज़ न मांगते और जब मैं उन्हें कुछ देता तो उसे रद भी न फ़रमाते ।[1]	قَالَ سَالِمٌ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ: فَلِأَجْلِ ذٰلِكَ كَانَ عَبْدُ اللّٰهِ لَا يَسْأَلُ أَحَداً شَيْئاً، وَلَا يَرُدُّ شَيْئاً أُعْطِيَهُ.[1]

एक और ह़दीष शरीफ़ :

ह़ज़रते अ़ता बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तोह़फ़ा भेजा तो ह़ज़रते उ़मर ने लौटा दिया । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : तुम ने तोह़फ़ा क्यूं लौटा दिया ? अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! आप ने न फ़रमाया था कि हमारे लिये बेहतर है कि किसी से कुछ न लें । तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह मांगने की बात थी और जो चीज़ बिग़ैर मांगे मिले वोह तो रिज़्क़ है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें देता है ।	عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْسَلَ إِلٰى عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ بِعَطَاءٍ فَرَدَّهُ عُمَرُ، فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لِمَ رَدَدْتَهُ"؟ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ أَلَيْسَ أَخْبَرْتَنَا أَنَّ خَيْراً لِأَحَدِنَا أَنْ لَا يَأْخُذَ مِنْ أَحَدٍ شَيْئاً، فَقَالَ: رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّمَا ذٰلِكَ عَنِ الْمَسْأَلَةِ، فَأَمَّا مَا كَانَ مِنْ غَيْرِ

مدینہ

[1] (صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب من أعطاه الله شيئا من غير مسألة...إلخ، الحديث:١٤٧٣، ج١، ص٣٦٣)

مَسْأَلَةٍ، فَإِنَّمَا هُوَ رِزْقٌ يَرْزُقُكَهُ اللّٰهُ" فَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ: أَمَا وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ لَا أَسْأَلُ أَحَدًا شَيْئًا، وَلَا يَأْتِيْنِيْ شَيْءٌ مِنْ غَيْرِ مَسْأَلَةٍ إِلَّا أَخَذْتُهُ.[1]

तो हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है कि मैं कभी किसी से कुछ न मांगूंगा और जो बिग़ैर मांगे मिलेगा तो ले लिया करूंगा ।[1]

इसी ज़िम्न में एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ أَنَّ عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ عَامِرٍ بَعَثَ إِلٰى عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا بِنَفَقَةٍ وَكِسْوَةٍ، فَقَالَتْ لِرَسُوْلِهٖ: يَا بُنَيَّ لَا أَقْبَلُ مِنْ أَحَدٍ شَيْئًا، فَلَمَّا خَرَجَ، قَالَتْ: رُدُّوْهُ عَلَيَّ، قَالَ: فَرَدَّهُ فَقَالَتْ: إِنِّيْ ذَكَرْتُ شَيْئًا، قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا عَائِشَةُ مَنْ أَعْطَاكِ عَطَاءً بِغَيْرِ مَسْأَلَةٍ فَاقْبَلِيْهِ فَإِنَّمَا هُوَ رِزْقٌ سَاقَهُ اللّٰهُ إِلَيْكِ".[2]

मुत़्त़लिब बिन अ़ब्दुल्लाह से मरवी है कि अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर ने उम्मुल मुअमिनीन सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا को कुछ ख़र्च व लिबास भेजा तो आप ने क़ासिद से फ़रमाया : ऐ बेटा ! मैं किसी से कुछ नहीं लेती । जब क़ासिद जाने लगा तो आप ने फ़रमाया : येह तहाइफ़ मुझे दे दो । रावी फ़रमाते हैं : तो उस (लाने वाले) ने उसे आप की बारगाहे आ़लिया में पेश कर दिया, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : मुझे याद आ गया कि मुझ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ आइशा ! जो तुम्हें बिग़ैर मांगे कुछ दे तो क़बूल कर लिया करो कि वोह तो रिज़्क़ है जो **अल्लाह** ने तुम्हारी त़रफ़ भेजा ।[2]

مدینہ

[1] (المؤطا للإمام مالك، كتاب الصدقة،باب ما جاء في التعفف عن المسألة،الحديث:١٨٨٢،ص٥٥٧)

[2] (شعب الإيمان،باب في الزكاة،فصل فيمن أتاه اللّٰه مالاً من غير مسألة،الحديث:٣٥٥٥،ج٣،ص٢٨٢)

एक और ह़दीष शरीफ़ में है :

عَنْ خَالِدِ بْنِ عَدِيِّ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: "مَنْ بَلَغَهُ مَعْرُوْفٌ عَنْ أَخِيْهِ مِنْ غَيْرِ مَسْأَلَةٍ وَلَا إِشْرَافِ نَفْسٍ فَلْيَقْبَلْهُ، وَلَا يَرُدُّهُ فَإِنَّمَا هُوَ رِزْقٌ سَاقَهُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ إِلَيْهِ".[1]

ह़ज़रते ख़ालिद बिन अ़दी जुहन्नी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : जिसे उस के भाई के ज़रीए कोई चीज़ बिग़ैर मांगे और बिग़ैर ह़िर्स के पहुंचे तो उसे चाहिये कि क़बूल कर ले और रद न करे कि वोह तो रिज़्क़ है जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उस की त़रफ़ भेजा ।[1]

लिहाज़ा बिग़ैर सुवाल के मिलने वाली चीज़ के लेने में कोई ह़रज नहीं जब कि उस चीज़ की त़रफ़ उसे ह़िर्स व त़म्अ़ न हो अलबत्ता अगर देने वाले की दिलजूई के लिये ले तो लिया लेकिन उस चीज़ की ज़रूरत नहीं तो किसी को तोह़फ़तन दे दे या स-दक़ा कर दे, चुनान्चे :

عَنْ عَائِذِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ عُرِضَ لَهُ شَيْءٌ مِنْ هٰذَا الرِّزْقِ مِنْ غَيْرِ مَسْأَلَةٍ وَلَا إِشْرَافٍ فَلْيُوَسِّعْ بِهِ فِي رِزْقِهِ فَإِنْ كَانَ عَنْهُ غَنِيًّا فَلْيُوَجِّهْهُ إِلٰى مَنْ هُوَ أَحْوَجُ إِلَيْهِ مِنْهُ".[2]

ह़ज़रते आइज़ बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत नक़्ल करते हैं कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिसे उस रिज़्क़ से बिग़ैर मांगे और बिग़ैर ह़िर्स के कुछ पेश किया जाए तो उसे चाहिये कि उस के ज़रीए अपने रिज़्क़ में वुस्अ़त करे फिर अगर खुद ग़नी व ग़ैर मोह़ताज हो तो अपने से ज़ियादा ह़ाजत मन्द को दे दे ।[2]

[1] (المسند للإمام أحمد بن حنبل،مسند خالد بن عدي الجهني،الحديث:١٨١٠١،ج٦،ص١٥٤)

[2] (المسند للإمام أحمدبن حنبل،مسند عائذ بن عمرو،الحديث:٢٠٩٢٤،ج٦،ص٨٨٧)

एक और ह़दीष शरीफ़ :

عَنِ ابْنِ السَّاعِدِيِّ، قَالَ: اِسْتَعْمَلَنِي عُمَرُ عَلَى الصَّدَقَةِ، فَلَمَّا فَرَغْتُ مِنْهَا وَأَدَّيْتُهَا إِلَيْهِ، أَمَرَ لِي بِعُمَالَةٍ، فَقُلْتُ: إِنَّمَا عَمِلْتُ لِلّٰهِ، وَأَجْرِي عَلَى اللّٰهِ، قَالَ: خُذْ مَا أُعْطِيتَ، فَإِنِّي قَدْ عَمِلْتُ عَلَى عَهْدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَمَّلَنِي، فَقُلْتُ مِثْلَ قَوْلِكَ، فَقَالَ لِي رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "إِذَا أُعْطِيتَ شَيْئًا مِنْ غَيْرِ أَنْ تَسْأَلَهُ فَكُلْ وَتَصَدَّقْ".[1]

ह़ज़रते इब्ने साइ़दी से मरवी है, फ़रमाते हैं, मुझे ह़ज़रते उ़मर ने स-दके़ पर आ़मिल बनाया, जब मैं उस से फ़ारिग हुवा और स-दक़ा आप की ख़िदमत में अदा कर दिया तो आप ने मेरे लिये उजरत का हुक्म दिया मैं ने अ़र्ज़ किया कि मैं ने **अल्लाह** के लिये काम किया है मेरा अज्र **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ (के ज़िम्मए करम) पर है, तो आप ने फ़रमाया : जो तुम्हें दिया जाए वोह ले लो, मैं ने भी ज़मानए नबवी صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में येह काम किया था तो मुझे हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उजरत दी मैं ने भी तुम्हारी त़रह़ अ़र्ज़ किया था तो मुझ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो कुछ तुम्हें बिग़ैर मांगे मिले वोह खा लो और स-दक़ा करो ।[1]

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इब्ने साइ़दी का येह ख़याल था कि उजरत ले लेने से षवाब जाता रहेगा और मैं ने येह काम षवाब के लिये किया है इस लिये क़बूल से इन्कार किया ।

मदीना

[1] (سنن أبي داود، كتاب الزكاة، باب في الاستعفاف، الحديث:١٦٤٧، ج٢، ص٢٠٣)
(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له المسألة ومن تحل له، الحديث:١٨٥٤، ج١، ص٣٥٢)

"जो कुछ तुम्हें बिग़ैर मांगे मिले वोह खा लो और स-दक़ा करो।" इस के तह़त मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : سُبْحٰنَ اللّٰہ क्या प्यारी ता'लीम है, मक़्सद येह है कि बिग़ैर मांगे जो रब दे उसे न लेना **अल्लाह** की ने'मत का ठुकराना है जो **अल्लाह** तआ़ला को सख़्त ना पसन्द है लिहाज़ा येह ज़रूर ले लो इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए, एक येह कि नेक आ'माल की उजरत लेना जाइज़ है, चुनान्चे उ़-लमा, क़ाज़ी, मुदर्रिसीन, ह़त्ता कि ख़ुद ख़लीफ़ा की तनख़्वाह बैतुल माल से दी जाएगी सिवाए ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْهُ के बाक़ी तीनों ख़ुलफ़ा ने बैतुल माल से ख़िलाफ़त की तनख़्वाह वुसूल की है, दूसरे येह कि जब काम करने वाले की निय्यते ख़ैर हो तो तनख़्वाह लेने से اِنْ شَآءَاللّٰہ षवाब कम न होगा, सिर्फ़ तनख़्वाह के लिये दीनी काम न करे तनख़्वाह तो गुज़ारे के लिये वुसूल करे अस्ल मक़्सद दीनी ख़िदमत हो, तीसरे येह कि ग़नी भी येह उजरतें ले सकता है सिर्फ़ फ़क़ीर ही को इजाज़त नहीं। फिर ले कर ख़ुद भी खा सकता है इस से ख़ैरात भी कर सकता है ख़याल रहे कि इमाम अह़मद के हां हदिय्या क़बूल करना वाजिब है इस ह़दीष की बिना पर बाक़ी जम्हूर उ़-लमा के हां येह हुक्म इस्तिह़बाबी है। मिरक़ात ने इस जगह फ़रमाया कि सुल्त़ाने इस्लाम पर वाजिब है कि ऐसे उ़-लमा, मुफ़्तियों, मुदर्रिसों की तनख़्वाहें मुक़र्रर करे जिन्हों ने अपने को दीनी ख़िदमात के लिये वक़्फ़ कर दिया हो। [1]

इमाम ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : मक्कए मुकर्रमा के एक मुजावर बताते हैं कि मेरे पास कुछ दिरहम थे जो मैं ने राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के लिये रखे हुए थे एक दिन मैं ने एक फ़क़ीर को सुना जो त़वाफ़ से

1. (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 66, 67)

फ़ारिग हो चुका था और आहिस्ता आवाज़ से कह रहा था मैं भूका हूं जैसा कि तू जानता है मैं नंगा हूं जैसा कि तू देखता है ऐ वोह कि जो देखता है लेकिन दिखाई नहीं देता। वोह कहते हैं मैं ने देखा तो उस पर दो पुराने कपड़े थे जो उस के जिस्म को ढांप नहीं पा रहे थे मैं ने दिल में कहा कि मेरे दिरहमों का इस से बेहतर मसरफ़ नहीं है चुनान्चे मैं ने वोह दराहिम उसे दे दिये उस ने उन में से पांच दिरहम ले लिये और कहने लगा चार दिरहमों की दो चादरें आएंगी और एक दिरहम को मैं तीन दिन ख़र्च करूंगा इस के इलावा की मुझे ह़ाजत नहीं है चुनान्चे उस ने बाक़ी दिरहम वापस कर दिये।

रावी बयान करते हैं दूसरी रात मैं ने उसे देखा कि उस के ऊपर दो नई चादरें हैं तो मेरे दिल में कुछ वस्वसा पैदा हुवा उस ने मेरी त़रफ़ देख कर मेरा हाथ पकड़ा और अपने साथ सात बार त़वाफ़ कराया। हर एक फैरे में एक नई क़िस्म का जौहर ज़मीन की कानों में से हमारे पाउं के नीचे टख़्नों तक हो जाता। उन में सोना, चांदी याक़ूत, मोती और जवाहिर वग़ैरा थे लेकिन लोगों को नज़र नहीं आता था उस ने कहा **अल्लाह** तआ़ला ने येह सब कुछ मुझे दिया है लेकिन मैं ने इन से बे रग़बती इख़्तियार की है और मैं लोगों के हाथों से लेता हूं क्यूं कि येह सब कुछ बोझ और फ़ित्ना है और इस लेने में लोगों के लिये रह़मत और ने'मत है।

इस बात का मक़्सद येह है कि ह़ाजत से ज़ियादा जो कुछ तुम्हारे पास आता है वोह आज़माइश और फ़ित्ने के त़ौर पर आता है ताकि **अल्लाह** तआ़ला आज़माए कि तुम इस में कैसा अ़मल करते हो और ह़ाजत के मुत़ाबिक़ तुम्हारे पास नर्मी और आसानी के त़ौर पर आता है पस तुझे आसानी और आज़माइश में फ़र्क़ से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिये।

अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया :

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۝ (الکهف:١٨/٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक हम ने ज़मीन पर सिंगार किया जो कुछ इस पर है कि इन्हें आज़माएं इन में से किस के काम बेहतर हैं।*

और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

لَا حَقَّ لِابْنِ آدَمَ إِلَّا فِي ثَلَاثٍ: طَعَامٍ يُقِيمُ صُلْبَهُ وَثَوْبٍ يُوَارِي عَوْرَتَهُ وَبَيْتٍ يُسْكِنُهُ فَمَا زَادَ فَهُوَ حِسَابٌ. (جامع الترمذي: ابواب الزهد)

इन्सान का हक़ सिर्फ़ तीन चीज़ों में है खाना जो उस की पीठ को सीधा रखे और लिबास जो उस के सित्र को छुपाए और घर जो उसे पनाह दे तो जो कुछ इस से ज़ाइद है उस का हि़साब होगा।

पस जो कुछ तुम इन तीन चीज़ों में से ह़ाजत के मुताबिक़ लोगे इस पर तुम्हें षवाब होगा और जो इस से ज़ाइद लोगे इस की दो सूरतें हैं अगर तुम ने इस में **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी नहीं की तो वोह हि़साब के लिये पेश होगा और अगर **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी कर के माल ह़ासिल किया है तो तुम्हें अ़ज़ाब का सामना करना पड़ेगा।[1]

وَصَلَّى اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ وَنُوْرِ عَرْشِهٖ سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا وَمَلْجَانَا وَمَاْوٰنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

بحمد اللہ تم

مدینہ

1 (إحياء علوم الدين، كتاب الفقر والزهد، بيان آداب الفقير وقبول العطاء إذا جاء بغير سؤال، ج٤، ص٢٧٩)

مآخذ ومراجع

نام کتاب	مصنف/ مؤلف	مطبوعه
كنز الايمان	الشاه امام احمد رضا خان فاضل بريلوى ١٣۴٠ ھ	مركز اهلسنت بركات رضا
تفسير خزائن العرفان	علامه مولانا محمد نعيم الدين مرادآبادى ١٣٦٧ ھ	مركز اهلسنت بركات رضا
صحيح البخاري	الإمام أبو عبد الله محمد بن إسماعيل ٢٥٦ ھ	دار الكتب العلمية بيروت
صحيح مسلم	الإمام أبو الحسن مسلم بن الحجّاج القُشيري ٢٦١ ھ	دار الكتب العلمية بيروت
سنن أبي داود	الإمام أبو داود سليمان بن أشعث السجستاني ٢٧٥ ھ	دار ابن حزم بيروت
سنن ابن ماجه	الإمام أبو عبد الله محمد بن يزيد القزويني ٢٧٥ ھ	دار الكتب العلمية بيروت
سنن النسائي	الإمام أحمد بن شعيب الخراساني النسائي ٣٠٣ ھ	دار المعرفة بيروت
سنن الترمذي	الإمام محمد بن عيسى الترمذي ٢٩٧ ھ	دار الكتب العلمية بيروت
الموطا	الإمام مالك بن أنس ١٧٩ ھ	المكتبة العصرية بيروت
الأدب المفرد	الإمام أبو عبد الله محمد بن إسماعيل ٢٥٦ ھ	دار المعرفة بيروت
سنن الدارمي	الإمام أبو محمدعبد الله بن عبد الرحمن الدارمي ٢٥٥ ھ	دار المعرفة بيروت
المصنف	الإمام عبد الرزاق بن همام بن نافع الصنعاني ٢١١ ھ	دار الكتب العلمية بيروت
المصنف	الإمام عبد الله بن محمد بن أبي شيبة الكوفي ٢٣٥ ھ	دار الكتب العلمية بيروت
المسند	الإمام أحمد بن محمد بن حنبل ٢۴١ ھ	عالم الكتب بيروت
مسند البزار	الإمام أبو بكر أحمد بن عمرو بن عبد الخالق ٢٩٢ ھ	مؤسسة علوم القرآن بيروت
مسند	الإمام أبو يعلى أحمد بن علي الموصلي التميمي ٣٠٧ ھ	دار المأمون للتراث دمشق
مسند الروياني	الإمام محمد بن هارون الروياني الرازي الأملي ٣٠٧ ھ	دار الكتب العلمية بيروت
مسند الشاميين	الإمام سليمان بن أحمد بن أيوب الطبراني ٣٦٠ ھ	مؤسسة الرسالة بيروت
مسند الشهاب	الإمام أبو عبد الله محمد بن سلامة القضاعي ۴٥۴ ھ	مؤسسة الرسالة بيروت

مسند	الإمام أبو محمد عبد بن حميد بن نصر الكسي ٢٤٩ھ	مكتبة السنة القاهرة
السنن الكبرىٰ	الإمام أحمد بن شعيب الخراساني النسائي ٣٠٣ھ	دار الكتب العلمية بيرو
صحيح ابن خزيمة	الإمام محمد بن إسحاق السلمي النيسابوري ٣١١ھ	المكتب الإسلامي بيرو
صحيح ابن حبان	الإمام أبو حاتم محمد بن حبان التميمي البستي ٣٥٤ھ	مؤسسة الرسالة بيروت
المعجم الصغير	الإمام أبو القاسم سليمان بن أحمد الطبراني ٣٦٠ھ	المكتب الإسلامي بيرو
المعجم الأوسط	الإمام أبو القاسم سليمان بن أحمد الطبراني ٣٦٠ھ	دار الحرمين القاهرة
المعجم الكبير	الإمام أبو القاسم سليمان بن أحمد الطبراني ٣٦٠ھ	مكتبة العلم والحكم
سنن الدار قطني	الإمام علي بن عمر الدار قطني ٣٨٥ھ	دار الكتب العلمية بيرو
المستدرك	الإمام محمد بن عبد الله الحاكم النيسابوري ٤٠٥ھ	دار الكتب العلمية بيرو
السنن الكبرى	الإمام أبو بكر أحمد بن الحسين البيهقي ٤٨٥ھ	دار الكتب العلمية بيرو
الفردوس	الإمام أبو شجاع شيرويه بن شهردار الهمداني ٥٠٩ھ	دار الكتب العلمية بيرو
شعب الإيمان	الإمام أبو بكر أحمد بن الحسين البيهقي ٤٨٥ھ	دار الكتب العلمية بيرو
لأحاديث المختارة	الإمام أبو عبد الله محمد بن عبد الواحد الحنبلي ٦٤٣ھ	مكتبة النهضة مكة
موارد الظمآن	الإمام أبو الحسن علي بن أبي بكر الهيثمي ٨٠٧ھ	دار الكتب العلميةبيرو
لترغيب والترهيب	الإمام زكي الدين عبد العظيم بن عبد القوي المنذري ٦٥٦ھ	دار إحياء التراث العربي بيرو
مشكاة المصابيح	الإمام وليّ الدين محمد بن عبد الله الخطيب ٧٤١ھ	دار الكتب العلمية بيرو
مجمع الزوائد	الإمام علي بن أبي بكر الهيثمي ٨٠٧ھ	دار الكتاب العربي بيروت
الجامع الصغير	الإمام جلال الدين عبد الرحمن بن أبي بكر السيوطي ٩١١ھ	دار طائر العلم جدة
الجامع	الإمام معمر بن راشد الأزدي ١٥١ھ	المكتب الإسلامي بيرو
تلخيص الحبير	الإمام أحمد بن علي بن حجر العسقلاني الشافعي ٨٥٢ھ	المدينة المنورة
كشف الخفاء	الإمام إسماعيل بن محمد العجلوني ١١٦٢ھ	مؤسسة الرسالة بيروت

عمدة القاري	الإمام بدر الدين أبو محمد محمود بن أحمد العيني٨٥٥ھ	دار الكتب العلمية بيروت
شرح سنن أبي داود	الإمام بدر الدين أبو محمد محمودبن أحمد العيني٨٥٥ھ	المملكة العربية
حاشية سنن النسائي	الإمام جلال الدين عبد الرحمن بن أبي بكر السيوطي ٩١١ھ	دار المعرفة بيروت
شرح الزرقاني على الموطا للإمام مالک	الإمام محمد بن عبد الباقي الزرقاني الأزهري ١١٢٢ھ	دار الفكر بيروت
حاشية سنن النسائي	العلامة أبو الحسن نور الدين السندي ١١٣٨ھ	دار المعرفة بيروت
تنوير الحوالک شرح الموطاللإمام مالک	الإمام جلال الدين عبد الرحمن بن أبي بکر السيوطي ٩١١ھ	دار الكتب العلمية بيروت
مرقاة المفاتيح	الإمام الشيخ علي بن سُلطان محمد القاري ١٠١۴ھ	دار الكتب العلمية بيروت
مرآة المناجيح	حكيم الأمّت مفتى احمد يار خان نعيمى ١٣٩١ھ	ضياء القرآن پبليكيشنز لاهور
نوادر الأصول	الإمام محمد بن علي الحكيم الترمذي ٣٢٠ھ	دار الجيل بيروت
الديباج	الإمام جلال الدين عبد الرحمن بن أبي بكر السيوطي ٩١١ھ	دار المعرفة بيروت
نصب الراية	الإمام عبد الله بن يوسف الزيلعي الحنفي ٧٦٢ھ	دار الحديث مصر
التمهيد لابن عبد البر	الإمام يوسف بن عبد الله بن عبد البر النمري ۴٦٣ھ	وزارة عموم الأوقاف
الهداية	العلامة علي بن أبي بكر الرشداني المرغيناني ٥٩٢ھ	دار الكتب العلمية بيروت
بدائع الصنائع	الإمام علاء الدين أبي بكر بن مسعود الحنفي ٥٨٧ھ	دار الكتب العلمية بيروت
كنز الدقائق	الإمام أبو البركات عبد الله بن أحمد النسفي ٧١٠ھ	دار الكتب العلمية بيروت
البحر الرائق	الإمام زين الدين بن إبراهيم المعروف بابن نجيم الحنفي ٩٧٠ھ	دار الكتب العلمية بيروت
الدر المختار	الإمام محمد بن علي الحنفي الحصكفي ١٠٨٨ھ	دار الكتب العلمية بيروت
رد المحتار	الإمام السيد محمد أمين ابن عابدين الشامي الحنفي ١٢٥٢ھ	دار المعرفة بيروت
الفتاوى الهندية	العلامة نظام الدين الحنفي ١١٦١ھ وجماعة من علماء الهند	دار إحياء التراث العربي بيروت
فتاوى رضويه	الشاه امام احمد رضا خان فاضل بريلوى ١٣۴٠ھ	رضا فاؤنڈيشن لاهور
بهارِ شريعت	صدر الشريعه علامه مفتى امجد على قادرى ١٣٦٧ھ	مكتبه اسلاميه لاهور

التاريخ الكبير	الإمام أبو عبد اللّٰه محمد بن إسماعيل ٢٥٦ھ	دار الفكر بيروت
الثقات لابن حبان	الإمام أبو حاتم محمد بن حبان التميمي البستي ٣٥٤ھ	دار الفكر بيروت
الكامل في ضعفاء الرجال	الإمام أبو أحمد عبد اللّٰه بن عدي الجرجاني ٣٦٥ھ	دار الفكر بيروت
تاريخ جرجان	الإمام أبو القاسم حمزة بن يوسف الجرجاني ٤٢٨ھ	عالم الكتب بيروت
تاريخ بغداد	الإمام أبو بكر أحمد بن علي الخطيب البغدادي ٤٦٣ھ	دار الكتب العلمية بيروت
تهذيب الكمال	الإمام يوسف بن زكي عبد الرحمن المزي ٧٤٢ھ	مؤسسة الرسالة بيروت
سير أعلام النبلاء	الإمام أبو عبد اللّٰه محمد بن أحمد الذهبي ٧٤٨ھ	مؤسسة الرسالة بيروت
لسان الميزان	الإمام أحمد بن علي بن حجر العسقلاني الشافعي ٨٥٢ھ	مؤسسة الأعلمي بيروت
ميزان الاعتدال	العلامة شمس الدين محمد بن أحمد الذهبي ٧٤٨ھ	دار الكتب العلمية بيروت
إحياء علوم الدين	حجة الإسلام إمام محمد بن محمد الغزالي ٥٠٥ھ	دار الكتب العلمية بيروت
مصباح السالكين ترجمه احیاء علوم الدين	حضرت علامہ مولانا محمد صدیق ہزاروی	پروگریسو بکس لاھور
مكاشفة القلوب	حجة الإسلام إمام محمد بن محمد الغزالي ٥٠٥ھ	دار المعرفة بيروت
تنبيه الغافلين	الإمام أبو الليث نصر بن محمد السمرقندي الحنفي ٣٧٣ھ	المكتبة العصرية بيروت
كتاب الزهد الكبير	الإمام أبو بكر أحمد بن الحسين بن علي البيهقي ٤٥٨ھ	مؤسسة الكتب الثقافية بيروت
التخويف من النار	الإمام أبو الفرج عبد الرحمن بن أحمد الحنبلي ٧٩٥ھ	مكتبة دار البيان دمشق
نزهة المجالس	الإمام عبد الرحمن بن عبدالسلام الصفوري الشافعي ٨٩٤ھ	دار الكتب العلمية بيروت
فيضانِ سنّت	حضرت علامہ مولانا ابو بلال محمد الیاس عطّار قادری	مكتبة المدينه كراچی
التعريفات	العلامة السيد الشريف علي بن محمد الجرجاني ٨١٦ھ	دار المنار
تاريخ دمشق	الإمام علي بن الحسن المعروف بابن عساكر ٥٧١ھ	

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

﴾शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه﴿

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात : (अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शरइ़ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) षुबूते हिलाल के त़रीक़े (त़ुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ई़दैन में गले मिलना कैसा ?
(विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ई़द) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (रद्दिल कह़ति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के ह़ुक़ूक़ (अल ह़ुक़ूक़ लि त़र्हिल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल (अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़ह़ ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

﴾शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुब﴿

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत
मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74)

(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़्हात : 62)

(15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़्हात : 60)

(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़्हात : 46)

(17) अज़्लल ए'लाम (कुल सफ़्हात : 70)

(18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़्हात : 93)

(19,20,21) जद्दुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़्तार

(अल मुजल्लद अल अव्वल वष्षानी)(कुल सफ़्हात : 713,677,570)

शो'बए इस्लाही कुतुब

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़्हात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़्हात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़्हात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़्हात : 164)

(26) इमतिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़्हात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़्हात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़्हात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़्हात : 43)

(30) निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्हात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़्हात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़्हात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़्हात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़्हात : 50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़्हात : 142)

(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़्हात : 112)

(37) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्हात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)
(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)
(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात : 48)
(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)
(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)
(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)
(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़ह़ात : 24)
(51) ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात :106)
(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)
(53) रहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)
(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)
(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 68)
(56) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)
(57) तरबिय्यते अवलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)
(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)
(59) अह़ादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)
(60) फ़ैज़ाने चहल अह़ादीष (कुल सफ़ह़ात : 120)
(61) बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल
(अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी षवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात : 743)
(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़ह़ात : 36)
(64) ह़ुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़ह़ात : 74)
(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़ह़ात : 102)

(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़ह़ात : 64)

(67) अद्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बह़रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़ह़ात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़ह़ात : 136)

(70) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़ह़ात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़ह़ात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 175)

(74) अर-बई़निन न-वविय्यह (कुल सफ़ह़ात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़ह़ात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह़्व

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़्रीज

(79) अ़जाइबुल क़ुर्आन मअ़ ग़राइबुल क़ुर्आन (कुल सफ़ह़ात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)

(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 से 6)

(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 से 13)

(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (ह़िस्सा : 14 से 20)

(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)

(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़ह़ात : 108)

(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़ह़ात : 59)

(87) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 274)

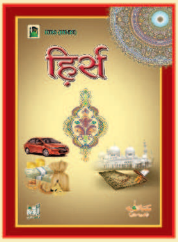

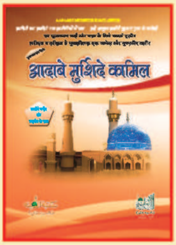

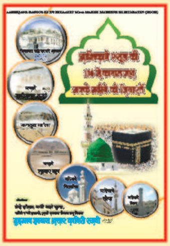

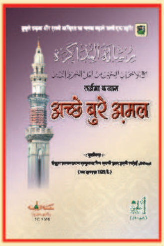

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हि़फ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की शाख़ें

देहली : उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदाबाद-1 , गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

Web : www.dawateislami.net / E-mail:maktabaahmedabad@gmail.com